कथा झरना

कहानियों का एक झरना जो आपकी तरफ बहता, गुनगुनाता चला आ रहा है। कथा झरना, सौ कहानियों का संकलन, कहानियों की असीम दुनिया को बच्चों तक पहुँचाने का एक प्रयास है।

कथा झरना की विशेषतायें:

- बच्चों की दुनिया को ध्यान में रखते हुए, कथा झरना में सरल भाषा में लिखी गई कहानियाँ और दिलचस्प पहेलियाँ हैं।
- हर कहानी अलग-अलग कार्ड में छपी है, ताकि बच्चे स्वयं उसे उठाकर टटोलें, पढें, उसका आनंद लें और छोटे-छोटे समूहों में अपने विचार बांटें।
- हर कहानी बच्चों के लिए बड़े अक्षरों व रंगीन चित्रों के साथ प्रस्तुत की गई है।
- हर वर्ग के बच्चों को कम दाम में श्रेष्ठ पठन सामग्री उपलब्ध कराने का यह एक छोटा सा प्रयास है।
- भारत में कहानियों का सर्वश्रेष्ठ भंडार है और यहाँ कहानी सुनाने के कई अद्‌भुत तरीके सदियों से चले आ रहे हैं। यह संकलन बच्चों को अपने देश की इस परंपरा से अवगत कराने की एक कोशिश है।
- इसमें अनेक प्रकार की कहानियाँ शामिल हैं, जैसे हास्यप्रद, पौराणिक और लोक कथाएँ।

कथा झरना क्यों बनाया?

- ग्रामीण स्कूलों में आधिकांश बच्चे उस नई पीढ़ी के हैं जो पहली बार शिक्षा-प्रणाली से जुड़े हैं। उनके पास स्कूल व घर में पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य किताबें उपलब्ध नहीं होती हैं।
- बच्चों की सीखने की क्षमता तभी बढ़ती है जब उन्हें तरह-तरह की किताबें पढ़ने का अवसर मिले। कहानियाँ पढ़ने से न केवल भाषा का विकास होता है बल्कि कहानियाँ पूरी दुनिया को देखने का झरोखा बन जाती हैं।
- बिना संदर्भ के शब्द और अक्षरों को पढ़कर बच्चे ऊब जाते हैं। जब सीखना-सिखाना सहज व स्वाभाविक संदर्भ में हो तो वे आसानी से समझते व सीखते हैं।

- कहानियाँ बच्चों की भावनाओं को छू जाती हैं और उनकी कल्पनाशक्ति और अभिव्यक्ति को बढ़ावा देती हैं।
- कहानियों को पढ़ते समय बच्चे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। पात्रों और घटनाओं को अपने जीवन से जोड़ने लगते हैं। बच्चे अपने अनुभव के अनुसार उसकी अलग-अलग व्याख्या करते हैं।
- कथा झरना और अन्य किताबों को पढ़ने के लिए हर कक्षा में किसी एक जगह को निर्धारित किया जा सकता है। बच्चों में किताबें पढ़ने की आदत मज़बूत करने से पाठ्यक्रम को सीखना-समझना भी सरल हो जाता है।
- कथा झरना को प्रकाशित करने का कारण यह भी है कि शिक्षकों को एक साधन मिले जिसका प्रयोग करके वे बच्चों को सोचने, समझने और अन्य कई कौशल विकसित करने में मदद कर सकें।

कथा झरना की टीम

'कथा झरना' का सर्वप्रथम सृजन तमिल भाषा में चार शिक्षा विशेषज्ञों ने मिलकर किया: सुश्री पी. सरस्वती, सुश्री वी. विजयकांती, सुश्री एल. एस. सरस्वती तथा सुश्री एस. राजलक्ष्मी। उन्होंने विभिन्न स्त्रोतों से हजारों कहानियाँ एकत्रित करके उनकी समीक्षा और विश्लेषण किया। बाल मानसिकता को ध्यान में रखते हुए कुछ कहानियों को उन्होंने पुन:रचित किया। टीम ने बच्चों के भीतर समाये हुए कई गुणों, जैसे कि करुणा, दोस्ती, त्याग, सच्चाई, कल्पनाशक्ति आदि पर ध्यान दिया और उन्हें उभारने के उद्देश्य से भी कहानियों को चुना। कहानी के साथ-साथ टीम ने चित्रों पर भी विशेष ध्यान दिया, क्योंकि चित्र बच्चों की जिज्ञासा और कल्पनाशक्ति को बढ़ावा देने में सहायक होते हैं।

2003 में Chatnath Trust, Chennai के सहयोग से 'कथई अरुवि' शीर्षक के अंतर्गत तमिल कथा-कार्ड संग्रह प्रकाशित किया गया। Chatnath Trust के निरंतर समर्थन के लिए हम उनके विशेष रूप से आभारी हैं।

कथा-कार्ड संग्रह की परिकल्पना मौलिक रूप से तमिल भाषा में पढ़ने वाले बच्चों की शैक्षिक आवश्यक्ताओं को ध्यान में रखते हुए की गई, लेकिन भाषा और संस्कृति की सीमाएँ पार करके यह देश के विभिन्न कोनों में लोकप्रिय हुआ। कथा-कार्ड संग्रह को कई शैक्षिक संस्थाओं ने भी सराहा।

हिन्दी कथा-कार्ड 'कथा झरना' (2008)

नई दिल्ली की संस्था 'Room to Read' ने 'कथई अरुवी' कथा-कार्ड संग्रह को हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने की मांग की और इसी के साथ कथा झरना के प्रकाशन का काम टीम ने आरंभ किया। अनुवाद की प्रारंभिक प्रक्रिया चेन्नई में संपन्न हुई। उसके पश्चात् टीम ने उत्तर भारत के शिक्षाविदों के सहयोग से कहानियों व पहेलियों का हिन्दी पाठकों के अनुसार रूपांतर किया। 'कथा झरना' शीर्षक कथा-कार्ड संग्रह 2008 में प्रकाशित हुआ। निम्न लिखित शिक्षाविदों की टीम के सहयोग व बहुमूल्य सुझावों के बिना कथा झरना का रूपांतरण संभव नहीं हो पाताः

अनुराधा बजाज, पूनम अरोड़ा, इन्दिरा पंचोली, जस्मिता हेमंत, महबूब निशा (दिल्ली)
गीता शर्मा (अहमदाबाद), सी. मणिकंडन, जे. पद्मप्रिया, कनुप्रिया केयाल (चेन्नई)
सुष्मिता बैनर्जी, लोहित जोशी, हितेंद्र उपाध्याय (जयपुर)
टाइपिंग - सुनील कुमार

कहानियों को बच्चों के विकास के लिए इस्तेमाल करने के लिए कुछ सुझावः

(क) कहानियों को समझना

क्रम में लगानाः बच्चों को कहानी की घटनाओं को सही क्रम में प्रस्तुत करने के लिए कहें।

कहानी के मुख्य बिंदुः बच्चों को कहानी सुनाने के बाद पूछें कि कहानी का मुख्य विषय क्या है? उन्हें कहानी की पूरी तस्वीर समझने में मदद करें। अपनी सोच को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए कहें।

अनुमान लगानाः कहानी पढ़ते समय बच्चों को अनुमान लगाने दें कि आगे क्या होने वाला है।

तुलना करनाः बच्चे कहानी के पात्रों व स्थितियों में समानताओं और विभिन्नताओं को पहचानने की कोशिश करें।

काल्पनिक, वास्तविकः बच्चों से प्रश्न पूछकर देखें कि वे कल्पना और वास्तविक्ता के बीच अंतर कर पा रहे हैं या नहीं, जैसे-तुम क्या सोचते हो? क्या एसा असली जीवन में हो सकता है?

कहानी को दोहरानाः बच्चों को अपने तरीके से कहानी को सुनाने को कहें। अपनी भाषा या शैली में अभिव्यक्त करने का मौका दें।

व्यक्तिगत रायः बच्चों को कहानी के हर पहलू के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करें। प्रश्नों द्वारा उन्हें प्रोत्साहित करें, जैसे-कौन सा पात्र तुमको पसंद आया और क्यों? यदि तुम वह पात्र होते तो क्या करते? यह ज़रूरी है कि शिक्षक बच्चों को कहानी का संदेश पहले से ही न बताएँ। उन्हें स्वयं उसका सार खोजने दें।

(ख) रचनात्मक अभिव्यक्ति

- एक बच्चा कहानी का एक पात्र बने और अन्य बच्चे उससे सवाल पूछकर काल्पनिक संवाद करें ।
- कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करें।
- बच्चे अपनी-अपनी कल्पना के अनुसार कहानी पर आधारित चित्र बनाएँ।
- बच्चे कहानी के अंत में अपनी कल्पना के अनुसार बदलाव करें। कहानी को नया नाम दें।
- बच्चों को कहानी पर आधारित रचनात्मक कार्य करवाएँ जैसे मुखौटे, कठपुतली, मॉडल बनाना।
- बच्चों से नई कहानी की रचना करवाएँ । एक बच्चा एक वाक्य बोले। दूसरा बच्चा उससे जुड़ता हुआ दूसरा वाक्य बोले। ऐसे ही पूरा समूह वाक्य जोड़ते हुए एक नई कहानी बनाए।
- तीन या चार शब्द-कार्ड या चित्र-कार्ड जोड़ते हुए बच्चों से एक कहानी बुनने को कहें ।
- बच्चों को समूहों में बाँटें। एक समूह से पहेली कहलवाएँ और दूसरा समूह उसका जवाब दे। बच्चों को वस्तुओं, जानवरों व पक्षियों के चित्र या शब्द-कार्ड दें और उन्हें नई पहेलियाँ बनाने को उत्साहित करें।
- बच्चों को एक पत्रिका निकालने में मदद करें, जिसमें उनके द्वारा रचित कहानियाँ, कविताएँ, चुटकुले, पहेलियाँ आदि हों।
- बच्चों द्वारा रची गई कहानियों, पहेलियों, चित्रों व अन्य सामग्री को कक्षा में प्रदर्शित करें अथवा उनके अलग-अलग संकलन बनाएँ।
- गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान आदि पढ़ाते समय संबंधित पाठों से जुड़ी कहानियों से परिचित कराएँ।

PUBLISHER

RAJALAKSHMI SRINIVASAN MEMORIAL FOUNDATION (R S M F)

No.6 (1st Floor), 21st Cross Street, Indira Nagar (Near Water Tank),
Adyar, Chennai - 600 020, Phone No: 044 - 2442 1113
Email : rsmf1944@gmail.com || Website: www.rajifoundation.org.in

R S M F, प्रोफेसर राजलक्ष्मी श्रीनिवासन (राजी) की बच्चों के प्रति आजीवन रुचि तथा उत्साह को बरकरार रखने के लिए गठित किया गया। यह संस्था, वंचित वर्ग के बच्चों, विशेषकर बालिकाओं के लिए अनेक शैक्षणिक गतिविधियों को क्रियान्वित करती है। कथा झरना संग्रह के इस संकलन का प्रकाशन गैर-लाभकारी तथा शैक्षिक उद्देश्यों से किया जा रहा है।

कहानियों की कहानी

कहानियाँ सभी के मन को मोह लेती हैं। कहानी सुन कर सब को खूब मज़ा आता है और कई बार तो कहानी सुनते–सुनते भूख, प्यास और नींद सब उड़ जाते हैं। कहानी सुनाना और सुनना किसे अच्छा नहीं लगता?

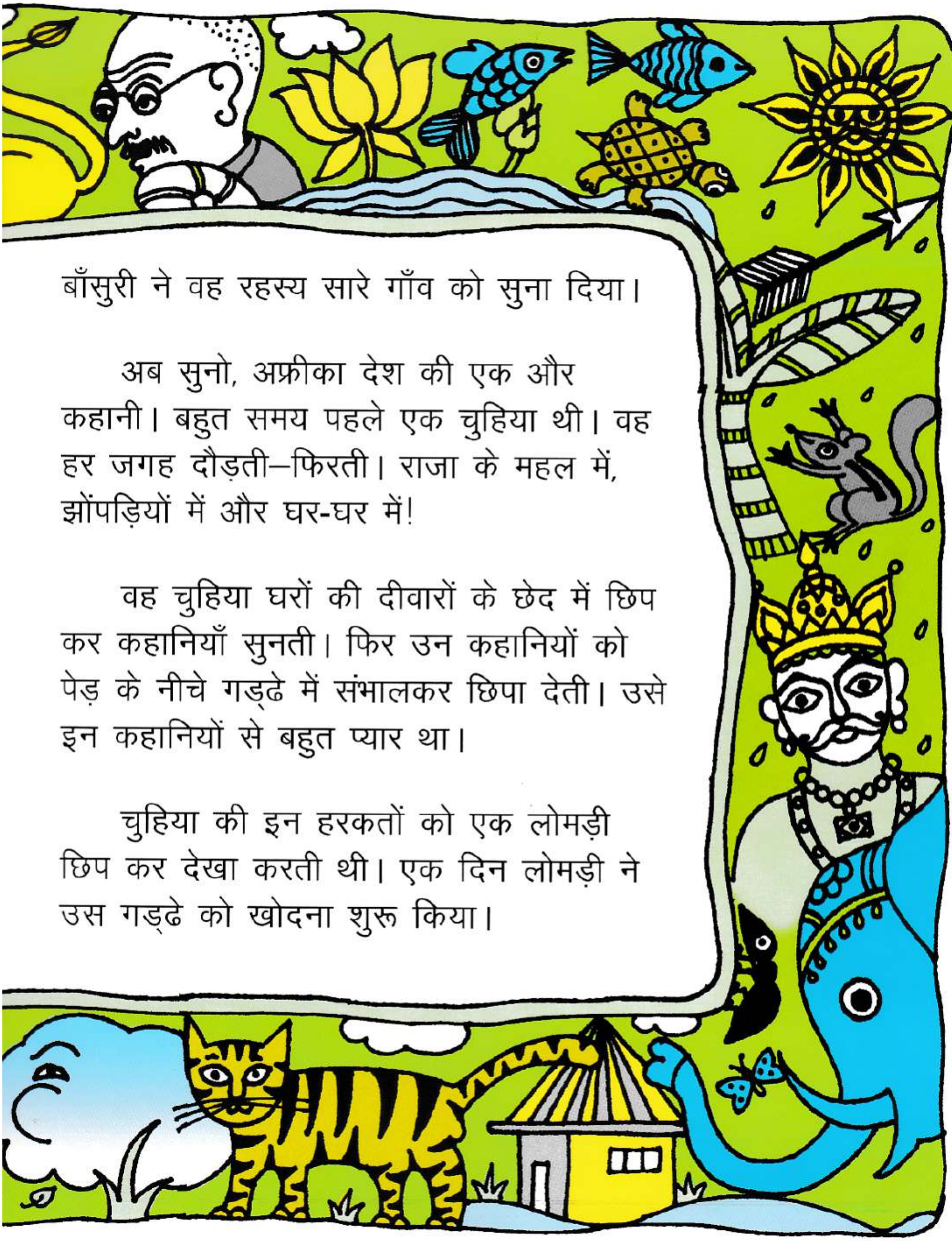
हम सभी ने कितनी कहानियाँ सुनी और सुनाई होंगी? क्या हम उन्हें गिन पाएँगे? ये कहानियाँ कई प्रकार की हो सकती हैं जैसे– पेड़-पौधों की, पशु-पक्षियों की, राजा-रानी की, वीरों की, जादू की, पुराने समय की, दादा-दादी की, नाना-नानी की, हँसी-मज़ाक वाली और ऐसी कहानियाँ भी जो हमें सोच में डाल देती हैं!



तुमने कभी सोचा है कि कहानियाँ आती कहाँ से हैं? आओ, कहानियों के बारे में कुछ कहानियाँ सुनें।

एक गाँव में एक आदमी था। एक दिन उसके दोस्त ने उसे एक रहस्य बताया। कई दिन तक उसने यह बात छिपाए रखी। इससे उसका पेट दिन-प्रतिदिन फूलता गया। जब उससे रहा न गया तो उसने अपनी पत्नी को वह बात बता दी।

फिर क्या था? उसकी पत्नी भी फूलने लगी। वह भी इस रहस्य को छिपा न पाई। उसने बगीचे में जाकर इस रहस्य को एक गड्ढे से कह डाला। फिर मिट्टी से गड्ढे को ढक दिया। उस जगह से एक पेड़ निकला। पेड़ की लकड़ी से बनी बाँसुरी।



बाँसुरी ने वह रहस्य सारे गाँव को सुना दिया।

अब सुनो, अफ्रीका देश की एक और कहानी। बहुत समय पहले एक चुहिया थी। वह हर जगह दौड़ती–फिरती। राजा के महल में, झोंपड़ियों में और घर-घर में!

वह चुहिया घरों की दीवारों के छेद में छिप कर कहानियाँ सुनती। फिर उन कहानियों को पेड़ के नीचे गड्ढे में संभालकर छिपा देती। उसे इन कहानियों से बहुत प्यार था।

चुहिया की इन हरकतों को एक लोमड़ी छिप कर देखा करती थी। एक दिन लोमड़ी ने उस गड्ढे को खोदना शुरू किया।



जैसे ही उसने गड्ढा खोदा, वैसे ही कहानियाँ बाहर निकलकर इधर-उधर भागने लगीं। उस दिन से आज तक कहानियाँ दुनिया के कोने-कोने में भाग रही हैं।

वे हमारे, तुम्हारे पास भी आ रही हैं। इन्हें हम बदलकर अपने संगी–साथियों को सुनाते हैं और कहानियाँ दूर-दूर तक फैलती... चलती... रहती हैं!

पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

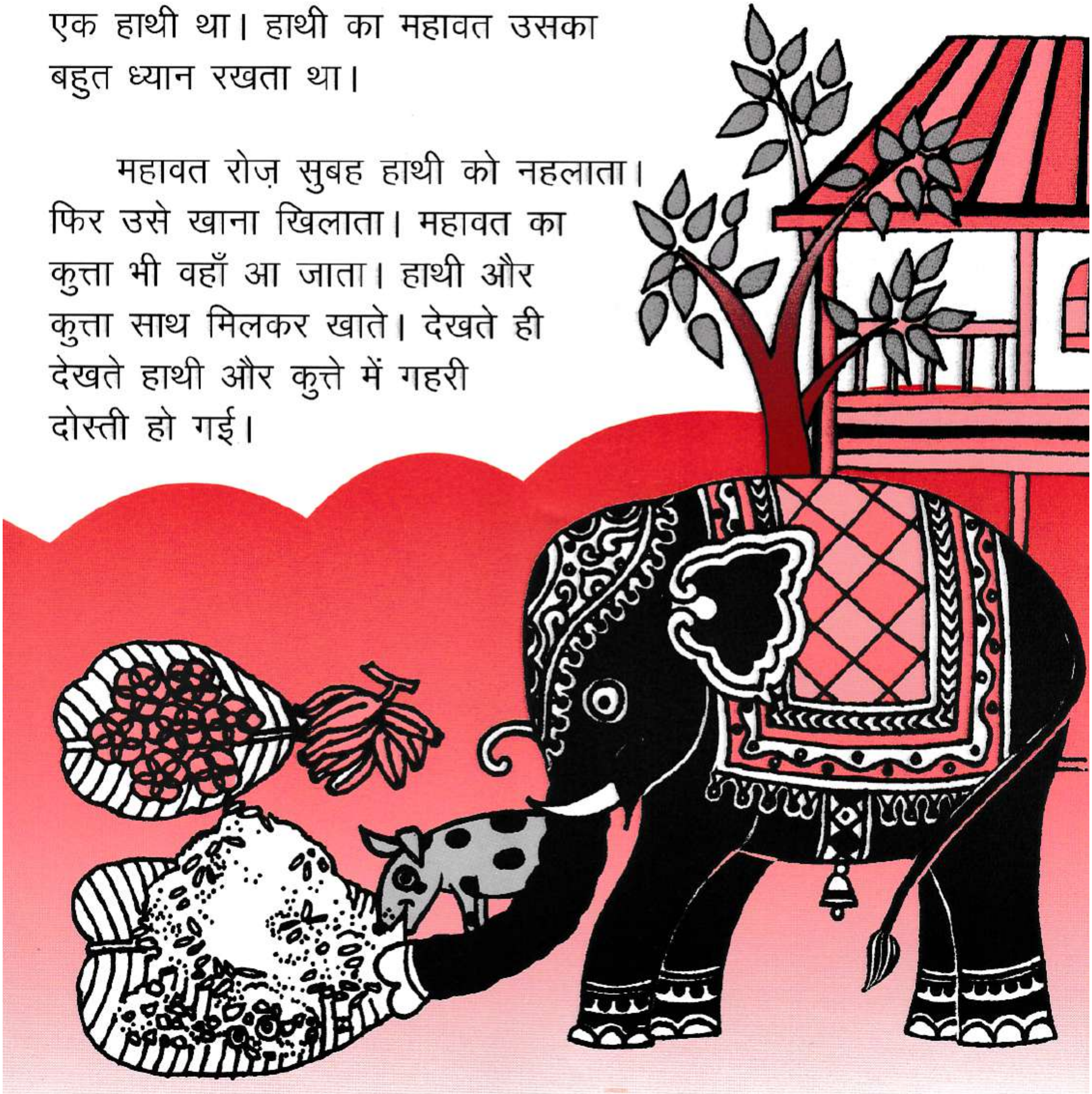
Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

हाथी और कुत्ते की दोस्ती

एक समय की बात है। काशी में ब्रह्मदत्त नाम का राजा राज करता था। उसके पास एक हाथी था। हाथी का महावत उसका बहुत ध्यान रखता था।

महावत रोज़ सुबह हाथी को नहलाता। फिर उसे खाना खिलाता। महावत का कुत्ता भी वहाँ आ जाता। हाथी और कुत्ता साथ मिलकर खाते। देखते ही देखते हाथी और कुत्ते में गहरी दोस्ती हो गई।



हाथी कुत्ते का इंतज़ार करता। अगर कुत्ता नहीं आता तो हाथी भी खाना नहीं खाता। कुत्ता भी हाथी के साथ खूब खेलता। उसकी सूँड पर चढ़कर झूलता।



एक बार महावत को पैसों की ज़रूरत पड़ी। उसने अपने कुत्ते को बेच दिया। कुत्ते का दिल टूट गया। पर बेचारा क्या करता? चुपचाप अपने नए घर चला गया।

हाथी को जब अपना मित्र दिखाई नहीं दिया तो वह बहुत उदास हो गया। उसने खाना खाने से मना कर दिया। नहाने भी नहीं गया। वह दिन भर गुम–सुम बैठा रहता।

हाथी के खाना न खाने का समाचार राजा तक जा पहुँचा। उसने अपने मंत्री को हाथी का हालचाल पूछने भेजा।

मंत्री ने वहाँ पहुँचते ही हाथी की जाँच की। हाथी शारीरिक रूप से तो बीमार नहीं था। मंत्री ने सोचा, 'अवश्य ही इसके मन में कोई चिंता होगी।'

उसने आसपास के सभी लोगों से बातचीत की। लोगों ने मंत्री को बताया कि कुत्ते से बिछड़ने के दुःख में हाथी उदास है। जब से कुत्ता गया है तभी से उसने खाना पीना छोड़ दिया है।

मंत्री ने यह सूचना राजा तक पहुँचाई। राजा ने तुरंत ढोल बजाकर ऐलान करवाया, "जिसके पास भी महावत का कुत्ता हो, वह उसे तुरंत छोड़ दे।"

जिस आदमी ने कुत्ते को खरीदा था उसने भी यह ऐलान सुना।



बस! उसने उसी क्षण कुत्ते की रस्सी काट डाली। कुत्ता छलाँगें लगाता हुआ, कूदता–फाँदता हाथी के पास जा पहुँचा।

दोनों दोस्त एक दूसरे को देखकर बहुत खुश हुए। हाथी ने अपनी सूँड से कुत्ते को उठाया और अपने सिर पर बैठा लिया। उसकी आँखों से खुशी के आँसू छलकने लगे।

महावत भागा–भागा हाथी के लिए खाना लाया। हाथी ने पहले कुत्ते को खिलाया, उसके बाद खुद खाया।



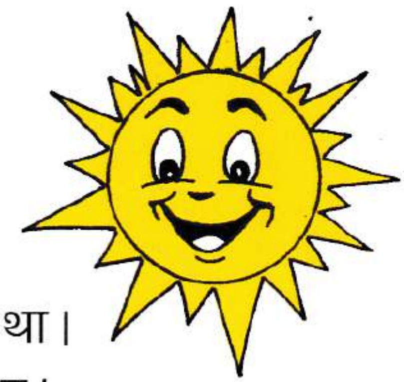
पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

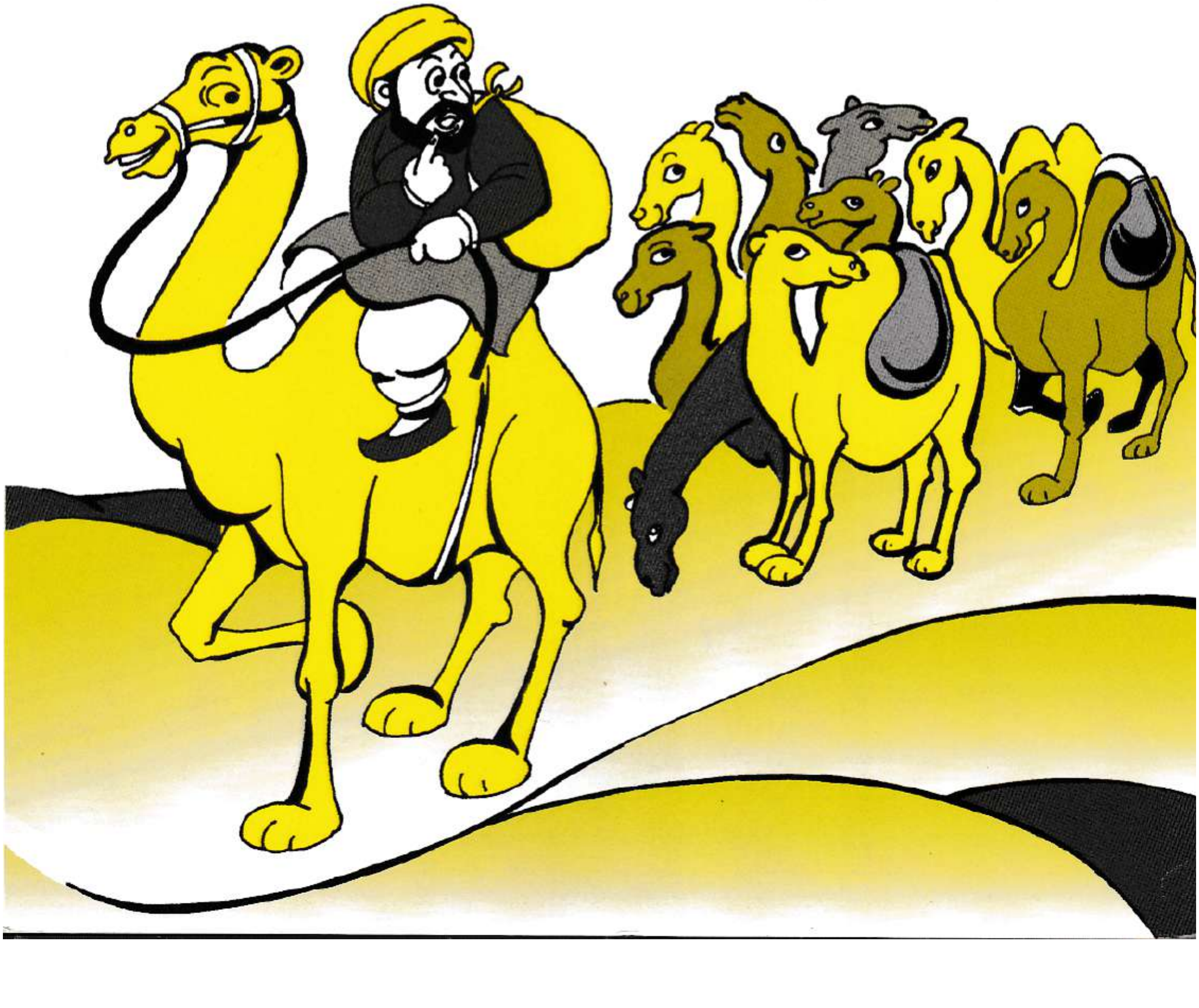
③

नौ या दस

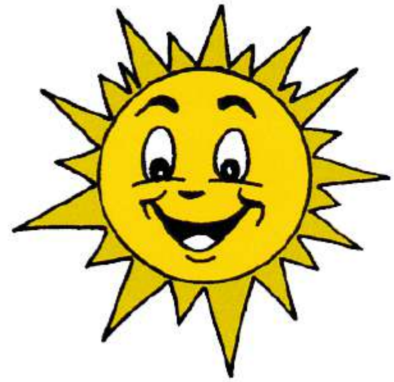


एक बार की बात है। एक व्यापारी अपने दस ऊँटों के साथ रेगिस्तान में यात्रा कर रहा था। वह एक ऊँट पर सवार होकर आगे चल रहा था। बाकी नौ ऊँट उसके पीछे–पीछे आ रहे थे।

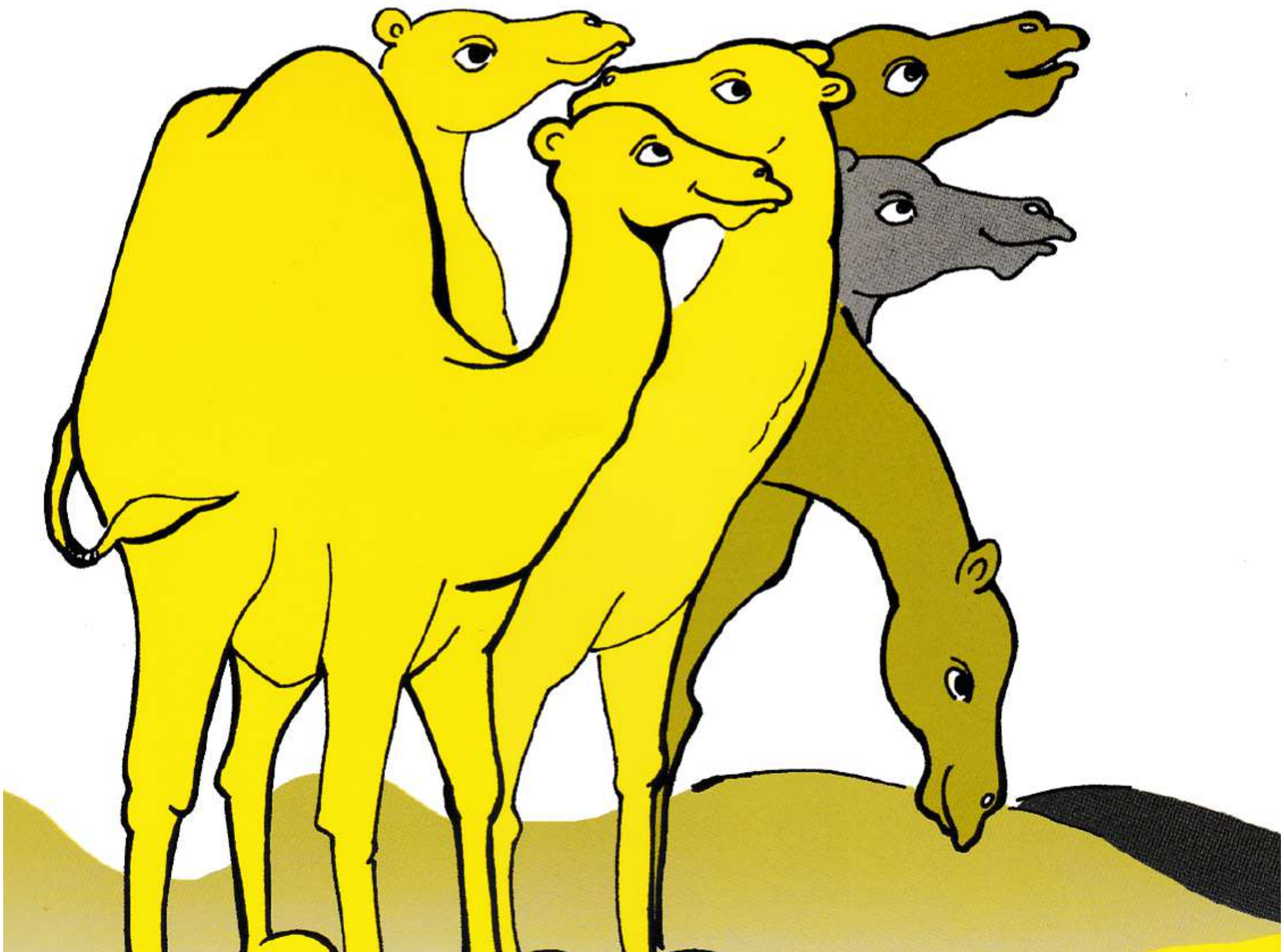
चलते–चलते व्यापारी ने सोचा, 'क्या सभी ऊँट मेरे पीछे आ रहे हैं?' उसने पीछे मुड़कर देखा और गिनने लगा, "एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ...



अरे! एक ऊँट कम हो गया।'' व्यापारी फटाफट नीचे उतरा। अपने खोए हुए ऊँट को यहाँ–वहाँ ढूँढने लगा।



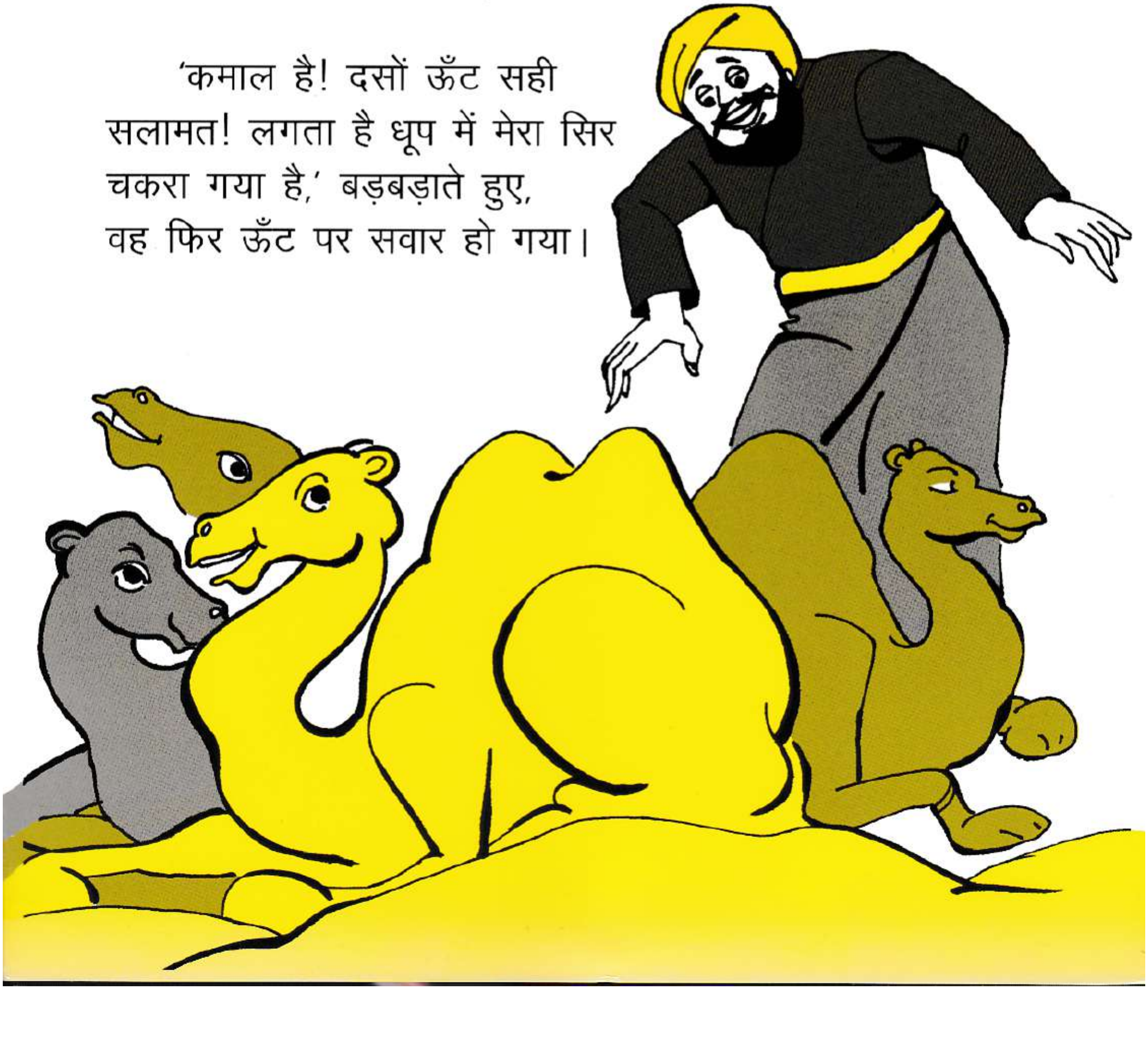
बहुत ढूँढने पर भी ऊँट नहीं मिला। व्यापारी ने सोचा कि शायद गिनने में कोई भूल हो गई होगी। फिर से गिन के देखें? एक, दो..

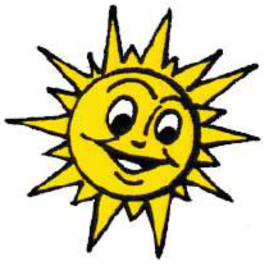


क्या बात है...! सभी ऊँट यहीं हैं। व्यापारी खुशी से ऊँट पर सवार हुआ और अपनी यात्रा पर आगे चल पड़ा। थोड़ी दूर पहुँचने के बाद, एक बार फिर उसे शक हुआ। गिनने पर पाया कि सिर्फ नौ ही ऊँट थे।

व्यापारी हड़बड़ा कर नीचे उतरा और खोए हुए ऊँट को ढूँढने लगा। उसे ऊँट कहीं दिखाई नहीं दिया। थककर वह वहीं लौट आया, जहाँ बाकी ऊँट खड़े थे। फिर से सभी ऊँटों को गिना।

'कमाल है! दसों ऊँट सही सलामत! लगता है धूप में मेरा सिर चकरा गया है,' बड़बड़ाते हुए, वह फिर ऊँट पर सवार हो गया।





चौथी बार मुड़कर उसने फिर से ऊँटों को गिना। 'यह क्या? फिर नौ ऊँट? बार–बार क्यों एक ऊँट कम पड़ रहा है?' व्यापारी को कुछ समझ में नहीं आया।

खूब सोचने के बाद, उसने एक फैसला किया। 'जब भी मैं ऊँट पर सवारी करता हूँ तो एक ऊँट खो जाता है। अब मैं उन्हीं के साथ पैदल चलूँगा,' यह सोचकर व्यापारी कड़ी धूप में ऊँटों के साथ पैदल चलने लगा।



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

जादुई पेंसिल

कासिम को चित्र बनाना बहुत पसंद था। वह नुकीले पत्थर और छोटी लकड़ियों से कच्ची ज़मीन पर चित्र बनाता रहता। उसके पास पेंसिल खरीदने के पैसे नहीं थे।

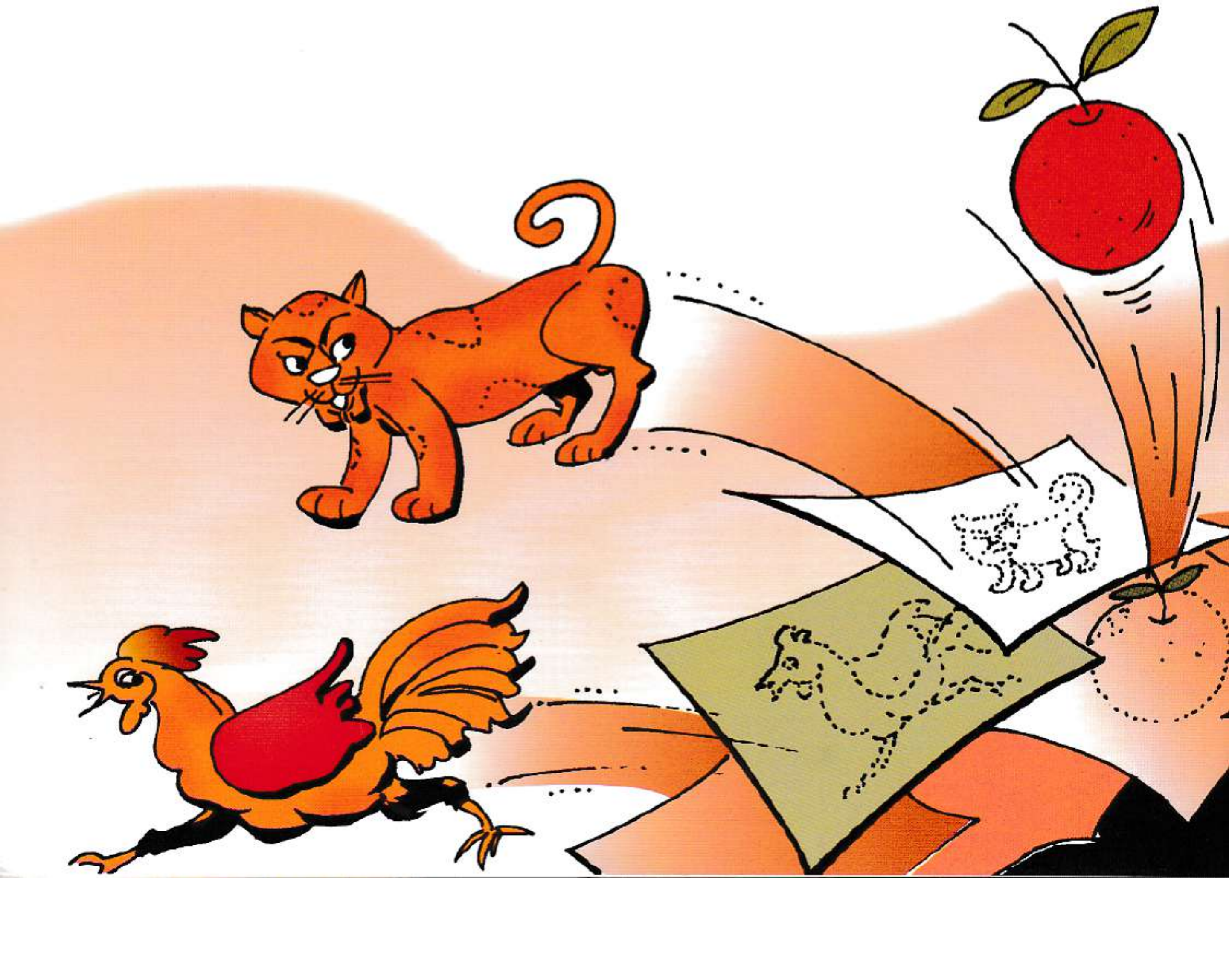
एक दिन उसने सोचा, 'काश! मेरे पास पेंसिल होती। मैं कितने सुंदर चित्र बनाता!' तभी उसे एक बूढ़ा आदमी मिला। उसने कासिम को पेंसिल दी।

"इससे केवल गरीबों को चित्र बनाकर देना," यह कहकर वह बूढ़ा गायब हो गया।



कासिम बहुत खुश हुआ। उसने मुर्गी का चित्र बनाया। वाह! क्या बात है! अचानक वह असली मुर्गी बन गई! फिर उसने बिल्ली का चित्र बनाया। वह भी असली बिल्ली बन गई! अरे यह तो जादुई पेंसिल है!

अब कासिम ने गेंद का चित्र बनाया। वह भी असली गेंद बन गई! फिर उसने कॉपी, लट्टू, कमीज़, फूल आदि के चित्र बनाए– सब के सब असली बन गए! गरीबों ने जो भी माँगा, कासिम ने बनाकर उन्हें दिया।



यह खबर राजा के कानों तक जा पहुँची। राजा ने कासिम को बुलाकर आदेश दिया, "मुझे सोने के सिक्कों से भरा एक पेड़ बनाकर दो।"

"महाराज, आपके पास बहुत धन है। मैं केवल गरीबों के लिए ही चित्र बनाऊँगा," यह कहकर कासिम ने इनकार कर दिया।

राजा को गुस्सा आ गया। उसने आदेश दिया, "इसे जेल में बंद कर दिया जाए।"



पर कासिम क्या जेल में खाली बैठने वाला था? वह चतुर तो था ही! उसने पेंसिल उठाई और एक चाबी का चित्र बना डाला। लो, वह तो असली चाबी बन गई! उसने तुरंत जेल का ताला खोला और वहाँ से भाग निकला।

मलेशिया की कहानी



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू



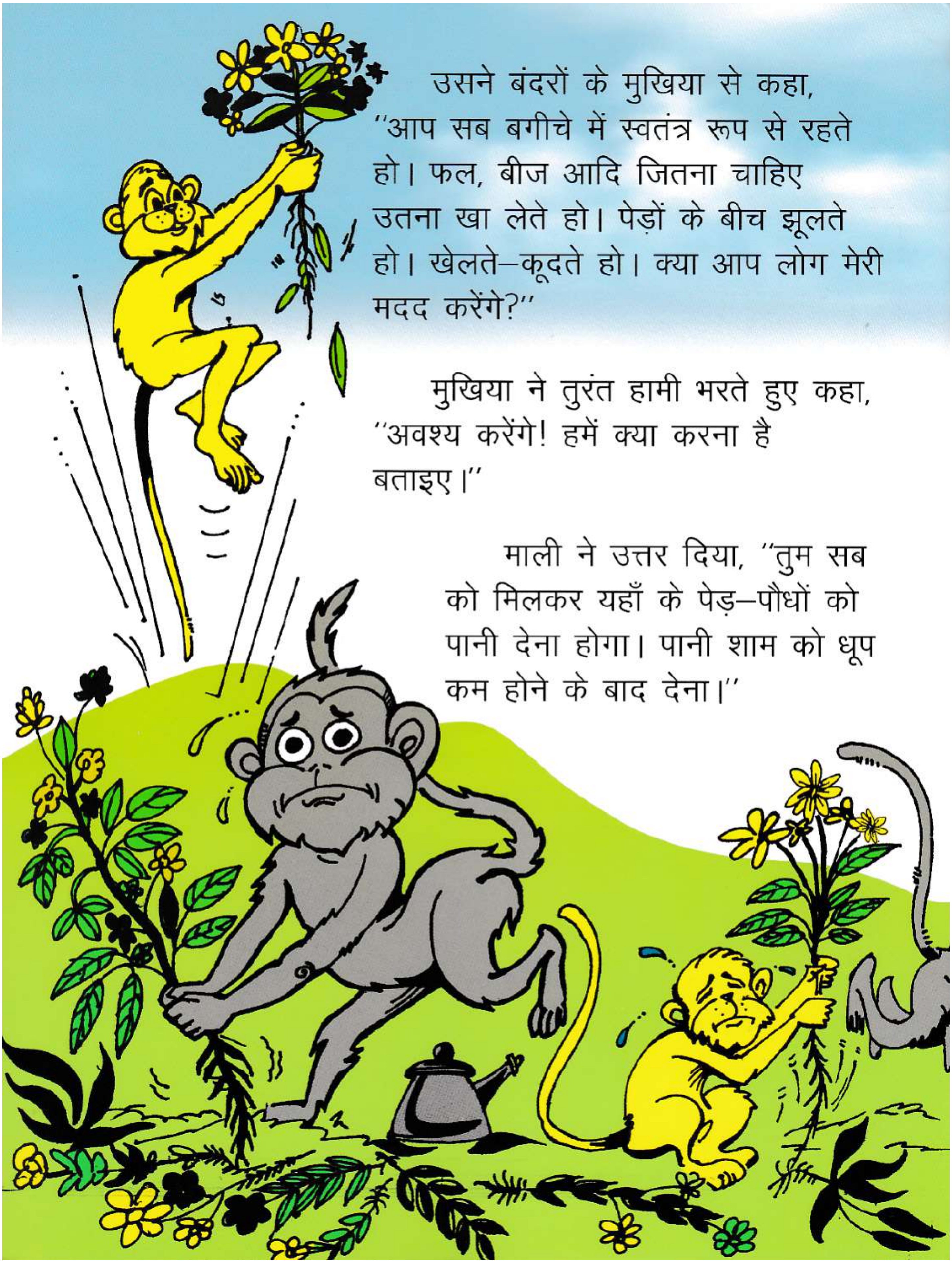
बंदर बने माली

5

एक समय की बात है। एक राजा ने खुशी के मौके पर अपने सभी कर्मचारियों को छुट्टी दे दी। सभी कर्मचारी खुशी–खुशी छुट्टियाँ मनाने चले गए। पर राजमहल का माली नहीं गया।

माली सोच में पड़ गया, 'यदि मैं चला जाऊँगा तो बेचारे पेड़–पौधे सब सूख जाएँगे। क्या करूँ?' कुछ सोच–विचार के बाद वह बाग में रहने वाले बंदरों के पास गया।





उसने बंदरों के मुखिया से कहा, "आप सब बगीचे में स्वतंत्र रूप से रहते हो। फल, बीज आदि जितना चाहिए उतना खा लेते हो। पेड़ों के बीच झूलते हो। खेलते–कूदते हो। क्या आप लोग मेरी मदद करेंगे?"

मुखिया ने तुरंत हामी भरते हुए कहा, "अवश्य करेंगे! हमें क्या करना है बताइए।"

माली ने उत्तर दिया, "तुम सब को मिलकर यहाँ के पेड़–पौधों को पानी देना होगा। पानी शाम को धूप कम होने के बाद देना।"

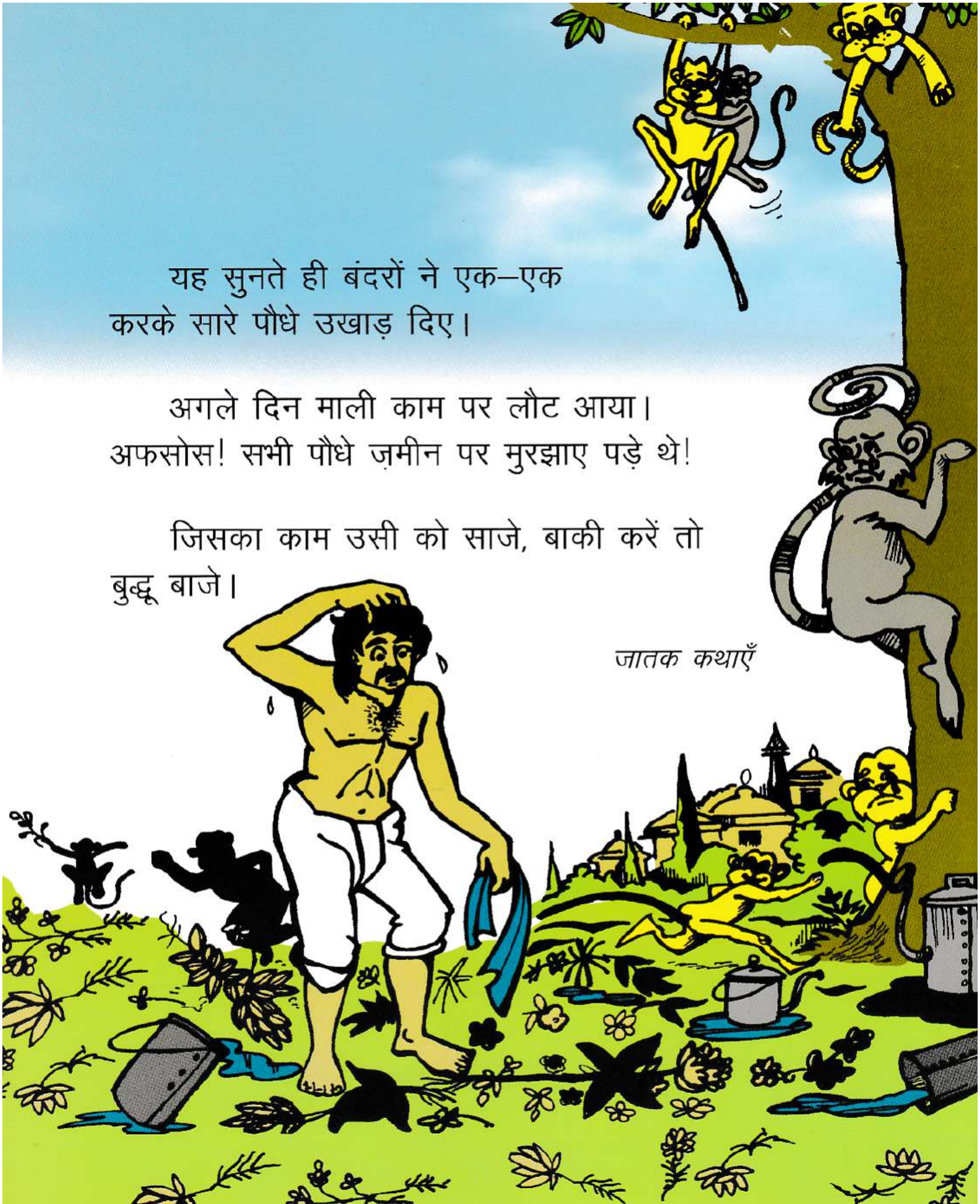
माली ने उन्हें सावधान किया, "पर ध्यान रखना। पानी ठीक मात्रा में देना। ज़रूरत से ज़्यादा नहीं।" फिर वह निश्चिंत होकर गाँव चला गया।

शाम होते ही पानी के घड़े लेकर बंदर चुस्ती से काम पर लग गए। बंदरों के मुखिया ने चेतावनी दी, "हर पौधे को सही मात्रा में पानी देना।"

एक बंदर ने पूछा, "हमें कैसे मालूम पड़ेगा कि हमने हर पौधे को सही मात्रा में पानी दिया कि नहीं?"

मुखिया सोच में पड़ गया। फिर बोला, "हर एक पौधे को उखाड़ कर उसकी जड़ को देखो। लंबी जड़ वाले पौधों को ज़्यादा पानी देना। छोटी जड़ वाले पौधों को कम पानी देना।"





यह सुनते ही बंदरों ने एक–एक करके सारे पौधे उखाड़ दिए।

अगले दिन माली काम पर लौट आया। अफसोस! सभी पौधे ज़मीन पर मुरझाए पड़े थे!

जिसका काम उसी को साजे, बाकी करें तो बुद्धू बाजे।

जातक कथाएँ

पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी
Rajalakshmi Srinivasan Memorial Foundation
चित्रांकनः
एस.पी.राजू

आधा तुम्हारा, आधा मेरा

एक समय की बात है। एक किसान मूँगफली उगाना चाहता था। जंगल के पास की ज़मीन खाली पड़ी थी। किसान ने ज़मीन को जोता, बीज बोए और फसल का इंतज़ार करने लगा।

एक भालू रोज़ उसे दूर खड़ा देखता था।





एक दिन वह भालू उसके पास आया और उसे धमकी दी, ''ओ किसान! मैं तुम्हें खा जाऊँगा।''

किसान काँपने लगा। फिर भी उसने हिम्मत जुटाई और कहा, ''प्यारे भालू भाई! कृपया मुझे मत खाइये। फसल उगने के बाद हम दोनों इसे आधा–आधा बाँट लेंगे। जड़ों वाला हिस्सा मैं ले लूँगा। ज़मीन के ऊपर का हिस्सा आप ले लीजिएगा।'' भालू ने किसान की बात मान ली।

किसान ने बहुत मेहनत की। मूँगफली की फसल खूब अच्छी हुई। फसल काटने का दिन आया। भालू ने अपना हिस्सा माँगा।

समझौते के अनुसार किसान ने ज़मीन के ऊपर वाला हिस्सा भालू को दे दिया। फिर जड़ के हिस्से को अपनी गाड़ी में लाद कर निकल पड़ा।

"रुको!" भालू ने ज़ोर से आवाज़ दी, "मुझे जड़ का हिस्सा चखना है।" भालू ने जड़ का हिस्सा खाया। गुस्से से गरजते हुए वह बोला, "तुमने मुझे धोखा दिया है! जड़ का भाग स्वादिष्ट है। टहनियों और पत्तों में कोई स्वाद नहीं है। इसके बाद इस तरफ कभी मत आना।"

किसान ने भालू को मनाते हुए कहा, "गुस्सा मत कीजिए भालू जी। अगली बार आप जड़ का हिस्सा ले लेना। मैं टहनियों वाला हिस्सा ले लूँगा।"

अगली बार किसान ने फिर उसी स्थान पर मक्का की फसल उगाई। इस बार भी फसल खूब अच्छी हुई। फसल काटने का दिन आया। भालू ने अपना हिस्सा माँगा। किसान ने जड़ वाला हिस्सा भालू को दे दिया और भुट्टे गाड़ी में लाद कर तेज़ी से निकल गया।



भालू ने जड़ खाकर देखी। "छी! छी! इसमें तो कोई स्वाद ही नहीं है। अच्छा! किसान ने फिर मुझे धोखा दे दिया। आने दो उसे! इस बार अच्छा सबक सिखाऊँगा।" भालू गुस्से में किसान का इंतज़ार करता रहा।

पर किसान वहाँ वापिस थोड़े ही आने वाला था!



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

बदला घर

एक गाँव में धनीराम नाम का एक अमीर आदमी रहता था। उसके घर के बाईं ओर एक लौहार का कारखाना था। दाईं ओर एक बढ़ई का मकान था।



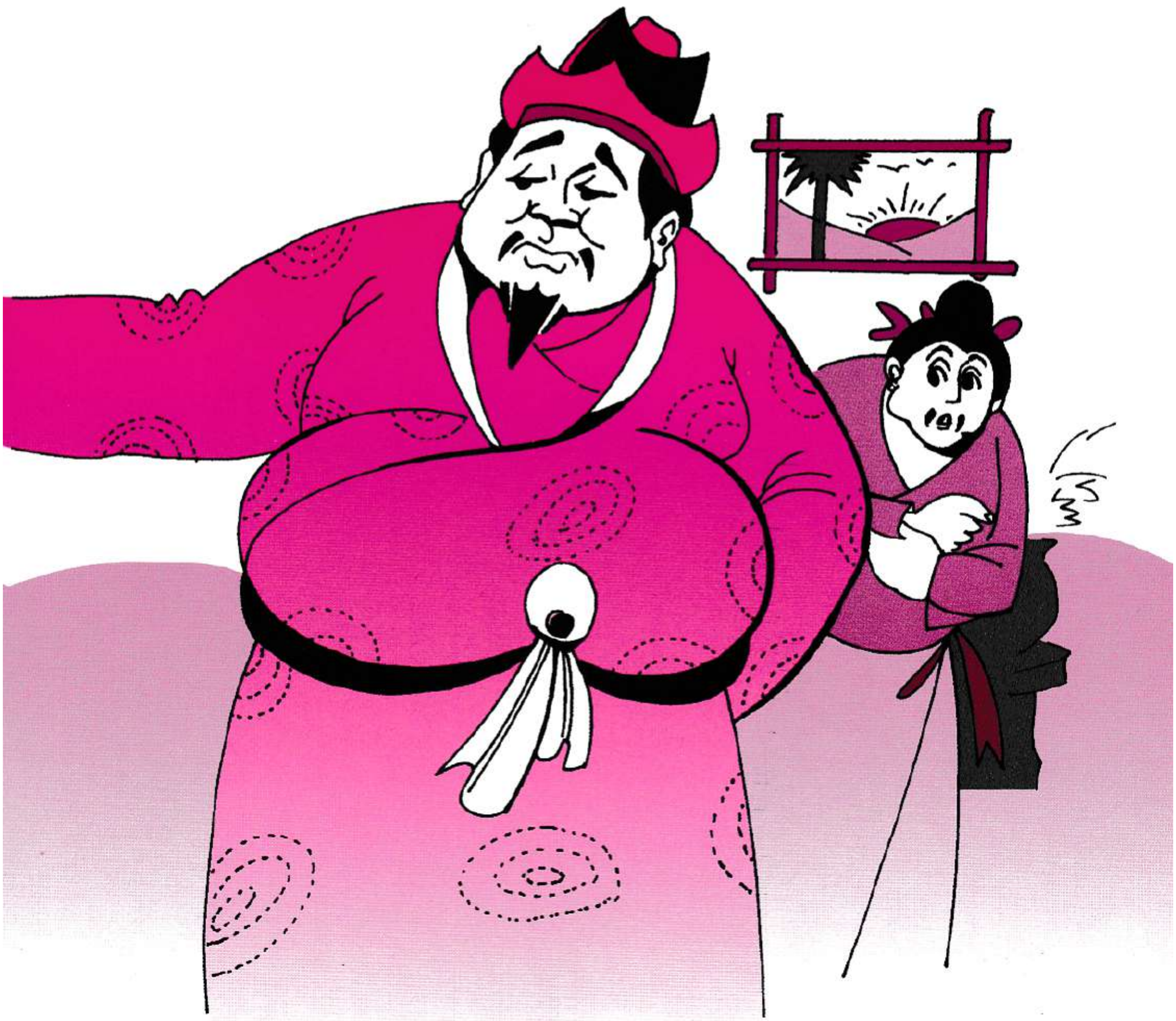
सारा दिन लौहार के कारखाने से आती हथौड़े की आवाज़ से उसके कान फट जाते। दूसरी ओर बढ़ई के घर से लकड़ी काटने की आवाज़ उसे और परेशान कर देती। वह चैन से न आराम कर पाता और न ही सो पाता।

"क्या किया जाए?" धनीराम ने कई दिन सोच विचार किया। फिर एक दिन उसने बढ़ई और लौहार को बुलाया और उनसे कहा, "तुम्हारे घरों से इतना शोर आता है कि मैं चैन से सो नहीं पाता हूँ। तुम दोनों घर बदल लो। इसके बदले में तुम्हें जितना पैसा चाहिए मैं तुम्हें दूँगा।"



"ठीक है, हम ऐसा ही करेंगे," यह कहकर वे दोनों वहाँ से चले गए। थोड़ी देर बाद उन्होंने सामान गाड़ी में लादा और निकल पड़े। उनको जाता देखकर धनीराम बहुत खुश हुआ।

"अच्छा हुआ! दोनों घर खाली कर गए। अब मैं चैन की नींद सो सकूँगा," यह सोचकर वह सोने गया।



दूसरे दिन सुबह धनीराम के घर की दाईं और बाईं ओर से फिर वही आवाज़ें आने लगीं। धनीराम हैरान रह गया। उसने अपने नौकरों को मामले की जाँच करने भेजा।

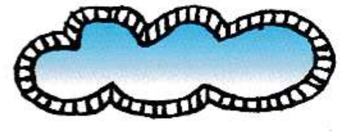
वापिस आकर नौकरों ने बताया, ''दोनों ने अपने घर बदल लिए हैं हुज़ूर। लौहार के घर में बढ़ई चला गया और बढ़ई के घर में लौहार!'

कोरिया की कहानी



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू



8

पक्षी किसका



सुबह का समय था। बगीचे में रंग बिरंगे फूल खिले हुए थे। पक्षी चहचहा रहे थे।

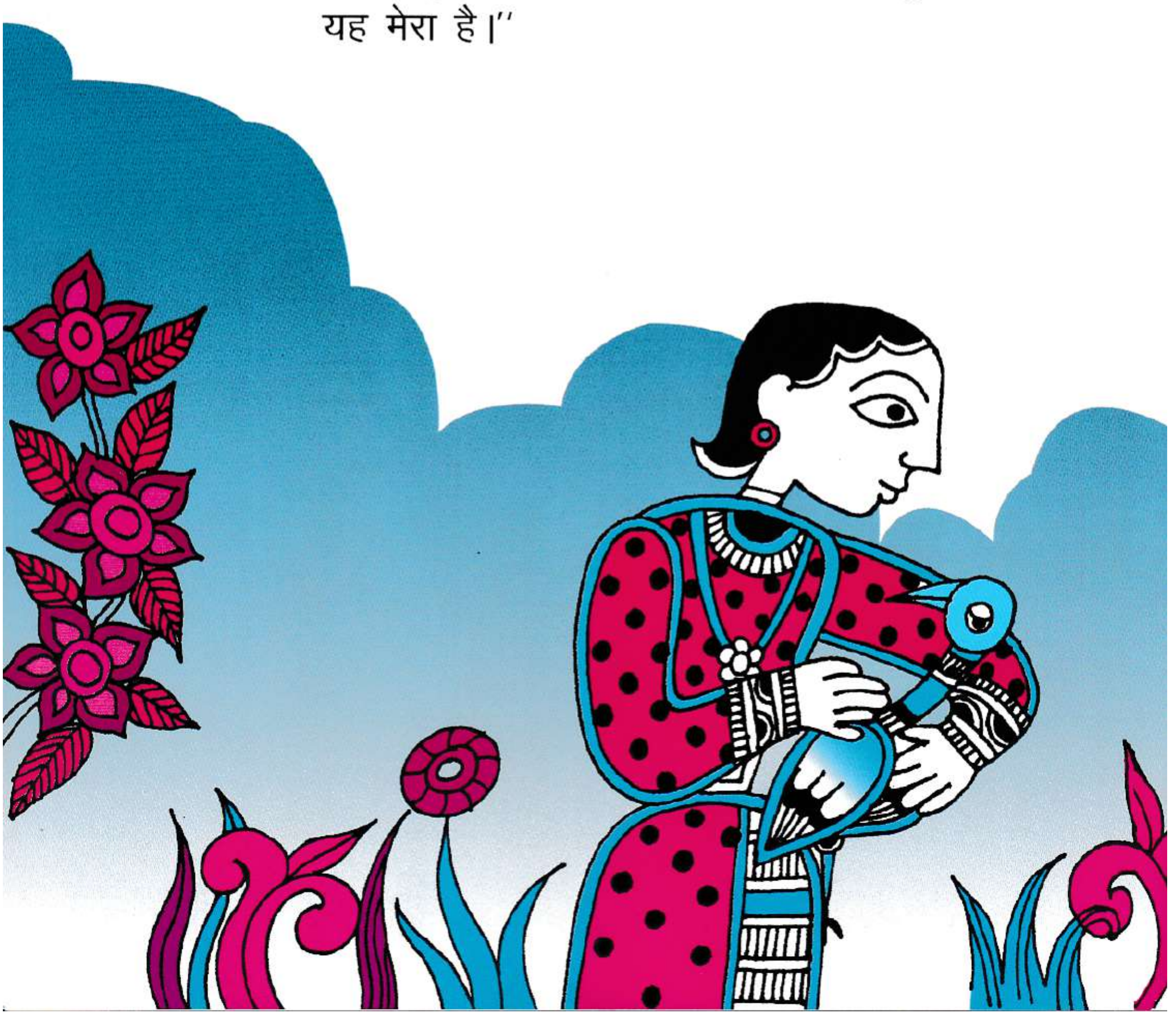
राजकुमार सिद्धार्थ बगीचे में टहल रहा था। अचानक पक्षियों के चीखने की आवाज़ आई। सभी पक्षी घबरा कर इधर–उधर उड़ने लगे।



सिद्धार्थ चारों ओर देखते हुए सोचने लगा, 'इन पक्षियों को क्या हुआ?' तभी उसके पाँव के पास एक हंस आकर गिरा। उसके शरीर में एक तीर चुभा हुआ था। वह दर्द से तड़प रहा था।

सिद्धार्थ ने हंस को उठाया। उसके बदन में चुभे हुए तीर को बड़ी ही सावधानी से बाहर निकाला। घाव पर मरहम लगा कर उसे अपनी गोद में रखा और प्यार से उसके शरीर को सहलाया। तब जाकर हंस की कंपन कुछ कम हुई।

थोड़ी देर में सिद्धार्थ का भाई देवदत्त वहाँ दौड़ते हुए आया और बोला, "पक्षी को मुझे दे दो। यह मेरा है।"



सिद्धार्थ ने कहा, "पक्षी मेरा है। उसे मैंने बचाया है।" यह कहकर वह पक्षी की पीठ सहलाते हुए राजमहल की ओर चल पड़ा। देवदत्त ने उसका पीछा किया।

दोनों राजा के पास जा पहुँचे। देवदत्त ने शिकायत की, "सिद्धार्थ मेरे पक्षी को नहीं दे रहा।"

सिद्धार्थ ने कहा, "पिताजी, देवदत्त ने तीर चलाकर पक्षी को घायल किया। मगर मैंने उसकी जान बचाई। इसलिए पक्षी मेरा है।"



देवदत्त ने कहा, "नहीं पिताजी, मैंने ही पक्षी को पहले देखा। इसलिए पक्षी मेरा है।"

राजा कुछ पल सोच में पड़ गए। फिर अपना फैसला सुनाया, "देवदत्त! तुमने पक्षी को मारना चाहा, मगर सिद्धार्थ ने उसे बचाया है। मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। इसलिए पक्षी सिद्धार्थ का ही है।"



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

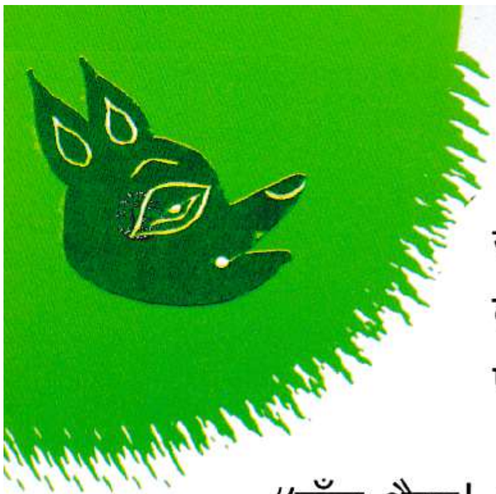
चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

ऊँट और सियार

"ऊँट भैया! ज़रा नदी के उस पार खेत को देखो। वहाँ खूब सारे खीरे लगे हैं। क्या हम आज वहाँ चलें?" सियार ने उत्सुकता से पूछा।

ऊँट ने कहा, "हाँ! हाँ! ज़रूर चलेंगे।" ऊँट ने सियार को अपनी पीठ पर बैठा लिया। दोनों नदी पार करके खीरे के खेत में घुस गए और खीरे खाने लगे। खीरे बहुत स्वादिष्ट थे।





सियार का पेट तो छोटा था। दो चार खीरे खाते ही भर गया। उत्तेजित होकर वह इधर से उधर भागने लगा। ऊँट फल खाने में मस्त था।

''ऊँट भैया! क्या अभी तुम्हारा खाना पूरा नहीं हुआ?'' सियार बार–बार पूछता।

ऊँट जवाब देता, ''मेरा पेट बड़ा है न! अभी आधा पेट भी नहीं भरा। थोड़ी देर चुप रहो और मुझे खाने दो।''

पर सियार को चैन कहाँ? ''पेट भर खाने के बाद मुझसे चुप नहीं रहा जाता,'' यह कहते हुए सियार आसमान की ओर देखकर 'हुआ हुआ' करने लगा।



आवाज़ सुनकर आस–पास से गाँव वाले डंडे लेकर भागते हुए आए। सियार तो तेज़ी से भाग निकला और नदी के किनारे जा पहुँचा।

बेचारा ऊँट! भाग नहीं पाया और फँस गया! उसने खूब मार खाई। दर्द से तड़पते हुए वह नदी के किनारे पहुँचा।

सियार ने हमदर्दी का नाटक करते हुए कहा, ''हाय भैया! कितनी बुरी तरह पीटा है तुम्हें! मुझे बहुत दुख हो रहा है।''

ऊँट ने कहा, ''कोई बात नहीं। मेरे ऊपर चढ़ जाओ। यहाँ से जल्दी निकल चलते हैं।'' दोनों नदी के बीचों बीच पहुँचे। तब ऊँट अचानक रुक गया और कमर हिलाते हुए दाएँ–बाएँ झूमने लगा।

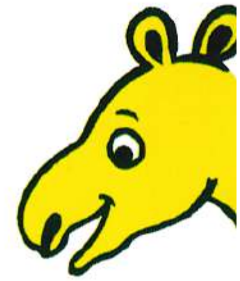


सियार ने चौंक कर पूछा, "अरे भाई! ऐसे क्यों झूम रहे हो? मैं नदी में गिर जाऊँगा।"

ऊँट ने कहा, "पेट भर खाना खाने के बाद इस तरह पानी में लोटना मेरी आदत है। मैं क्या करूँ?" यह कहकर ऊँट पानी में लोटने लगा।

बेचारा सियार! पानी में गिर पड़ा।

पंचतंत्र की कहानी





10 होशियार डंडी



'फट' एक डंडी पेड़ से टूट कर गिर पड़ी।

गिरी हुई डंडी चुप–चाप वहीं पड़ी रही क्या?



बिल्कुल नहीं। जगह–जगह सैर करने निकल पड़ी। वह बहती हुई दरिया में मज़े से तैरती खेलती रही।

अचानक उसने गाने की आवाज़ सुनी। डंडी ने ऊपर देखा। कोयल गा रही थी।

डंडी मग्न होकर गाना सुनने लगी। वह कोयल की प्रशंसा करना चाहती थी, पर कुछ बोल न पाई।

आगे चलकर उसने गिलहरियों को खाना जुटाते हुए देखा।





डंडी ने उन्हें बताना चाहा कि, "मेरे पास बीज इकट्ठे करने का बेहतर उपाय है।" पर वह खामोश रही। एक डंडी पर कौन विश्वास करेगा?

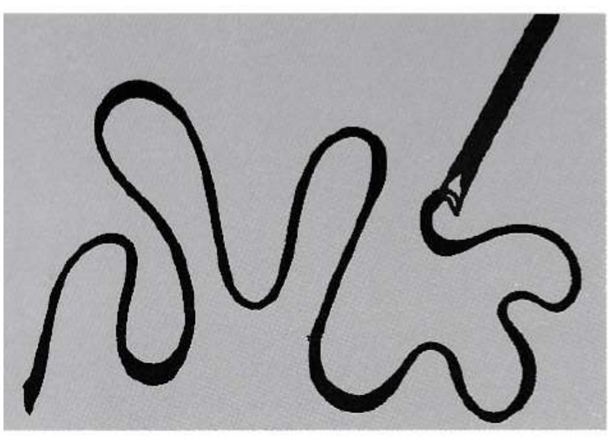
थोड़ी दूर पर उसकी मुलाकात एक मेंढक से हुई। मेंढक एक कविता लिख रहा था।

दो–चार पंक्तियाँ कहकर डंडी उसकी मदद करना चाहती थी। पर ऐसा नहीं कर पाई।



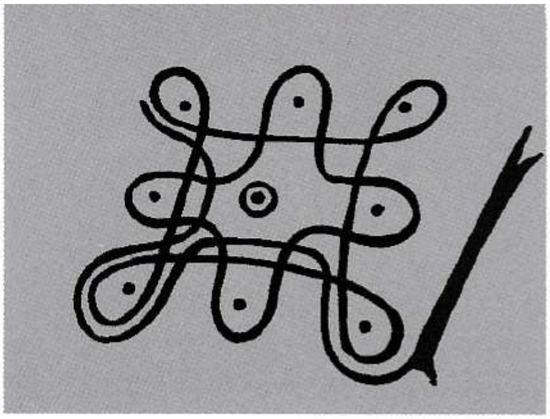
पास की झाड़ियों में उसने गुलाब का एक फूल देखा।

डंडी ने उससे कहना चाहा, "तुम कितने सुंदर हो।" अफसोस! वह अपने भाव व्यक्त नहीं कर पाई।



उदास होकर डंडी अपने आप को घसीटते हुए घर की ओर चल पड़ी।

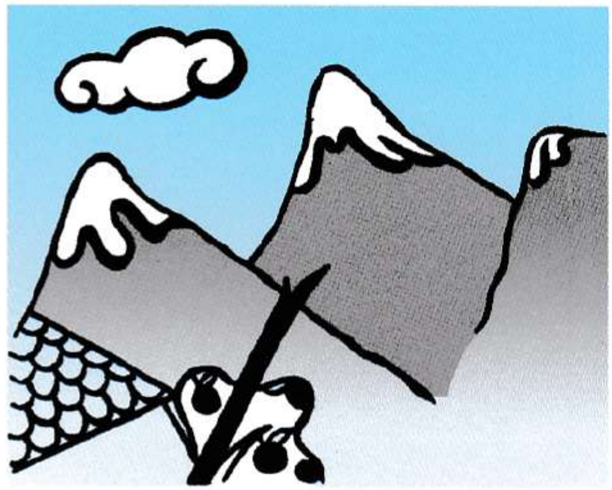
घर आकर उसने मुड़कर देखा। आह! ये क्या, चलने से रेत पर लकीरें खिंच गईं! डंडी खुशी से झूम उठी।



उसने कुछ और लकीरें खींचीं और वह चित्र बनाने लगी।

जैसे–जैसे वह चित्र बनाती गई, पेड़–पौधे, जानवर और पक्षी सभी ध्यान से देखने लगे। मगर डंडी ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया।

वह धड़ा–धड़ चित्र बनाती गई। जंगल की ज़मीन पर एक शानदार दृश्य बन गया। जिसे आज तक उस जंगल में किसी ने देखा ही नहीं था।



सभी डंडी का हौसला बढ़ाने लगे।



तितलियाँ गुनगुनाने लगीं। पेड़ झूमते हुए डंडी की प्रशंसा करने लगे। गुलाब डंडी को देखकर मुस्कराया।





'टप...टप...' तभी वर्षा की बूँदें टपकने लगीं। सभी जानवर इधर–उधर छिप गए।

ओह! पल भर में डंडी का खूबसूरत चित्र मिट गया।

डंडी को इस पर कोई अफसोस नहीं हुआ। उसे मालूम था कि वह जब चाहे इससे भी खूबसूरत चित्र बना सकती है और अपने मन की सारी बातें कह सकती है।

जॉन लेकनर की कहानी,
क्लेवर स्टिक पर आधारित



कथा झरना टीम 2008
पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

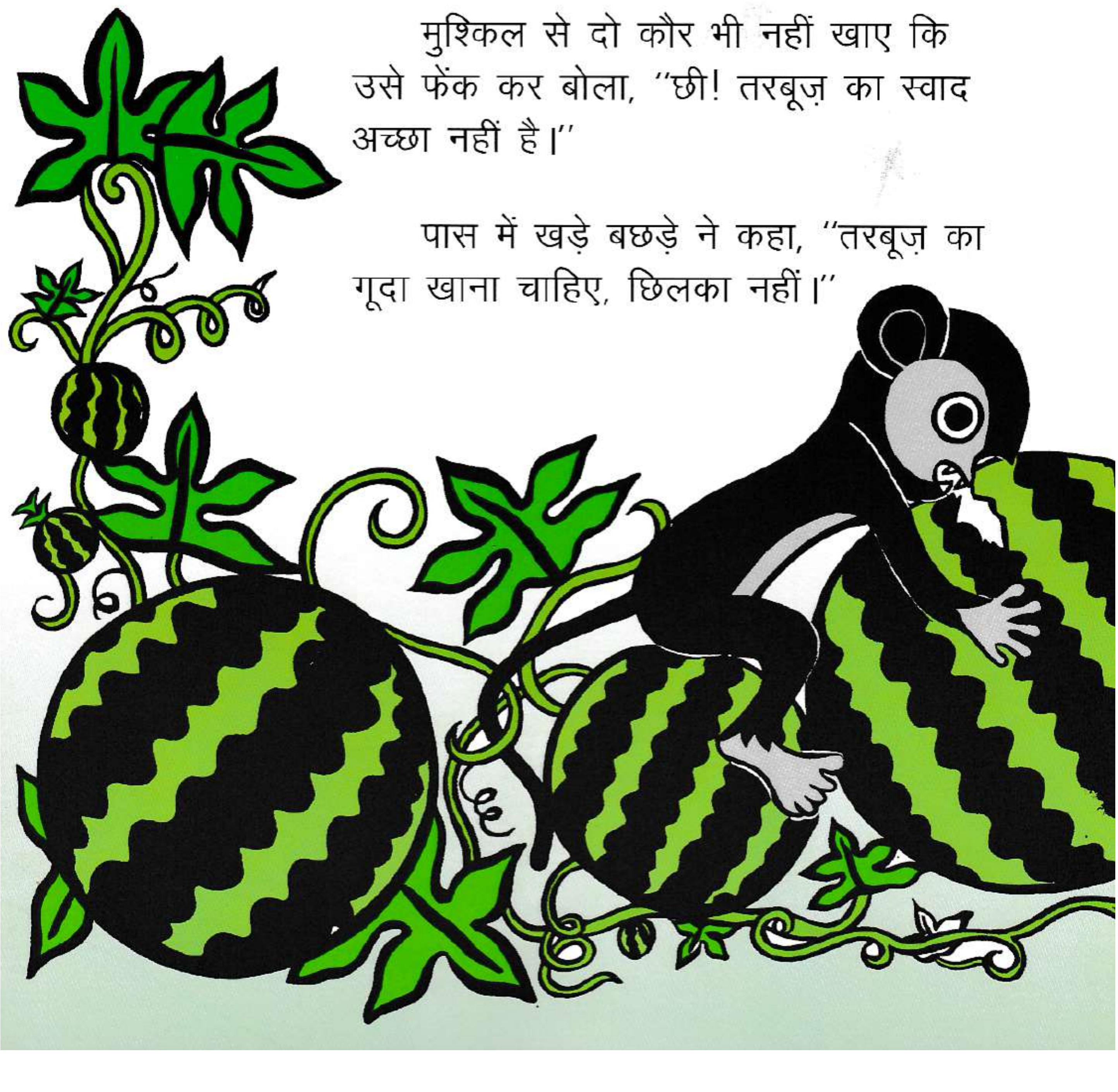
चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

नन्हे बंदर ने फल खाए

एक दिन एक नन्हा बंदर तरबूज़ के खेत में जा घुसा। उसने पहली बार तरबूज़ देखा था। उसने एक तरबूज़ तोड़ा और उसका मोटा छिलका खाने लगा।

मुश्किल से दो कौर भी नहीं खाए कि उसे फेंक कर बोला, "छी! तरबूज़ का स्वाद अच्छा नहीं है।"

पास में खड़े बछड़े ने कहा, "तरबूज़ का गूदा खाना चाहिए, छिलका नहीं।"



बछड़े की बात पूरी सुने बिना ही बंदर भागने लगा और बोला, ''गूदा खाया जाता है, कौन नहीं जानता?''

फिर नन्हा बंदर खरबूज़े के खेत में पहुँचा। एक खरबूज़ा तोड़ा और उसके बीज का अंश खाने लगा।

एक नन्हा गधा उसके पास आया और बोला, ''अरे भाई! छिलके के नीचे का नरम गूदा खाना चाहिए। उसके बीज का अंश नहीं।''





नन्हे बंदर ने मुँह का कौर थूक दिया और कहा, ''यह तो मुझे पहले से ही पता है।''

फिर नन्हा बंदर बादाम के एक पेड़ पर चढ़ गया। उसने एक बादाम तोड़ा और खाने लगा। तभी नीलकंठ उड़ता हुआ आया और बोला, ''बादाम का बाहरी खोल नहीं खाते...''

नन्हे बंदर ने उसकी बात काट दी और कहा, ''मुझे सब पता है।'' उसने बादाम के भीतरी छिलके में दाँत गड़ा दिया। ''हाय! मेरा दाँत टूट गया,'' नन्हा बंदर कलाबाजी लगाते हुए पेड़ से नीचे कूद पड़ा।





नीलकंठ ने दोबारा समझाया, "बादाम का भीतरी छिलका नहीं खाते, उसकी गिरी खानी चाहिए।"

फिर नन्हा बंदर नाशपाती के एक वृक्ष पर चढ़ गया। एक नाशपाती तोड़ी। उसे टहनी पर मार–मार कर उसका कचूमर निकाल दिया और नाशपाती के बीज खाने लगा। "हाय! हाय! बहुत कड़वा है।"

नीलकंठ फिर उड़कर आया और पूछा, "स्वाद कैसा है?" नन्हे बंदर को गुस्सा आ गया। नाशपाती नीलकंठ की ओर फेंकी और चिल्लाया, "मैं कभी फल नहीं खाऊँगा।"

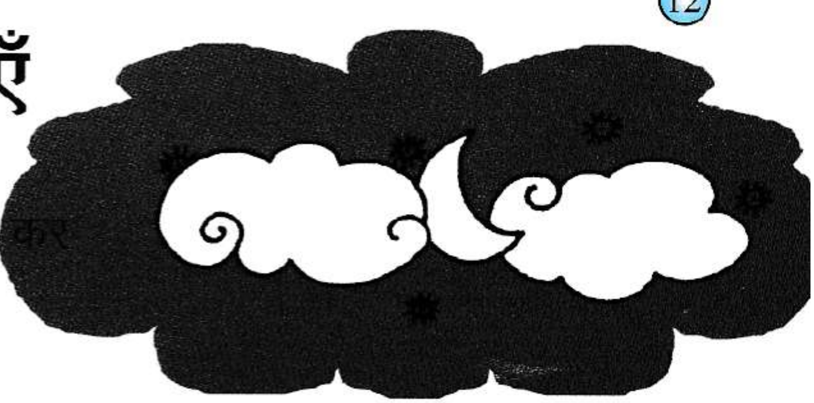
चीन की कहानी



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

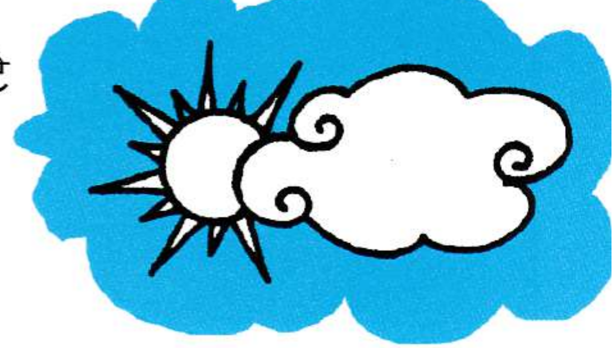
चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

आओ पता लगाएँ



दौड़ दौड़ कर, लुढ़क लुढ़क कर
गड्ढों में से उछल कूद कर
दूर दूर तक चलता जाता
जीवों की वह प्यास बुझाता।

गरीब का है बिछौना
हर कहीं पर फैला
लपेटने से भी ना लिपटे
कौन है ये अलबेला



बिना तन खेले, घूमे, ऐसी खास
बिना उसके नहीं जीवों में भी साँस
बिना दिखे छूकर निकले ऐसा उसका राज़

कागज़ दो तो वह खा जाए
पानी पीते ही मर जाए



नीली छत है ऊपर मेरे
पकड़ न उसको पाऊँ
उसके जितना पास जाऊँ
खाली हाथ ही आऊँ

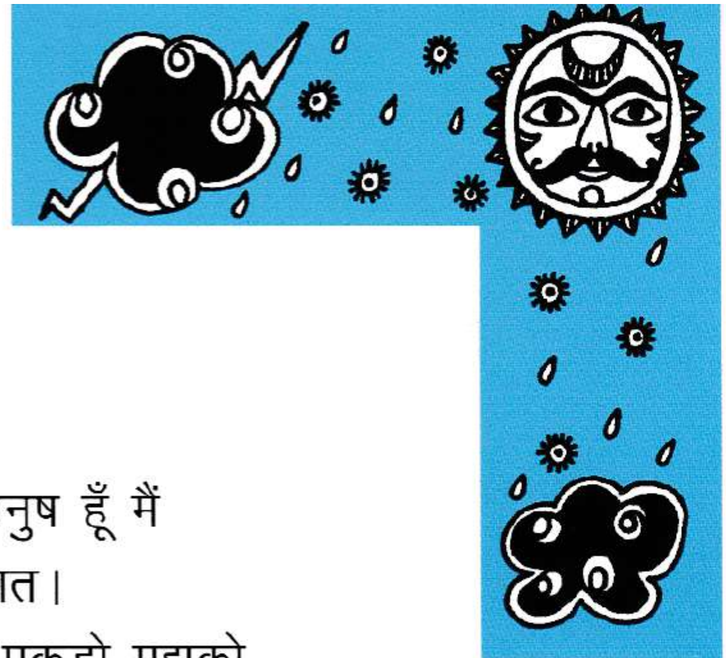
आसमान में चमचमाती
गड़गड़ गड़गड़ शोर मचाती
नज़र किसी की मुझ पर आए
झट से आँखें बंद हो जातीं

झम झमा झम खूब गिरती
वह आए तो धरती हँसती

आसमान में उड़ता रहता
भाप बूँद में मेरी जान
गोरे से जब बनता काला
बरस पड़ूँ खुद से अनजान

एक बाग है ऐसा जिसमें, रात को फूल निकलते
सुबह होने पर सो जाते, हाथ किसी के ना आते





उछल उछल कर कूदे गाए
जीवों को है दिल में समाए
नदियों को है गले लगाए
दुनिया को भी सैर कराए

सबसे बड़ा धनुष हूँ मैं
रंग हैं मेरे सात।
चाहे जितना पकड़ो मुझको
ना आऊँ किसी के हाथ

उसके बिन धरती न घूमती, न होती फसलों में जान
रात न होती, दिन न होते, न होती गर्मी न सावन

आसमान में रहता हूँ मैं, सब बच्चों का मामा
दिन में छिपूँ, रात में निकलूँ, करता रामा श्यामा

हवा, वर्षा, पृथ्वी, इंद्रधनुष,
आकाश, सूरज, बिजली, चाँद,
आग, तारे, बादल, पानी, समुद्र

आस–पास में बने अगर कुछ, झट से वह बतलाए
गंध हो या हो दुर्गंध उससे छुप ना पाए

तू मीठा, तू खट्टा–तीखा, तुझमें नमक है कम
मैं ही यह सब बता सकूँ और न किसी में है दम

पेड़ पर बैठा है तोता और बतख मछली खा रही है
कौन है वो जल्दी बताओ, जो मुझे यह बता रही है

कोयल प्यारा गाती है, चिड़िया चहचहाती है
कैसे मैंने जाना यह सब, चिल्लाया जो हाथी है

शरीर का कवच है, सर्दी गर्मी जाने मतवाला
हर एक का रंग अलग गोरा हो या काला

त्वचा, आँख, नाक, जीभ, कान

पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

चूहों का जुलूस

चूहों को पकड़ने के लिए बिल्ली रानी ने एक योजना बनाई।

एक दिन बिल्ली ने अपने आस–पास रहने वाले सभी चूहों को बुलाया और कहा, "दोस्तों! मैं इतने दिन से आपको परेशान करती आई हूँ। मुझे इसका बहुत अफसोस है। आगे से आप सबको चैन से जीने देना चाहती हूँ। मेरा सिर्फ एक निवेदन है। आप सब सुबह और शाम एक कतार में मेरे सामने आइए। मुझे नमस्ते करके निकल जाइए। यही काफी है।" चूहों ने भी खुशी से हामी भर दी।

बिल्ली रोज़ एक सिंहासन पर बैठ जाती। सब चूहे एक पंक्ति में आते। सलाम करके आगे निकल जाते। जो चूहा अंत में आता उसे बिल्ली झपट कर पकड़ लेती। बाकी चूहों को इस चाल का पता नहीं चलता।



इन चूहों के झुंड में अंभो–शंभो नाम के दो होशियार चूहे थे। उन्होंने पता लगा लिया कि चूहों की संख्या घट रही है। दोनों ने मिलकर एक योजना बनाई। अंभो ने लाईन में सबसे आगे और शंभो ने अंत में खड़े होने का फैसला किया।

अंभो ने आगे खड़े होकर पुकारा, "शंभो तू कहाँ है?" शंभो ने तुरंत जवाब दिया, "अंभो! मैं यहीं हूँ।" इस तरह पंक्ति में चलते–चलते एक दूसरे को आवाज़ देते रहे।

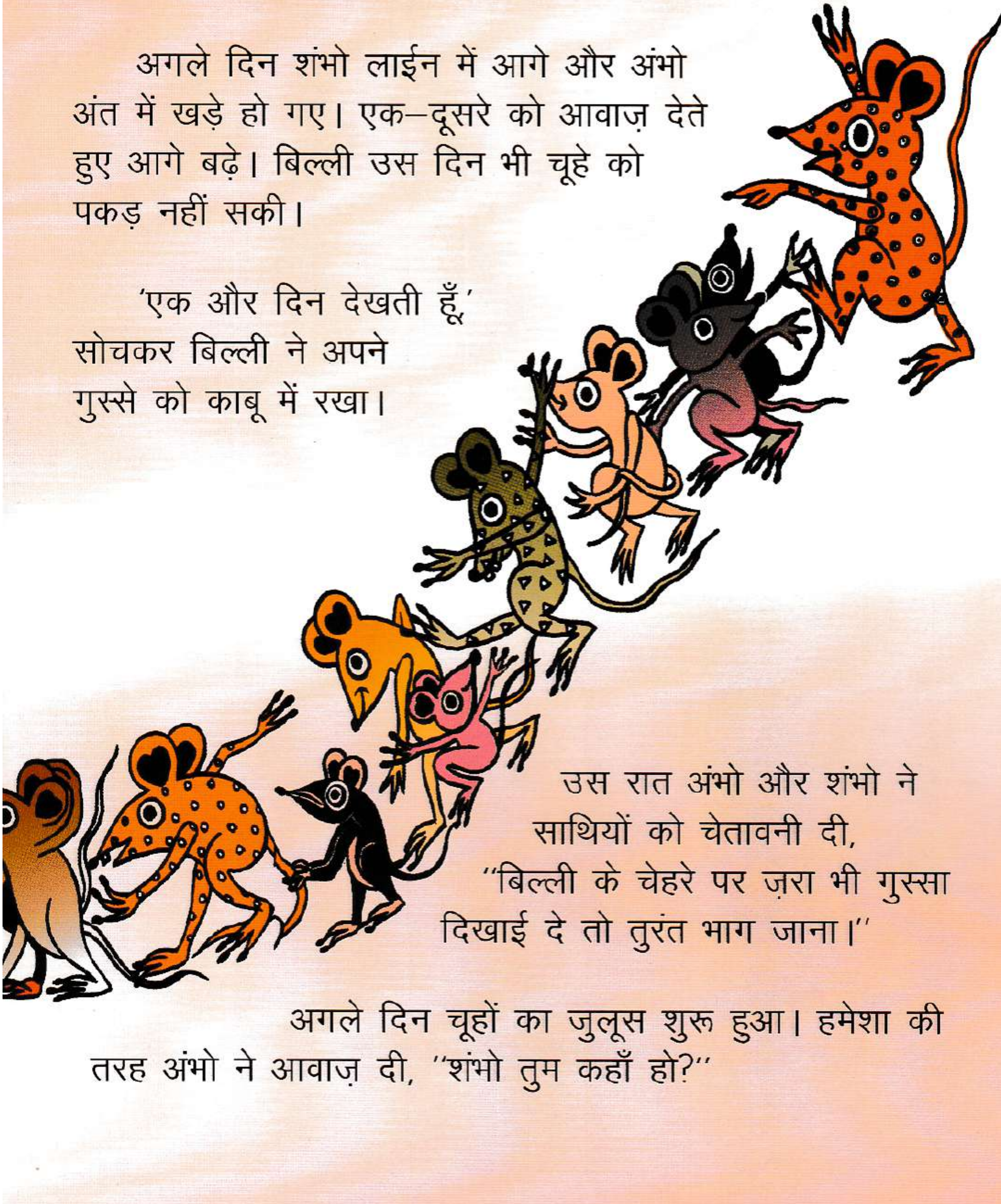
बिल्ली कुछ न कर सकी। अगर वह आखिरी चूहे को खाती तो उसकी पोल खुल जाती न! उस दिन बिल्ली भूखी रह गई। सोई भी नहीं।



बिल्ली ने सोचा, "आज जो घटना घटी वह अनजाने में हुई होगी। कल किसी भी तरह आखिरी चूहे को पकड़ लूंगी।"

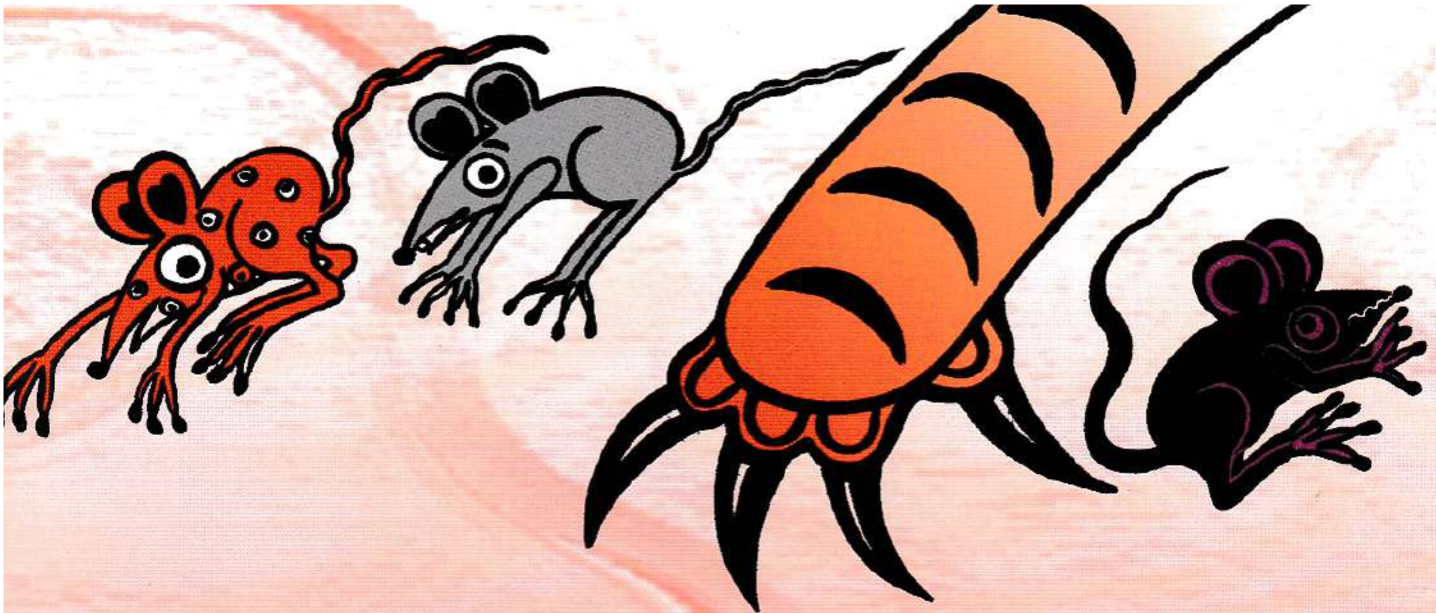
अगले दिन शंभो लाईन में आगे और अंभो अंत में खड़े हो गए। एक–दूसरे को आवाज़ देते हुए आगे बढ़े। बिल्ली उस दिन भी चूहे को पकड़ नहीं सकी।

'एक और दिन देखती हूँ,' सोचकर बिल्ली ने अपने गुस्से को काबू में रखा।



उस रात अंभो और शंभो ने साथियों को चेतावनी दी, "बिल्ली के चेहरे पर ज़रा भी गुस्सा दिखाई दे तो तुरंत भाग जाना।"

अगले दिन चूहों का जुलूस शुरू हुआ। हमेशा की तरह अंभो ने आवाज़ दी, "शंभो तुम कहाँ हो?"



बस! बिल्ली और सहन न कर पाई। चूहों के ऊपर झपट पड़ी।



चूहे तो पहले से ही तैयार थे। वे थोड़े ही फँसने वाले थे! बिजली की तरह भागकर गायब हो गए! बिल्ली हाथ मलती रह गई।



तिब्बत की लोक कथा



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

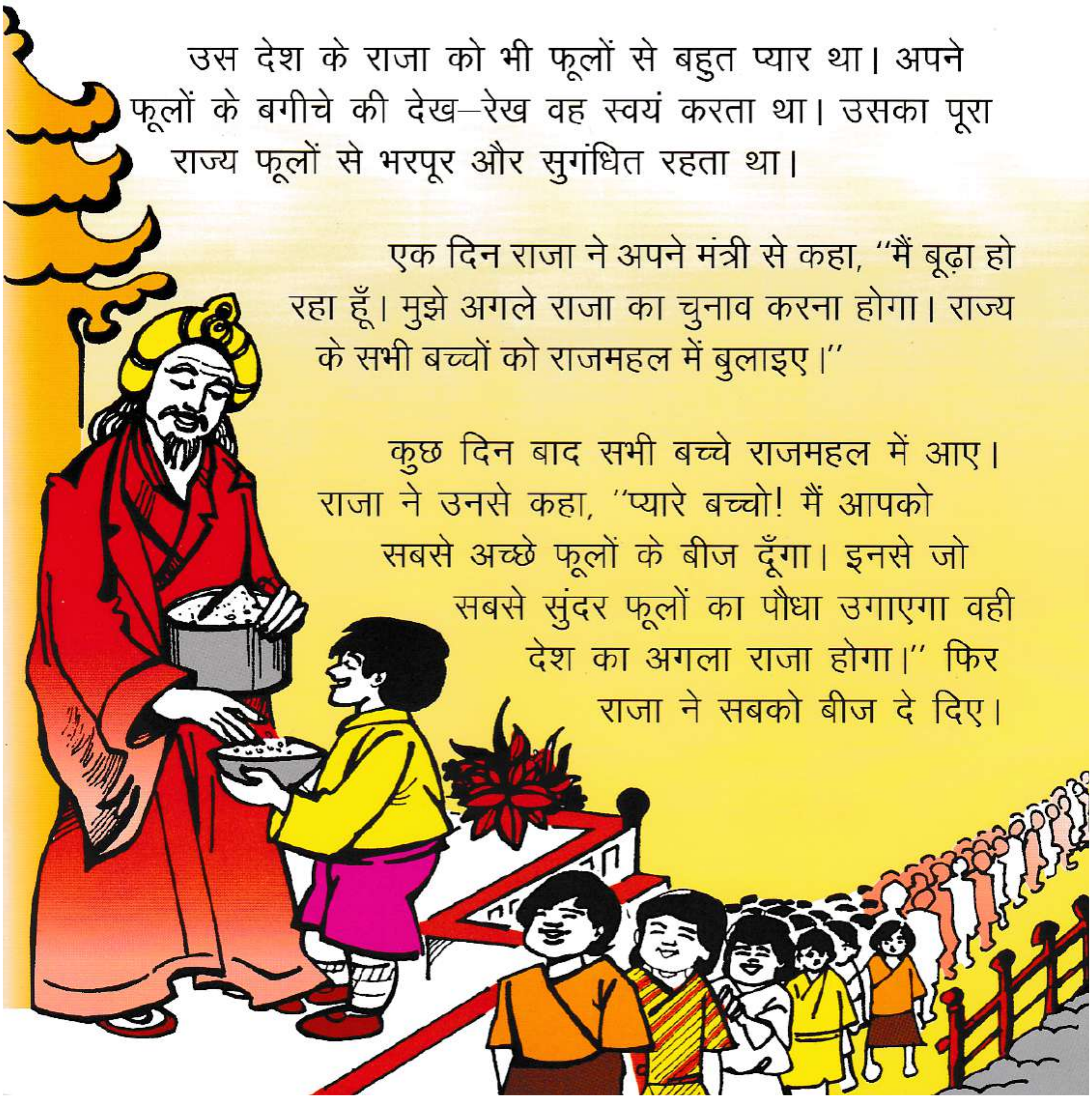
खाली गमला

चीन देश में पिंग नाम का एक लड़का रहता था। उसे फूल बहुत पसंद थे। उसके हाथ के लगाए सभी पौधे खूब फलते–फूलते थे। स्वस्थ और सुंदर!

उस देश के राजा को भी फूलों से बहुत प्यार था। अपने फूलों के बगीचे की देख–रेख वह स्वयं करता था। उसका पूरा राज्य फूलों से भरपूर और सुगंधित रहता था।

एक दिन राजा ने अपने मंत्री से कहा, ''मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। मुझे अगले राजा का चुनाव करना होगा। राज्य के सभी बच्चों को राजमहल में बुलाइए।''

कुछ दिन बाद सभी बच्चे राजमहल में आए। राजा ने उनसे कहा, ''प्यारे बच्चो! मैं आपको सबसे अच्छे फूलों के बीज दूँगा। इनसे जो सबसे सुंदर फूलों का पौधा उगाएगा वही देश का अगला राजा होगा।'' फिर राजा ने सबको बीज दे दिए।





नन्हे पिंग ने भी खुशी–खुशी बीज ले लिए। उसने गमले में बीज लगा दिए। उसे विश्वास था कि उसके पौधे से ही सबसे सुंदर फूल खिलेंगे। वह रोज़ बीज को पानी देता। उसमें से अंकुर कब फूटेगा, इसकी प्रतीक्षा बेचैनी से कर रहा था।

एक–एक करके दिन बीतते गए। मगर बीज में से अंकुर नहीं फूटा। पिंग को चिंता होने लगी। उसने मिट्टी बदल कर पौधे को एक बड़े गमले में लगाया। बीज बड़े गमले में भी अंकुरित नहीं हुए। एक साल बीतने को आया।



राजमहल जाने का दिन भी आ गया। बच्चे नए कपड़े पहनकर तैयार हुए। रंग–बिरंगे फूलों के पौधे लेकर सब राजमहल की ओर चल दिए।



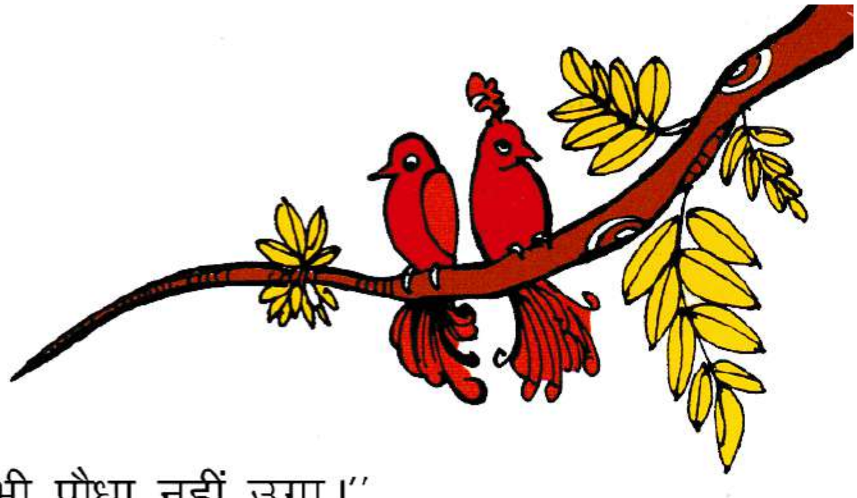
मगर पिंग बहुत उदास था। 'केवल मेरा ही पौधा क्यों नहीं उग पाया?' मेरा खाली गमला देखकर दूसरे बच्चे मुझे चिढ़ाएँगे,' यह सोचकर वह राजमहल जाने में हिचकिचाने लगा।



पिंग के पिता ने उसका हौसला बढ़ाते हुए कहा, "तुमने हमेशा सबसे अच्छे पौधे उगाए हैं। इस बार भी तुमने अपनी पूरी कोशिश की। बस, यही काफी है। जाओ, राजमहल जाकर राजा से मिलकर आओ।"

राजा ने बच्चों द्वारा लाए गए फूलों के पौधों को एक–एक करके देखा। फिर वह पिंग के पास आया और पूछा, "तुम खाली गमला क्यों लेकर आए हो?"





पिंग रोने लगा। वह बोला, "आपके दिये हुए बीज को मैंने बोया। रोज़ पानी भी देता रहा। मगर उसमें अंकुर नहीं आया। मैंने मिट्टी भी बदली। फिर भी पौधा नहीं उगा।"

राजा मुस्कराने लगा। बच्चों को देखते हुए बोला, "यही इस देश का राजा बनने के योग्य है।" सभी चकित रह गए।

राजा ने कहा, "आप लोगों ने बीज कहाँ से लिए मुझे नहीं पता। मैंने जो बीज दिए थे वे पके हुए थे। उनमें से पौधे उगना तो संभव ही नहीं था। मैं पिंग की ईमानदारी की प्रशंसा करता हूँ।"

चीनी लोक कथा



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

(15)

चाँद और दर्ज़ी



जाड़े के दिन थे। दर्ज़ी ने अपनी दुकान जल्दी बंद कर दी और कुछ सोचते हुए पैदल चलने लगा। तभी उसे एक धीमी सी आवाज़ सुनाई दी, "मुझे बहुत ठंड लग रही है। रात में मुझे बहुत लंबा सफर करना है। क्या तुम मुझे एक गरम कोट सिलकर दे सकते हो?"



'आवाज़ कहाँ से आ रही है?' दर्ज़ी इधर–उधर देखने लगा।

"देखो! मैं इधर हूँ," बात करने वाला कोई और नहीं, चाँद था! वह सिकुड़कर अर्द्धचंद्रमा बना हुआ था।

दर्ज़ी ने सोचा, "सर्दी के कारण शायद चाँद सिकुड़ गया है।" उसने चाँद से वादा किया कि कुछ ही दिनों में वह एक कोट सिल देगा।

कोशिश की। पर अफसोस! वह उसके अंदर नहीं घुस पाया।

मुँह छोटा करते हुए चाँद ने कहा, "मुझे मालूम था। तुमने मेरा नाप तो लिया ही नहीं। फिर कोट कैसे ठीक आएगा?"

दर्ज़ी ने कहा, "तुम्हारा नाप मैं कैसे ले सकता हूँ?"

एक चील उन दोनों की बातचीत सुन रही थी। तुरंत बोली, "दर्ज़ी भाई! माप पट्टी मुझे दे दीजिए। चाँद का नाप मैं लेकर आऊँगी।"

चील चाँद का चक्कर लगाते हुए उड़ चली। ध्यान से नाप लिया और दर्ज़ी को दे दिया।

वे त्यौहार के दिन थे। एक सप्ताह के बाद ही चाँद का कोट सिल पाया।

कोट पर तरह–तरह की कारीगरी देखकर चाँद बड़ा खुश हुआ। उससे रहा न गया। जल्दी–जल्दी कोट पहनने लगा। लेकिन बहुत कोशिश के बाद भी वह उसमें समा न सका।

"तुम ही देख लो! खा–खाकर तुम कितने मोटे हो गए हो। यह कोट तुम्हें कभी भी ठीक नहीं आएगा," दर्ज़ी गुस्से से चिल्लाया।



चाँद ने कहा, "सारी गलती तुम्हारी है। कोट सिलने में तुमने इतने दिन क्यों लगाए?"



फिर निवेदन किया, "बस एक और बार सिल दो न!"

"और मोटे तो नहीं हो जाओगे?" यह कहते हुए दर्ज़ी चला गया।

नीले, पीले, काले, लाल ऐसे कई रंगों के टुकड़े जोड़कर दर्ज़ी एक बड़ा कोट सिलने लगा। इसमें कुछ दिन लग गए। कोट देखने में लाजवाब था।



नीले, पीले, काले, लाल ऐसे कई रंगों के टुकड़े जोड़कर दर्ज़ी एक बड़ा कोट सिलने लगा। इसमें कुछ दिन लग गए। कोट देखने में लाजवाब था।



दर्ज़ी उसे चाँद के पास ले गया। लेकिन अब चाँद गोल कहाँ था? कोट उसके लिए बहुत बड़ा था।

चाँद बड़बड़ाने लगा, "ऐसा ढीला कोट मुझे सर्दी से कैसे बचा सकता है?"



"मुझे क्या मालूम?" गुस्से से दर्ज़ी चिल्लाया।

सर्वश्रेष्ठ दर्ज़ी – इतने सालों से कमाए हुए यश पर पानी फिर गया।

बेचारा दर्ज़ी! जब भी वह चाँद को देखता अपने दाँत भींच लेता।

निरुपमा राघवन लिखित
रूसी कथा

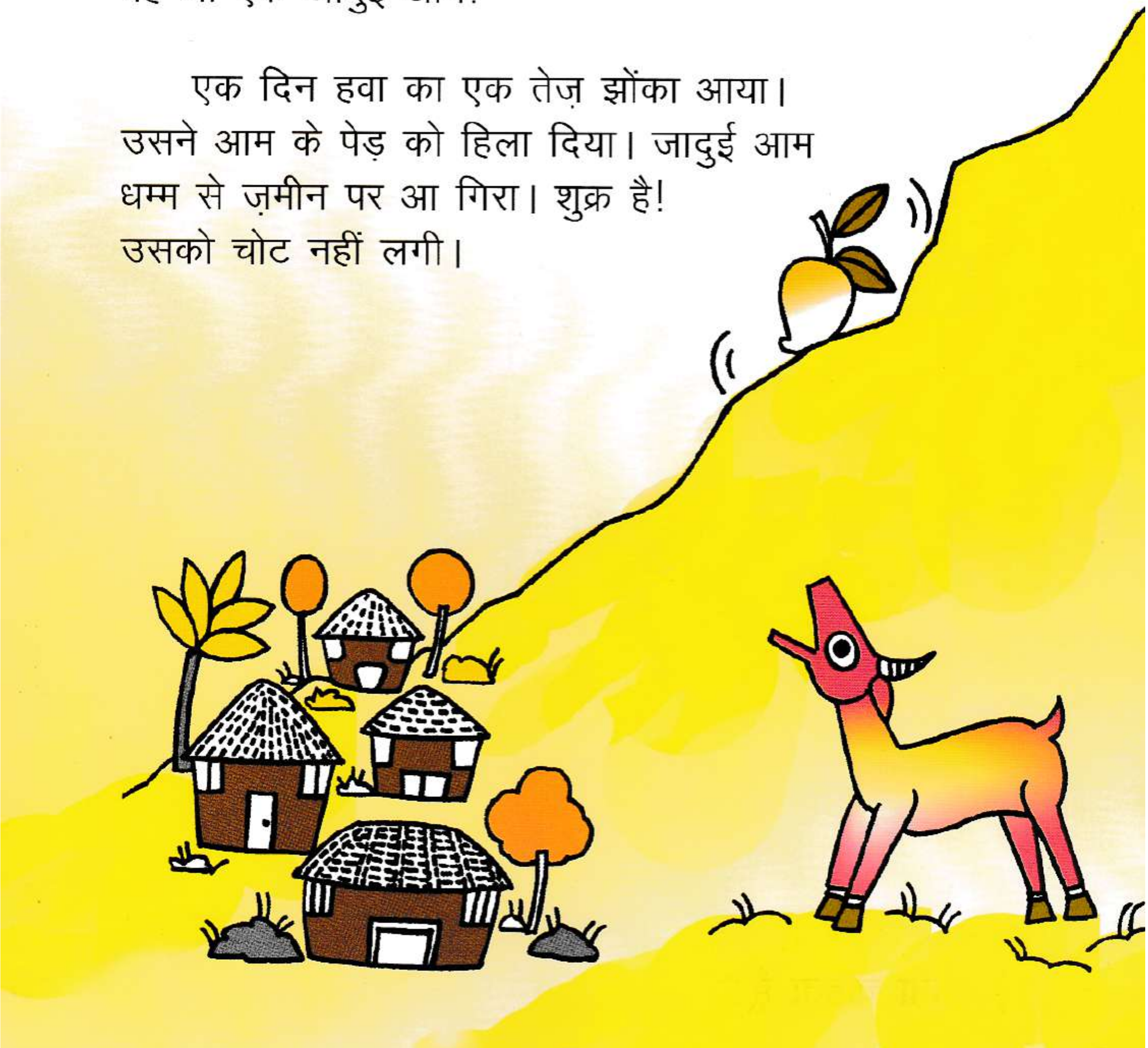
Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

जादुई आम

बहुत समय पहले की बात है। एक जंगल में आम का एक बहुत बड़ा पेड़ था। उस पेड़ की सबसे ऊँची शाखा पर एक पका हुआ आम था। वह कोई साधारण आम नहीं था–
वह था एक जादुई आम!

एक दिन हवा का एक तेज़ झोंका आया। उसने आम के पेड़ को हिला दिया। जादुई आम धम्म से ज़मीन पर आ गिरा। शुक्र है! उसको चोट नहीं लगी।



जादुई आम बहुत खुश हुआ। उसे अब घूमने का मौका मिला। वह लुढ़कते–लुढ़कते गाँव की तरफ पहुँचा। सबसे पहले उसे एक बकरी मिली। वह बोली, "अरे रुको! रुको! मैं तुम्हें खाना चाहती हूँ।"



जादुई आम ज़ोर से हँसा
और गाना गाने लगा–

मैं हूँ जादू का आम
देखूँ दुनिया सुबह शाम
आऊँ न तुम्हारे हाथ
जान लो तुम यह बात

आम तेज़ी से लुढ़कता हुआ चला गया। बकरी उसके पीछे–पीछे चलने लगी। रास्ते में एक लड़का पतंग उड़ा रहा था। उसने आम से कहा, "अरे रुको! रुको! मैं तुम्हें खाना चाहता हूँ।"

आम फिर से हँसा और गाने लगा–

मैं हूँ जादू का आम
देखूँ दुनिया सुबह शाम
आऊँ न तुम्हारे हाथ
जान लो तुम यह बात

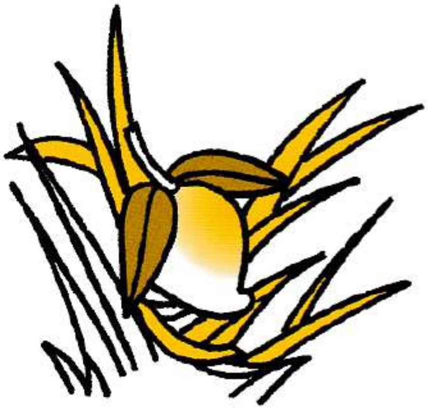
आम और तेज़ी से लुढ़कने लगा और एक बगीचे में घुस गया। बकरी और लड़का आम के पीछे–पीछे भागने लगे। उस समय बगीचे में कुछ लड़कियाँ खेल रही थीं। उन्होंने



आम को लुढ़कते हुए देखा और आवाज़ लगाई, "अरे रुको! रुको! हम तुम्हें खाना चाहते हैं।"

आम फिसलकर दूर चला गया और गाने लगा–

मैं हूँ जादू का आम
देखूँ दुनिया सुबह शाम
आऊँ न तुम्हारे हाथ
जान लो तुम यह बात



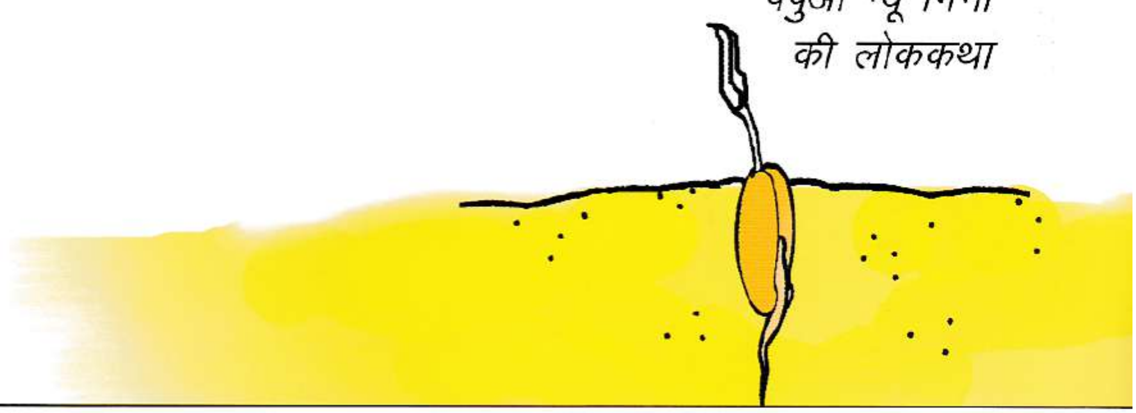
बकरी, लड़का और लड़कियाँ, सभी आम के पीछे लग गए। पर किसी को आम नहीं मिला।

आम अब थकने लगा था। वह लंबी लंबी घास के बीच छिप गया। सभी आम को कुछ देर ढूँढकर वापिस चले गए।

थककर आम सो गया। कई महीने सोता रहा। अचानक एक दिन उसकी नींद खुली। उसने देखा कि सूरज की किरणें उसे नहला रही थीं। वह बदला हुआ था। उसके अंदर से अंकुर निकल रहे थे।

हाँ! जादुई आम अब एक पेड़ बनना शुरू हो गया था।

पपुआ न्यू गिनी की लोककथा

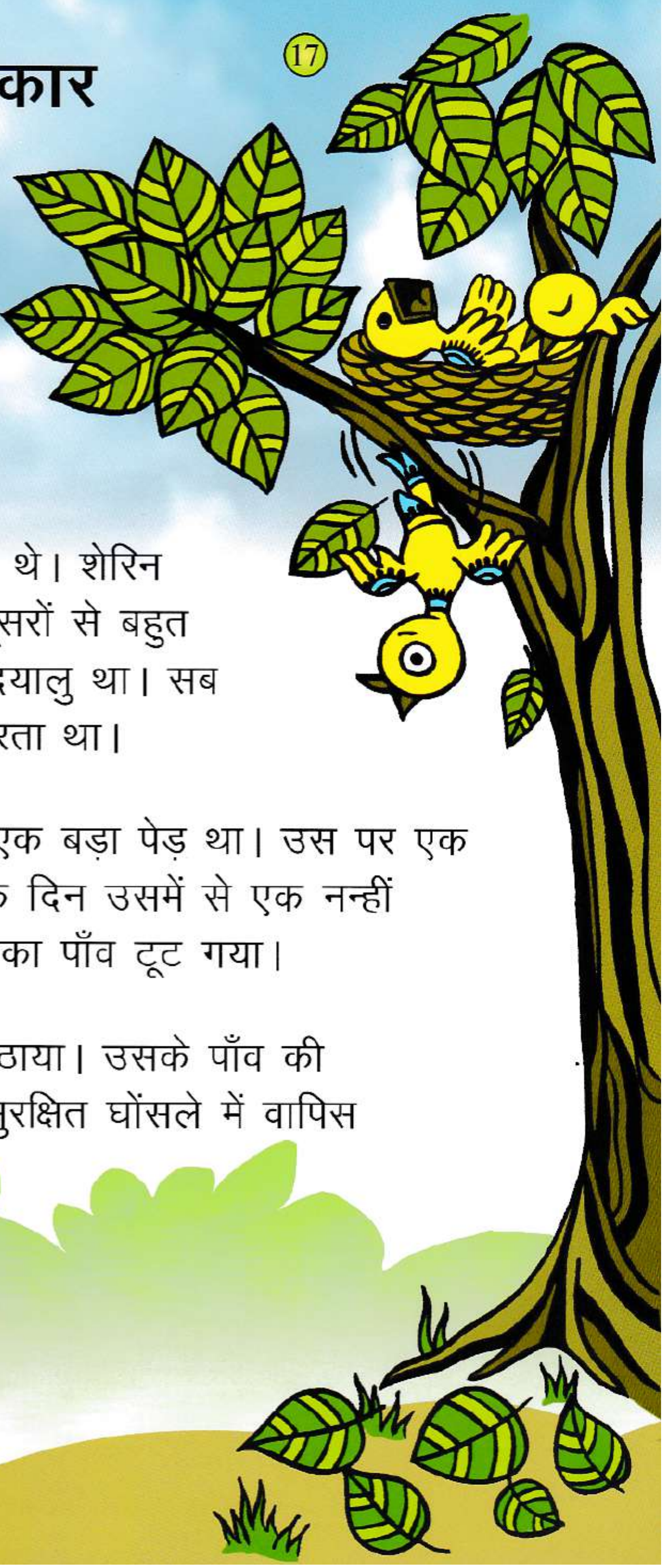


पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

चिड़िया का पुरस्कार



शेरिन और शंबा पड़ौसी थे। शेरिन बड़ा ही लालची था। उसे दूसरों से बहुत ईर्ष्या होती थी। शंबा बहुत दयालु था। सब के साथ प्यार से व्यवहार करता था।

शंबा के घर के सामने एक बड़ा पेड़ था। उस पर एक चिडिया का घोंसला था। एक दिन उसमें से एक नन्हीं चिड़िया नीचे गिर पड़ी। उसका पाँव टूट गया।

शंबा ने उसे प्यार से उठाया। उसके पाँव की मरहम पट्टी की। फिर उसे सुरक्षित घोंसले में वापिस रख दिया।

कुछ दिनों बाद चिड़िया उड़ने लायक हो गई। वह शंबा के पास आई और कहा, "तुमने मेरी सहायता की थी। मैं तुम्हें ये मकई के दाने इनाम के रूप में दे रही हूँ। इसे अपने बगीचे में बो दो," कहकर चिड़िया गायब हो गई।

शंबा ने दानों को बोया और रोज़ उन्हें पानी से सींचा। मकई की फसल बहुत बढ़िया उगी। कुछ दिन बीतने के बाद फसल पक गयी। चमत्कार हो गया! मकई में दानों की जगह अनमोल रत्न चमकने लगे। शंबा ने रत्नों को बेच दिया और वह अमीर बन गया।

शेरिन यह देखकर दंग रह गया। 'आखिर शंबा को इतना धन मिला कहाँ से,' यह सोचते हुए उसने शंबा के घर जाकर पूछताछ की। शंबा ने बिना हिचकिचाए उसे सारी बात बता दी।





शेरिन सोच में पड़ गया, 'मैं भी शंबा जैसा धनवान क्यों नहीं बन सकता?' उसने अपने घर के सामने लगे पेड़ पर एक घोंसला देखा। एक लंबा डंडा उठाया और घोंसले को हिलाने लगा। एक नन्ही चिड़िया नीचे गिर पड़ी। उसका पाँव टूट गया। शेरिन ने उसे उठाया और पाँव की मरहम पट्टी की। फिर उसे घोंसले में रख दिया।

कुछ दिनों के बाद वह नन्ही चिड़िया भी उड़ने लगी। वह शेरिन के पास आई। उसे मकई के दाने दिए और कहा, "जाओ! इन्हें बो दो! देखना कि उगने के बाद उसमें क्या आता है!" यह कहकर चिड़िया गायब हो गई।

फसल बहुत जल्दी बढ़ने लगी। शेरिन बेचैनी से उसके पकने का इंतज़ार करने लगा।

एक दिन वह बगीचे में गया। आश्चर्य! वहाँ फसल थी ही नहीं। हाथ में तलवार लिए एक भयानक राक्षस खड़ा था।

उसे देख शेरिन डर गया और भागने लगा। राक्षस उसका पीछा करते हुए उसके घर में घुस आया और उसके सारे ज़ेवर और धन लेकर चला गया।

बेचारा शेरिन!

तिब्बत की लोक कथा

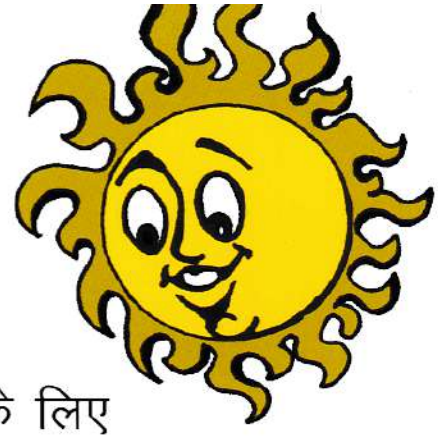


पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णास्वामी

बबलू बेमिसाल



बबलू अक्सर अपनी बुआ के घर जाया करता था। बुआ बबलू के हाथ उसकी माँ के लिए कुछ न कुछ भेजा करती थी।

एक दिन बुआ ने उसे केक का एक बड़ा सा टुकड़ा दिया। बबलू ने उसे हथेली में कसकर पकड़ा और घर की ओर चल पड़ा। घर पहुँचने तक केक चूर–चूर हो गया।



माँ ने कहा, "केक इस तरह थोड़े ही लाते हैं। उसे एक पत्तल में अच्छी तरह लपेटकर अपनी टोपी के अंदर रखकर लाना चाहिए। ताकि रास्ते में बंदर परेशान न करें।"

अगले हफ्ते वह फिर बुआ के घर गया। इस बार बुआ ने उसे मक्खन दिया। उसने मक्खन को एक पत्तल में लपेटकर अपनी टोपी के अंदर रखा और घर चल पड़ा।



उस दिन धूप बहुत तेज़ थी। मक्खन पिघलने लगा। घर पहुँचने तक सारा मक्खन बहकर उसके चेहरे और कमीज़ पर लग गया।

माँ हैरान रह गई, "हे भगवान! कोई मक्खन को इस तरह लाता है क्या? उसे ठंडे पानी में रखकर लाना चाहिए।"

अगले हफ्ते बुआ ने उसे एक पिल्ला दिया। बबलू ने उसे ठंडे पानी में रखा और घर की ओर चल पड़ा।

माँ ने सिर पीट कर कहा, "बेचारे पिल्ले का क्या हाल बना दिया! अगली बार पिल्ले के गले में रस्सी बाँधना। रस्सी के दूसरे छोर को अपने हाथ में पकड़कर, उसे साथ चलाकर लाना।"

छुट्टियों में बबलू बुआ के घर गया। इस बार बुआ ने उसे डबल रोटी दी। बबलू ने उसको रस्सी से बाँधा। रस्सी के दूसरे छोर को पकड़कर डबल रोटी को घसीटते हुए घर पहुँचा। यह देखकर उसकी माँ हक्की–बक्की रह गई।



अगले सप्ताह माँ ने कहा, "आज तुम बुआ के घर मत जाना। मैं स्वयं चली जाऊँगी। मैंने यहाँ पापड़ सुखाने के लिए रखे हैं। ध्यान से चलना।"

माँ बुआ के घर चली गई। बबलू ने पापड़ को घूर कर देखा, फिर एक–एक पापड़ के ऊपर पैर रखकर बहुत ध्यान से उन पर चला।

उसकी माँ के घर लौटने पर क्या हुआ, यह किसी को नहीं मालूम। आप खुद ही अंदाज़ा लगा सकते हैं!

यूरोप की लोक कथा



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

तुनतुनी

एक दिन तुनतुनी बेर के पेड़ पर बैठ कर बेर खा रही थी। अचानक उसके गले में काँटा फँस गया।

वह दर्द से तड़प उठी। उड़कर नाई के पास गई और बोली, "हे नाई काका! तुनतुनी बड़ी मुसीबत में है। काँटे को निकालो और उसे बचाओ।"

नाई ने कहा, "जा! जा! मैं हूँ राजा का नाई। तुम्हारा काँटा क्यों निकालूँ?"

तुनतुनी की आँखें गुस्से से लाल हो गईं, "अच्छा! तुम्हें ज़रूर सबक सिखाऊँगी।"

तुनतुनी राजा के पास गई और विनती करने लगी, "हे राजा! तुनतुनी बड़ी मुसीबत में है। आपका नाई मेरी मदद नहीं करता। उसे तुरंत दंड दीजिए।"

राजा उस छोटी सी चिड़िया की बात सुनकर हँस पड़ा। और हँसता ही रहा।





तंग आकर तुनतुनी उड़कर चूहे के पास गई और बोली, ''चूहे! चूहे! तुनतुनी बड़ी मुसीबत में है। नाई मेरी मदद नहीं करता। राजा उसे दंड नहीं देता। सोते समय तुम राजा के पेट को कुतर देना।''

चूहे ने नाक चढ़ाते हुए कहा, ''यह काम मुझसे नहीं होगा।''

तुनतुनी गुस्से में बिल्ली के घर गई और बोली, ''बिल्ली मौसी! बिल्ली मौसी! तुनतुनी बड़ी मुसीबत में है। चूहा राजा को नहीं कुतरता। तुम चूहे को पकड़कर खा जाओ।''

बिल्ली ने कहा, ''मुझे बहुत नींद आ रही है। फिलहाल मैं चूहे को नहीं पकड़ सकती।''

तुनतुनी फुर्र.... SSSSSS ..... से उड़कर छड़ी के पास गई और बोली, ''छड़ी! छड़ी! तुनतुनी मुसीबत में है। बिल्ली चूहे को नहीं खाती। उठो और उस सुस्त बिल्ली को पीटो।''

छड़ी ने कहा, ''मैं बिल्ली को क्यों पीटूँ? उसने मुझे कोई हानि नहीं पहुँचाई।''

बेचारी तुनतुनी! आग के पास जाकर बोली, "हे आग की ज्वाला! तुनतुनी बड़ी मुसीबत में है। छड़ी बिल्ली को नहीं मारती। तुम उसे जला दो।" आग ने कहा, "आज मैंने बहुत सारी चीज़ें जलाई हैं। मुझे थकान हो रही है। माफ करना।"

तुनतुनी का क्रोध और बढ़ गया। वह नदी के पास गई और बोली, "हे महान नदी! आग लाठी को नहीं जलाती। तुम सदा के लिए उसे बुझा दो।" मगर नदी बिना जवाब दिए बहती रही।

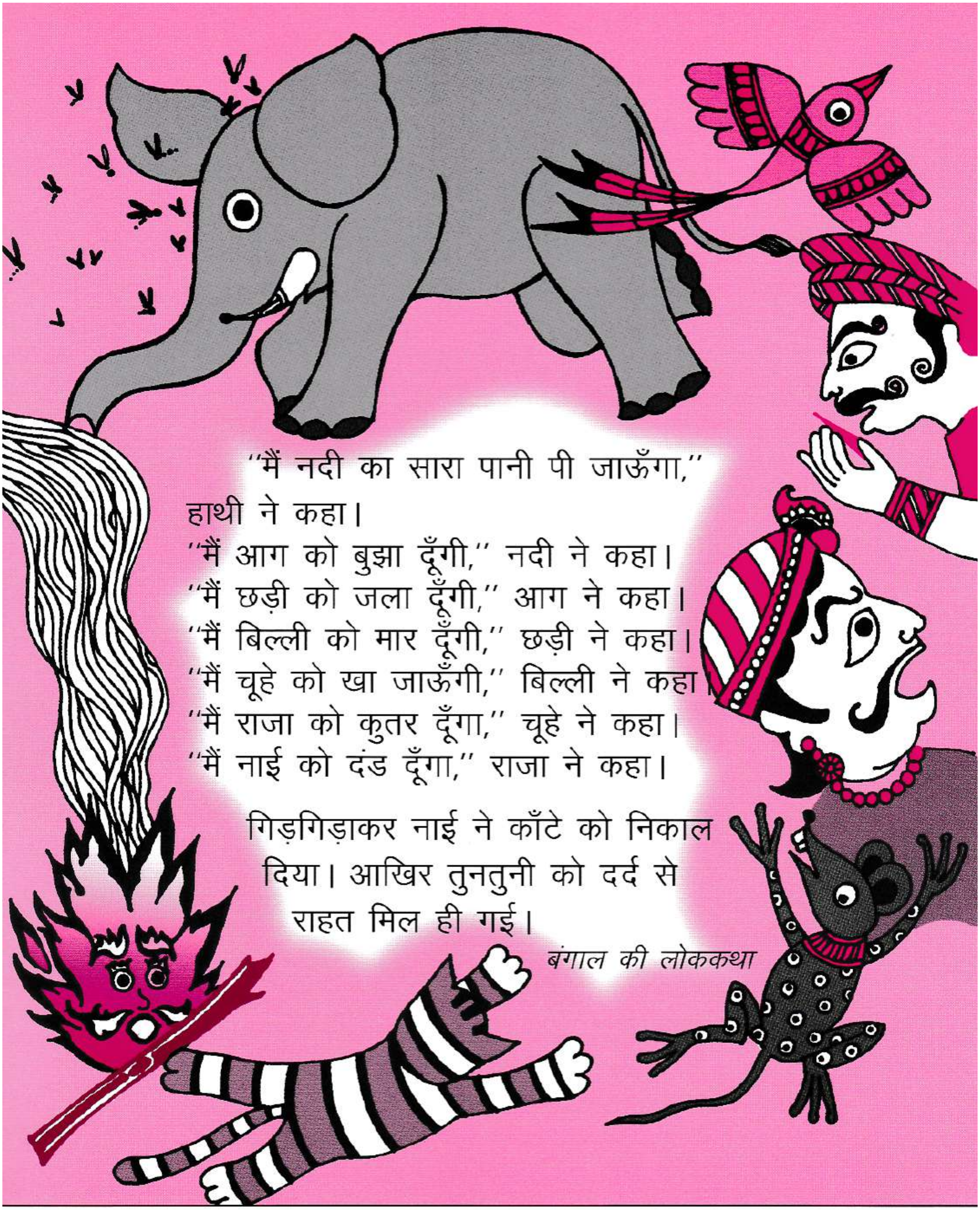


तुनतुनी हाथी के पास जाकर बोली, "हे शक्तिशाली हाथी! तुनतुनी बड़ी मुसीबत में है। नदी आग को नहीं बुझाती। तुम नदी का सारा पानी पी जाओ।"

हाथी ने कहा, "इतना सारा पानी पीऊँगा तो मेरा पेट फट जाएगा।"

अंत में निराश होकर तुनतुनी मच्छरों के पास जाकर बोली, "मच्छर! मच्छर! तुनतुनी बड़ी मुसीबत में है। हाथी नदी का पानी नहीं पीता। जाओ और उसके पूरे शरीर को काट डालो।"

मच्छर तुरंत राज़ी हो गए। प्रदेश के सभी मच्छर इकट्ठे हो गये और हाथी को घेर लिया। हाथी बहुत घबरा गया।



"मैं नदी का सारा पानी पी जाऊँगा,"
हाथी ने कहा।
"मैं आग को बुझा दूँगी," नदी ने कहा।
"मैं छड़ी को जला दूँगी," आग ने कहा।
"मैं बिल्ली को मार दूँगी," छड़ी ने कहा।
"मैं चूहे को खा जाऊँगी," बिल्ली ने कहा।
"मैं राजा को कुतर दूँगा," चूहे ने कहा।
"मैं नाई को दंड दूँगा," राजा ने कहा।

गिड़गिड़ाकर नाई ने काँटे को निकाल दिया। आखिर तुनतुनी को दर्द से राहत मिल ही गई।

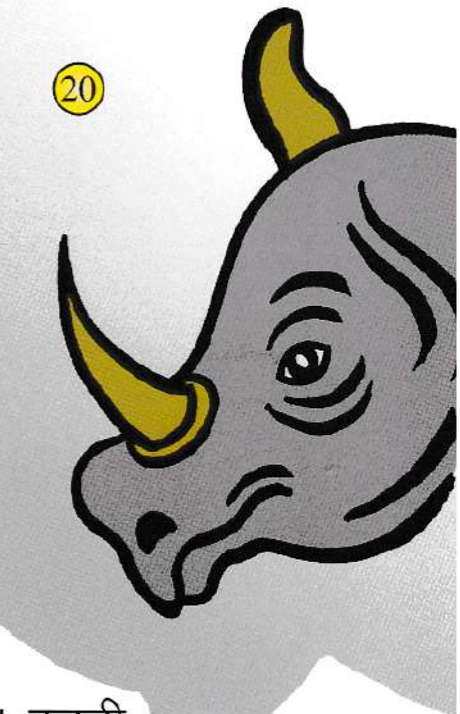
बंगाल की लोककथा

Rajalakshmi Srinivasan Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

मित्र को पहचानो

20



एक जंगल में एक गिलहरी और एक खरगोश बहुत अच्छे दोस्त थे। गिलहरी बहुत बातूनी थी। हर एक के बारे में सब कुछ जानना चाहती थी। खरगोश तो था गुमसुम। किसी भी सवाल का सीधा जवाब नहीं देता था।



गिलहरी : अरे, रुको तो सही। इतनी सुबह–सुबह गाते हुए कहाँ जा रहे हो?

खरगोश : अपने नए मित्र के साथ खेलने जा रहा हूँ।

गिलहरी : कौन है तुम्हारा नया मित्र?

खरगोश : है कोई जिसके चार पैर हैं। खुद ही बूझ लो।





गिलहरी : अरे! हम सब भी तो चार पैर वाले ही हैं। अब समझी! तुम मुझे बताना नहीं चाहते हो। चलो, मैं ही पता कर लूँगी। क्या वह एक बड़ा जानवर है?

खरगोश : हाँ।

गिलहरी : तुम हाथी से मिलने जा रहे हो न? वही सबसे बड़ा जानवर है।

खरगोश : बिल्कुल नहीं। मेरे दोस्त की सूँड नहीं है।

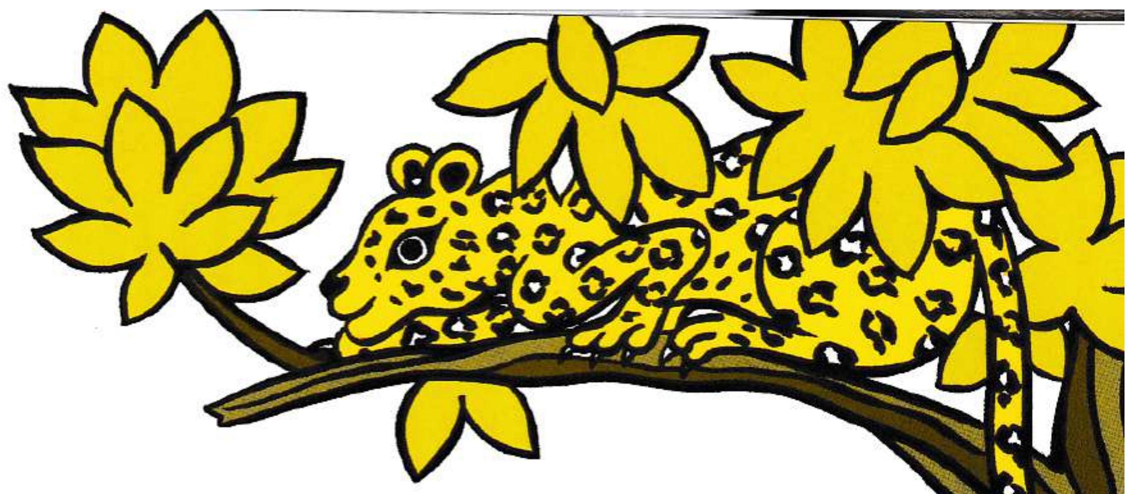
गिलहरी : तो तुम्हारा मित्र गेंडा है क्या? उसकी तो सूँड नहीं है।

खरगोश : नहीं! नहीं! मेरे मित्र के सींग भी नहीं हैं।

गिलहरी : ओह! फिर वह ज़रूर ऊँट होगा। उसके चार पैर हैं। सूँड नहीं है। सींग भी नहीं हैं।

खरगोश : नहीं, मेरे मित्र की पीठ पर ऊँट जैसे कोहान भी नहीं है।





गिलहरी : फिर कौन होगा? ज़ेबरा तो नहीं है तुम्हारा दोस्त?

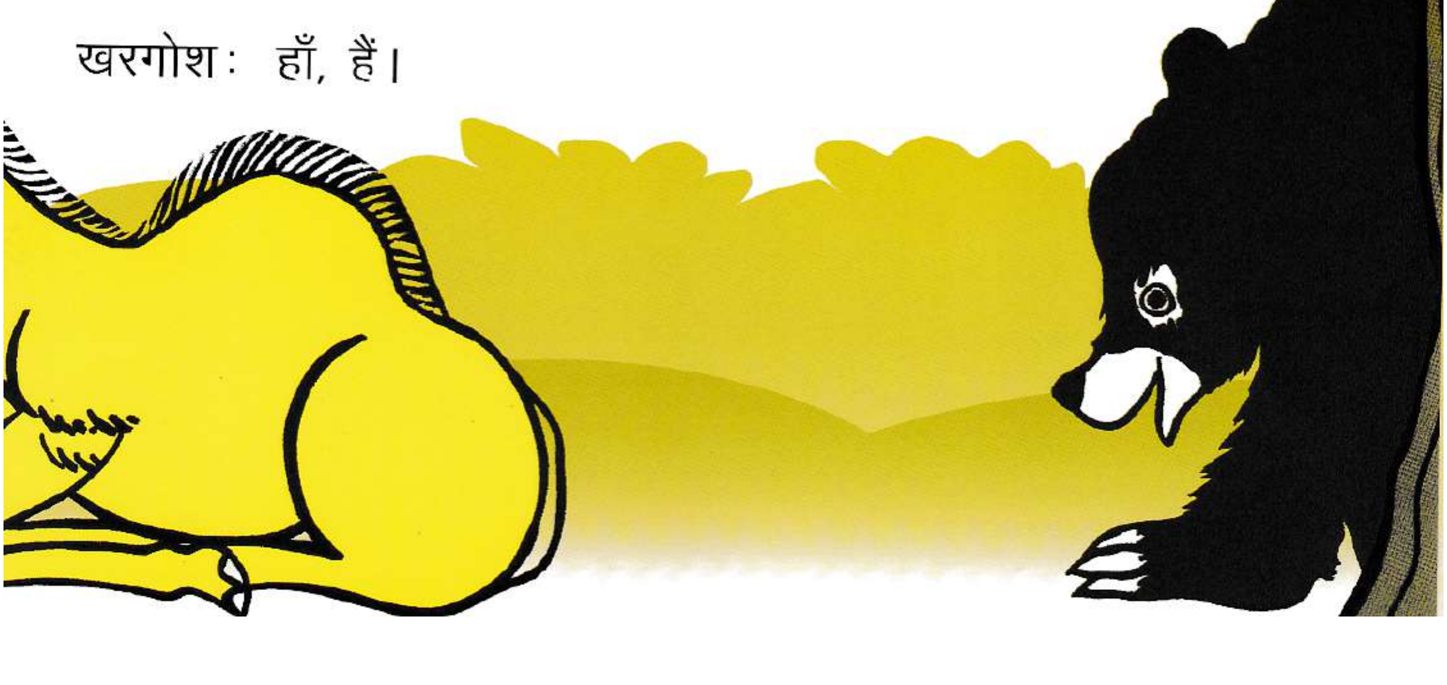
खरगोश : नहीं, मेरे दोस्त के शरीर पर धारियाँ नहीं हैं।

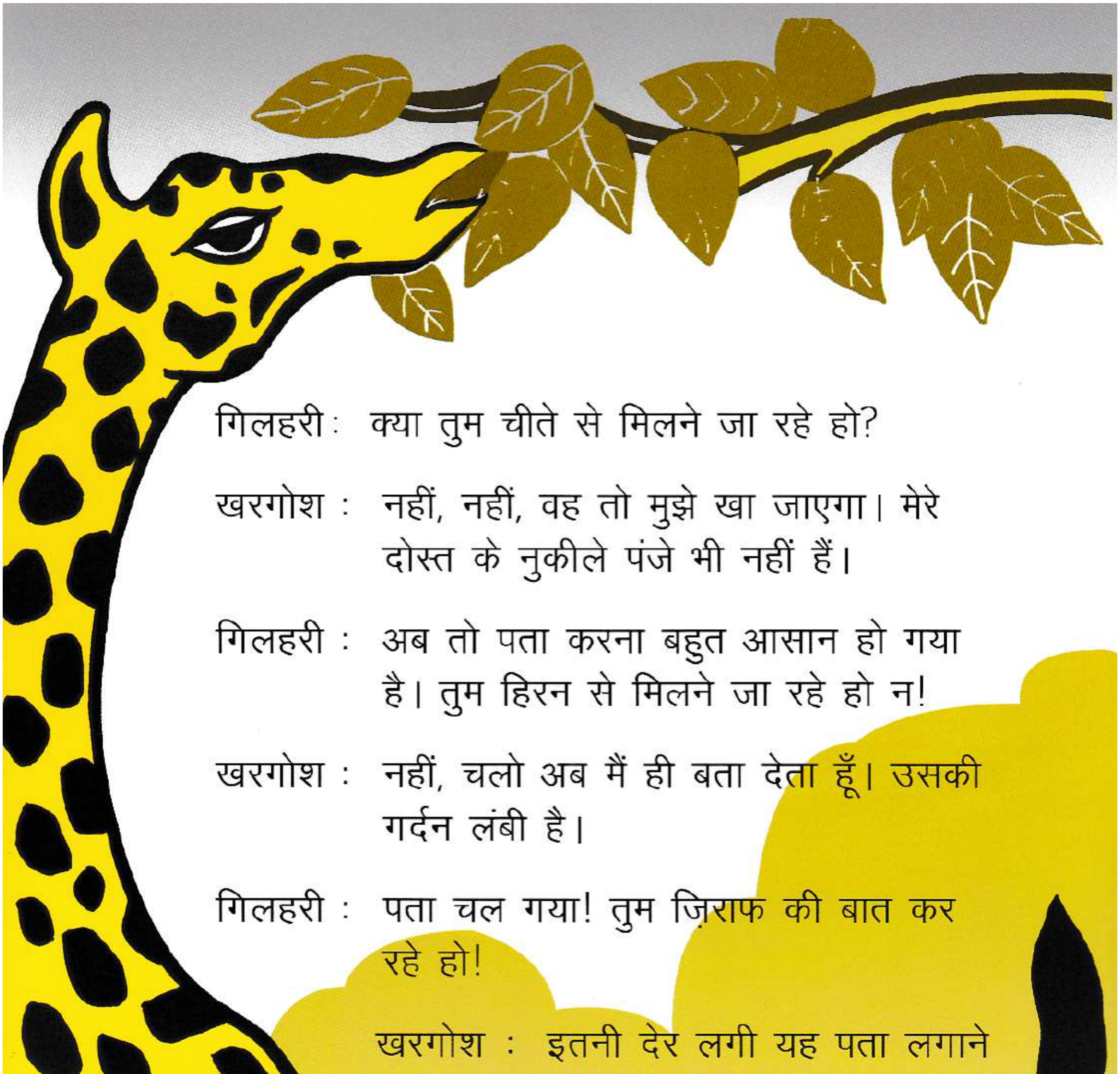
गिलहरी : फिर भालू ही तुम्हारा मित्र होना चाहिए। उसके शरीर पर धारियाँ नहीं होतीं। उसके कोहान नहीं, सींग नहीं और सूँड भी नहीं है।

खरगोश : ना बाबा! मेरे मित्र के शरीर पर भालू जैसे घने बाल भी नहीं हैं।

गिलहरी : ऐसा क्या? ठहरो! तुम्हारे मित्र के शरीर पर धब्बे हैं क्या?

खरगोश : हाँ, हैं।





गिलहरी : क्या तुम चीते से मिलने जा रहे हो?

खरगोश : नहीं, नहीं, वह तो मुझे खा जाएगा। मेरे दोस्त के नुकीले पंजे भी नहीं हैं।

गिलहरी : अब तो पता करना बहुत आसान हो गया है। तुम हिरन से मिलने जा रहे हो न!

खरगोश : नहीं, चलो अब मैं ही बता देता हूँ। उसकी गर्दन लंबी है।

गिलहरी : पता चल गया! तुम ज़िराफ की बात कर रहे हो!

खरगोश : इतनी देर लगी यह पता लगाने में! चलो, तुम भी साथ चलो। मेरे दोस्त की पीठ पर चढ़कर जंगल की सैर करेंगे।

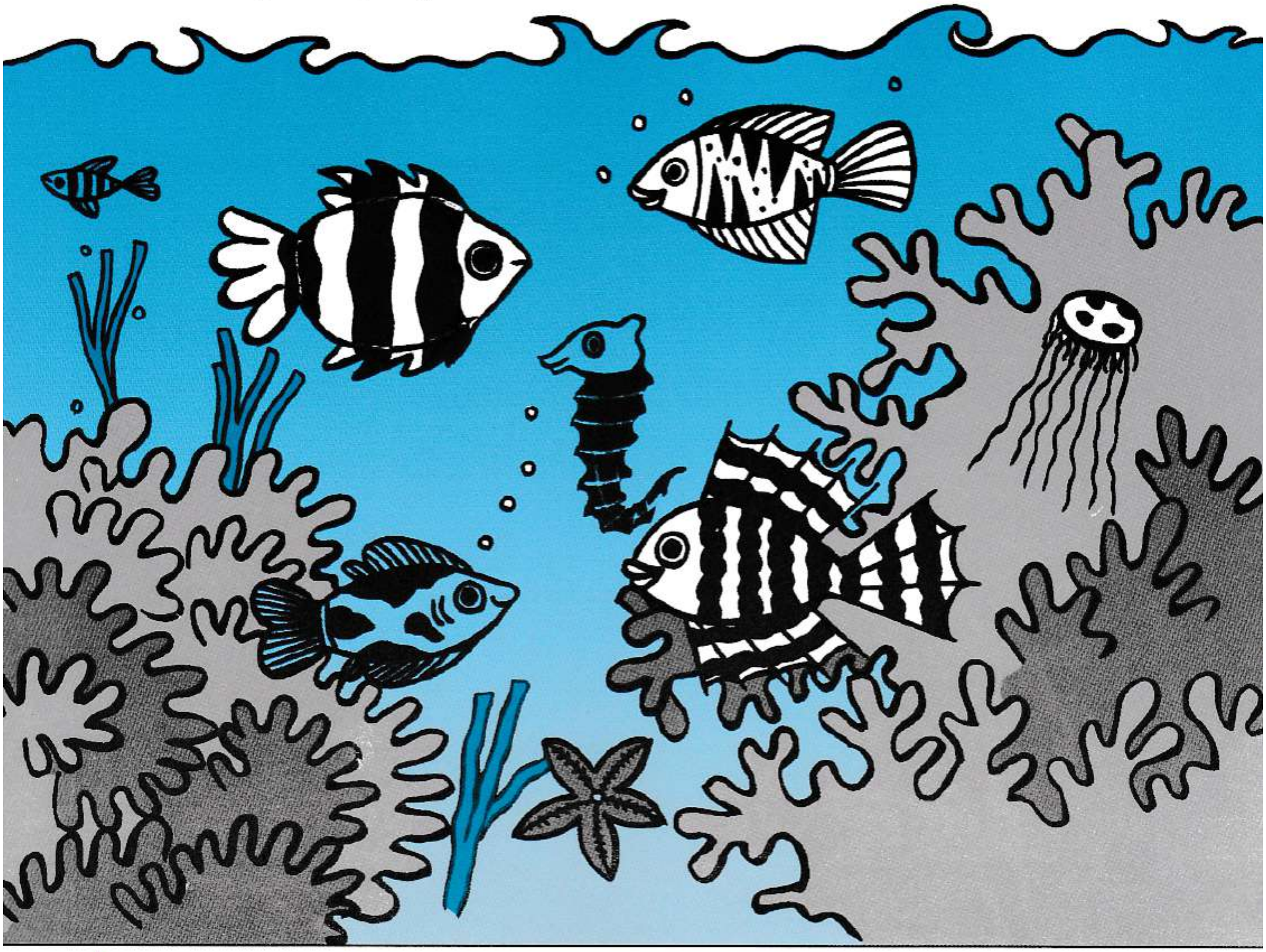
पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

देखते-देखते वह स्वयं मछली बन जाती। कभी समुद्र में उछल-उछल कर तैरती। समुद्र की गहराई तक पहुँच जाती।

"तुम क्या सोचती रहती हो? मुझे भी बताओ न," एक दिन रानी ने ज़िद्द की। तब मिन्नी ने अपने सपनों के बारे में उसे बताया। सपने सुनकर रानी को भी बहुत मज़ा आया। उसने कहा, "तुम जहाँ भी जाओगी, मुझे भी साथ ले जाओगी न?" मिन्नी मुस्कराते हुए बोली, "क्यों नहीं, अवश्य ले जाऊँगी। साथ चलेंगे तो और भी मज़ा आएगा।"



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

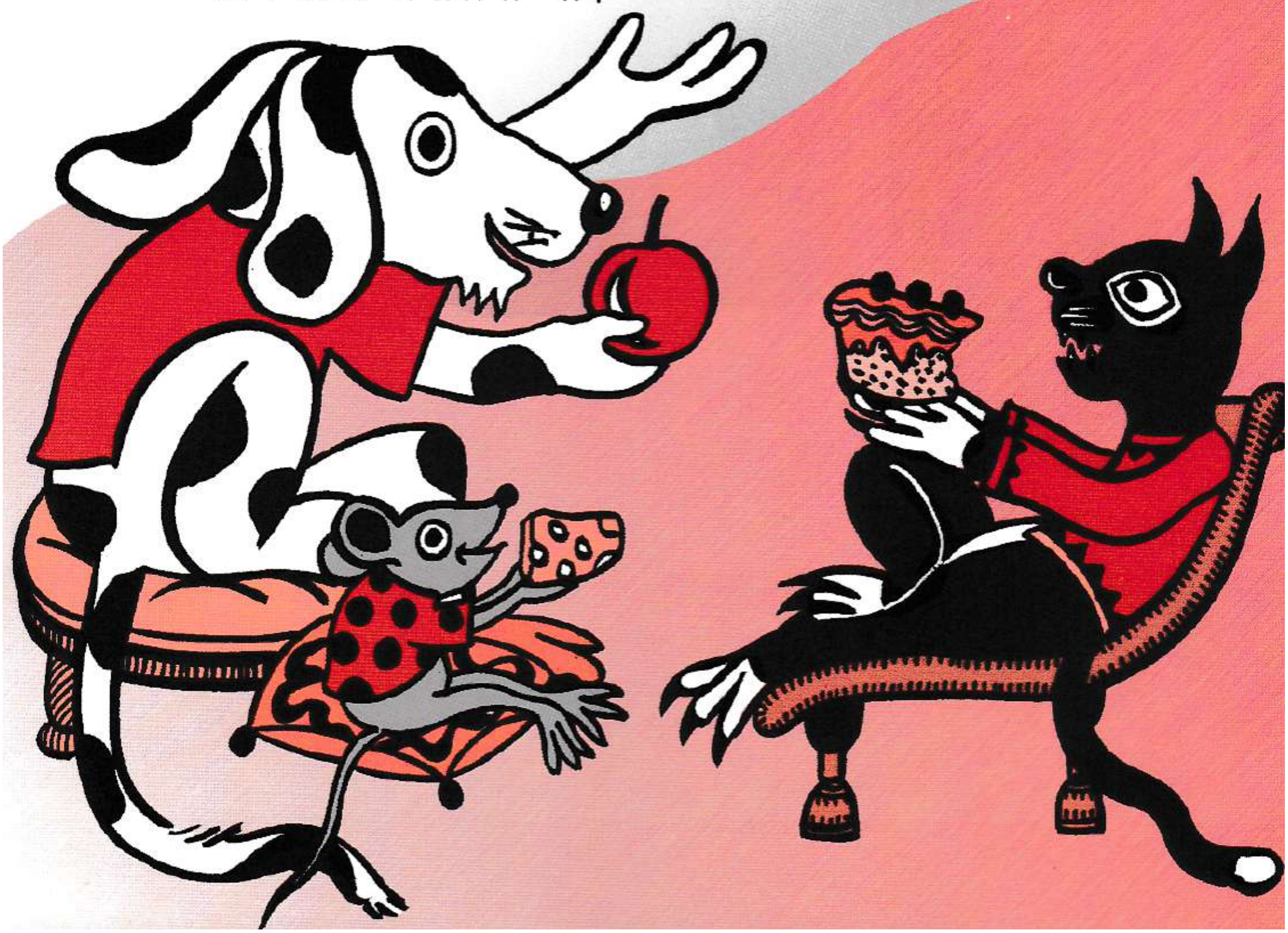
Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

यह दौड़ क्यों

सृष्टि के आरंभ में कुत्ता, बिल्ली और चूहा तीनों जानवर मिलजुल कर जिंदगी बिता रहे थे। वे सब अपने अपने काम में लगे रहते।

आपस में एकता बनाए रखने के लिए उन्होंने एक संधि-पत्र बनाया और बिल्ली ने उसे मचान पर संभालकर रख दिया। उसके अनुसार कुत्ते को घर के बाहर और बिल्ली व चूहे को घर के अंदर का काम-काज संभालना था।

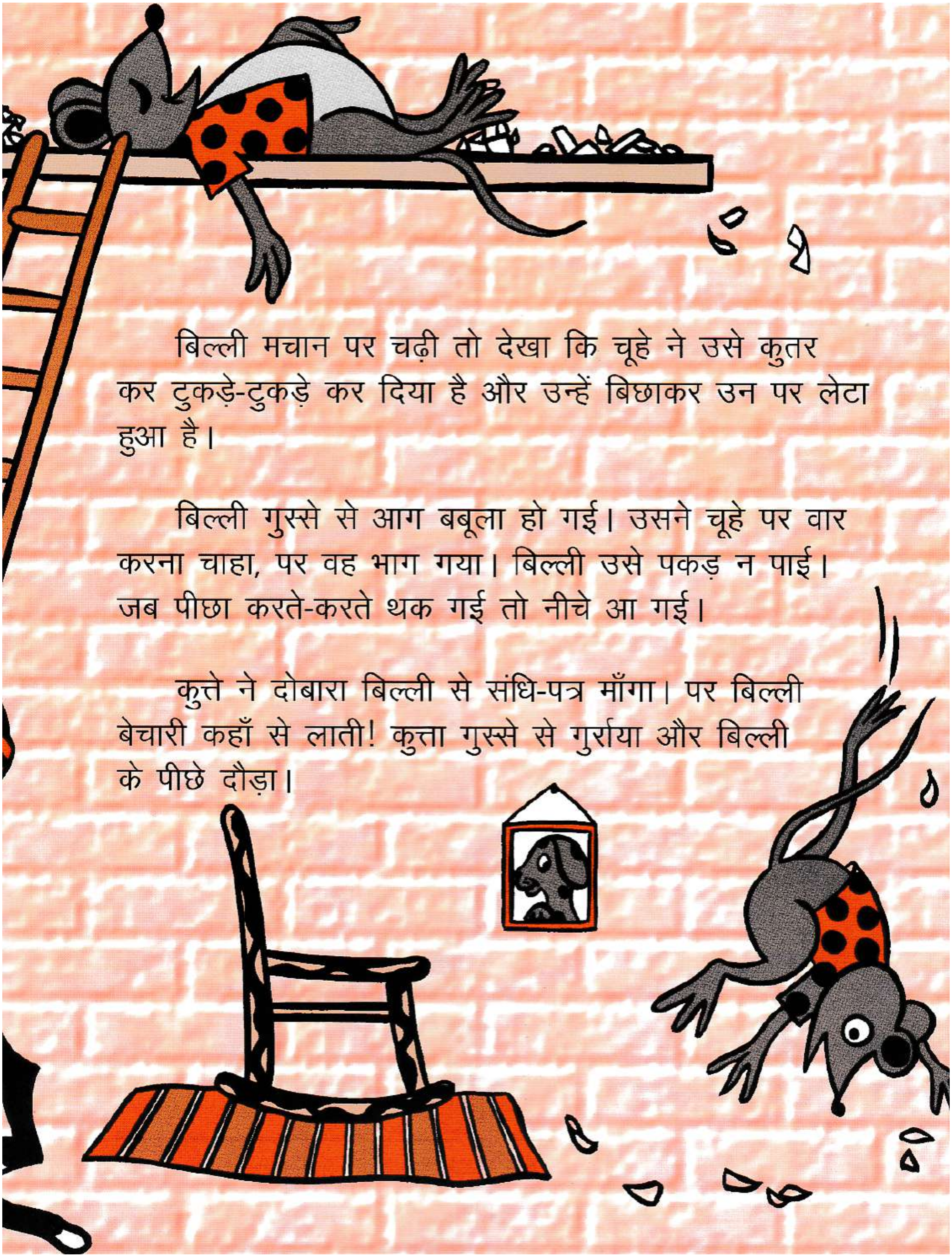


कुछ ही दिनों में कुत्ता अपने काम से तंग आने लगा। उसने गुस्से में बिल्ली से कहा, ''केवल मैं ही सर्दी और बारिश में घर के बाहर रहकर रक्षा करता हूँ। मगर चूहा और तुम घर के अंदर चैन से रहते हो।''

बिल्ली ने कहा, ''क्या तुम्हें हमारा आपसी समझौता याद नहीं?''

कुत्ते ने पूछा, ''कहाँ है वह संधि–पत्र? लाओ, हम फिर से उसे देखेंगे।''

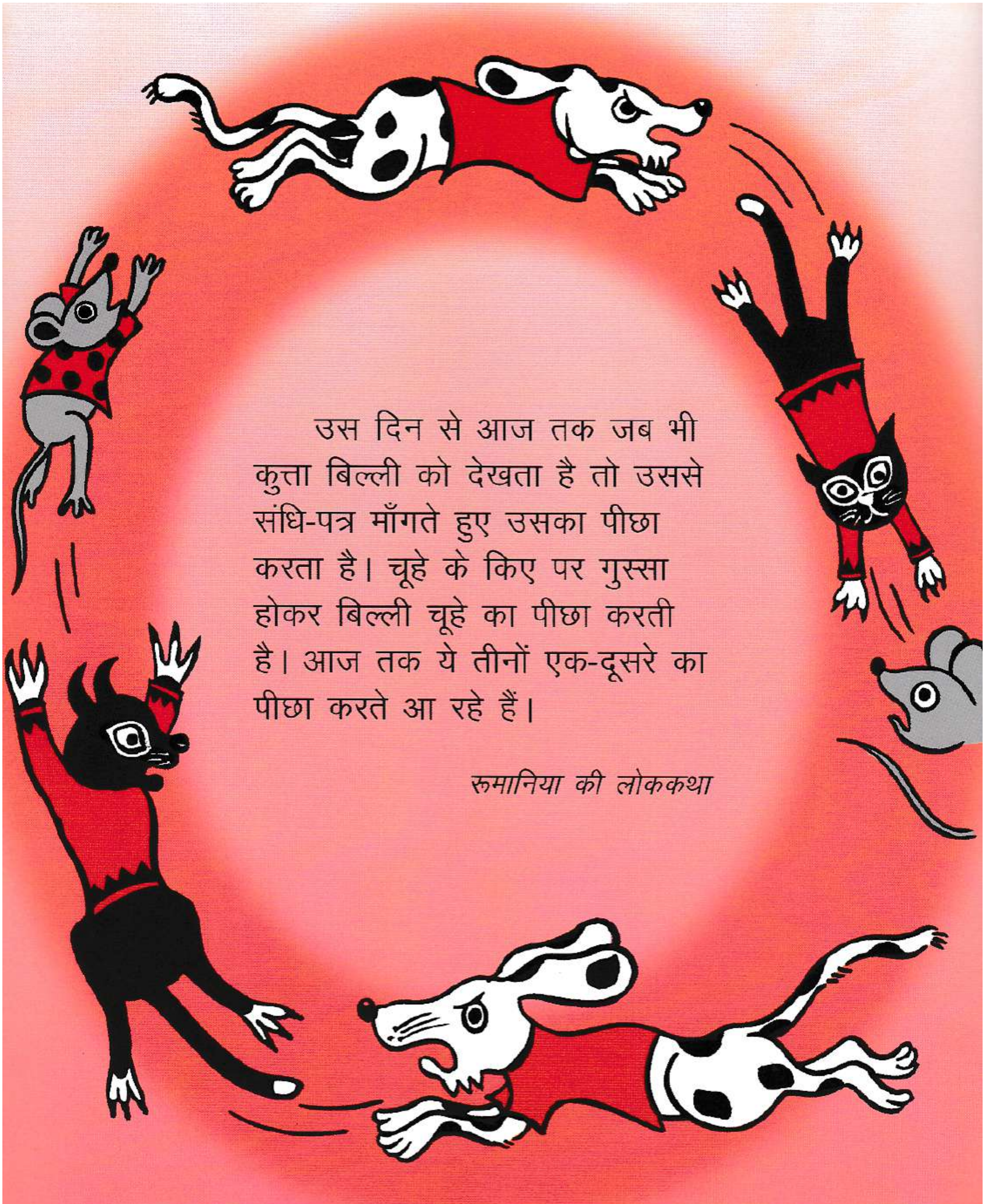




बिल्ली मचान पर चढ़ी तो देखा कि चूहे ने उसे कुतर कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया है और उन्हें बिछाकर उन पर लेटा हुआ है।

बिल्ली गुस्से से आग बबूला हो गई। उसने चूहे पर वार करना चाहा, पर वह भाग गया। बिल्ली उसे पकड़ न पाई। जब पीछा करते-करते थक गई तो नीचे आ गई।

कुत्ते ने दोबारा बिल्ली से संधि-पत्र माँगा। पर बिल्ली बेचारी कहाँ से लाती! कुत्ता गुस्से से गुर्राया और बिल्ली के पीछे दौड़ा।



उस दिन से आज तक जब भी कुत्ता बिल्ली को देखता है तो उससे संधि-पत्र माँगते हुए उसका पीछा करता है। चूहे के किए पर गुस्सा होकर बिल्ली चूहे का पीछा करती है। आज तक ये तीनों एक-दूसरे का पीछा करते आ रहे हैं।

रूमानिया की लोककथा

पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

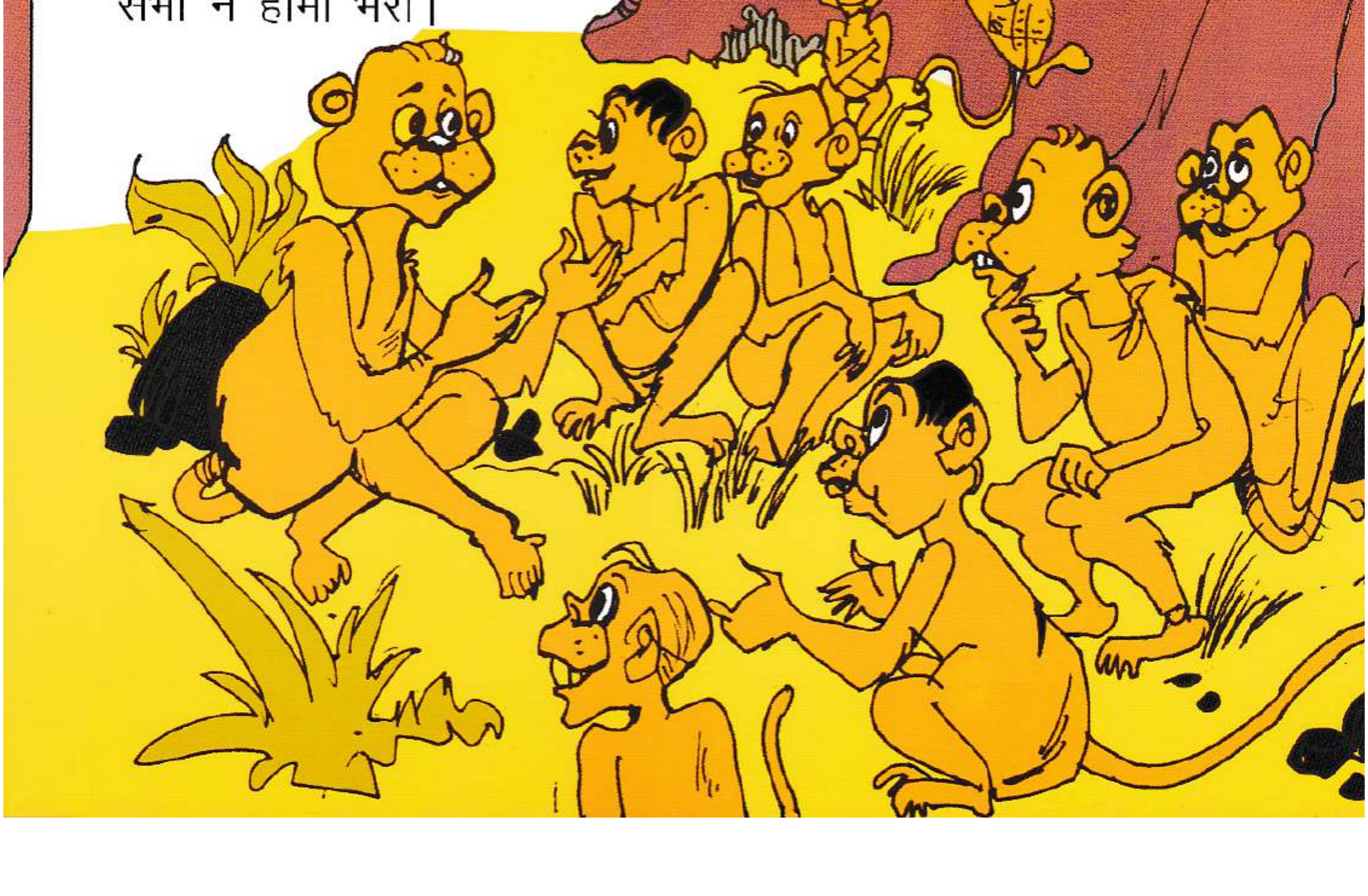
चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

उपवास

सुबह का समय था। जंगल में एक बड़े बरगद के पेड़ के नीचे बंदरों का एक झुंड़ बैठा था। आश्चर्य! सारे बंदर एक दम शांत बैठे थे।

हाँ! वह बंदरों के उपवास का दिन था। उपवास शुरू होने ही वाला था।

मुखिया बंदर उठा। उसने एक सलाह दी, ''शाम का खाना हमें अभी से तैयार रखना होगा। ताकि हम उपवास खत्म होते ही खा पाएँ।'' सभी ने हामी भरी।



एक क्षण में ही सारे युवा बंदर दौड़ते हुए गए और स्वादिष्ट केले के बड़े–बड़े गुच्छे लेकर वापिस आए।

मुखिया बंदर की पत्नी कहने लगी, "फलों को अभी से बाँट लें क्या? उपवास खत्म होने के बाद बंटवारा करने में समय बरबाद होगा। फिर शाम को हमें कितनी भूख भी तो लगी होगी!"

बंदर सहमत हो गए। उन्होंने अपने–अपने हिस्से के केले ले लिए और अपने पास सुरक्षित रख लिए।

एक बड़े बंदर ने कहा, "सिर्फ एक फल खोल के रख लें क्या?"



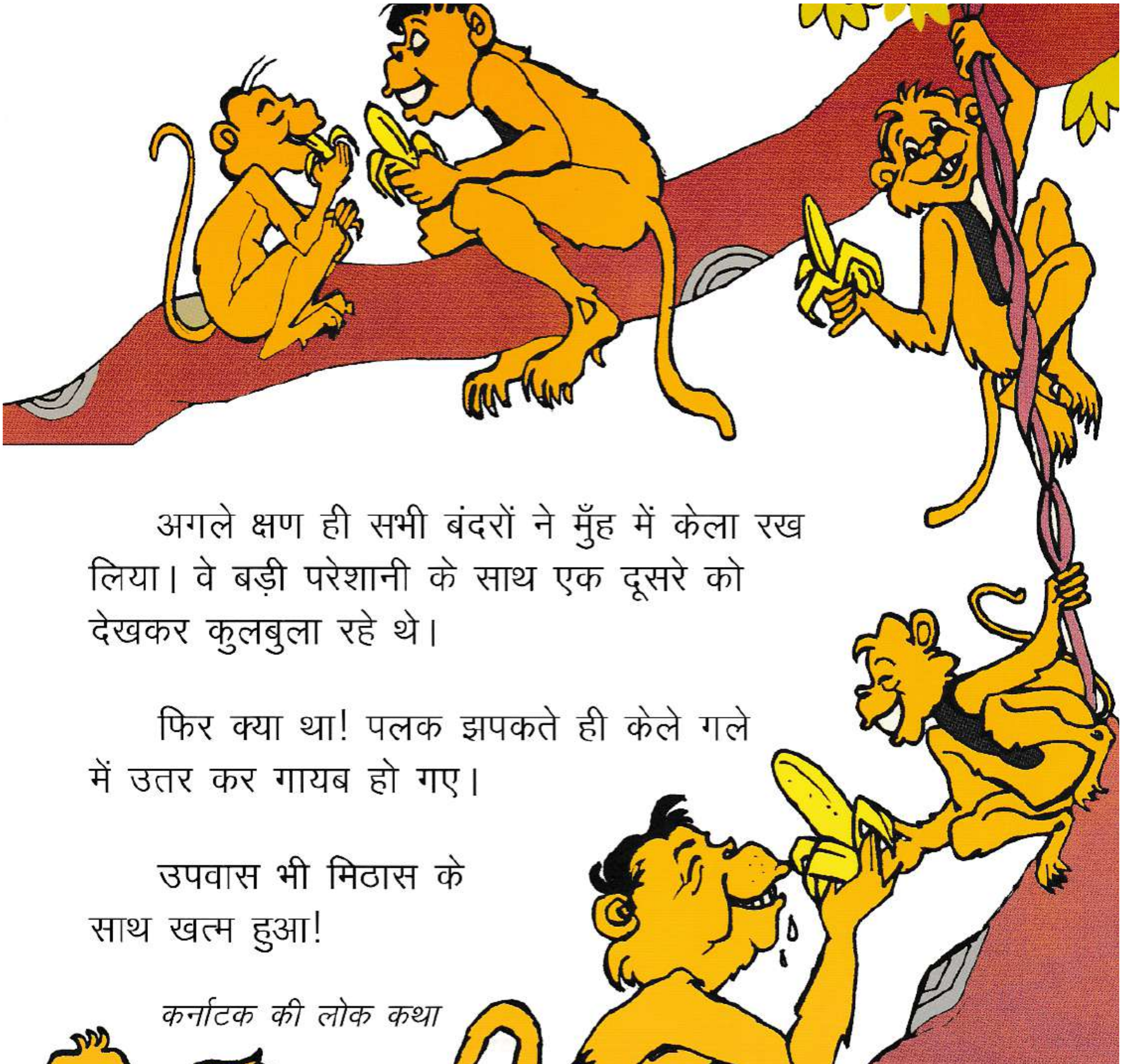


"हाँ! हाँ!" तुरंत एक हट्टे–कट्टे बंदर ने ज़ोर से हामी भरी। कितनी देर फलों को खाए बिना देखते रहेंगे? यह उसके लिए परेशानी की बात थी।

मुखिया बंदर ने निर्देश दिया, "ठीक है। फलों को खोल कर रख लेंगे। मगर शाम तक कोई भी खाएगा नहीं।" 'वाह! यह भी बढ़िया सुझाव है!' सभी बंदरों ने अपने–अपने केले खोल कर रख लिए।

सबसे छोटा बंदर अपने पिताजी के कान में फुसफुसाया, "पापा! क्या मैं केले को मुँह में रख सकता हूँ? मैं वादा करता हूँ कि शाम तक बिल्कुल खाऊँगा नहीं।"

पिता ने बंदरों से कहा, "क्यों न हम सब केले को मुँह में रख लें? शाम को उपवास खत्म होते ही चबाकर खाने में सुविधा होगी।"



अगले क्षण ही सभी बंदरों ने मुँह में केला रख लिया। वे बड़ी परेशानी के साथ एक दूसरे को देखकर कुलबुला रहे थे।

फिर क्या था! पलक झपकते ही केले गले में उतर कर गायब हो गए।

उपवास भी मिठास के साथ खत्म हुआ!

कर्नाटक की लोक कथा

पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू



आओ पता लगाएँ

चार पैर की हूँ मैं
छोटी पूँछ की हूँ मैं
मैं, मैं, मैं करती हूँ मैं
बोलो कौन हूँ मैं

खड़ा-खड़ा सोता है, कभी न सोता लेटकर
कौन जानवर जो दौड़ में, दौड़े सरपट-सरपट

ढेंचू-ढेंचू खुशी में बोलूँ
खूब ढोता हूँ भार
पर गुस्से में होता हूँ तो
पैर की मारूँ तगड़ी मार



दो सूप और मूसल चार
आगे लटक रही पतवार
छोटी पूँछ, जुलूस में आए
कौन है ये, करो विचार

दोस्ती खातिर जान भी दे दूँ
हूँ मैं घर का रखवाला
वफादार हूँ, दोस्त हूँ
बोलो कौन हूँ मतवाला



पानी में रहती हूँ मस्त
जमीन पर आकर हो जाऊँ पस्त

चार फुट के पैर हैं
पर छह फुट लंबी गर्दन
एक गज की पूंछ है मेरी
घर तो है, हरा-भरा वन

पीली दाढ़ी वाले की
गर्जन से सब डरते हैं
सीना तान जब वह आता
थर-थर काँप छिप जाते हैं

आगे पीछे पेड़ चढ़ जाऊँ
पीठ में तीन रेखा हैं
कूद-कूद कर दौड़ लगाते
तुमने मुझको देखा है

गर्दन उसकी लंबी है
पर पीठ है उठी-उठी
पेट में भर पानी
चले रेत में खुशी-खुशी

दबे पाँव आएगी पर चोर नहीं
उछल कूद पकड़ेगी पर पुलिस नहीं
दूध पीती है पर बच्ची नहीं

आठ पैर का जीव हूँ
चलता दाएँ-बाएँ
आगे सीधा चल नहीं पाता
मेरा नाम बताएँ

अंडे से जब बाहर आता
तब होती है पूँछ
बड़ा होकर चार पैरों से
पानी में करूँ उछल-कूद
टर्र-टर्र का गीत गाऊँ
कीड़े खाकर भूख मिटाऊँ

जमीन पर जिऊँ, जिऊँ कुआँ, तालाब, समुंदर
खतरा जान सिर कर लूँ, मज़बूत ढाल के अंदर

बच्चे को यह दूध पिलाए
और छत पर उल्टा लटके
अंधेरे में उड़ता-फिरता
इसकी दुनिया सबसे हटके

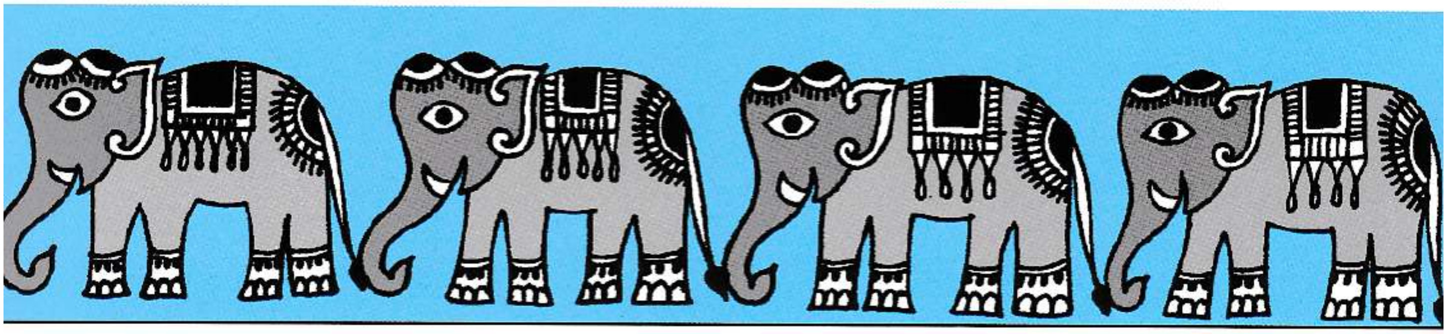
तगड़ा है और रंग का काला
पूरे बदन पर बालों वाला
चौंकाते हुए गुर्राने वाला
पहाड़, जंगल में रहने वाला

गोद में लगा बच्चे को
मैं तो पेड़ चढ़ जाऊँ
डाल-डाल पर उछलूँ कूदूँ
भाँति-भाँति के चेहरे बनाऊँ

बिना गिरे दीवार चढ़ूँ
और पूँछ त्याग बचाऊँ जान
घर की दोस्त, विष कीड़ों की दुश्मन
यह सब है मेरी पहचान



शेर, हाथी, गिलहरी, भालू, मेंढक, घोड़ा, बकरी, बंदर, जिराफ, ऊँट, बिल्ली, छिपकली, केकड़ा, मछली, गधा, चमगादड़, कुत्ता, कछुआ



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

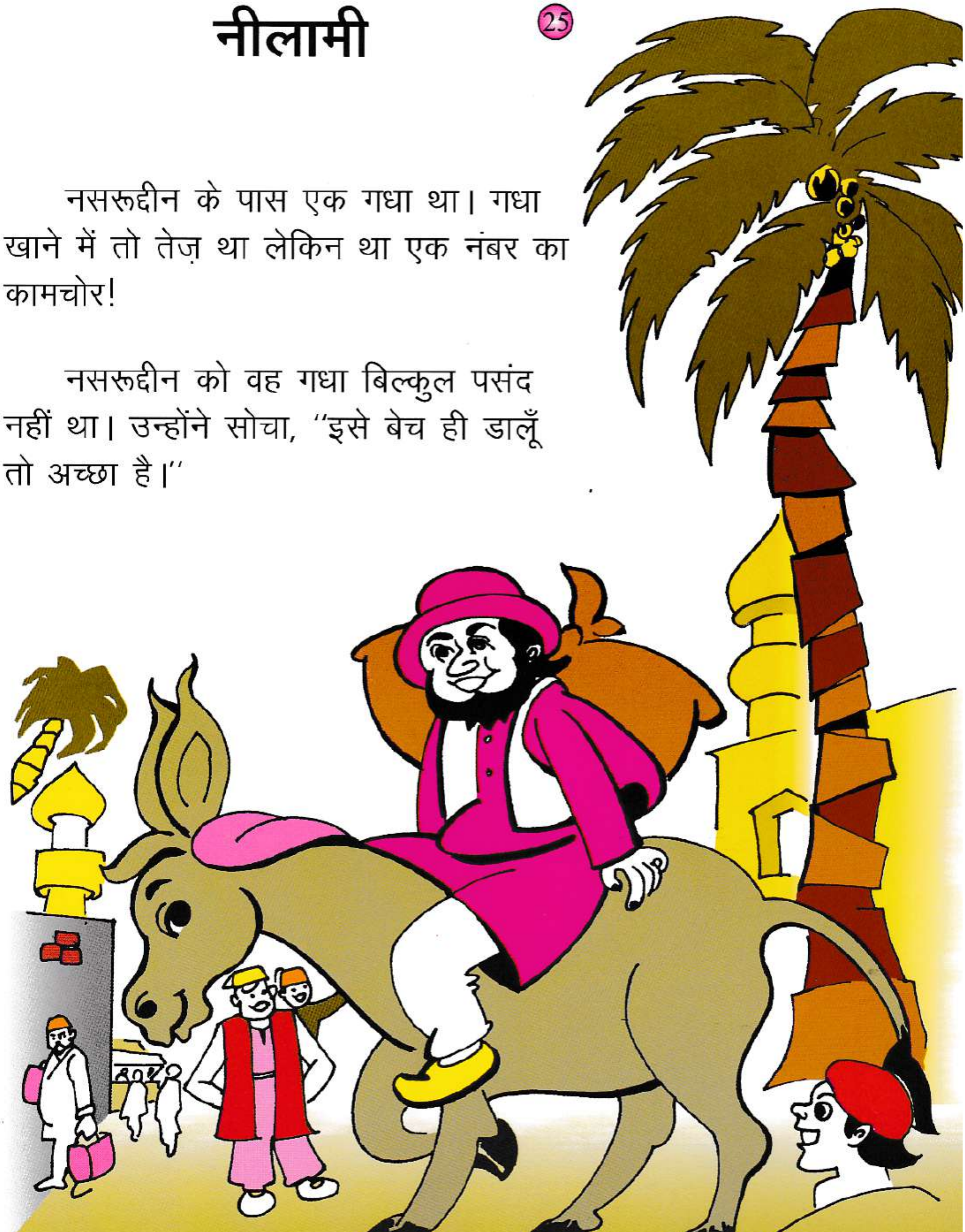
Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

नीलामी

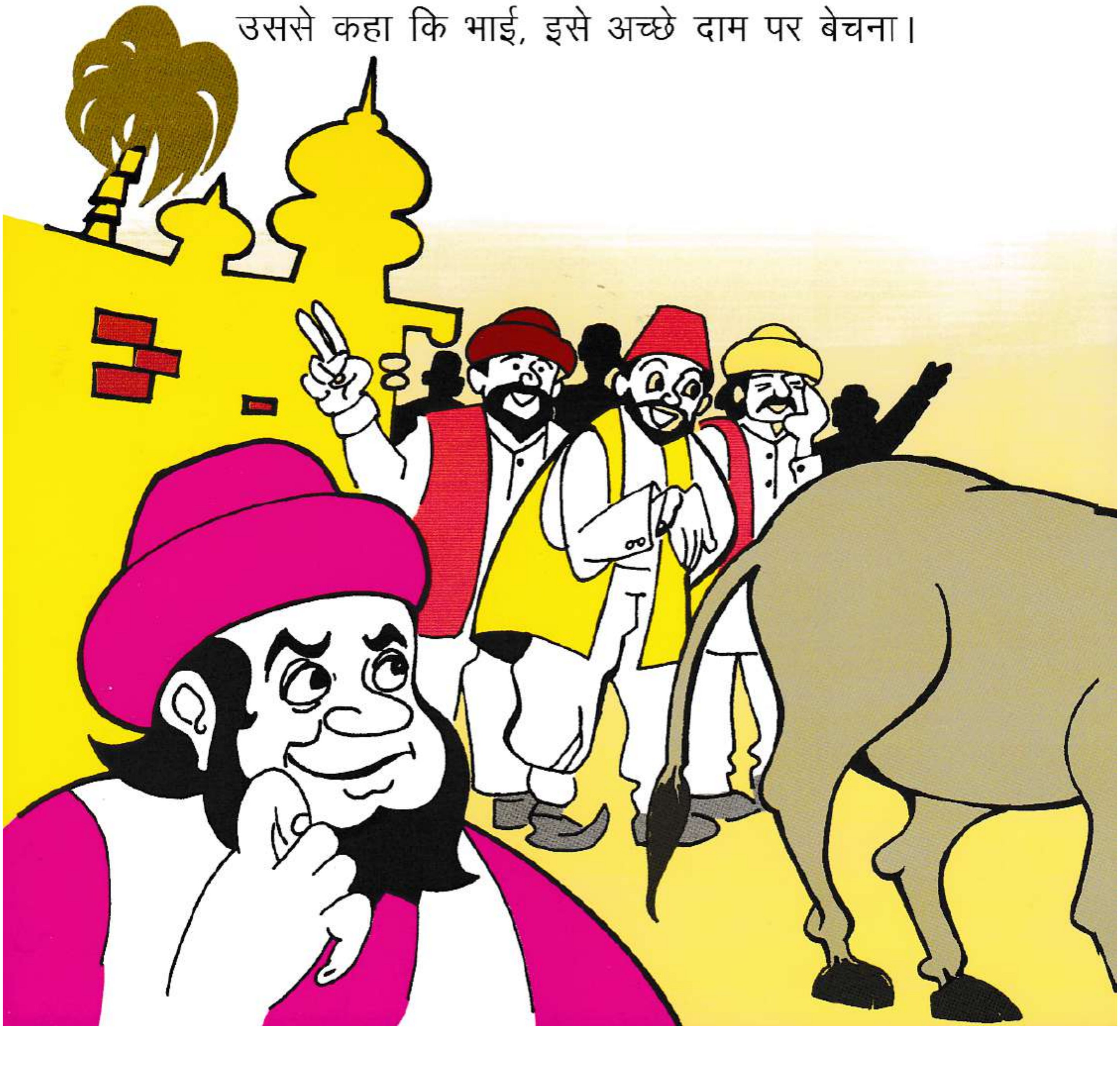
नसरूद्दीन के पास एक गधा था। गधा खाने में तो तेज़ था लेकिन था एक नंबर का कामचोर!

नसरूद्दीन को वह गधा बिल्कुल पसंद नहीं था। उन्होंने सोचा, "इसे बेच ही डालूँ तो अच्छा है।"



एक दिन सुबह वे गधे को हाँक कर मंडी ले गए।

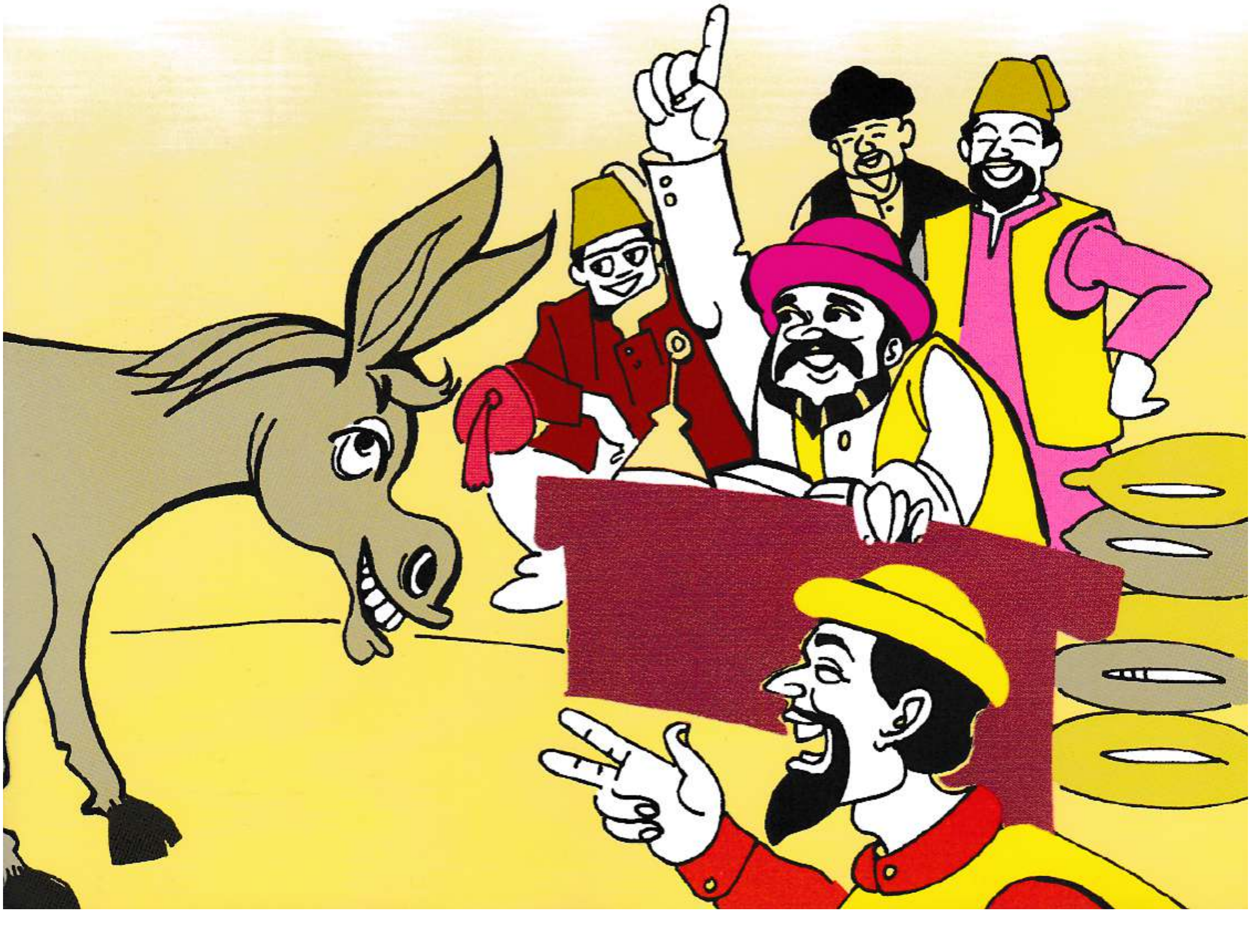
शाम को ज़ोर–ज़ोर से ठहाके मारते हुए घर वापिस आए और अपनी पत्नी से बोले, "आज मैंने क्या किया, मालूम है? सुबह जब मैं बाज़ार गया, वहाँ नीलामी करने वाले को अपना गधा सौंप दिया। उससे कहा कि भाई, इसे अच्छे दाम पर बेचना।



नीलामी वाले ने गधे की तारीफ की झड़ियाँ लगा दीं। वह ज़ोर–शोर से बोली लगाने लगा, "कदरदानो! मेहरबानो! ऐसा बढ़िया गधा कहीं न मिलेगा। आइए! आइए! देखिए!"

"गधे के लंबे कान देखिए। इसकी मज़बूत टाँगें देखिए। इसके दाँतों को देखिए। यह बड़ा जवान गधा है," कह कर बोलियाँ लगाता रहा।

बस! फिर क्या था, लोग भी दाम लगाते रहे। एक खरीददार ने तीन अशरफियों की बोली लगाई। लेकिन नीलामी वाले ने बोली लगाना न छोड़ा।



लोग दस, पंद्रह अशरफियाँ तक देने को तैयार हो गए। इसी तरह गधे का दाम बढ़ता गया। अंत में....." नसरूद्दीन बोल ही रहे थे कि घर के आंगन में गधे के रेंकने की आवाज़ सुनाई दी।

नसरूद्दीन की पत्नी ने अधीर हो कर पूछा, "आखिर हुआ क्या? जल्दी बताइए।"

नसरूद्दीन ने गर्व से कहा, "मैंने सोचा, इतने अद्‌भुत गधे को बेचूँ क्यों? तीस अशरफियाँ देकर खुद उसे खरीदकर वापिस ले आया।"



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

बबूल की चाह

सड़क के किनारे एक बबूल का पेड़ था। पेड़ काँटों से भरा था। 'मुझे कोई पसंद नहीं करता। काँटों के बिना बाकी पेड़ कितने सुंदर लगते हैं,' बबूल को अक्सर यह चिंता खाए जाती थी।

एक दिन वह ऐसा सोच ही रहा था कि अचानक उसके काँटे गायब हो गए। पेड़ पर हरे भरे पत्ते लहराने लगे। यह देख बबूल की खुशी का ठिकाना न रहा।

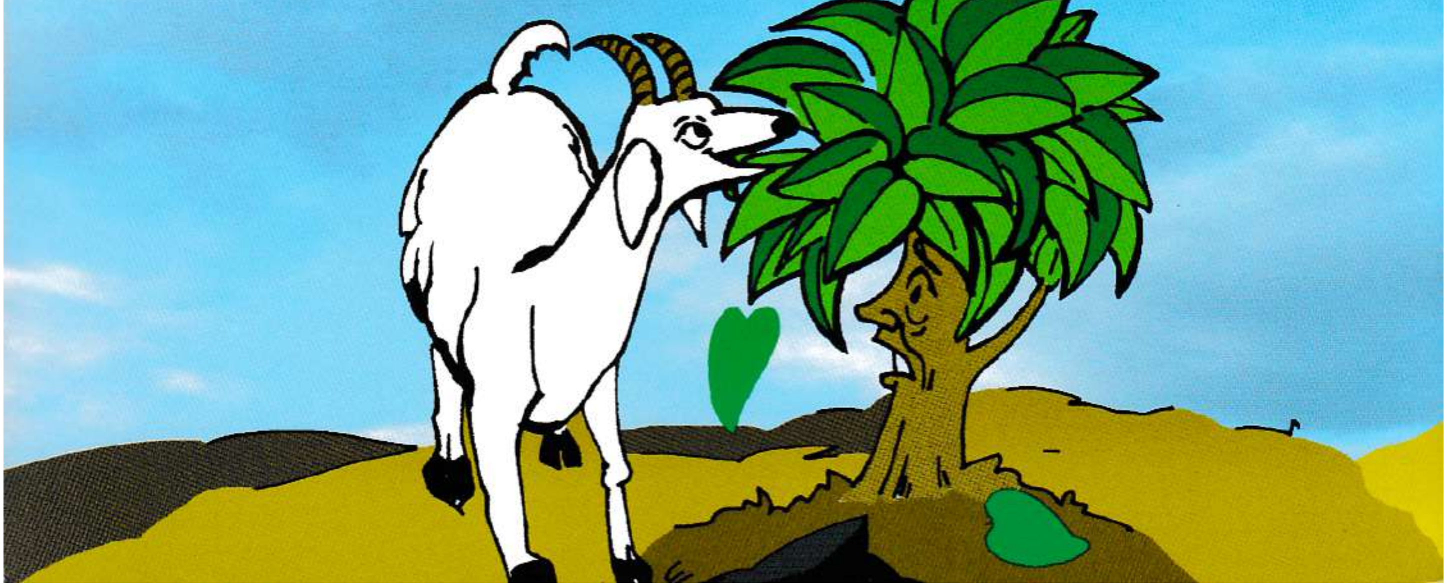
मगर यह खुशी ज़्यादा देर नहीं टिक सकी। कहीं से एक बकरा आया और उसके पत्ते खाने लगा।





बबूल ने सोचा, 'हाय! यह बकरा मेरे पत्ते खाए जा रहा है। मैं क्या करूँ? काश-मेरे पत्ते सोने के होते तो कितना अच्छा होता!' यह क्या? बबूल के पत्ते सोने के हो गए।

तभी एक आदमी वहाँ से गुज़रा। बबूल में लगे सोने के पत्ते देखते ही उसकी आँखें चकाचौंध हो गईं।





"क्या अजूबा है! वाह री किस्मत!" कहते हुए वह एक-एक करके पेड़ के पत्तों को तोड़ने लगा। पेड़ पर एक भी पत्ता नहीं बचा। बबूल का दिल टूट गया।

"क्या मुसीबत है! मनुष्य तो सोने को छोड़ेंगे नहीं। काश, मेरे पत्ते काँच के हो जाएँ, तो कितना अच्छा हो!" बबूल के सोचने की देर थी कि उस पर काँच के पत्ते प्रकट हो गए।

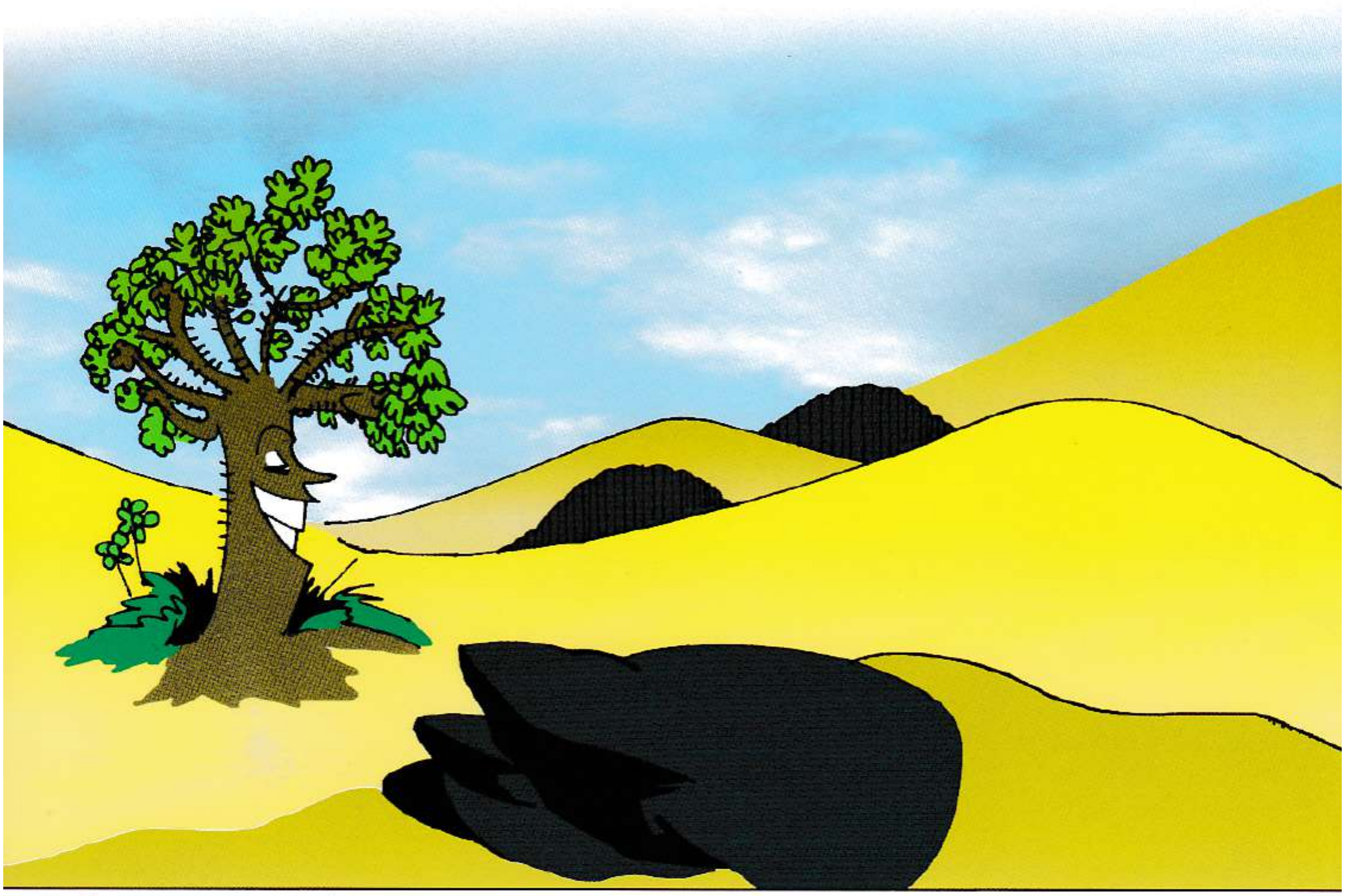


बबूल बहुत खुश हुआ। मगर कुछ ही देर में हवा का तेज़ झोंका आया और काँच के पत्ते एक दूसरे से टकराकर चूर चूर हो गए।

बबूल दुखी होकर बड़बड़ाया, "क्या मैं कभी भी चैन से नहीं जी सकूँगा? क्या मैं ऐसा नहीं बन सकता जिसे बकरा चर न सके, आदमी चुरा न सके और हवा तोड़ न पाए?"

बबूल के ऐसा सोचते ही एक बार फिर उस पर काँटे लग गए। इसके बाद बबूल ने कभी भी काँटेदार होने पर अफसोस नहीं किया।

भारत की लोक कथा



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू



27 शेर और खरगोश

वनराजा शेर बूढ़ा हो चला था। अपना खाना ढूँढने के लिए हमेशा शिकार पर नहीं जा पाता था।

एक दिन शेर ने सभी जानवरों को बुलाया और कहा, ''दोस्तो! मैं शिकार करने आता हूँ तो सभी डर कर भागते हैं। मगर हर बार मैं आप में से एक को ही खाता हूँ। तो, क्यों न इस मुश्किल को आसान कर दें? हर रोज़ आप में से एक जानवर मेरा आहार बनकर स्वयं मेरे पास आए।''



'यह प्रबंध अच्छा है,' जानवरों को कुछ राहत मिली। कौन सा जानवर शेर का आहार बनेगा इसका निर्णय वे एक दिन पहले ही ले लेते। बाकी जानवर चैन से दिन बिताते।

एक दिन खरगोश की बारी आई। 'मैं थोड़े ही शेर का आहार बनूँगा! उससे इस जंगल को ही मुक्त करा दूँगा,' यह सोचते हुए खरगोश ने एक योजना बनाई। वह शेर की गुफा की तरफ जानबूझ कर धीरे-धीरे चलने लगा।

बहुत देर तक इंतज़ार करने पर भी अपना आहार न पाकर शेर को गुस्सा आने लगा। खरगोश के आते ही वह गरजने लगा, "मेरा आज का आहार क्या तुम ही हो? इतनी देर से क्यों आए हो?"





खरगोश विनम्रता से बोला, "हुज़ूर! मैं आज घर से सुबह जल्दी ही निकल पड़ा था। रास्ते में मुझे एक और शेर मिला। वह मुझे खाने आया। मगर मैंने कह दिया कि मैं अपने राजा के पास जा रहा हूँ। इस पर उस शेर ने कहा, 'तुम्हारा राजा कौन है, मुझे दिखाओ! मैं उसे मार डालूँगा।' बस सरकार! किसी तरह बचकर मैं इधर भाग आया।"

शेर बहुत क्रोधित हुआ और बोला, "कहाँ रहता है वह दुष्ट? चलो, मुझे दिखाओ।" खरगोश आगे-आगे चल पड़ा और शेर पीछे-पीछे।

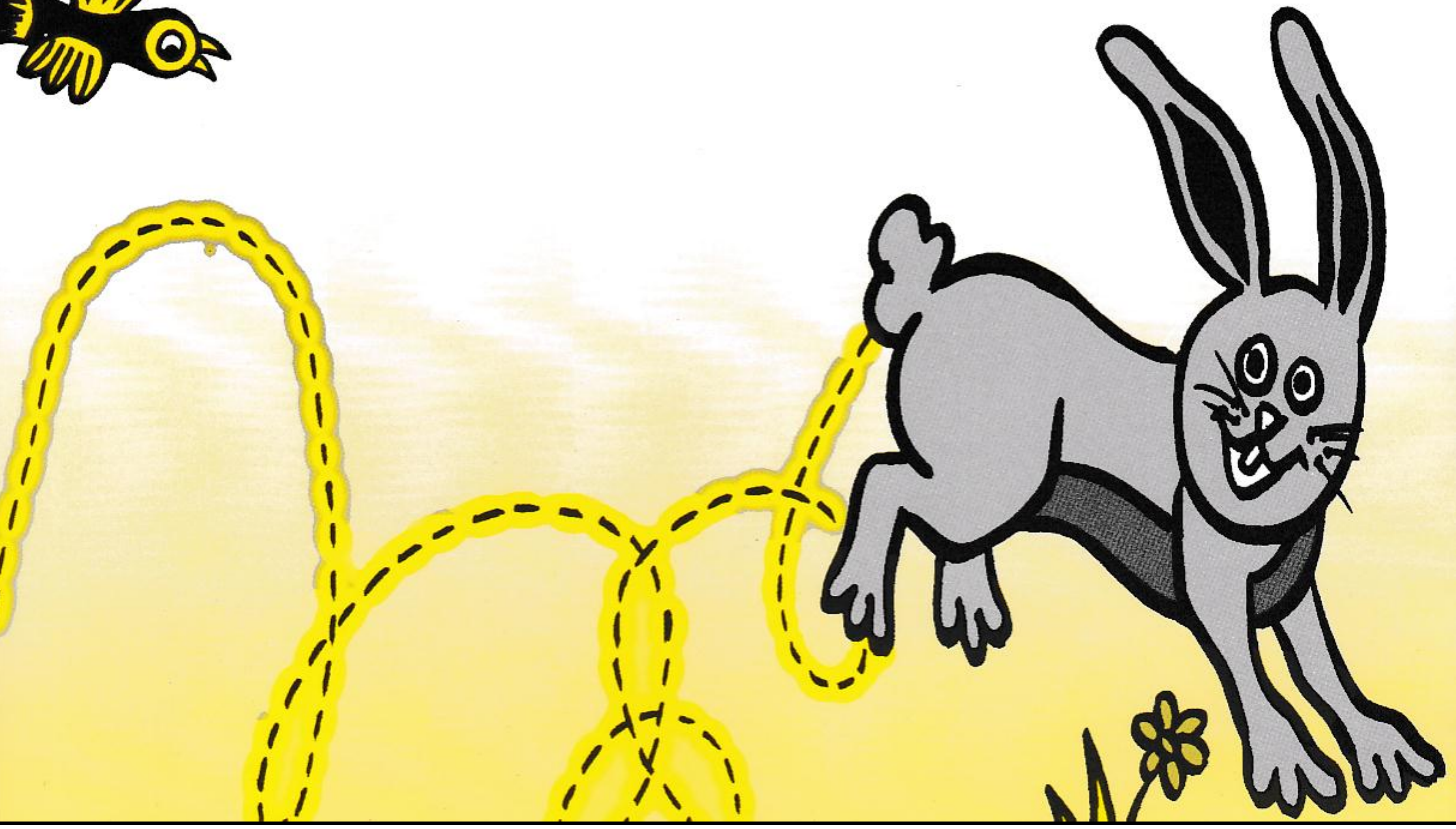


खरगोश ने कहा, "हुज़ूर, आप यहीं ठहरिए। मैं ज़रा जाकर देख आता हूं।" आगे जाकर खरगोश ने कुएं में झाँककर देखा। उसे पानी में अपनी छाया दिखाई दी।

"राजा! वह शेर यहाँ है," कहकर खरगोश रस्ते से हट गया। क्रोध से गरजते हुए शेर ने कुएँ के अंदर झाँका। पानी में उसे अपने क्रोध भरे चेहरे की छाया नज़र आई। बिना सोचे-समझे उसे मारने शेर कुएँ में कूद पड़ा और पानी में डूब गया।

नन्हा खरगोश उछलते-कूदते घर पहुंचा।

पंचतंत्र की कहानी



Publisher Rajalakshmi Srinivasan Memorial Foundation

P. Saraswati V. Vijayakanthi

L. S. Saraswathi S. Rajalakshmi

Artist Uma Krishnaswamy

नाटा या लंबा

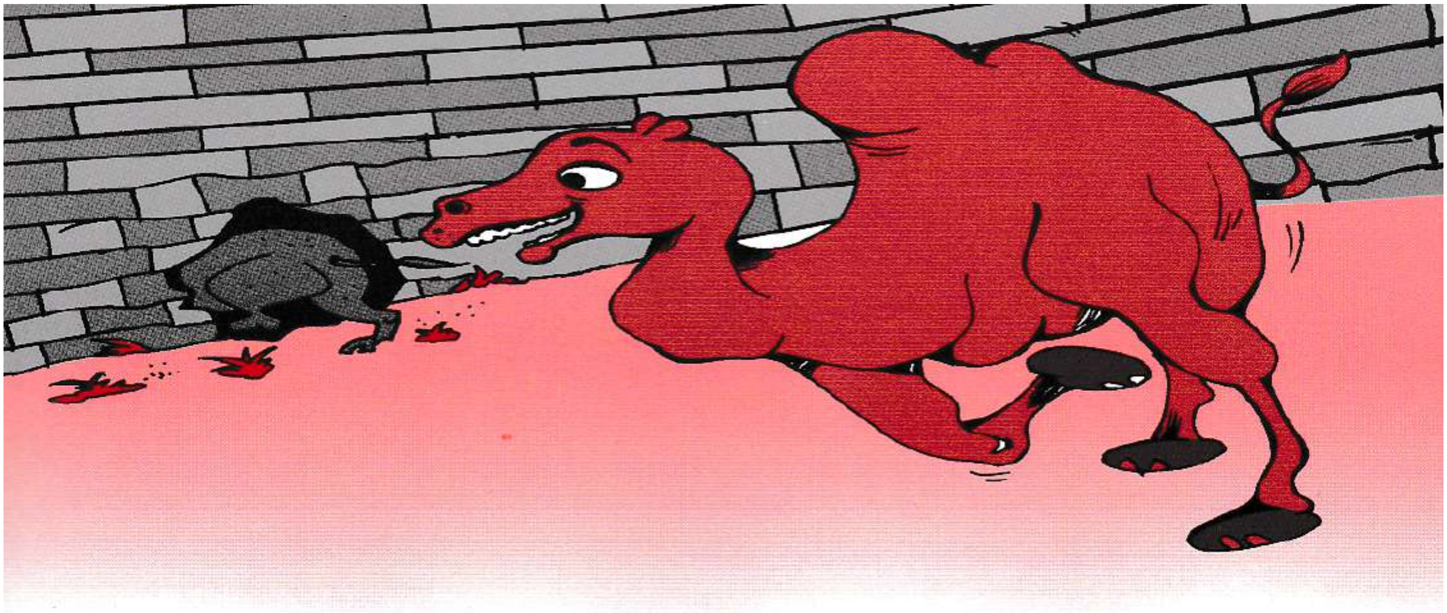
ऊँट और सुअर हमेशा एक–दूसरे को छेड़ते रहते। एक दिन बगीचे में...

ऊँट : अरे टिंगू! क्या तुम्हें मुझ जैसा लंबा होने की इच्छा नहीं होती?

सुअर : ऐ... लंबू! तुम जैसा लंबा होने की इच्छा मैं क्यों करूँ? लंबे होने से तो नाटा होना ही बेहतर है।

ऊँट : तुम ऐसा कैसे कह सकते हो? अब मुझे देखो! इस ऊँची दीवार के उस पार की सभी चीज़ों को मैं मज़े से देख सकता हूँ। वहाँ खाने की अच्छी–अच्छी चीजें हैं। हरी–भरी टहनियाँ और पत्ते हैं, जिन तक मैं आसानी से पहुँच सकता हूँ। तुम तो उन्हें देख भी नहीं सकते। अब समझ में आया? लंबा होना कितना अच्छा है!





सुअर : सब्र करो भाई! सब्र करो! इस दीवार तले छेद को तो देखो। मैं उसके अंदर घुसकर उस पार जा सकता हूँ। वहाँ रखी चीजों को जी भर के खा सकता हूँ। मगर तुम तो यहाँ घुस भी नहीं सकते। इस तरफ खड़े होकर मुझे खाते हुए देखते रहना।

यह कहते हुए सुअर छेद के अंदर घुसकर उस पार चला गया।

ऊँट : तुम ठीक ही कहते हो। नाटे होने के भी फायदे हैं और लंबे होने के भी।

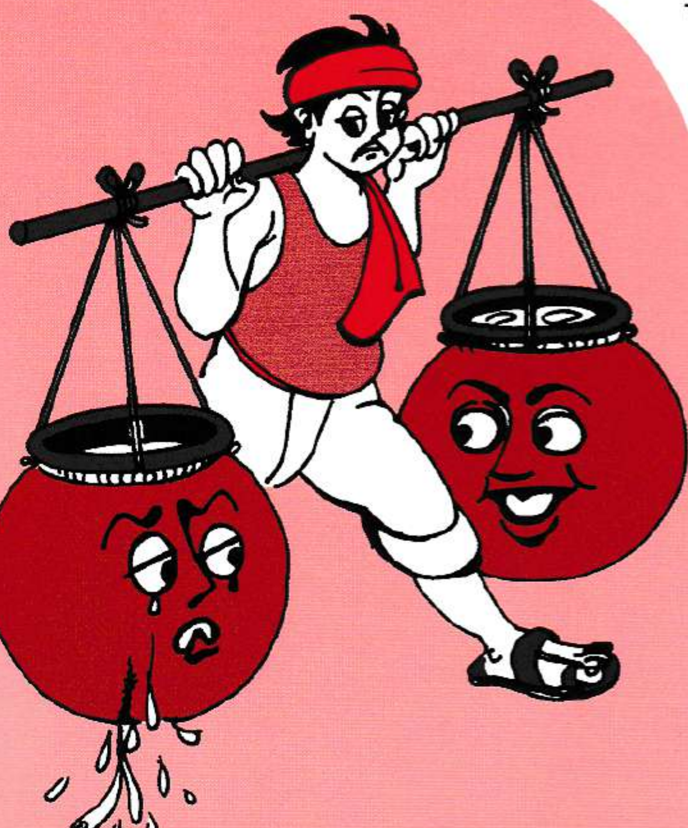
लंबे को लंबाई भली! नाटे को उसका नाटापन!

टूटी मटकी

गोपाल दिन में कई बार नदी पर जाता। दो घड़ों में पानी भर कर लाता। एक घड़े में दरार थी, जिसमें से पानी टपकता रहता। घर पहुँचते–पहुँचते उस घड़े में आधा पानी ही बच पाता।

जिस घड़े में दरार नहीं थी, वह घड़ा गर्व के साथ कहता, "मुझे देख! मैं एक भी बूँद पानी नहीं गिराता हूँ। पूरा का पूरा पानी घर तक पहुँचाता हूँ।"

दरार वाले घड़े को बहुत दुःख होता। एक दिन उसने गोपाल को अपना दुःख बताया, "मुझे माफ कर दो। तुम कितनी मेहनत करके पानी ढो कर लाते हो। मगर मैं तो उसमें से आधे पानी को बहा देता हूँ।"



गोपाल मुस्कराने लगा। दरार वाले घड़े को प्यार से देखा और बोला, "घर की ओर जा रही इस पगडंडी के किनारे सुंदर–सुंदर फूल खिले हैं, उन्हें तो देखो।"

हाँ! रास्ते में बहुत खूबसूरत फूल खिले हुए थे। दरार वाला घड़ा अपना दुःख भूलकर फूलों का आनंद लेने लगा। पर घर पहुँचते ही कम पानी देख फिर से पछताने लगा। बोला, ''सुंदर फूलों को दिखाकर, मेरा दुःख भुला दिया। फिर भी मैं अपनी कमी को भूल नहीं पा रहा हूँ।

गोपाल ने कहा, ''तुम मेरी बात को ठीक से समझे नहीं। हर रोज़ घर आते–जाते जो पानी तुम गिरा देते हो, उससे ये पौधे पानी पीते हैं और इनमें फूल खिलते हैं। मैं चाहता तो एक नया घड़ा खरीद सकता था। लेकिन मेरे प्यारे घड़े, तुमसे पानी पा कर इन फूलों में जान आ गई। ये फूल खिलकर सबको खुशी देने लगे हैं। तुम ने ही तो इस काम में सहायता की है!

यह सुन दरार वाला घड़ा धीरे से मुस्कराया और फूलों का मज़ा लेने लगा।

भारत की लोक कथा



चींटी ने चप्पल बनाई



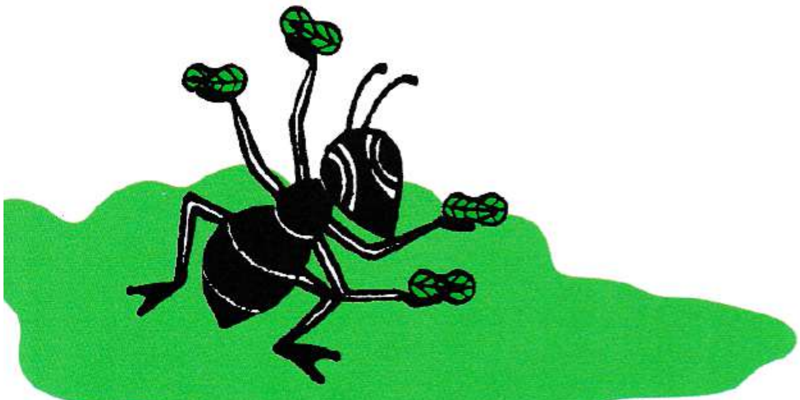
एक जंगल में एक चींटी रहती थी। वह दूसरी चींटियों जैसी नहीं थी। हमेशा अनोखे काम की तलाश में इधर–उधर फिरती रहती थी।

एक बार उसने कुछ पत्ते इकट्ठे किए। रात भर काम करके उन पत्तों से एक जोड़ी चप्पल बनाई। सुबह होते ही उन्हें बेचने के लिए निकल पड़ी।

रास्ते में उसे एक बंदर मिला। चींटी ने बंदर से कहा, "बंदर मामा! इन चप्पलों को खरीद लो न।" बंदर ने जवाब दिया, "अरे भाई! मेरे तो चार पैर हैं। भला दो चप्पल खरीद कर क्या करूँगा?"

चींटी घर लौट आई। उस रात भी जाग कर उसने एक जोड़ी चप्पल और बना डाली।





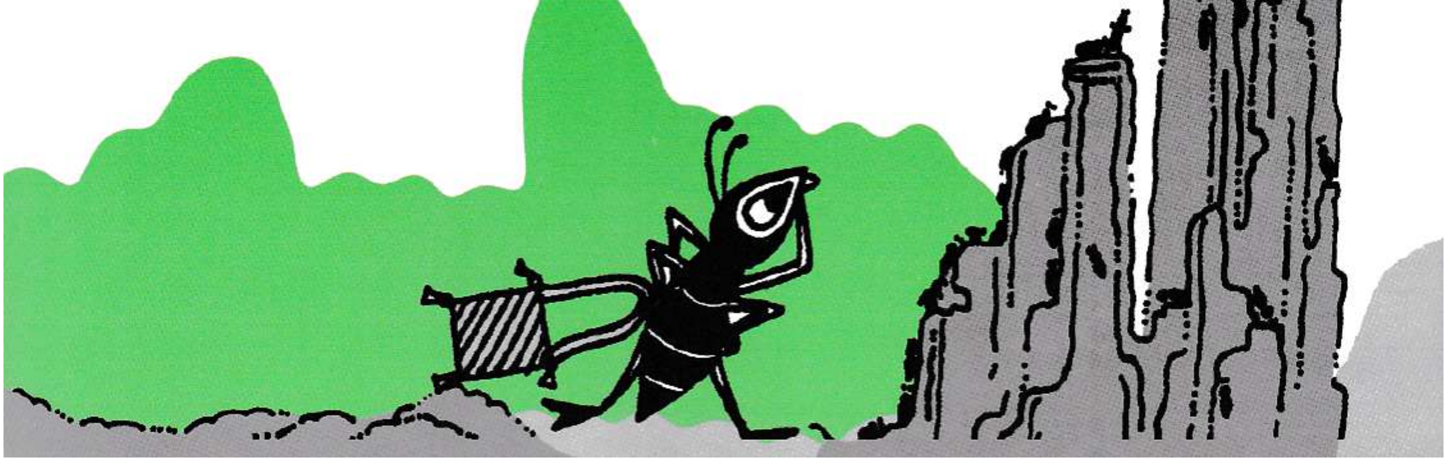


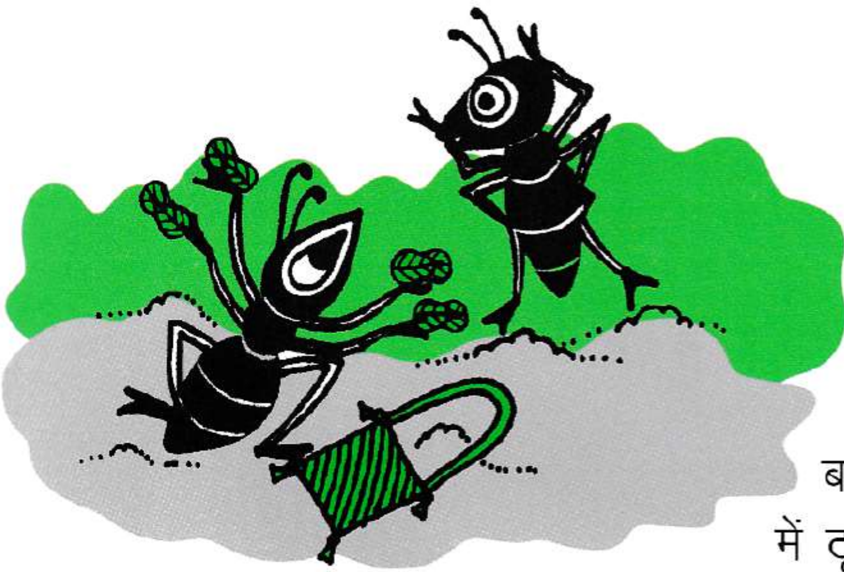
सुबह होते ही चार चप्पलों को लेकर वह बंदर मामा के पास गई। बंदर ने चप्पलों को हाथ में लेकर उन्हें अच्छी तरह परखा।

"ये चप्पलें तो छोटी हैं। मेरे पैरों में कहाँ आएँगी? तुम जैसी चींटियों के लिए ही यह ठीक रहेंगी," यह कहकर उसने चप्पल लेने से इनकार कर दिया।

अब चप्पलों को लेकर वह अपनी एक सहेली के पास गई। उसकी सहेली ने कहा, "चार चप्पलें खरीदकर मैं क्या करूँगी? क्या तुम्हें याद नहीं कि हम चींटियों के छह पैर होते हैं?"

निराश होकर चींटी घर लौट आई। उसने दो और चप्पलें बनाईं। अगले दिन छह चप्पलों को लेकर वह फिर अपनी सहेली के पास गई।





सहेली ने सभी चप्पलों को पहनकर देखा और बोली, ''ये तो बहुत हल्की हैं। दो दिन में टूट जाएँगी। मुझे नहीं चाहिए। एक काम करो। सीधे मकड़ी के पास जाओ। वह चप्पलों को ले लेगी।''



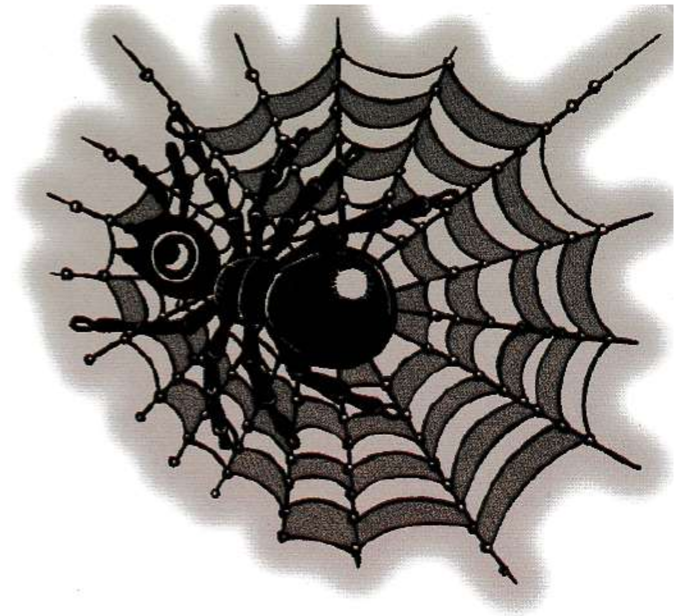
चींटी अब तक दुःखी हो चुकी थी। घूम–घूम कर थक भी चुकी थी। फिर भी छह चप्पलों को उठा कर वह मकड़ी के घर गई।

बाहर ही खड़ी होकर मकड़ी को आवाज़ लगाई, ''मकड़ी दीदी! मकड़ी दीदी!'' अंदर जाती तो जाल में फँस जाती!

चींटी को देखकर मकड़ी ने पूछा, ''इतनी थकी हुई क्यों लग रही हो?'' चींटी ने उसे सारी बात बताई।

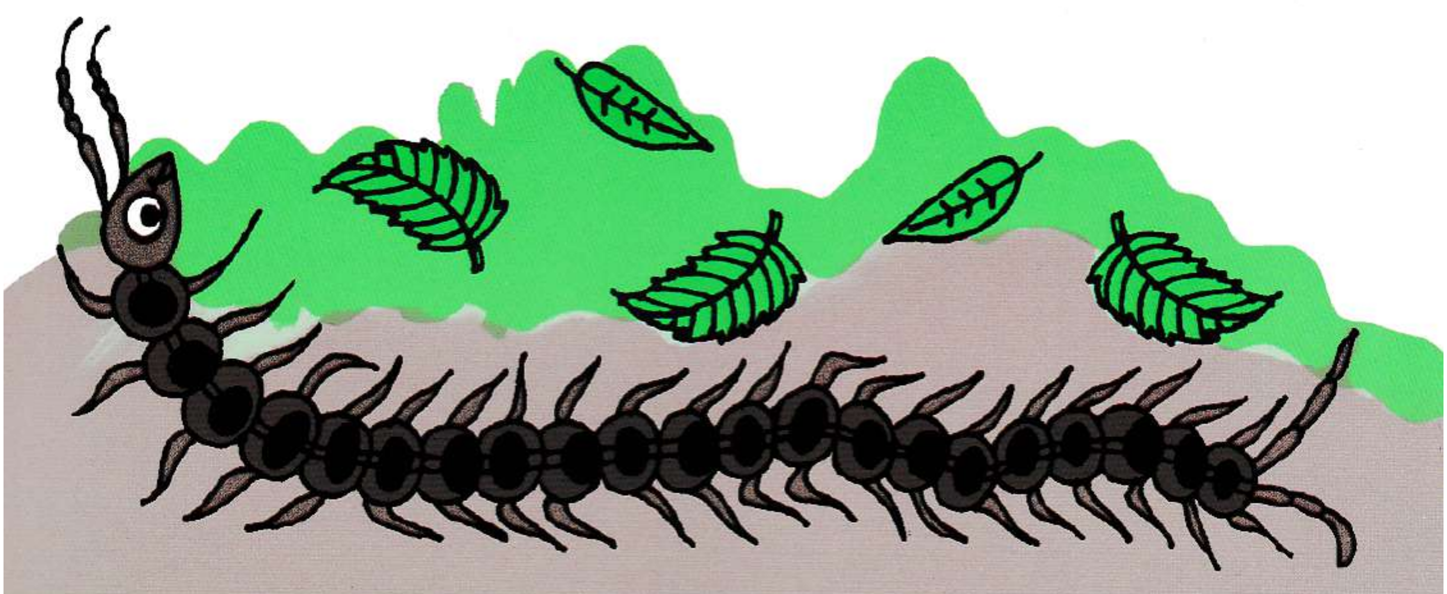






मकड़ी दीदी ने कहा, "तुम्हारी समस्या को सुलझाने के लिए मैं एक उपाय बताती हूँ। तुम कनखजूरे के पास जाओ। उसके कई पैर होते हैं। रोज़ दो–दो चप्पलें तुम से ले लेगा। सदा के लिए तुम्हारा खरीददार बन जाएगा।"

यह सुनकर चींटी खुशी–खुशी घर लौट आई।



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

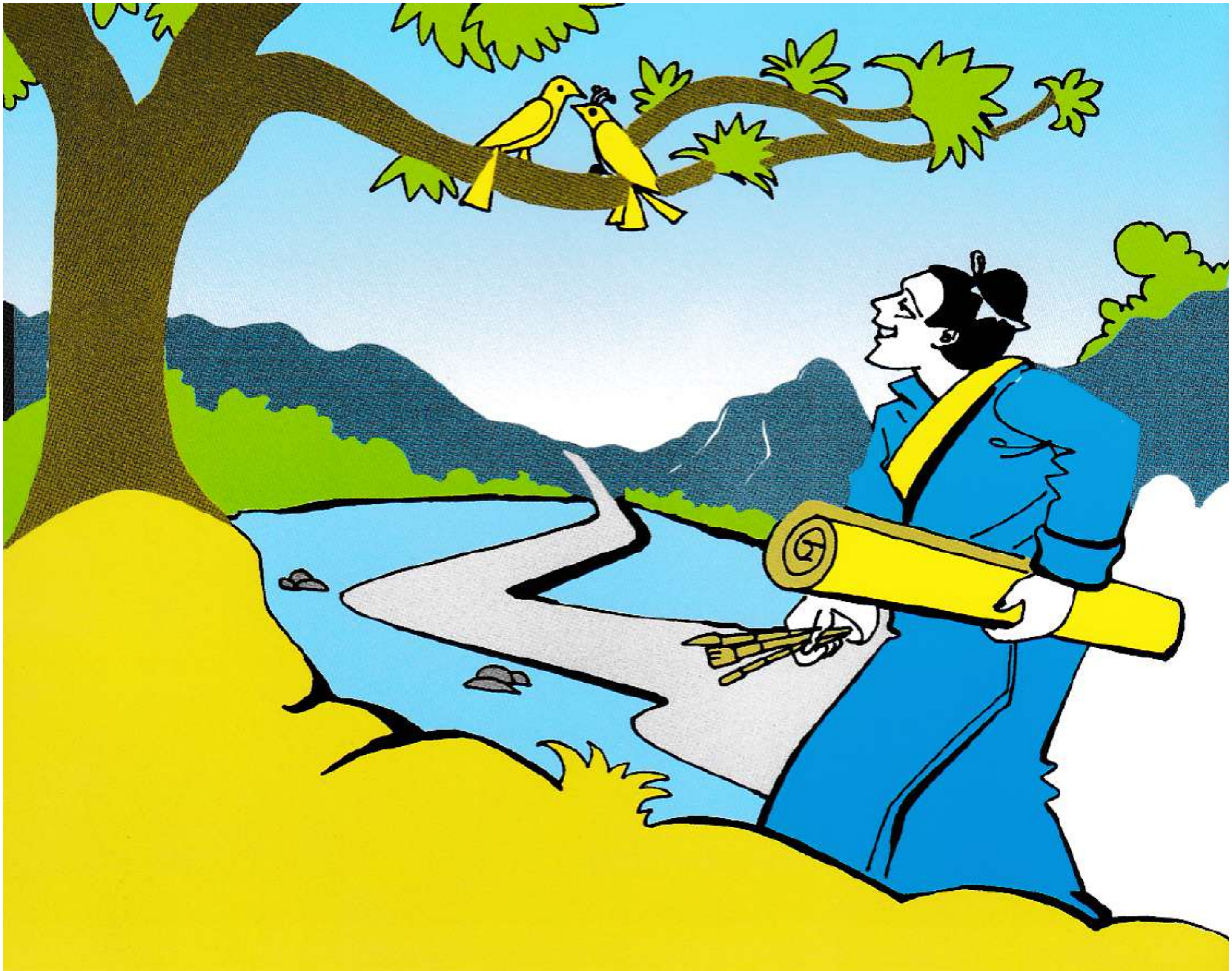
चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

चित्रकार यांग

बहुत समय पहले चीन में यांग नाम का एक बालक अपने मामा के पास रहता था। उसके मामा एक मशहूर चित्रकार थे। मामा जब भी चित्र बनाते, यांग घंटों उनके पास ही बैठा रहता। उनकी चित्रकारी को गौर से देखता रहता।

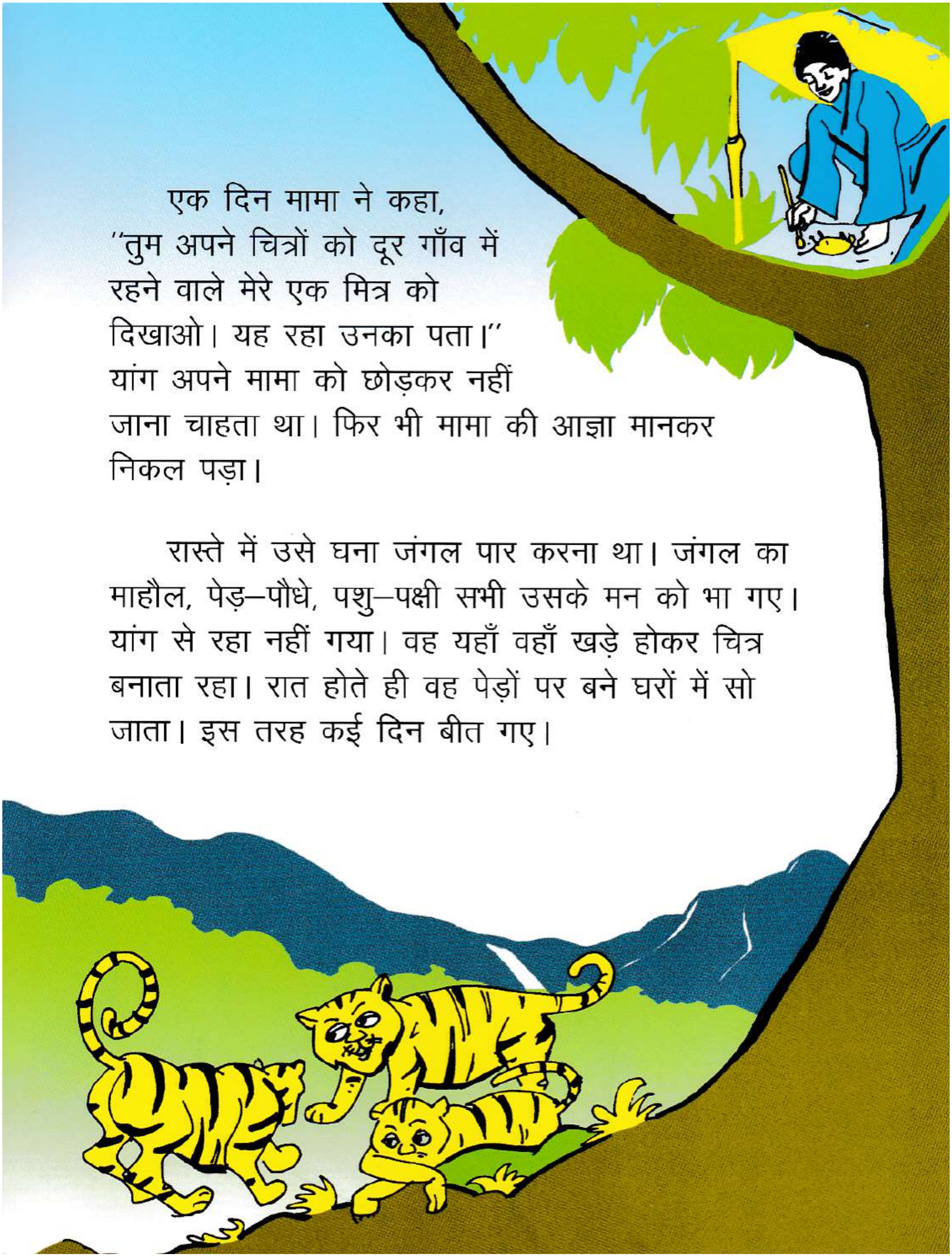
चित्रकला में उसकी रुचि को मामा ने पहचान लिया। वे उसे भी चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करते। फिर उन चित्रों का निरीक्षण भी करते।





एक दिन मामा ने कहा, "तुम्हारी चित्रकारी बहुत बढ़िया है। तुम तो मुझ से भी अच्छे चित्र बना लेते हो। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे बनाए चित्रों की प्रदर्शनी गाँव में लगवाएँ। जिससे सभी तुम्हारी कला देखें।"

यांग के मामा ने सभी को निमंत्रण दिया। यांग के चित्र देखने बहुत लोग आए। चित्रों का आनंद लिया। यांग की तारीफ करते हुए बोले, "ये सभी चित्र सजीव लगते हैं। तुम्हारा बनाया हुआ मधुमक्खी के छत्ते और फूलों का चित्र देखकर तो मधुमक्खियाँ आ जाएँगी। पक्षी भी धोखा खा जाएँगे।"



एक दिन मामा ने कहा, "तुम अपने चित्रों को दूर गाँव में रहने वाले मेरे एक मित्र को दिखाओ। यह रहा उनका पता।" यांग अपने मामा को छोड़कर नहीं जाना चाहता था। फिर भी मामा की आज्ञा मानकर निकल पड़ा।

रास्ते में उसे घना जंगल पार करना था। जंगल का माहौल, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी सभी उसके मन को भा गए। यांग से रहा नहीं गया। वह यहाँ वहाँ खड़े होकर चित्र बनाता रहा। रात होते ही वह पेड़ों पर बने घरों में सो जाता। इस तरह कई दिन बीत गए।

ऊँचाई पर बने इन घरों से सुंदर दृश्य दिखते थे। यह देख यांग खुश हो जाता। प्रकृति की सुंदरता के चित्र बनाते–बनाते एक दिन उसने एक सुअर देखा। उसका चित्र बनाकर रंग लगाया ही था कि अचानक किसी के चीखने की आवाज़ आई। ''बाघ! बाघ!'' चिल्लाते हुए एक आदमी तेज़ी से भागा आ रहा था।

'बाघ से कैसे बचें?' झट से यांग को एक उपाय सूझा। उसने अपने बनाए हुए सुअर के चित्र को झाड़ियों के सामने रख दिया। फिर दोनों वहाँ से भाग निकले।

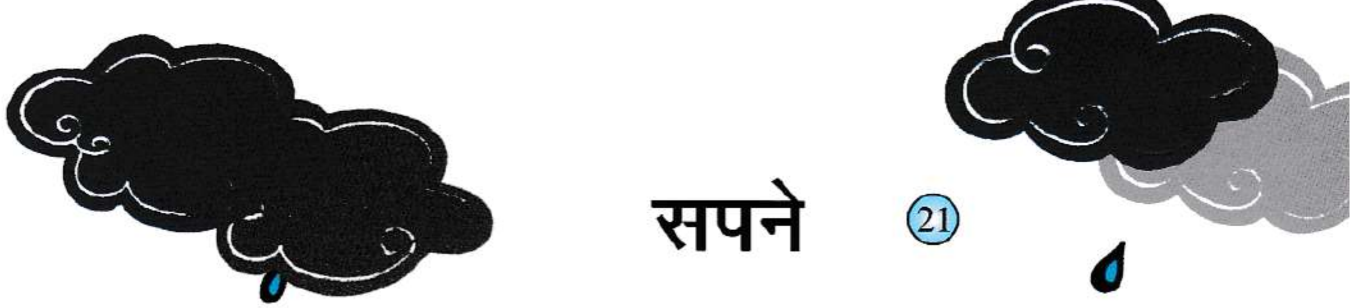
पीछा कर रहे बाघ की नज़र सुअर के चित्र पर पड़ी। उसका ध्यान बंट गया। वह चित्र को घूरने लगा और ज़ोर से गुर्राया। इस बीच यांग और उसका साथी पेड़ पर बने घर के अंदर घुस गए।

चीन की कथा



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू



सपने (21)

बाहर तेज़ बारिश हो रही थी। मिन्नी खिड़की से झाँक रही थी। उसे बारिश बहुत पसंद थी।

थोड़ी देर बाद बारिश रुक गई। मिन्नी और उसकी छोटी बहन रानी दौड़कर बाहर गईं। छत से पानी की बूँदें टपक रही थीं। दोनों अपने हाथ फैलाकर पानी की बूँदों को पकड़ने लगीं। सड़क पर वर्षा की बूँदें छोटे-छोटे गड्ढों में भरी हुई थीं। दोनों बहनें पानी में कूद-कूद कर छपछपाते हुए खेलने लगीं।



तभी आकाश में एक सुंदर सा इंद्रधनुष निकला। लाल, नीला, पीला, बैंगनी, कितने रंग थे उसमें! मिन्नी आश्चर्य के साथ एकटक देखती रही।



इंद्रधनुष उसे एक पुल जैसा लगा। उसने सोचा, 'यह पुल कहाँ जा रहा है?' वह सपनों में खो गई। धीरे-धीरे वह पुल पर चलने लगी। चलते-चलते सारे आकाश की सैर कर डाली। "दीदी, माँ बुला रही है," रानी की आवाज़ कान में पड़ते ही वह धरती पर उतर आई।

अगले दिन मिन्नी और रानी स्कूल से वापिस आ रही थीं। तब मिन्नी ने आकाश में एक सारस को उड़ते देखा। मिन्नी ने एक पल के लिए आँखें बंद कर लीं।

वह सपनों में उड़ने लगी। उड़ते-उड़ते कई जंगलों, पहाड़ों और नगरों की सैर कर डाली। उसने कई अद्भुत, अनोखे दृश्य देखे।





उसके गाँव में पुराने ज़माने की बनी हुई पत्थर की कई मूर्तियाँ थीं। इमारतें और मंदिर भी थे। मिन्नी उन्हें बिना पलक झपके देखती और सपनों में खो जाती। अपनी मन पसंद मूर्तियों के चित्र मन ही मन बनाती। वह अक्सर अपनी बहन से कहती, ''बड़ी होकर मैं एक मूर्तिकार बनूँगी।''

उसके घर के पास एक तालाब था। उसकी सीढ़ियों पर बैठी मिन्नी मछलियों को देखती।

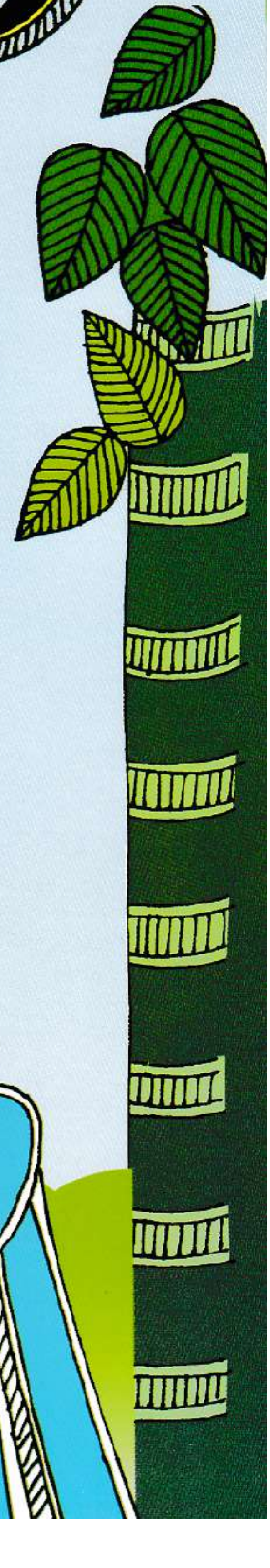


आदर्श विद्यार्थी



पांडवों और कौरवों ने अपने गुरू द्रोणाचार्य से कई तरह की कलाएँ व विद्याएँ सीखीं। अर्जुन को धनुर्विद्या में विशेष रुचि व लगन थी। वह शीघ्र ही धनुर्विद्या में कुशल हो गया।

अपनी इस विशेष क्षमता के कारण अर्जुन गुरू द्रोणाचार्य का सबसे प्रिय शिष्य बन गया।





दुर्योधन और उसके भाइयों को यह अच्छा नहीं लगता था। वे हमेशा उसे ईर्ष्या की नज़र से देखते थे।

एक दिन द्रोणाचार्य ने अपने शिष्यों की प्रतिभा को जाँचना चाहा। उन्होंने लकड़ी से बनी एक चिड़िया को पेड़ पर टाँग दिया।

फिर द्रोण ने सभी छात्रों से कहा, "छात्रों, वहाँ उस चिड़िया को देखो। तुम लोग उसकी आँख पर निशाना लगाकर तीर चलाओ।" सब छात्र तैयार हो गए।





पहले युधिष्ठिर को बुलाया गया। वे तीर चलाने ही वाले थे कि द्रोण ने पूछा, "आप को क्या दिखाई दे रहा है?"

युधिष्ठिर ने कहा, "गुरूजी! आप दिखाई दे रहे हैं। पेड़ दिखाई दे रहा है। पत्ते दिखाई दे रहे हैं और चिड़िया दिखाई दे रही है।"

द्रोण ने कहा, "हट जाओ! तुम ठीक निशाना लगाकर बाण नहीं चला सकते।"

फिर दुर्योधन को बुलाया। पूछने पर दुर्योधन ने गर्व से उत्तर दिया, "गुरूवर! केवल आप ही नहीं दिखाई दे रहे हैं। आपके आस–पास के सभी लोग दिखाई दे रहे हैं। पेड़, पत्ते, पक्षी सब साफ दिखाई दे रहे हैं।"

द्रोण ने कहा, "हट जाओ दुर्योधन! तुम भी ठीक से तीर चला नहीं पाओगे।"



इसी तरह भीम, नकुल, सहदेव और अन्य भाइयों से यही प्रश्न पूछा। सबने इसी तरह के जवाब दिए।

अंत में अर्जुन आया। धनुष और बाण हाथ में लेकर तैयार हुआ। सब कुछ भूलकर एकटक चिड़िया को ही देखने लगा।

द्रोणाचार्य ने पूछा, "अर्जुन, तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?"

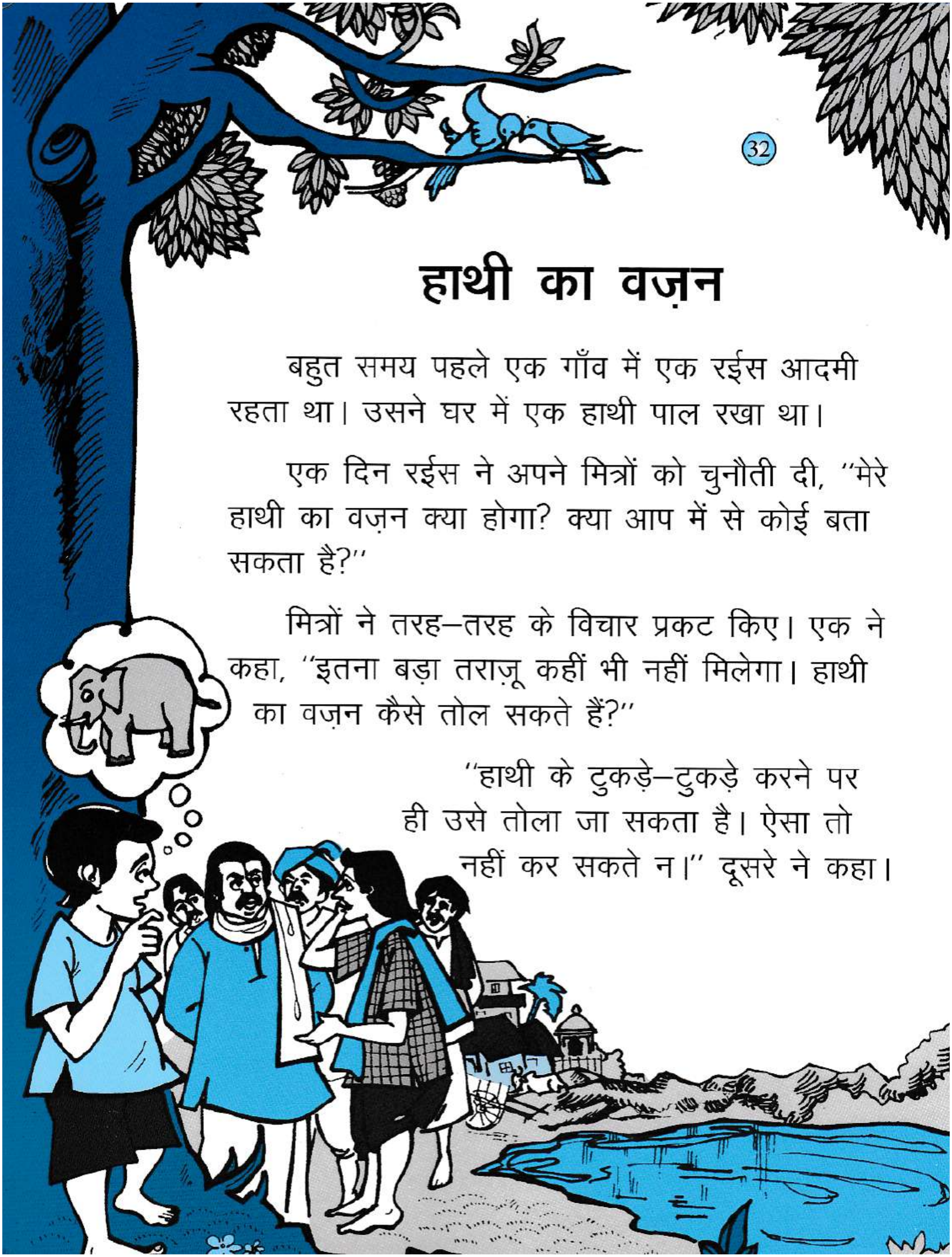
अर्जुन ने कहा, "गुरूदेव! मुझे केवल चिड़िया की आँख दिखाई दे रही है।"

अर्जुन का पूरा ध्यान लक्ष्य पर देखकर गुरू द्रोण बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने तुरंत कहा, "अब तुम तीर चला सकते हो।"

वाह! तीर सीधा चिड़िया की आँख पर जा लगा।

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी



हाथी का वज़न

बहुत समय पहले एक गाँव में एक रईस आदमी रहता था। उसने घर में एक हाथी पाल रखा था।

एक दिन रईस ने अपने मित्रों को चुनौती दी, ''मेरे हाथी का वज़न क्या होगा? क्या आप में से कोई बता सकता है?''

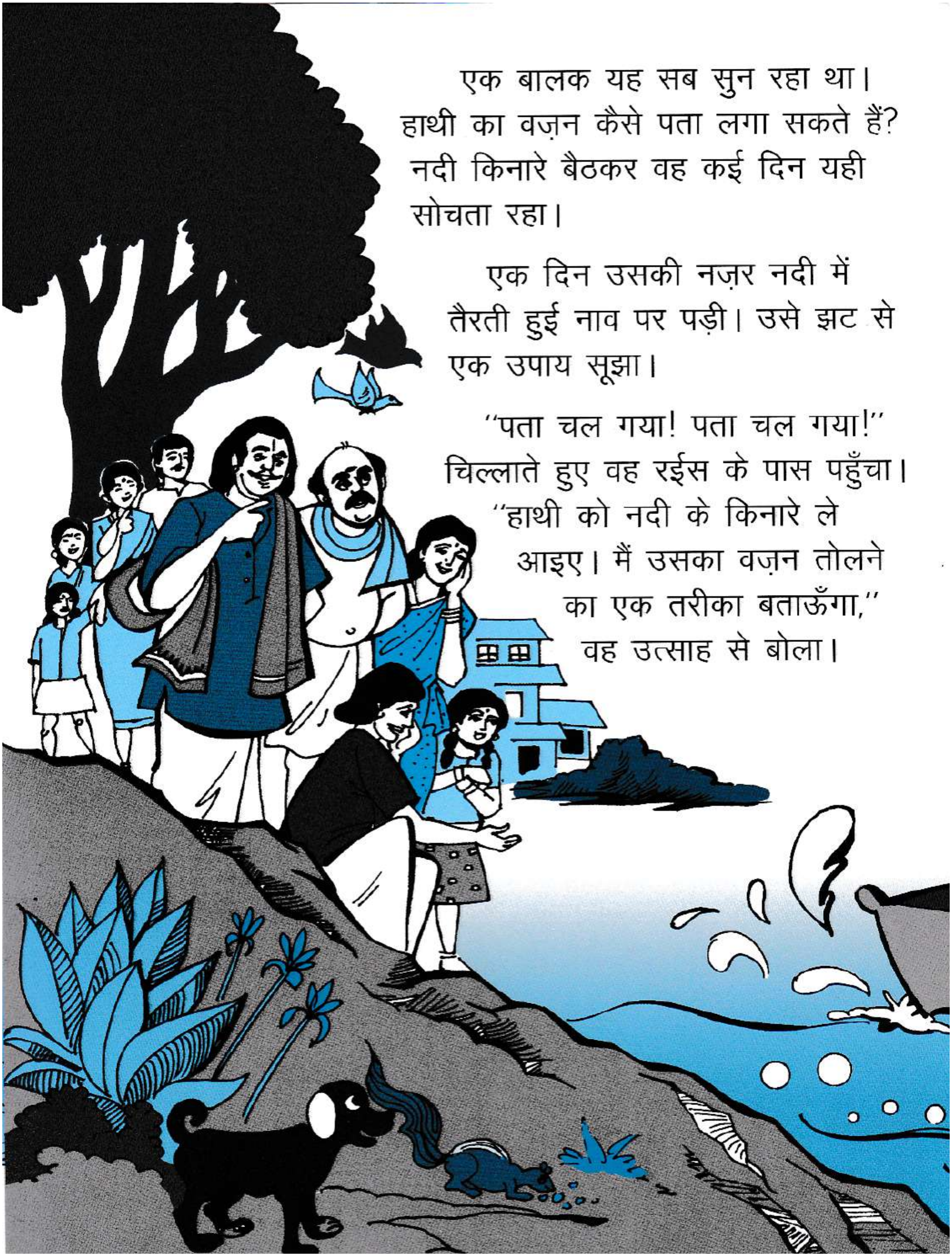
मित्रों ने तरह–तरह के विचार प्रकट किए। एक ने कहा, ''इतना बड़ा तराज़ू कहीं भी नहीं मिलेगा। हाथी का वज़न कैसे तोल सकते हैं?''

''हाथी के टुकड़े–टुकड़े करने पर ही उसे तोला जा सकता है। ऐसा तो नहीं कर सकते न।'' दूसरे ने कहा।

एक बालक यह सब सुन रहा था। हाथी का वज़न कैसे पता लगा सकते हैं? नदी किनारे बैठकर वह कई दिन यही सोचता रहा।

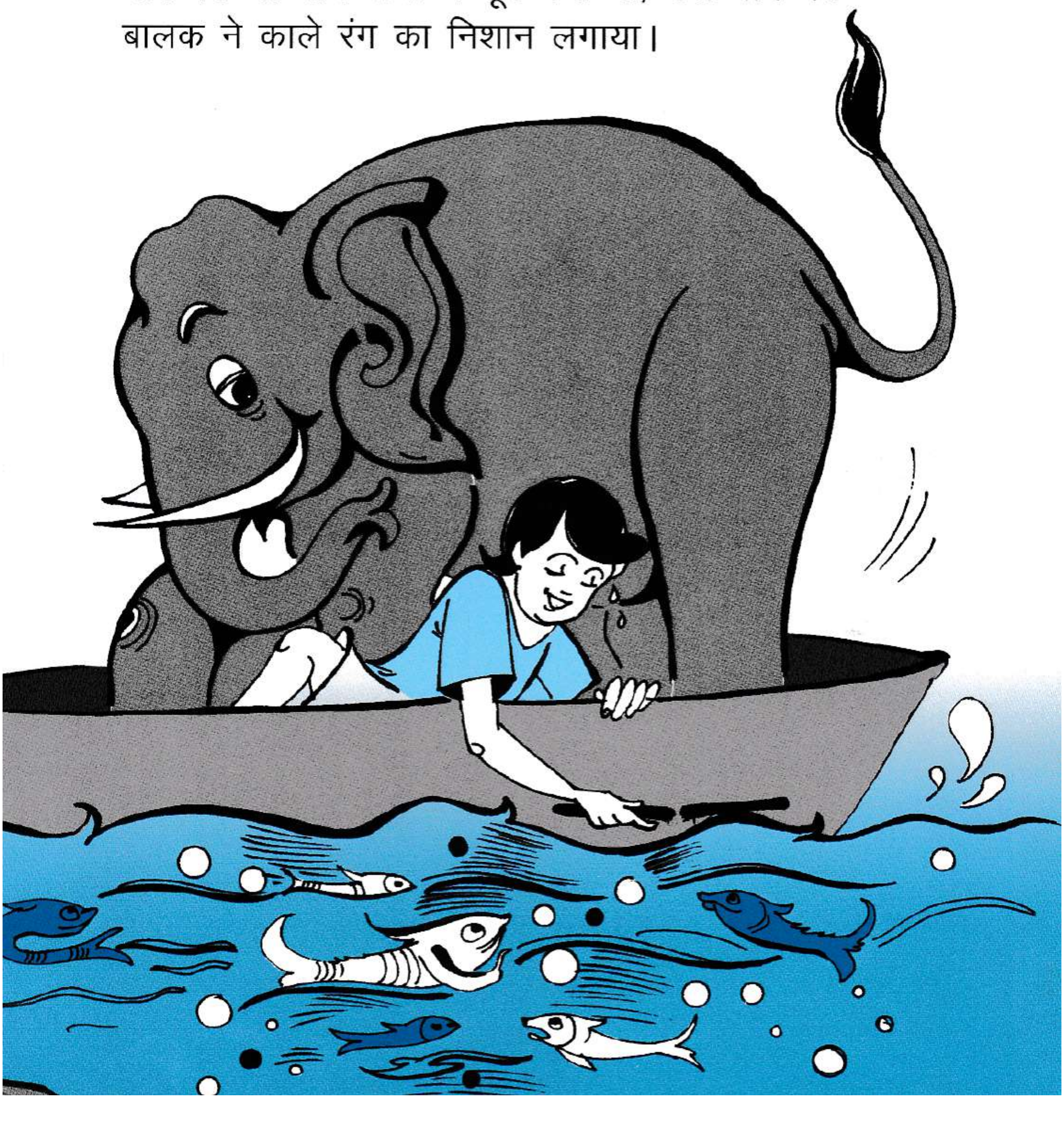
एक दिन उसकी नज़र नदी में तैरती हुई नाव पर पड़ी। उसे झट से एक उपाय सूझा।

"पता चल गया! पता चल गया!" चिल्लाते हुए वह रईस के पास पहुँचा। "हाथी को नदी के किनारे ले आइए। मैं उसका वज़न तोलने का एक तरीका बताऊँगा," वह उत्साह से बोला।



हाथी नदी के तट पर पहुँचा। बालक ने उसे नाव पर चढ़ाने को कहा।

हाथी के चढ़ते ही नाव डगमगाने लगी। हाथी के वज़न के कारण नाव में दबाव पड़ा और वह पानी में ज़रा नीची हुई। नाव का जो भाग पानी में डूब गया था, उस भाग पर बालक ने काले रंग का निशान लगाया।





उसके बाद हाथी को नाव से नदी के किनारे उतारा गया। कुछ आदमियों की मदद से नाव में बड़े–बड़े पत्थर रखवाए गए। जैसे–जैसे वे लोग पत्थर चढ़ाते गए वैसे–वैसे नाव पानी में डूबती गई। पानी जब नाव पर बने काले निशान तक पहुँच गया तब पत्थरों को रखना बंद कर दिया गया।

बालक ने कहा, "नाव के अंदर रखे पत्थरों का वज़न और हाथी का वज़न अब बराबर होगा। पत्थरों का वज़न कर लो। हाथी का वज़न अपने आप पता चल जाएगा।"

बालक की सूझबूझ की सबने प्रशंसा की।



कहानी कब खत्म होगी

पुराने ज़माने में एक राजा था। उसे कहानी सुनना बहुत पसंद था। एक दिन उसने घोषणा की, ''जो भी मुझे सबसे लंबी कहानी सुनाएगा, उसे एक हज़ार सोने की मोहरें इनाम में दूँगा।''

खबर सुनकर कहानी सुनाने बहुत लोग आए। एक आदमी ने कहानी खत्म करने में एक हफ्ता लगाया। दूसरे ने दस दिन तक कहानी सुनाई। तीसरे ने कहानी को एक महीना चलाया।

उनकी कहानी सुनने के बाद राजा यही कहता, ''आप ने जो कहानी मुझे सुनाई है वह इतनी लंबी नहीं है।'' उन्हें इनाम दिए बिना ही लौटा देता।

एक चतुर कहानीकार ने इसके बारे में सुना और किसी भी तरह राजा से पुरस्कार पाने का निश्चय किया।

वह राजा के पास गया और बोला, ''महाराज, मुझे एक बहुत लंबी कहानी आती है। उस कहानी को पूरा करने में मेरी ज़िंदगी बीत जाएगी।''



राजा ने उत्साह से कहा, "ओह, ऐसी बात है तो सुनाओ कहानी!" कहानीकार ने कहा, "मगर मेरी एक शर्त है। कहानी सुनते समय आप 'फिर..' 'फिर...' ऐसा पूछते रहेंगे।"

राजा ने तुरंत शर्त मान ली। कहानीकार ने कहानी सुनाना शुरू किया।

"एक देश में एक बार खूब वर्षा हुई। फसल अच्छी हुई। जहाँ देखो वहाँ पर्वत जैसे धान का ढेर था।

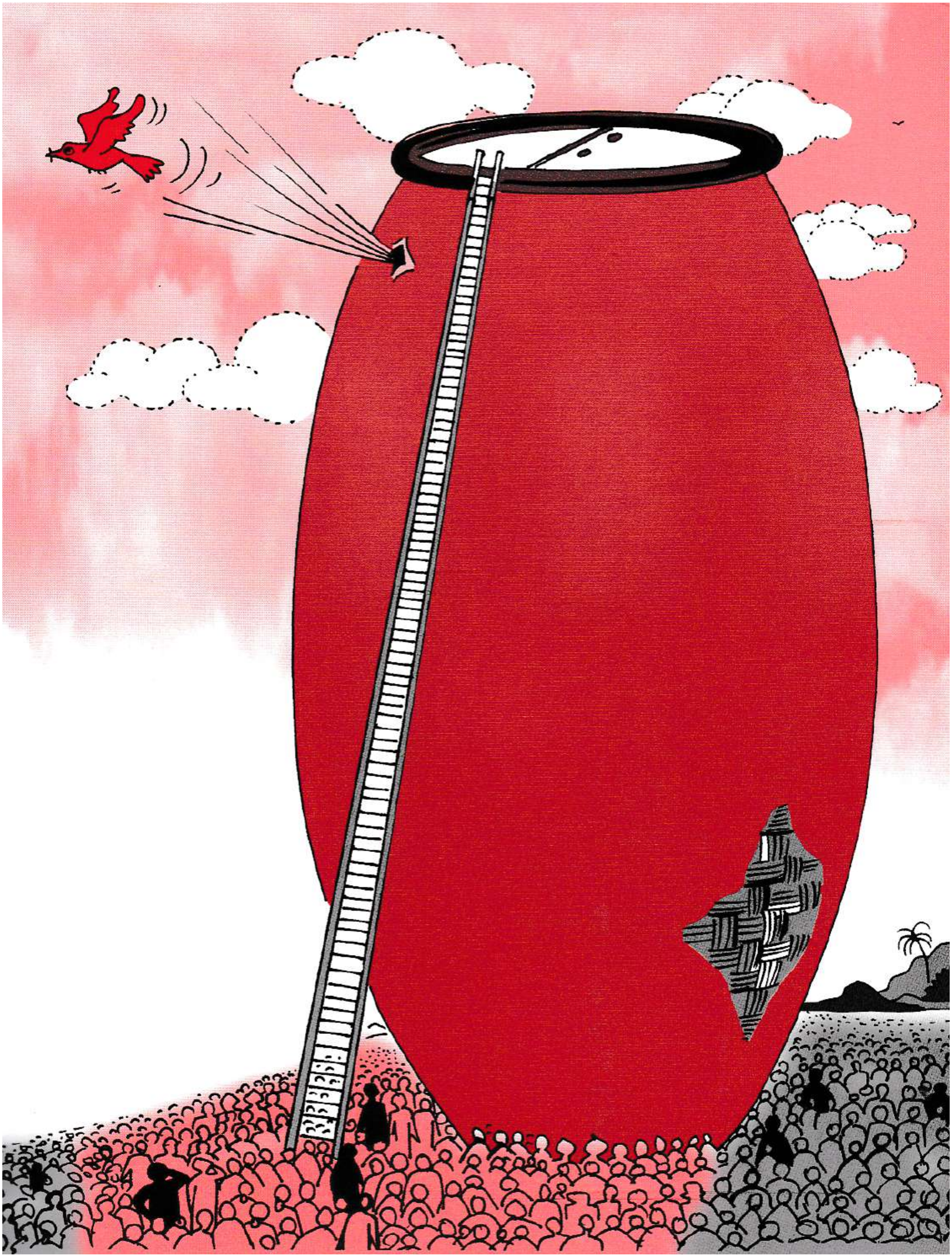
यह देखकर उस देश के मंत्री ने आदेश दिया, "एक बड़े भंडार का निर्माण कीजिए। देश भर के धान को इस भंडार में बचाकर रखिए। अकाल पड़े तब भी चिंता करने की ज़रूरत नहीं होगी।"

आदेश के अनुसार एक बड़े भंडार का निर्माण किया गया। उस प्रकार का भंडार किसी भी देश में नहीं था। उस शानदार भंडार को देखने दूर–दूर से लोग आए।

भंडार में हवा जाने के लिए एक सुराख छोड़ा गया था। एक दिन एक गौरैया भंडार के चारों ओर मंडरा रही थी। भंडार में बना सुराख उसे दिखाई दिया। वह फुर्र...र से उड़कर भंडार के अंदर घुस गई।

धान का एक दाना चुगकर बाहर आई और उस दाने को अपने घोंसले में रख दिया।" कहानीकार कहानी को यहाँ तक सुनाकर रुक गया। "फिर...." राजा ने पूछा।





''गौरैया फिर उड़कर भंडार के अंदर घुसी। एक और दाना अपनी चोंच में दबाकर बाहर आई और उसे अपने घोंसले में रखा।'' कहानीकार ने कहानी आगे बढ़ाते हुए कहा।

''फिर....'' राजा ने पूछा।

कहानीकार गौरैया के भंडार के अंदर जाने और धान लेकर बाहर आने की बात दोहराता रहा।

राजा अपना धीरज खो बैठा और सोचने लगा, 'गौरैया भंडार से एक–एक कण धान निकालती रहेगी। मेरी पूरी ज़िंदगी बीत जाएगी। फिर भी भंडार में धान खत्म नहीं होगा। इस कहानीकार की कहानी सुन सुनकर मैं पागल हो जाऊँगा। हे भगवान! इस कहानीकार से कैसे छुटकारा पाया जाए?'

राजा ने तुरंत आज्ञा दी, ''कहानीकार को एक हज़ार स्वर्ण मुद्राएं दी जाएँ।'' उसके बाद ही राजा ने चैन की साँस ली।

भारत की लोक कथा



नंदरिया और मगरमच्छ

नंदरिया एक साहसी बंदर था। वह चुनौतीपूर्ण कार्यों को हमेशा निडर होकर करता। वह अपने मन चाहे ढंग से जंगल में अकेला घूमता–फिरता था।

एक दिन घूमते–घूमते वह एक नदी के पास पहुँचा। नदी में एक द्वीप था। जहाँ फलों से भरे बहुत से आम के पेड़ थे।

नंदरिया किसी तरह उस द्वीप पर जाना चाहता था। लेकिन नदी विशाल थी। 'द्वीप पर कैसे पहुँचूँ,' वह सोचने लगा। तभी उसे नदी के बीचों–बीच एक चट्टान दिखाई दी।



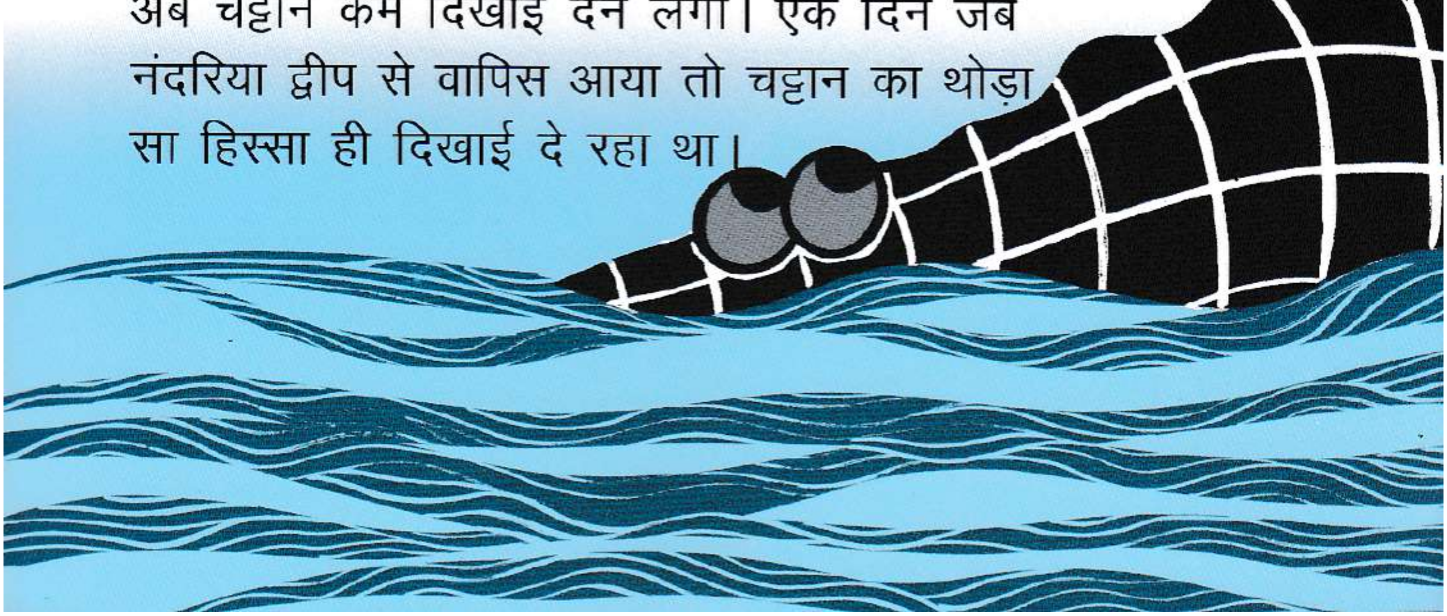
नंदरिया ने एक छलाँग लगाई। वह चट्टान पर पहुँच गया। फिर एक और छलाँग लगाकर द्वीप पर पहुँच गया। ऐसा करना था तो बहुत खतरनाक! मगर नंदरिया भी तो कम साहसी न था!

नंदरिया ने द्वीप पर जी भरकर आम खाए और मज़े किए। फिर दोबारा चट्टान पर कूदकर घर लौट आया। उसने अपने माँ–बाप को द्वीप के बारे में बताया। दोस्तों को भी द्वीप पर आने की दावत दी।

"द्वीप बहुत दूर है। हम नहीं आएँगे," कहकर उसके मित्रों ने वहाँ जाने से इनकार कर दिया। जब भी भूख लगती, नंदरिया अकेले ही द्वीप पर चला जाता।

उस को इस तरह द्वीप पर आते–जाते एक मगरमच्छ बड़े गौर से देखा करता। उसने सोचा, "किसी तरह इस बंदर को पकड़कर खाना चाहिए।"

बारिश का मौसम था। नदी में पानी का स्तर ऊँचा हो गया। अब चट्टान कम दिखाई देने लगी। एक दिन जब नंदरिया द्वीप से वापिस आया तो चट्टान का थोड़ा सा हिस्सा ही दिखाई दे रहा था।



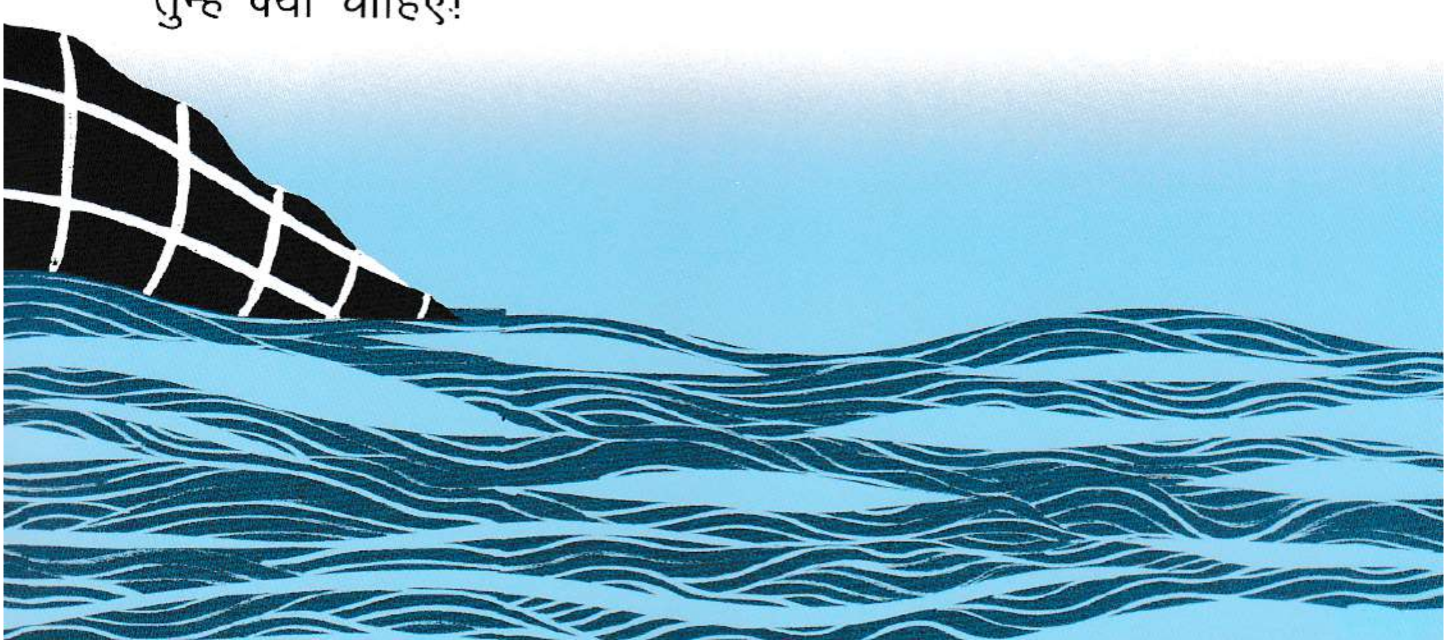
नंदरिया बड़ी सावधानी से चट्टान पर कूदने जा ही रहा था कि अचानक रुक गया। "यह क्या! चट्टान पहले से बड़ी लग रही है। पानी का स्तर तो कम हुआ नहीं! इसमें ज़रूर कोई साज़िश है," कुछ सोचने के बाद उसने एक चाल चली।



"चट्टान भाई! तुम कुशल तो हो?" नंदरिया ने आवाज़ लगाई। कोई जवाब नहीं आया। नंदरिया ने दोबारा पुकारा, "तुम आज बात क्यों नहीं कर रहे हो?"

चट्टान पर लेटे मगरमच्छ ने सोचा, 'शायद यह चट्टान रोज़ बंदर से बातें करती होगी।'

"भाई, तुम क्या कह रहे हो?" मगरमच्छ ने आवाज़ दी। उसका सिर और पूँछ पानी के अंदर छिपे हुए थे। नंदरिया उसकी चाल समझ गया। बोला, "तो तुम मगरमच्छ हो! तुम्हें क्या चाहिए?"



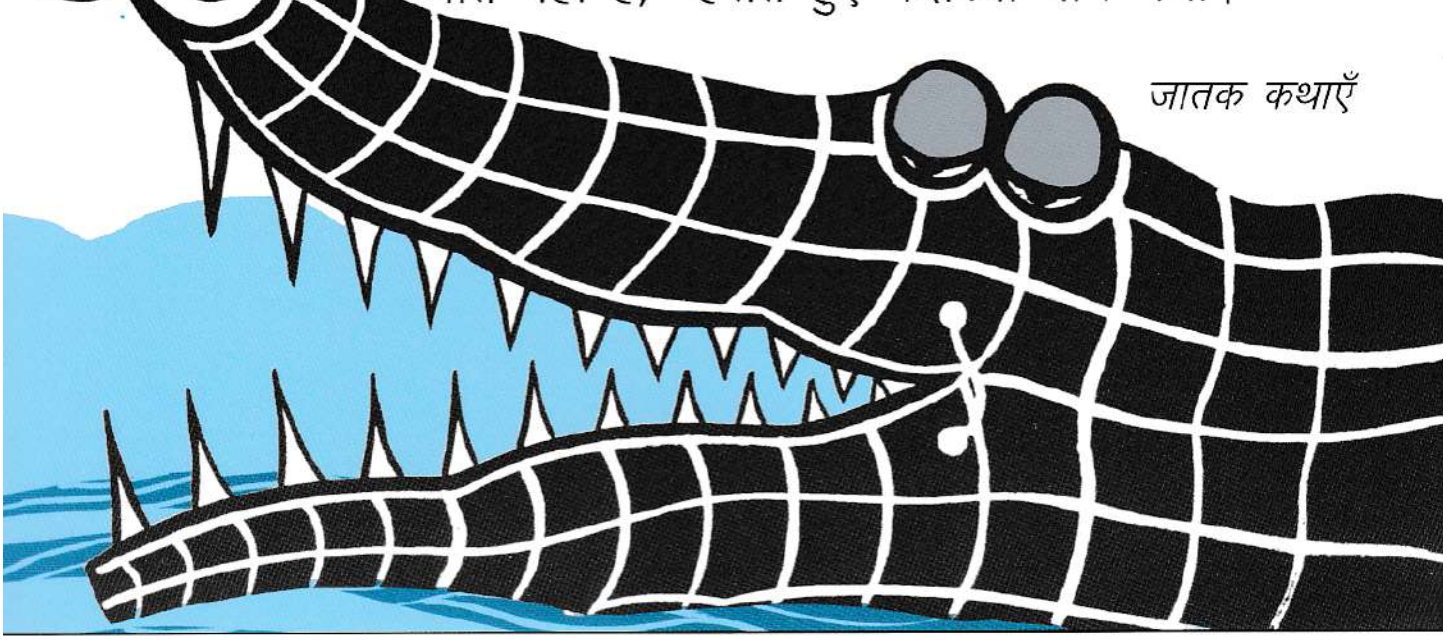
मगरमच्छ ने क्रोधित होते हुए कहा, "मैं तुम्हें खाना चाहता हूँ।" 'इस मगरमच्छ से कैसे बचूँ?' नंदरिया सोचने लगा। फिर उसे एक उपाय सूझा।

उसने कहा, "मगरमच्छ भाई! मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा। तुम अपने मुँह को जितना खोल सकते हो खोल लो। मैं सीधा तुम्हारे मुँह में कूद पड़ूँगा। पर तुम अपनी आँखें कसकर बंद कर लो। मेरे कूदने में ज़रा सी भी गलती हो गई, तो तुम्हारी आँखों को चोट लग सकती है।"

बेवकूफ मगरमच्छ ने कस कर आँखें बंद कर लीं और अपना मुँह पूरा खोल दिया। नंदरिया निशाना लगाकर मगरमच्छ की पीठ पर कूदा और दूसरे किनारे पर पहुँच गया।

"मगरमच्छ भाई! मुझे पकड़ना तुम्हारे बस की बात नहीं है," हँसते हुए नंदरिया भाग गया।

जातक कथाएँ



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी



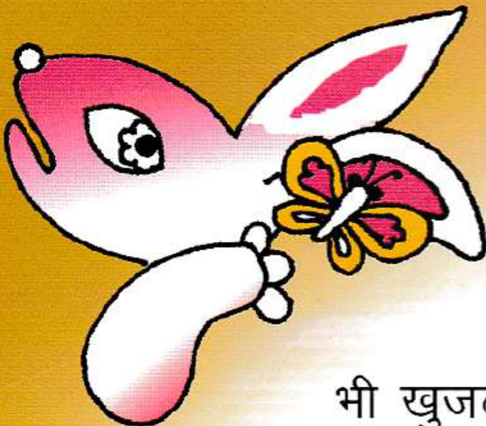
रगू और ततिया का झगड़ा

गुलाबी गुलाबों के बीच रगू खरगोश जाने क्या खोद रहा था। उसके लंबे लंबे कान, जो बाहर से सफेद थे और भीतर से गुलाबी, फूल की पंखुड़ी से लग रहे थे।



तभी वहाँ पर ततिया तितली उड़ते उड़ते आ पहुँची। उसे रगू के कान प्यारे प्यारे फूल से लगे। वह उसके गुलाबी रंग पर जा बैठी। बैठते ही उसे लगा कि यह फूल की तरह नहीं है। उसमें गुलाब की खुशबू भी नहीं थी।





ततिया को लगा कि उड़ जाना चाहिए, पर वह उड़ न सकी। रगू के पतले पतले कानों में उसके पंख फँस गए थे। उससे रगू के कान में भी खुजली हो रही थी और वह परेशान था।

''यह कौन आ गया है, मेरे कान में?'' रगू ने पूछा।

''मैं ततिया हूँ ,'' तितली ने कहा।

''ततिया तुम मेरे कान से बाहर आओ,'' रगू ने कहा।

''तुम मेरे पंख छोड़ दो,'' तितली ने जवाब दिया।

''ततिया तुम जाओ।''

''तुम मेरे पंख छोड़ो।''

''मैं कहता हूँ जाओ।''

''कह रही हूँ पंख छोड़ो।''

''जाओ।''

''पंख छोड़ो।''

''क्यों नहीं सुन रही?''

''क्यों नहीं मान रहे?''

''क्यों नहीं?''

''तुम क्यों नहीं?''

''तुम!''

''तुम!''

दोनों झगड़ने लगे। आसपास चिड़िया और बंदर इकट्ठे हो गए। देखते देखते मुरु मुर्गा और बतख भी आ गए।
"क्या हुआ? क्या हुआ?" सब पूछ रहे थे।

"ततिया नहीं जा रही," रगू ने शिकायत की।

"यह मेरा पंख नहीं छोड़ रहा," तितली ने कहा।

"तुम निकलना चाहती हो?" मुरु ने पूछा।

"हाँ," ततिया बोली।

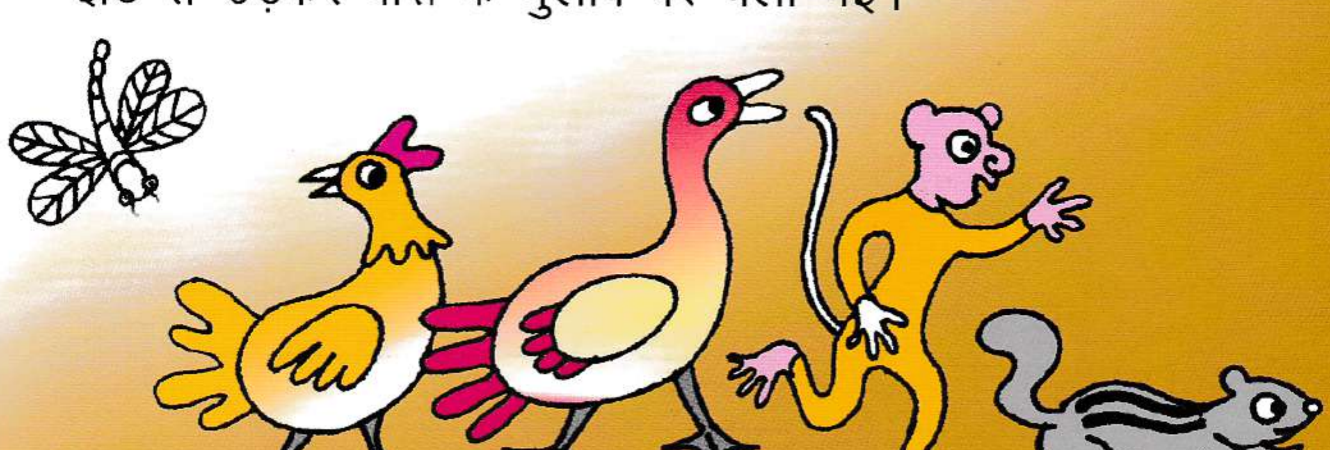
"तुम भी यही चाहते हो?" मुरु ने रगू से पूछा।

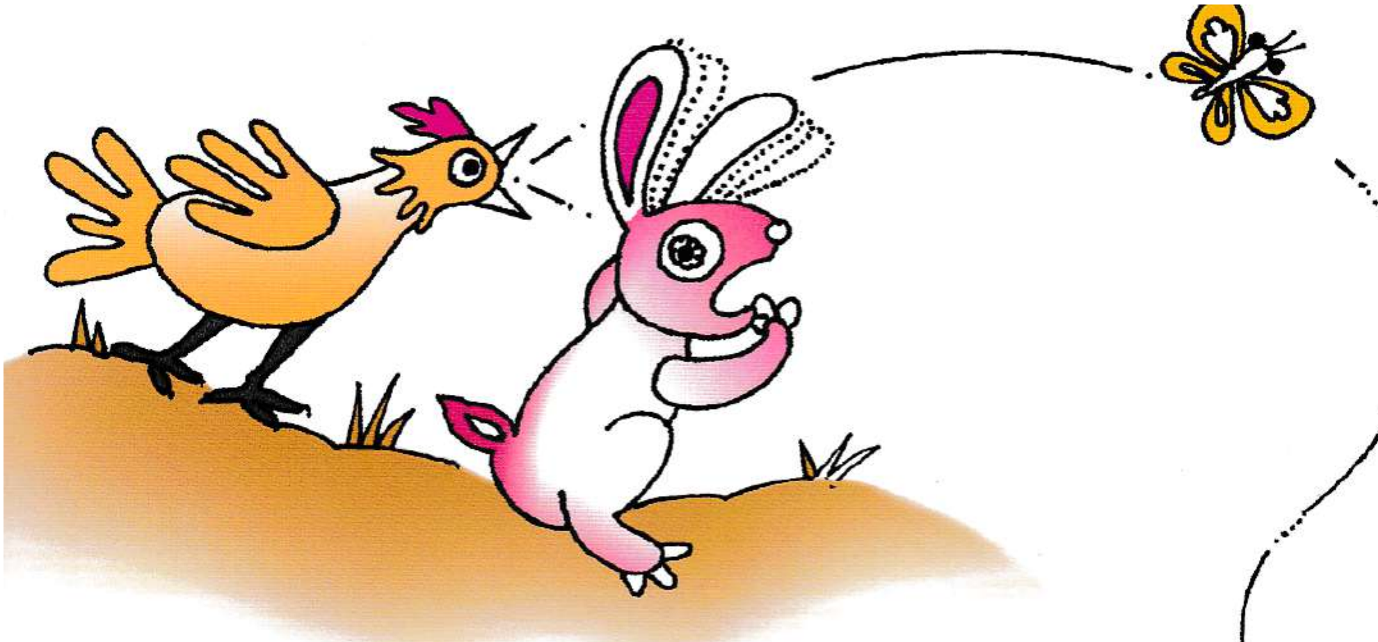
उसने सिर हिलाया। मुरु ने सोचा, दोनों एक ही चीज़ चाहते हैं, पर वह कैसे हो? उसने रगू के दूसरे कान के पास जाकर ज़ोर से कहा, "कूकड़ूँ कूँ" "कूकड़ूँ कूँ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ"



इस आवाज़ से रगू के दोनों कान झनझना उठे और तेज़ी से हिलने लगे। उनके हिलते ही ततिया का फँसा हुआ पंख बाहर निकल आया। छूटते ही वह झट से उड़कर पास के गुलाब पर चली गई।







"देखो गई कि नहीं!" रगू ने कहा।

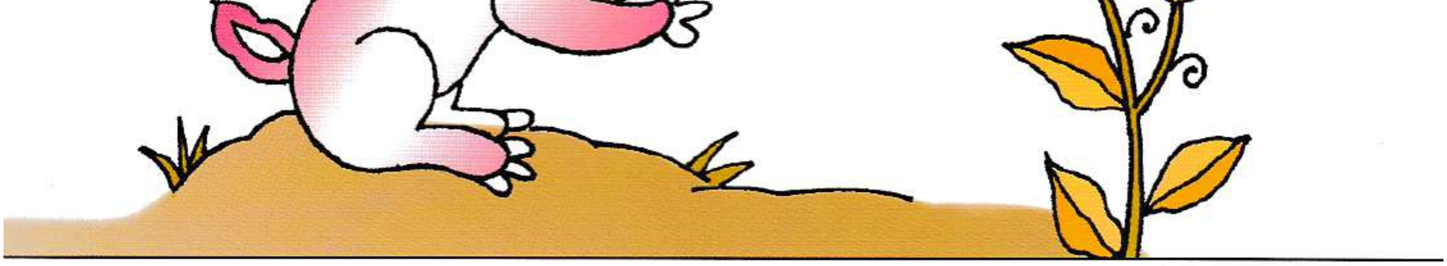
"इसने छोड़ा कि नहीं!" ततिया ने कहा।

"तुम दोनों की बात पूरी हुई कि नहीं?" मुरु ने पूछा।

दोनों ने सिर हिलाया तो उसने फिर कहा, "कूकड़ूँ कूँ ..."

इस पर सब हँस दिए और खुशी खुशी अपने–अपने काम में जुट गए।

त्रिपुरारी शर्मा



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

36 आओ पता लगाएँ



निर्मल है, सुंदर है, पर कीचड़ में उगता है
पानी में रहता है, पर पानी से अछूता है

काँटों की डाली पर उगता वह प्यारा–प्यारा फूल
प्यार में सभी लेते–देते, कोई करता नहीं भूल

सूरज को देख देख वह खिलता जाता
बड़ा मुख, पंखुड़ी बड़ी, पीला रंग वह पाता

हरी बेल पर सफेद मोतियों के गुच्छे जब आते हैं
खिलते ही फैले खुशबू , सब के मन वे भाते हैं

पीले रंग का फूल है छोटी पंखुड़ी वाला
तीज, त्यौहार, स्वागत सब पर, बनती उसकी माला

लंबी सी डंडी, छोटे–छोटे फूल
सफेद सुंदर रंग है, न कोई शूल
दिन को महकाए 'रातों' को दे 'गंध'
अकेला ही भरपूर है, बूझो ये छंद

सूरजमुखी, गुलाब, रजनीगंधा, गेंदा, कमल, चमेली



सुंदर काले रंग की पंछी
देखते ही उड़ जाती है
जंगल–जंगल घूमती–फिरती
मीठे गीत सुनाती है

पक्षी है वह पंखों वाला, तैरना उसको भाए
मछली उसका खाना, पानी में डुबकी जब लगाए

महलों में वह रहता है पर राजा नहीं है
दाना चुगने जगह–जगह जाता पर मेहमान नहीं है
मंदिर–मस्जिद में रहता पर भक्त नहीं है

लंबी–लंबी देकर बाँग, करता है आराम हराम
कुकड़ूँ–कुकड़ूँ करके दिन भर दाना खाना उसका काम





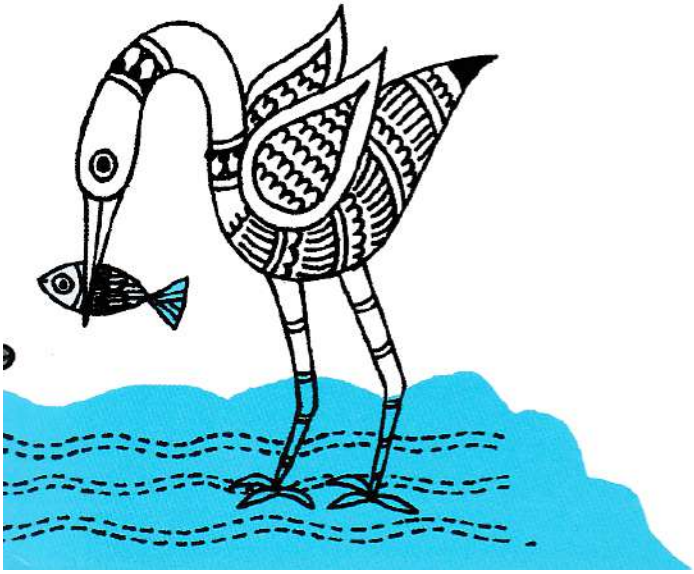
लंबी गर्दन, सिर पर मुकुट,
बदन चमचमाता
पंखों पर कई आँखें
उसका रूप सभी को भाता

काले रंग के कपड़े पहने, काम में रहते चुस्त
एक बुलाओ सब आ जाते, रहते सारे मस्त



जिसके हैं दो पैर लंबे, दौड़े घोड़े सा तेज़
पंख है पर उड़े नहीं, देखो उसका भेस

रात जागे, दिन में सोए, अंधेरे में करे शिकार
पेड़ों के कोटर में रहता, आँखें उसकी गोलाकार



हरा–हरा रंग है उसका
गले में पहने माला
तुम बोलो वैसा वो बोले
घर–जंगल में रहने वाला

उड़–उड़कर तिनके जुटाती वो
बुन–बुनकर सुंदर घर बनाती वो
झूल–झूलकर घर में सो जाती वो
सोचकर बतलाओ जल्दी कौन है वो





चोंच है टेढ़ी, आँखें पैनी,
उड़ता है आकाश में ऊँचे
नज़रें फेंके जब भी देखे,
आ जाता वो झट से नीचे

एक टांग पर खड़ा रहता
चुन–चुन मछली खूब चबाता

पंखों पर सफेद धब्बे, चोंच का पीला रंग
जैसा तुम बोलो वो बोले, कर दे सबको दंग

गिद्ध, मोर, कोयल, तोता, कबूतर, कौआ, बया, मुर्गी, उल्लू,
मैना, शुतुरमुर्ग, सारस, बतख



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

पार करूँ या न करूँ

एक हरा पहाड़ था। उसकी चोटी पर एक घोड़ी अपने बच्चे के साथ रहती थी। वह बच्चा माँ के इर्द–गिर्द घूमता रहता। एक पल भी छोड़कर कहीं नहीं जाता।

एक दिन घोड़ी ने अपने बच्चे से कहा, "बेटा तुम हमेशा बच्चों की तरह चिपके रहते हो। अब तुम बड़े हो गए हो। काम करना कब सीखोगे?"

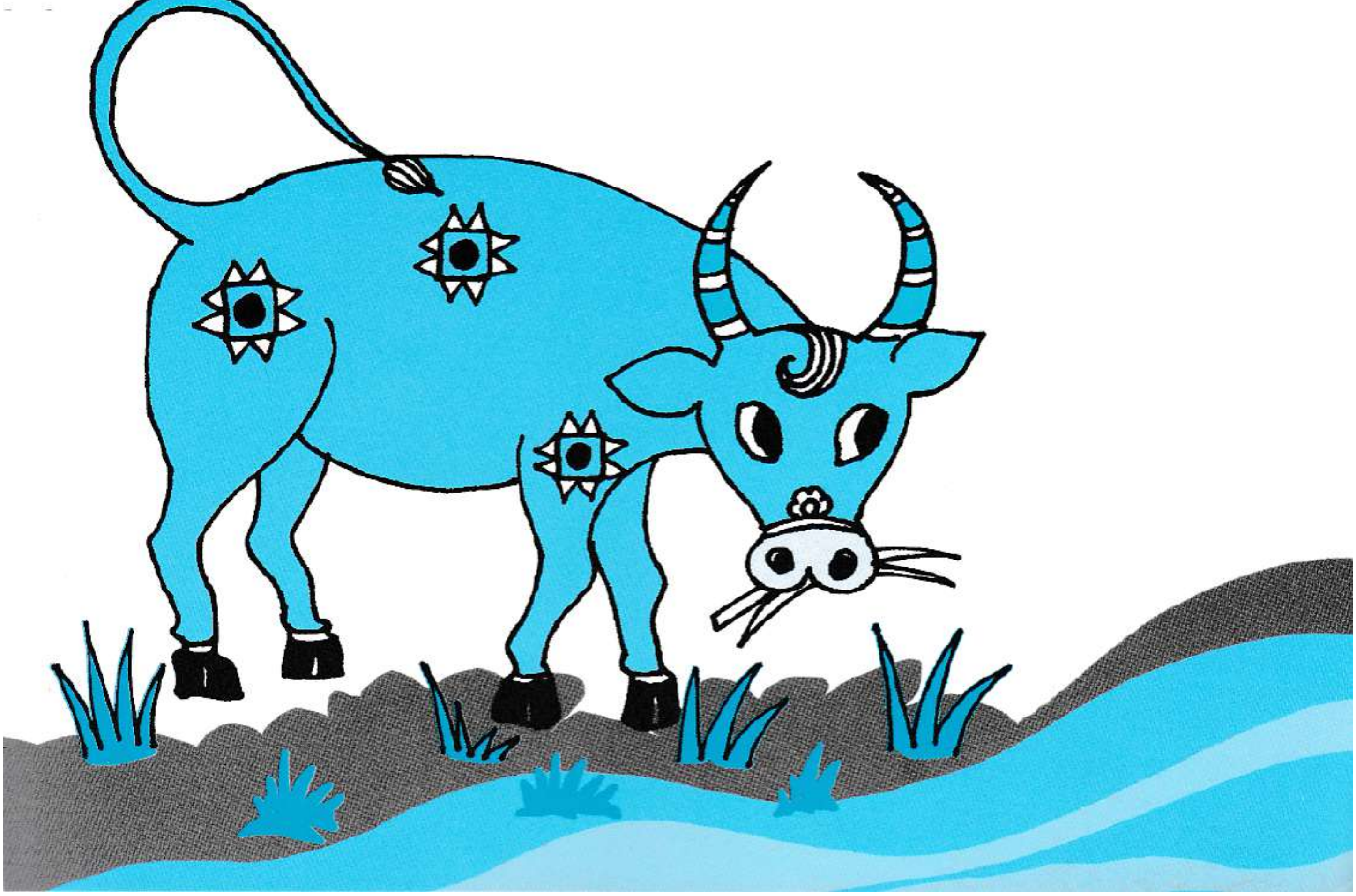


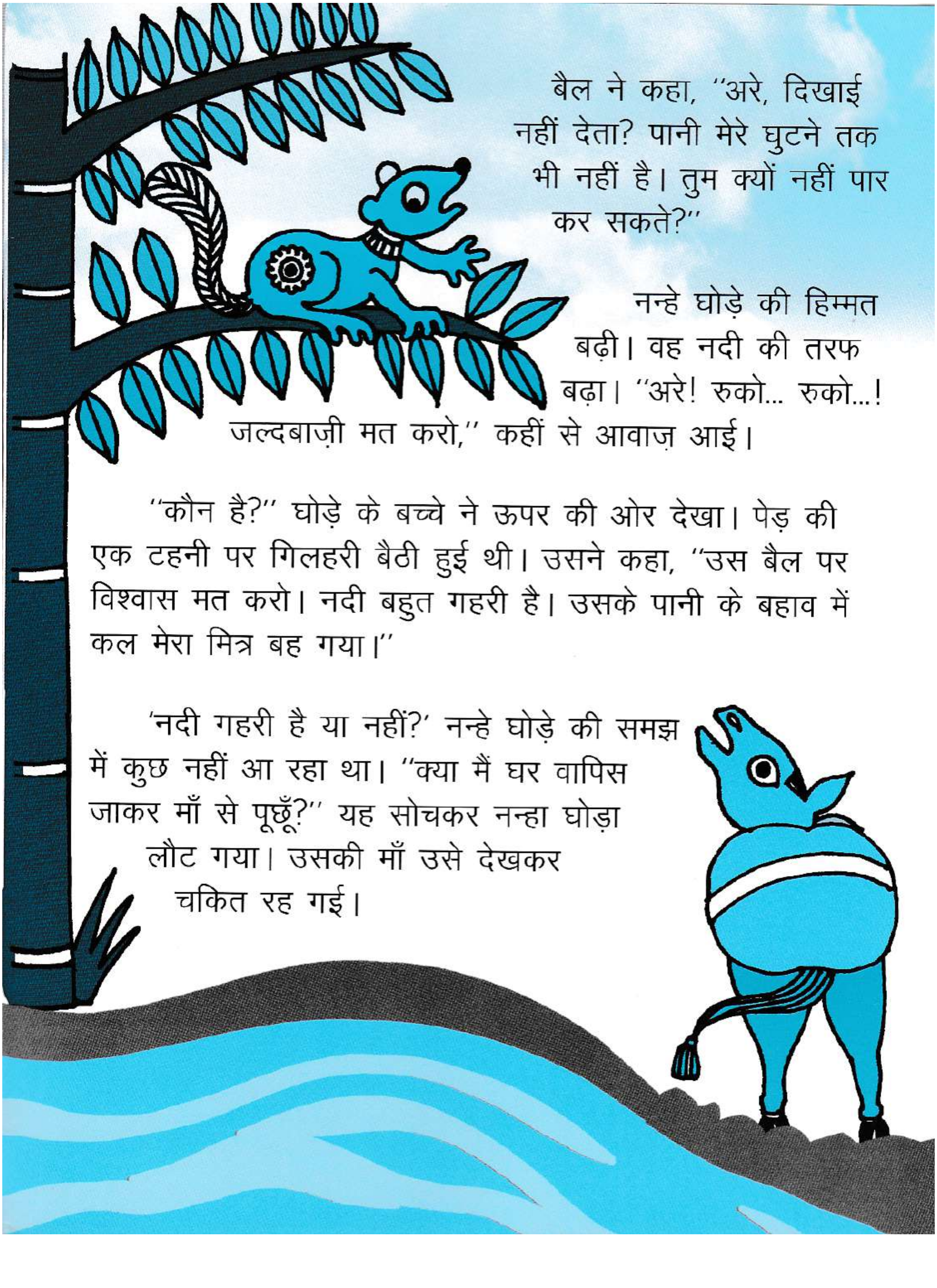
बच्चे ने उत्तर दिया, "काम तो दो! मैं तैयार हूँ।"

घोड़ी ने कहा, "अच्छा! चलो, फिर काम शुरू करो। इस अनाज की बोरी को मिल तक ले जाओ।"

नन्हा घोड़ा चुस्ती से काम में लग गया। बोरी को अपनी पीठ पर लाद लिया। खुशी–खुशी मिल की तरफ चल पड़ा।

कुछ ही दूर चला होगा कि वह अचानक रुक गया। 'अरे! यह तो नदी है। पानी बहता जा रहा है। इस नदी को पार करूँ या न करूँ?' वह उलझन में पड़ गया। इधर–उधर देखने लगा। पास में एक बैल घास चर रहा था। नन्हे घोड़े ने पूछा, "बैल चाचा! क्या मैं नदी को पार कर लूँ?"





बैल ने कहा, "अरे, दिखाई नहीं देता? पानी मेरे घुटने तक भी नहीं है। तुम क्यों नहीं पार कर सकते?"

नन्हे घोड़े की हिम्मत बढ़ी। वह नदी की तरफ बढ़ा। "अरे! रुको... रुको...! जल्दबाज़ी मत करो," कहीं से आवाज़ आई।

"कौन है?" घोड़े के बच्चे ने ऊपर की ओर देखा। पेड़ की एक टहनी पर गिलहरी बैठी हुई थी। उसने कहा, "उस बैल पर विश्वास मत करो। नदी बहुत गहरी है। उसके पानी के बहाव में कल मेरा मित्र बह गया।"

'नदी गहरी है या नहीं?' नन्हे घोड़े की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। "क्या मैं घर वापिस जाकर माँ से पूछूँ?" यह सोचकर नन्हा घोड़ा लौट गया। उसकी माँ उसे देखकर चकित रह गई।

माँ ने पूछा, "तुम इतनी जल्दी वापिस कैसे आ गए?" बच्चे ने कहा, "रास्ते में एक नदी थी। माँ! क्या वह बहुत गहरी है?" घोड़ी ने पूछा, "किसने कहा तुमसे? मैं उस रास्ते से दिन में कई बार गुज़रती हूँ।"

नन्हे घोड़े ने कहा, "सुनो तो सही! बैल चाचा ने कहा कि मैं नदी पार कर सकता हूँ। मगर गिलहरी दीदी ने कहा कि मैं पानी में बह जाऊँगा। मैं क्या करूँ?"

घोड़ी मुस्कराई, "बैल चाचा कितने लंबे हैं और गिलहरी दीदी कितनी लंबी है? तुम अपनी तुलना गिलहरी के साथ करके देखो। सोचो, कौन लंबा है? तुम खुद ही समझ जाओगे कि नदी पार कर सकते हो या नहीं।"

"हाँ! अब समझ में आया। मेरे लिए नदी गहरी नहीं है," नन्हा घोड़ा खुशी से उछलते हुए नदी की तरफ चला।

चीन की कहानी



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

हमारी छोटी सी बिल्ली



रिया और ईवान ने एक बिल्ली पाल रखी थी। एक दिन वह कहीं खो गई। बहुत ढूँढने पर भी नहीं मिली। तीन दिन बीत गए। चौथे दिन....

"म्याऊँ...म्याऊँ.... म्याऊँ...म्याऊँ"

"आवाज़ कहाँ से आ रही है?" रिया ने सीढ़ी चढ़कर देखा।

"हमारी बिल्ली छज्जे पर है ईवान। उसके बच्चे भी हैं। जल्दी आ कर देख!" रिया ज़ोर से चिल्लाई।



ईवान ने भी ऊपर चढ़कर देखा। बिल्ली एक टोकरी में लेटी हुई थी। पास ही उसके पाँच बच्चे सिमटकर लेटे हुए थे।

रिया और ईवान को उन पर बेहद गर्व था। जो भी घर आता उन्हें बिल्ली के बच्चे दिखाकर वे खुश होते।

बिल्ली के बच्चे बड़े होने लगे। वे इधर–उधर भागते। एक–दूसरे के ऊपर चढ़कर झगड़ते। लोट–लोट कर खेलते। मटके, बरतन आदि के अंदर घुसकर उन्हें लुढ़का देते।

रिया और ईवान ने भूरे रंग के बच्चे को अपने पास रख लिया। उसे पूसी कहकर बुलाने लगे। बाकी चार बच्चों को अपने मित्रों को दे दिया। पूसी को वे खाना देते। साथ खेलते–खेलते उन्हें समय का पता ही नहीं चलता। उसे अपने साथ ही सुलाते।

एक दिन रिया और ईवान पूसी को अपने साथ बाहर ले गए। पास ही सूखी घास का ढेर पड़ा था। हवा में घास हिल रही थी। उसे पकड़ने के लिए पूसी उछलने कूदने लगी। इस हरकत को देखकर सभी बच्चे हँसने लगे। कुछ ही देर में बच्चे खेल में मग्न हो गए और पूसी को भूल गए।

अंधेरा हो गया। जब बच्चे घर लौटने लगे, तो पूसी को पुकारा। पर वह कहीं नज़र नहीं आई। दोनों बच्चे रोते हुए घर पहुँचे।

रात में दोनों हाथ में किताब लिए पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। पर उनका मन तो कहीं और ही था। "बेचारी! उसे दूध कौन देगा? इस ठंड में वह कहाँ सोएगी?" दोनों उसी के बारे में बात करते रहे।



अचानक कोने में रखी हुई टोपी सरकती नज़र आई। दोनों घबराए। दूसरे कमरे में भाग गए। टोपी सरकती हुई उनका पीछा करने लगी। "माँ! माँ! ज़रा इधर देखो। टोपी अपने आप चल रही है," वे चिल्लाए। माँ भी दौड़कर आई। टोपी के बाहर हिलती हुई भूरे रंग की पूँछ देख हँस पड़ीं।

"ओह! यह तो हमारी पूसी है। तुम यहाँ छिपी हो? हमने तुम्हें कहाँ–कहाँ नहीं ढूँढा," कहते हुए बच्चों ने उसे उठाया और प्यार से पुचकारने लगे।

रूस की कथा



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू

जादू का ढोल

बहुत समय पहले की बात है। जापान देश में जेनकोरा नाम का एक लड़का रहता था। उसके पास एक जादुई ढोल था।

"लंबी नाक, लंबी नाक," कहते हुए जब वह ढोल का एक छोर बजाता तो नाक लंबी हो जाती। जब "छोटी नाक, छोटी नाक," कहते हुए ढोल का दूसरा छोर बजाता तो नाक छोटी हो जाती।

जिसे भी अपनी नाक लंबी या छोटी करवानी होती, वह जेनकोरा के पास जाता। जेनकोरा उनकी इच्छा के अनुसार ढोल बजाता और उनकी इच्छा पूरी करता।



एक दिन उसने सोचा, "देखूँ तो सही! इस जादुई ढोल को बजाकर मैं अपनी नाक को कितना लंबा कर सकता हूँ!"

वह एक खेल के मैदान में गया और अपना ढोल बजाने लगा। जैसे–जैसे ढोल बजाता गया उसकी नाक लंबी होती गई। आखिर वह इतनी लंबी हो गई कि जेनकोरा सीधा खड़ा नहीं हो पाया। उसे ज़मीन पर लेटना पड़ा। फिर भी वह ढोल बजाता ही रहा।



धीरे–धीरे उसकी नाक पेड़ की ऊँचाई जितनी लंबी हो गई। कुछ समय बाद, वह पर्वत की चोटी को भी पार कर गई और देखते–देखते नाक आसमान को छूने लगी। उसी समय आसमान में कुछ बढ़ई पुल बना रहे थे। उन्होंने जेनकोरा की नाक की नोक को पुल के साथ सटाकर कील ठोक दी।

जेनकोरा ने यह महसूस किया कि उसकी नाक की नोक में कुछ हो रहा है। अब वह ढोल बजाकर नाक को और लंबा नहीं कर पाया। उसने नाक की लंबाई को कम करना चाहा। इसके लिए अपने ढोल का दूसरा छोर बजाया।



कुछ ही समय में उसकी नाक की लंबाई कम होने लगी। मगर नाक की नोक तो कील से लगी हुई थी। नाक की लंबाई कम होते–होते जेनकोरा आसमान की ओर उठने लगा। वहाँ उसने देखा कि उसकी नाक की नोक पुल से बंधी हुई थी।

उसने कील को उखाड़ा। पर यह क्या? वह नीचे गिरने लगा। यह तो अच्छा हुआ कि वह छपाक से एक तालाब में जा गिरा।

थोड़ा संभलने के बाद वह तैरने लगा। धीरे–धीरे उसके हाथ–पैर, शरीर सब मछली के आकार में बदल गए और वह मछली बन गया। तब से सब यही कहते हैं कि उस तालाब की सभी मछलियाँ जेनकोरा के परिवार की सदस्य हैं।

जापान की लोक कथा



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

कवि कवन्नम

कवन्नम हमेशा सपनों की दुनिया में खोया रहता। घंटों खिड़की के पास बैठा बाहर देखता रहता। कोई पूछता कि वह क्या कर रहा है, तो वह कहता, "मैं गीतों के बोल रच रहा हूँ।"

"मुन्ना की थी तमन्ना
तो उसने खाया गन्ना"

"उड़े पेड़ के पत्ते फड़–फड़–फड़
देखो, बिजली चमकी कड़–कड़–कड़"

इस तरह वह शब्दों को जोड़, पिरो कर कविताएँ रचता। उसके दोस्त उसका मज़ाक उड़ाते, "अरे देखो! कवि कवन्नम पधार रहे हैं।"



एक दिन वह नानी के गाँव जा रहा था। सारे रास्ते में पेड़–पौधे और पक्षी नज़र आ रहे थे। वे बहुत सुंदर थे। उनका आनंद लेते हुए वह अपनी धुन में चला जा रहा था।

जेब में रखे चने चबाते हुए वह चारों ओर नज़र दौड़ा रहा था। सामने एक ताड़ का पेड़ दिखाई दिया। वह तुरंत गाने लगा–

''लंबे–लंबे पैर हैं दो
खंबे जैसे खड़े हैं वो''

थोड़ी दूर और चला। उसे एक उल्लू दिखाई दिया। वह गाने लगा–



''उल्लू आँखें घुमा रहा ऐसे
सब कुछ उसको दिखता जैसे''

कवन्नम उत्साहित होकर ज़ोर ज़ोर से गाते हुए आगे बढ़ा।

दूर एक कुत्ता मिट्टी कुरेद रहा था। कवन्नम को वह सियार के जैसे दिखा। तुरंत गाने लगा–

''यूँ क्यों गड्ढा खोद रहा
क्या है उसमें छिपा रहा''

वाह! बहुत खूब! उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था।

"लंबे–लंबे पैर हैं दो
खंबे जैसे खड़े हैं वो"

"उल्लू आँखें घुमा रहा ऐसे
सब कुछ उसको दिखता जैसे"

"यूँ क्यों गड़्ढ़ा खोद रहा
क्या है उसमें छिपा रहा"



गाते हुए वह नानी के घर पहुँचा। तब तक अंधेरा हो चुका था। 'अरे! यह क्या? नानी के घर पर तो ताला लगा हुआ है!' वह निराश हुआ। पास ही में एक खंडहर जैसा मकान था। उसके चबूतरे पर लेटकर वह सो गया।

आधी रात में उसे कुछ आवाज़ सुनाई दी। वह चौंक कर जागा। उसने खिड़की से झाँका। उसे दो लंबे पैर नज़र आए। आधी नींद में उसको वह ताड़ के पेड़ जैसे लगे। वह ऐसे गाने लगा–

"लंबे–लंबे पैर हैं दो
खंबे जैसे खड़े हैं वो"

गाना सुनते ही अंदर खड़े चोर ने घबराकर चारों तरफ नज़र घुमाई। यह देख कवन्नम गाने लगा–

"उल्लू आँखें घुमा रहा ऐसे
सब कुछ उसको दिखता जैसे"

'कोई आ रहा है। चोरी का माल छिपाकर रखना पड़ेगा,' यह सोचकर चोर ने गड्ढा खोदना शुरू किया। अब कवन्नम गाने लगा–

"यूँ क्यों गड्ढ़ा खोद रहा
क्या है उसमें छिपा रहा"

चोर हैरान रह गया। सब कुछ वहीं फेंककर भागने लगा।

तुरंत कवन्नम 'चोर–चोर' कह कर चिल्लाया। आस–पास के लोग भागकर आए और चोर को पकड़ लिया। लोगों ने कवन्नम की खूब प्रशंसा की। उस दिन से सब कवि कवन्नम के गीतों का आनंद लेने लगे।

तमिलनाडु की कहानी

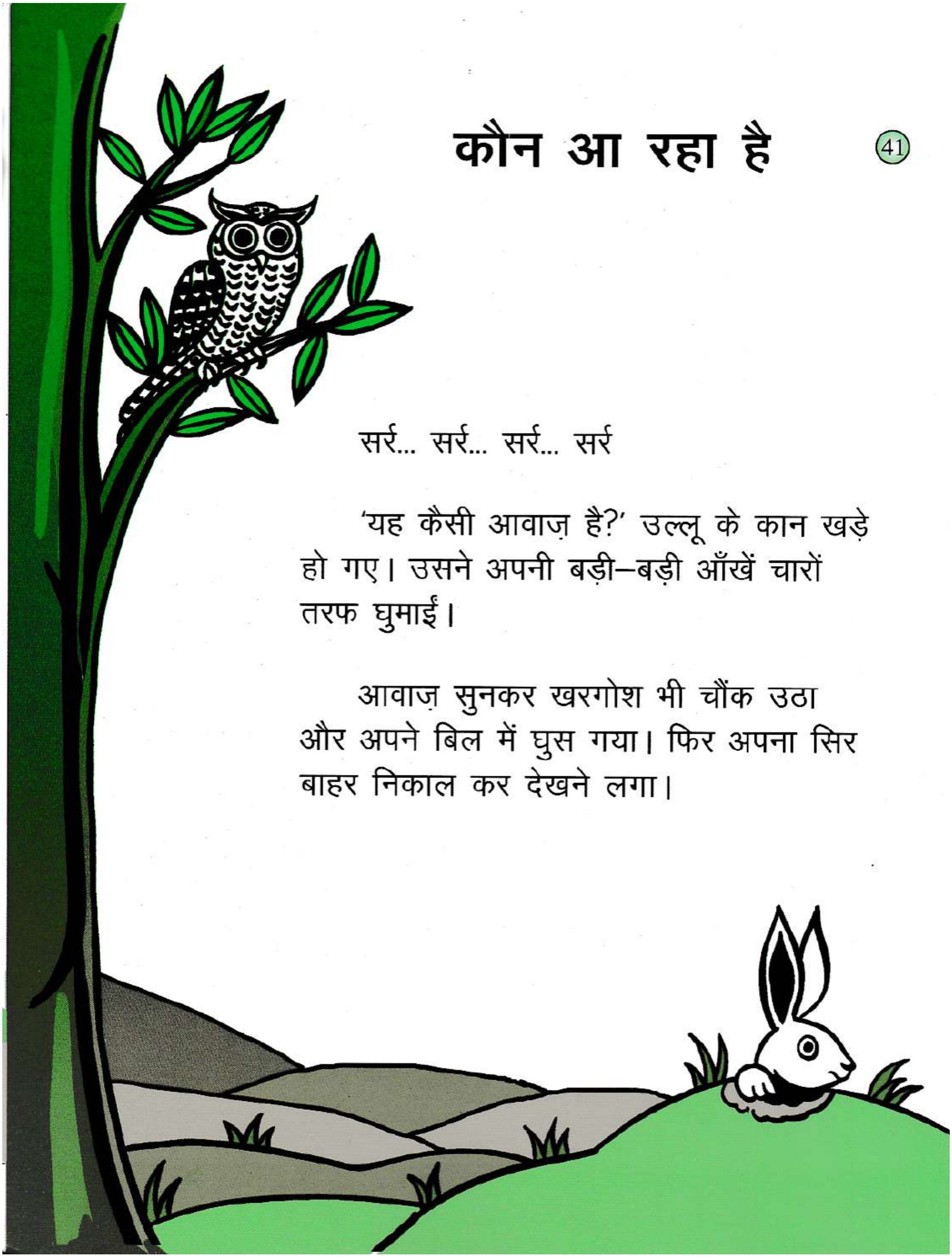


पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

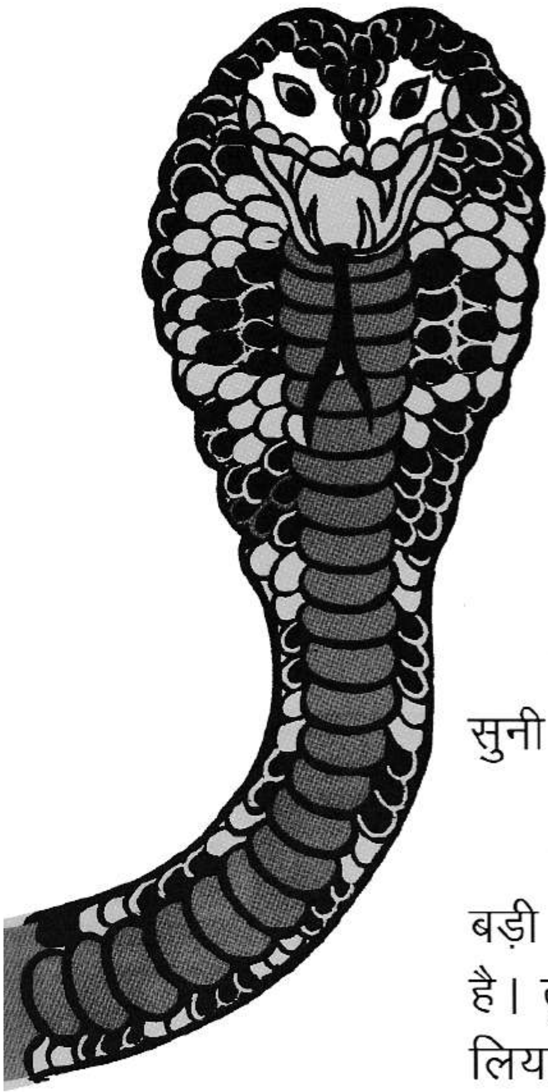
कौन आ रहा है



सर्र... सर्र... सर्र... सर्र

'यह कैसी आवाज़ है?' उल्लू के कान खड़े हो गए। उसने अपनी बड़ी–बड़ी आँखें चारों तरफ घुमाईं।

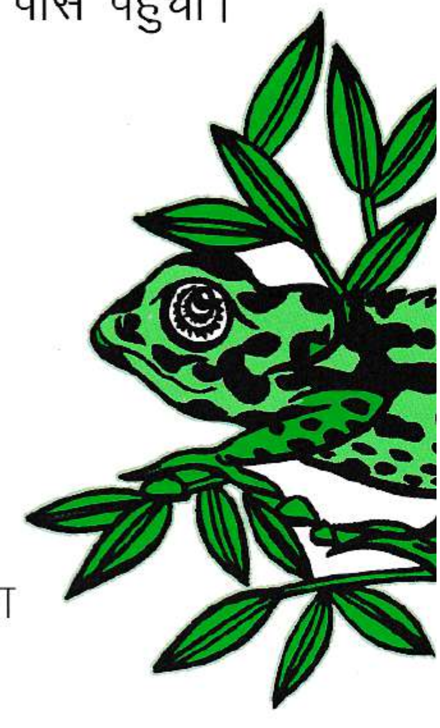
आवाज़ सुनकर खरगोश भी चौंक उठा और अपने बिल में घुस गया। फिर अपना सिर बाहर निकाल कर देखने लगा।



साँप ने भी आवाज़ सुनी। उसने झट से सिर उठाकर फन फैलाया।

सर्र... सर्र... सर्र...

आवाज़ धीरे–धीरे पास पहुँची।



गिरगिट ने भी आवाज़ सुनी।

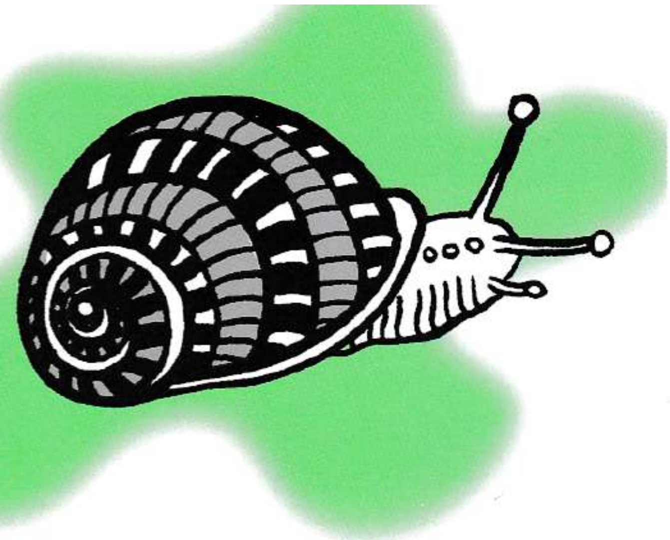
खतरे के समय वह तो बड़ी चालाकी से छिप सकता है। तुरंत अपना रंग बदल लिया। पत्तों के बीच पत्ते जैसा लगने लगा।

तितली ने अपने पंखों को फड़फड़ाया और मोड़ लिया।

फूलों के बीच स्थिर बैठी रही। वह भी फूलों की पंखुड़ी जैसी दिखाई देने लगी।



धीरे–धीरे रेंगते हुए घोंघा रुक गया। अपने शरीर को खोल के अंदर खींच लिया।



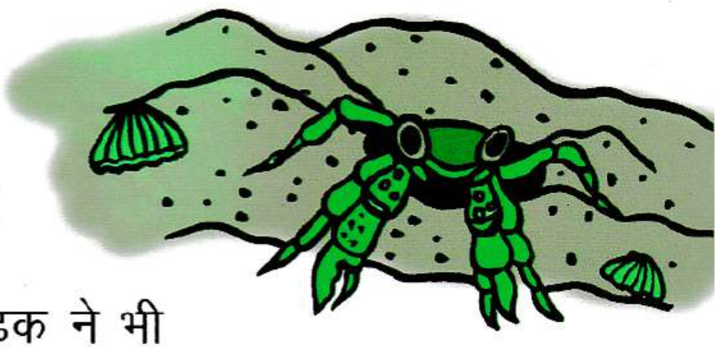
पत्थरों के बीच पत्थर बन गया।



सर्र....सर्र....सर्र....सर्र...

साही भय के कारण रोमांचित हो उठा। अपने काँटों को तान कर फैलाया। वार करने के लिए तैयार!





ज़मीन पर चलता हुआ
केकड़ा तो बिल में जा छिपा।

नदी के किनारे टर्राते मेंढक ने भी
आवाज़ सुनी। वह एक ही छलाँग में पानी में कूद पड़ा।

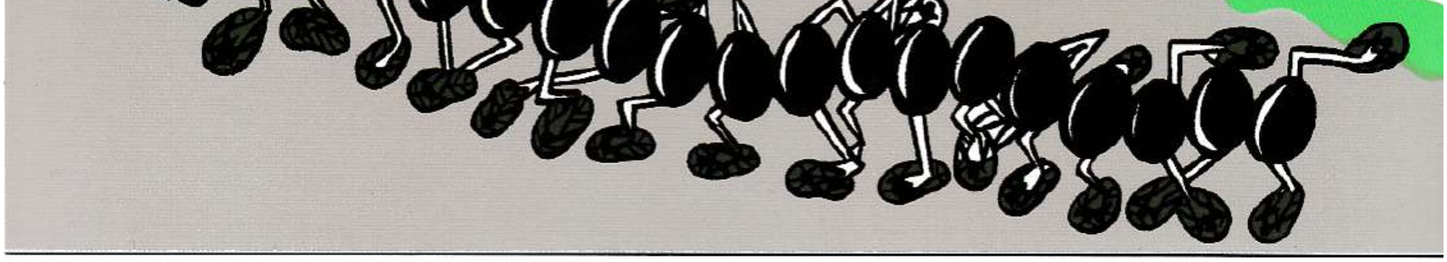
सर्र...सर्र...सर्र...सर्र...

आवाज़ नज़दीक पहुँच रही थी। जिस दिशा से
आवाज़ आ रही थी, सबकी नज़र उसी ओर थी।

उस मोड़ से कौन आ रहा है?

'अरे! यह तो हमारा कनखजूरा है!' उसके हर पैर में
एक चप्पल थी।

वाह! क्या शानदार कनखजूरा और क्या शानदार
उसकी चाल!

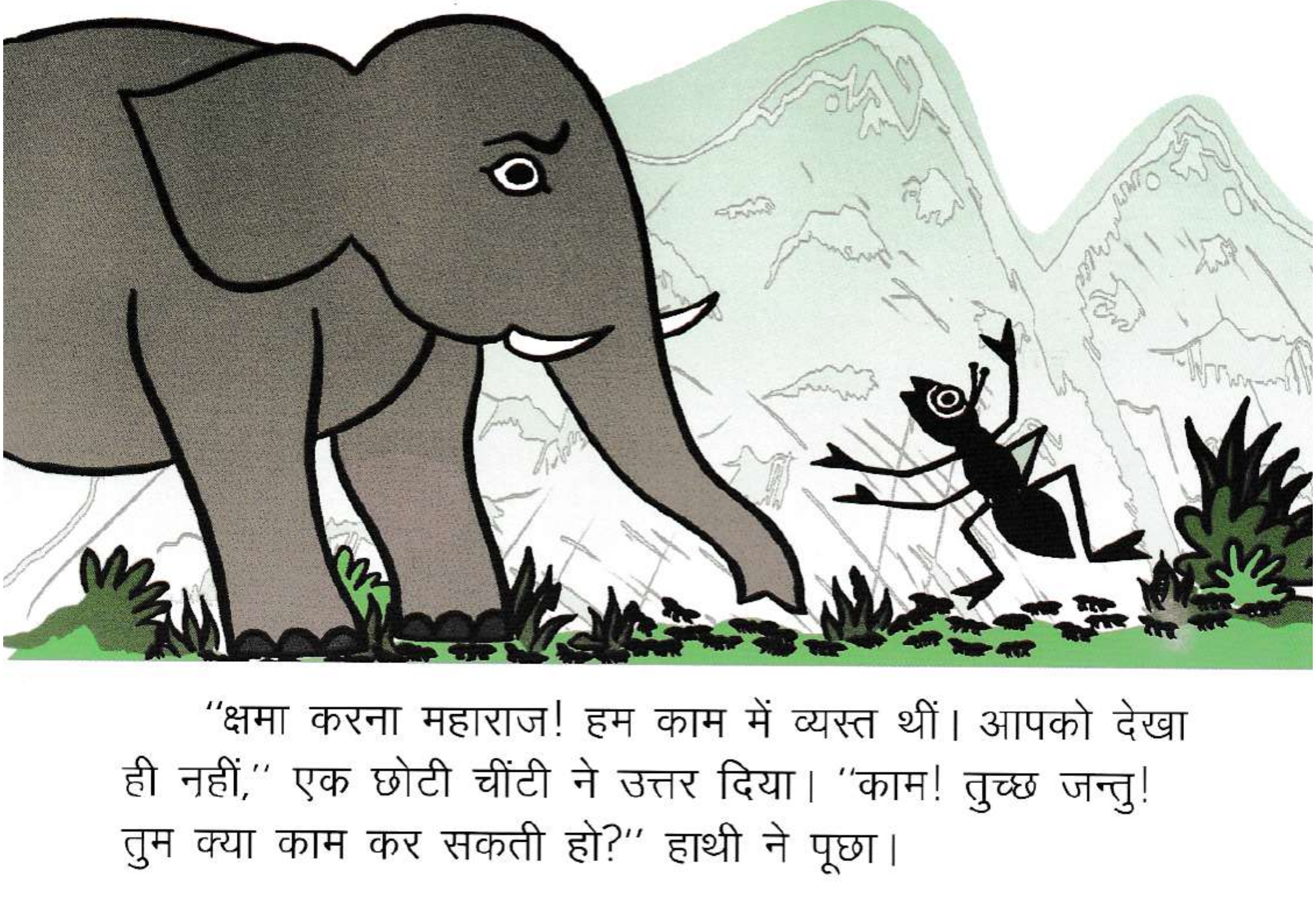


Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

दौड़ प्रतियोगिता

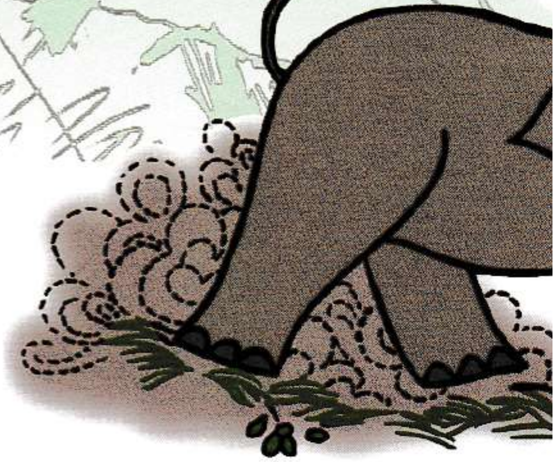
गर्मी का मौसम था। हाथी महाराज तालाब में खूब नहाए! जब घर लौट रहे थे तो रास्ते में उन्हें सैकड़ों चींटियाँ दिखाई पड़ीं। उन्हें देखते ही हाथी चिढ़ गया और कहा, "आप लोग मुझे देखकर सलाम क्यों नहीं करते?"



"क्षमा करना महाराज! हम काम में व्यस्त थीं। आपको देखा ही नहीं," एक छोटी चींटी ने उत्तर दिया। "काम! तुच्छ जन्तु! तुम क्या काम कर सकती हो?" हाथी ने पूछा।

"हम छोटी हैं, मगर तुच्छ नहीं," एक निर्भीक चींटी ने आगे आकर जवाब दिया। हाथी का क्रोध और बढ़ गया, "इतनी हिम्मत! तुम छोटी हो और बेकार भी। मुझे देखो! मैं कितना बलवान हूँ।"





चींटी कहाँ चूकती, "हम आप से किसी बात में कम नहीं हैं। आप जो–जो कर सकते हैं, हम भी वह सब कर सकते हैं।"

हाथी ने चींटी की ओर अकड़कर देखा। वह उसके पाँव की उँगली के बाल से भी छोटी थी। "क्या तुम मेरे साथ दौड़ प्रतियोगिता में भाग ले सकती हो?" हाथी ने चुनौती दी।

"क्यों नहीं? दौड़ में तुम्हें हरा भी सकती हूँ," चींटी ने आत्मविश्वास से कहा। हाथी गुस्से से चिंघाड़ा, "बेवकूफ! मेरा एक पग पार करने में तुम्हें एक युग लगेगा। चलो! मैं तुम्हें सबक सिखाऊँगा।"

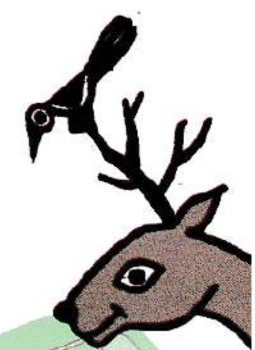
प्रतियोगिता शुरू हुई। हाथी ने थोड़ी दूर दौड़ने के बाद नीचे देखा। "अरे चींटी! तू अब तक दौड़ रही है!" हाथी ने आश्चर्य से कहा।

हाथी थोड़ी दूर और दौड़ा। चींटी अब भी उसके निकट भाग रही थी। हाथी और तेज़ी से दौड़ा। कई पहाड़ी और पथरीले रास्ते पार किए। जब–जब उसने नीचे देखा, तब–तब चींटी को अपने साथ ही दौड़ते पाया।

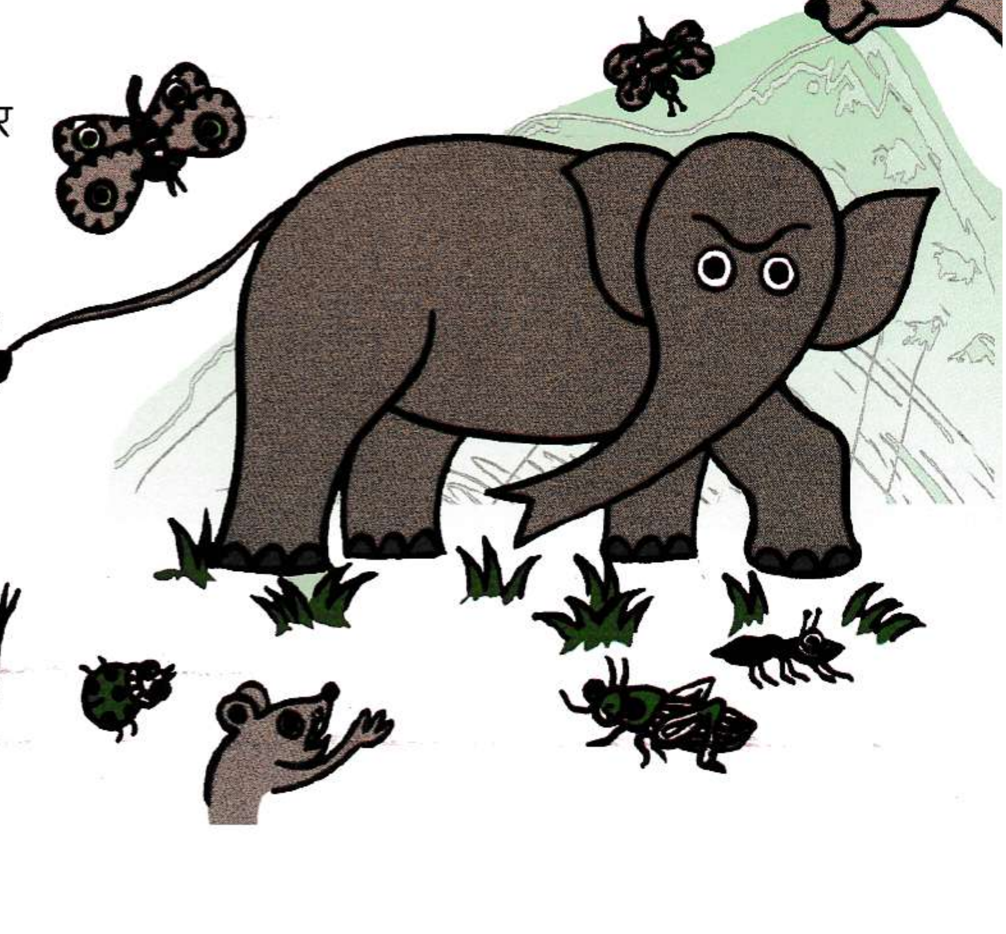


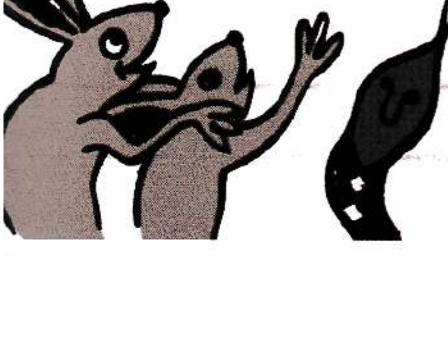
हाथी अब थकने लगा। उसकी साँस फूलने लगी। वह दौड़ समाप्त करना चाहता था। पर चींटी साथ–साथ चल रही थी। 'मैं हार कैसे मान सकता हूँ!' ऐसा सोचकर हाथी दौड़ता रहा।

शोर सुनकर सब जानवर बाहर निकले। तमाशा देखने लगे। "शाबाश चींटी, और भागो!" सबने उकसाया।



कोलाहल सुनकर हाथी और क्रोधित हुआ। वह अंधाधुंध भागने लगा और एक गड्ढे में जा गिरा।





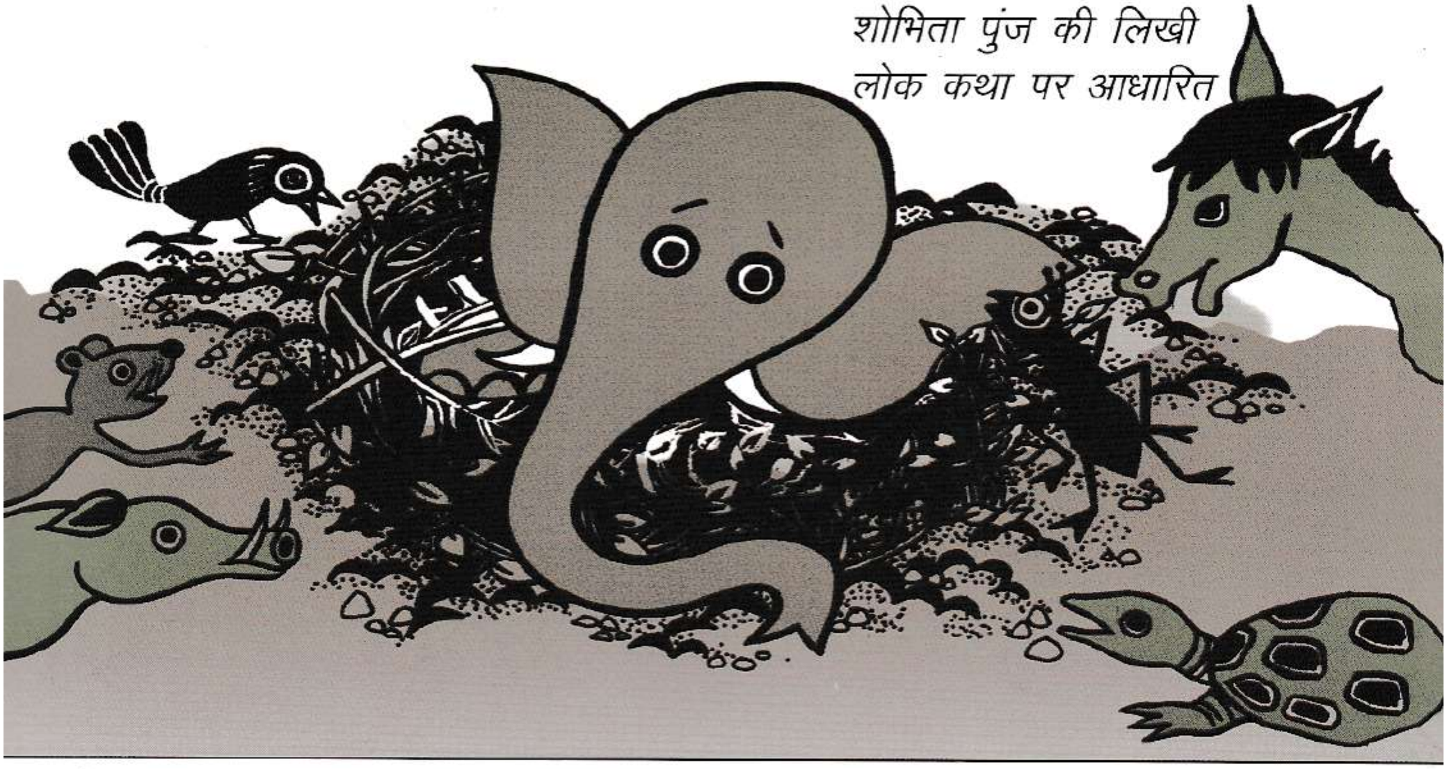
सभी जानवर ऊपर से देख रहे थे। वहाँ चींटी भी खड़ी थी। "बेचारा हाथी! हार गया। तुम बाहर कैसे आओगे? मैं तो तुम्हें बाहर निकालने वाली नहीं हूँ," चींटी हँसते हुए चल पड़ी।

जानवरों को हाथी पर तरस आया। उन्होंने बाहर निकलने में उसकी मदद की। हाथी ने भी जानवरों को तंग न करने का वचन दिया।

चलते–चलते हाथी ने बंदर से पूछा, "बताओ, चींटी कैसे जीत पाई?"

बंदर ने कहा, "मूर्ख हाथी! चींटी तो हर जगह होती है। हर बार तुमने अलग चींटी को देखा। जिस चींटी ने तुम्हें शुरू में चुनौती दी वह तो तुम्हारे साथ चली ही नहीं!"

शोभिता पुंज की लिखी
लोक कथा पर आधारित



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

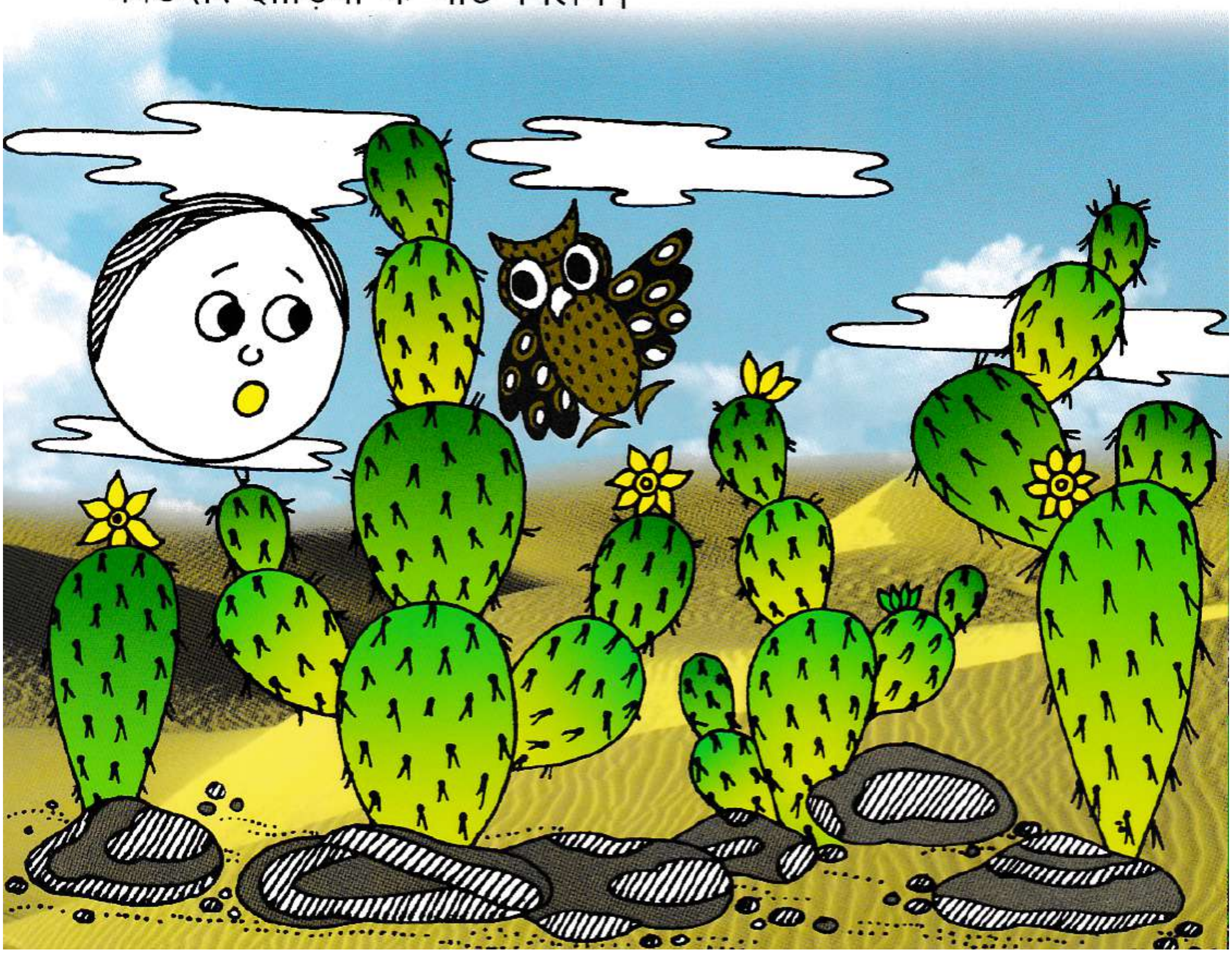
Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णास्वामी

चाँद रात में क्यों निकलता है

बहुत समय पहले की बात है। एक दिन चाँद ने सूरज को गौर से देखा, 'ओहो! यह सूरज तो मुझ से बहुत बड़ा है और कितना प्रकाशमय भी!' चाँद ने सोते हुए उल्लू को जगाकर पूछा, "क्या तुम पता लगा सकते हो कि सूरज अपना प्रकाश कहाँ छिपाकर रखता है?"

उल्लू ने कहा, "ज़रूर"! चाँद खुश हुआ। फिर धीरे से कहा, "शुक्रिया उल्लू भाई! कल शाम को सूरज ढलने के बाद इन काँटेदार झाड़ियों के पीछे मिलेंगे।"



उल्लू उड़ते हुए चला गया। मगर चाँद बेचैन था।

उसे तरह–तरह के ख्याल सताते रहे, "उल्लू कैसे पता लगाएगा कि सूरज का प्रकाश कहाँ छिपा रहता है? बाप रे! अगर उल्लू ने सूरज को जगा दिया तो...! नहीं...नहीं... वह ऐसा कभी नहीं करेगा!" जब तक चाँद को नींद नहीं आई तब तक वह इस बारे में चिंता करता रहा।

अगले दिन चाँद सूरज ढलने का इंतज़ार नहीं कर पाया। सुबह होते ही वह काँटेदार झाड़ियों में जा छिपा। बीच–बीच में झाँककर उल्लू की राह देखता रहा।

उल्लू के आते ही उसने व्याकुलता से कहा, "ओह! आ गए! मैं तुम्हारे बारे में चिंतित था।" उल्लू ने अपनी शरारत भरी आँखों को गोल–गोल घुमाते हुए कहा, "सोने के पहले सूरज अपने प्रकाश को एक संदूक में रखता है।"



चाँद ने कहा, "धन्यवाद!" फिर हिचकिचाते हुए बोला, "क्या तुम सूरज का थोड़ा–सा प्रकाश मुझे लाकर दोगे?"

"क्यों नहीं ? ज़रूर!" उल्लू ने कहा। "कल इसी वक्त, इसी स्थान पर मिलेंगे," चाँद फुसफुसाया और उल्लू सूरज के घर की ओर उड़ चला।

"अगर उल्लू पकड़ा गया तो?" चाँद के मन में फिर से शंका होने लगी। "क्या वह शोर मचाए बिना घर के अंदर घुस पाएगा?" चिंता करते करते वह सो गया।

अगली शाम को उल्लू सूरज के प्रकाश का कुछ हिस्सा लेकर आया। चाँद ने उसे ओढ़ लिया। उल्लू चाँद की प्रशंसा करते हुए बोला, "इतने भर में ही तुम प्रकाशमय हो गए हो।"

कुछ महीनों तक ऐसे ही चलता रहा। एक दिन सूरज ने चाँद को ध्यान से देखा, फिर अपनी ओर देखा। सूरज समझ गया, "चाँद मेरा प्रकाश चुरा रहा है।"



उस रात सूरज जागता रहा। उसने उल्लू को अपना प्रकाश ले जाते हुए देखा। सूरज ने उल्लू का पीछा किया। उसने उल्लू को प्रकाश ले जाकर चाँद को सौंपते हुए देखा। चाँद को उसे ओढ़ते हुए भी देखा। यह देखते ही सूरज ने सामने आकर चाँद को ललकारा।

''चाँद! तुम मेरा प्रकाश क्यों चुरा रहे हो?'' चाँद ने उत्तर दिया, ''क्योंकि तुम मुझ से ज़्यादा प्रकाशमान हो।''

क्रोधित होकर सूरज ने चाँद से सारा प्रकाश छीन लिया और दंड भी दिया ''अब से तुम दिन भर सोते रहोगे। रात को ही प्रकट हो पाओगे।''

चाँद आज भी उल्लू की मदद से सूरज का प्रकाश चुरा रहा है। पर सूर्योदय से पहले वह उस प्रकाश को लौटा देता है।

अमेरिकन इंडियन टेल पुनर्लेखन
निरुपमा राघवन



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

शिबि और चील



शिबि कुरु वंश का एक प्रसिद्ध राजा था। राजा शिबि के मन में सभी पशु–पक्षियों व प्राणियों के प्रति प्रेम और करुणा भाव था।

एक दिन वह बगीचे में टहल रहा था। तभी एक कबूतर तेज़ी से उड़ता हुआ आया। ''मुझे बचाइए! मुझे बचाइए!'' कहते–कहते वह राजा के पास आ गया।

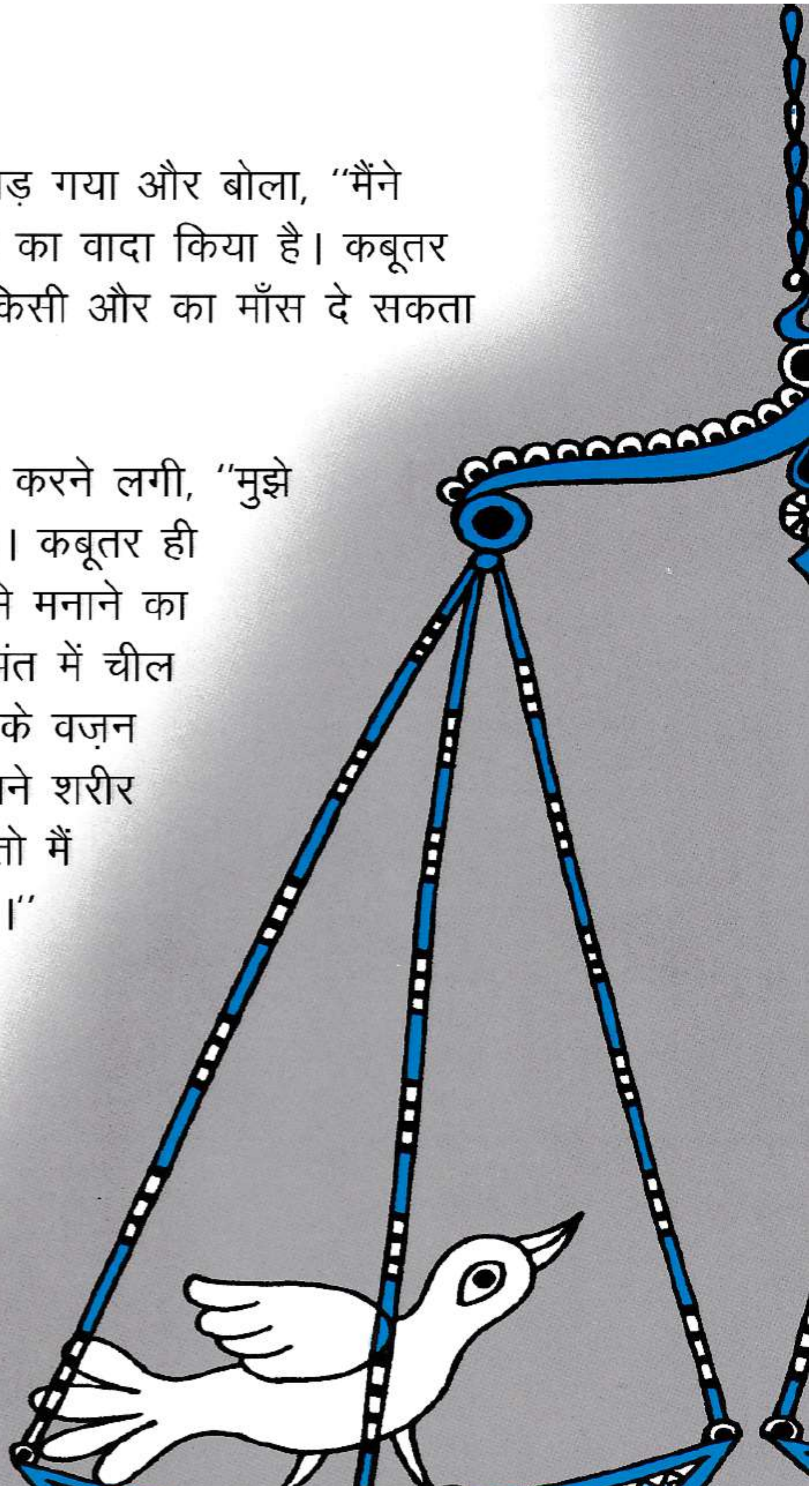


शिबि ने उसे उठाया और प्यार से कहा, ''डरो मत! तुम मेरी शरण में आए हो। मैं तुम्हें निराश नहीं करूँगा।''

उसी समय कबूतर का पीछा करते हुए एक चील वहाँ आ पहुँची। उसने राजा से माँग की, ''कबूतर को मेरे हवाले कर दो। वह मेरा आहार है।''

राजा संकट में पड़ गया और बोला, "मैंने कबूतर की रक्षा करने का वादा किया है। कबूतर के बदले मैं आपको किसी और का माँस दे सकता हूँ।"

लेकिन चील हठ करने लगी, "मुझे और कुछ नहीं चाहिए। कबूतर ही चाहिए।" राजा ने उसे मनाने का बहुत प्रयास किया। अंत में चील बोली, "अगर कबूतर के वज़न जितना माँस आप अपने शरीर से काट कर मुझे दें तो मैं कबूतर को छोड़ दूँगी।"



राजा ने कहा, "ठीक है।" उसने एक तराज़ू मंगवाया। तराज़ू के एक पलड़े में कबूतर को रखा और दूसरे पलड़े में अपनी जाँघ से माँस काटकर रखा।

कबूतर का पलड़ा भारी ही रहा। 'इतना छोटा कबूतर और इसका इतना वज़न!' लोग हैरान रह गए। शिबि अपने शरीर से माँस काट–काट कर रखता गया। फिर भी कबूतर का पलड़ा भारी था।





यह अनोखा दृश्य देखकर देवगण भावुक हो गए। उन्होंने फूल बरसा कर राजा शिबि की प्रशंसा की। कबूतर और चील भी देवता ही थे जो शिबि की परीक्षा लेने वेश बदल कर आए थे।

"तुमने यह भी नहीं सोचा कि कबूतर एक साधारण सा पक्षी है। अपनी जान की परवाह न करके तुमने उसे बचाया। संसार हमेशा तुम्हारे न्याय और करुणा की प्रशंसा करेगा," यह आशीर्वाद देकर देवता चले गए।



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

आज्ञाकारी शिष्य

एक गुरू अपने चार शिष्यों के साथ बैलगाड़ी में सफर कर रहे थे। सुहानी हवा चल रही थी। गुरू आराम से सो गए।

रास्ता ऊबड़–खाबड़ था और गाड़ी हिल रही थी। अचानक गुरू की पगड़ी नीचे गिर पड़ी।

शिष्यों ने पगड़ी को गिरते हुए देखा। उन्हें समझ में नहीं आया कि क्या करें क्योंकि गुरू ने उन्हें आज्ञा दी थी, ''मुझसे पूछे बिना आप कोई काम नहीं करेंगे।'' फिर वे पगड़ी कैसे उठाते?



कुछ ही देर में गुरू जाग उठे। "मेरी पगड़ी कहाँ है?" गुरू ने शिष्यों से पूछा। "पगड़ी रास्ते में गिर गई," शिष्यों ने गुरू को बताया।

गुरू ने उन्हें डाँटा, "अरे मूर्खो! पगड़ी को गिरते हुए देखते रहे। फिर भी नहीं उठाई! अब गाड़ी से जो भी चीज़ गिरे उसे ज़रूर उठा लेना।"

गुरू फिर से सो गए। इस बार शिष्य सतर्क रहे। चारों ओर देखते रहे। अरे! यह क्या? चलते–चलते बैल गोबर करने लगे। शिष्य काम पर लग गए। सारा गोबर इकट्ठा किया। उसे गाड़ी में रख दिया।

"गाड़ी में कुछ अजीब सी बदबू आ रही है!" कहते हुए गुरू ने आँखें खोलीं। गोबर का ढेर! गुरू चिल्ला उठे, "यह कैसा मज़ाक है?"

"गुरूजी! आप ही ने तो कहा था कि गाड़ी से गिरने वाली हर चीज़ को उठाकर रखना है। हमने वही किया," शिष्यों ने गर्व से कहा।



"इन शिष्यों को कैसे समझाऊँ?" गुरू ने सिर पकड़ लिया। फिर कुछ सोचकर वे एक नतीजे पर पहुँचे।

शिष्यों के लिए एक सूची बनाई कि गाड़ी से गिरनेवाली चीज़ों में से किन को उठाना है और किन को नहीं। फिर निश्चिंत होकर सो गए।

गाड़ी फिर से पथरीले रास्ते पर चल पड़ी। अचानक उसका संतुलन बिगड़ गया। धम्म से गुरू जी एक गड्ढे में जा गिरे। "अरे! मुझे कोई बचाओ," गुरू चीखने लगे।



शिष्यों ने तुरंत सूची निकालकर देखी। फिर कहा, "गुरूजी! सूची में आप का नाम तो है नहीं! हम आप को बाहर नहीं निकाल सकते।"

गुरू ने उन्हें बहुत समझाने की कोशिश की। मगर शिष्य अड़े रहे, "हम आपकी आज्ञा का उल्लंघन कभी नहीं करेंगे। आप हमारी परीक्षा लेना चाहते हैं?" कहकर शिष्यों ने उन्हें बाहर निकालने से इनकार कर दिया।

गुरू ने विवश होकर शिष्यों से सूची और कलम माँगी। नीचे गिरनेवाली उन चीज़ों की सूची में अपना नाम जोड़ दिया जिन्हें शिष्यों को उठाना था। सूची को शिष्यों के पास वापिस फेंका। तब जाकर शिष्यों ने उन्हें गड्ढे से बाहर निकाला।

भारत की लोक कथा



तोते की सलाह

एक व्यापारी के पास एक बोलनेवाला तोता था। वह उसे एक चाँदी के पिंजड़े में रखता और प्यार से पालता था। तोता जो भी खाने को माँगता व्यापारी उसे खिलाता।

तोता व्यापारी के साथ घंटों बातों में लगा रहता। उसके हर सवाल का सूझबूझ से जवाब देता। बातों–बातों में व्यापारी से कहता, "मुझे छोड़ दो। मैं स्वतंत्र जीना चाहता हूँ।"



परंतु व्यापारी मना कर देता और कहता, "तुम इसके अलावा कुछ भी माँगो। मैं अवश्य दूँगा।"

एक दिन तोते ने कहा, "मुझे आज़ाद कर दो। मैं तुम्हें तीन सलाह दूँगा। वे जीवन भर तुम्हारे काम आएँगी।" व्यापारी सोच में पड़ गया। फिर उसने पिंजड़े का दरवाज़ा खोल दिया।

तोता उछल कर व्यापारी के हाथ पर बैठ गया और बोला, "अब मेरी पहली सलाह सुनो। संपत्ति खो जाने पर कभी दुःखी मत होना।"

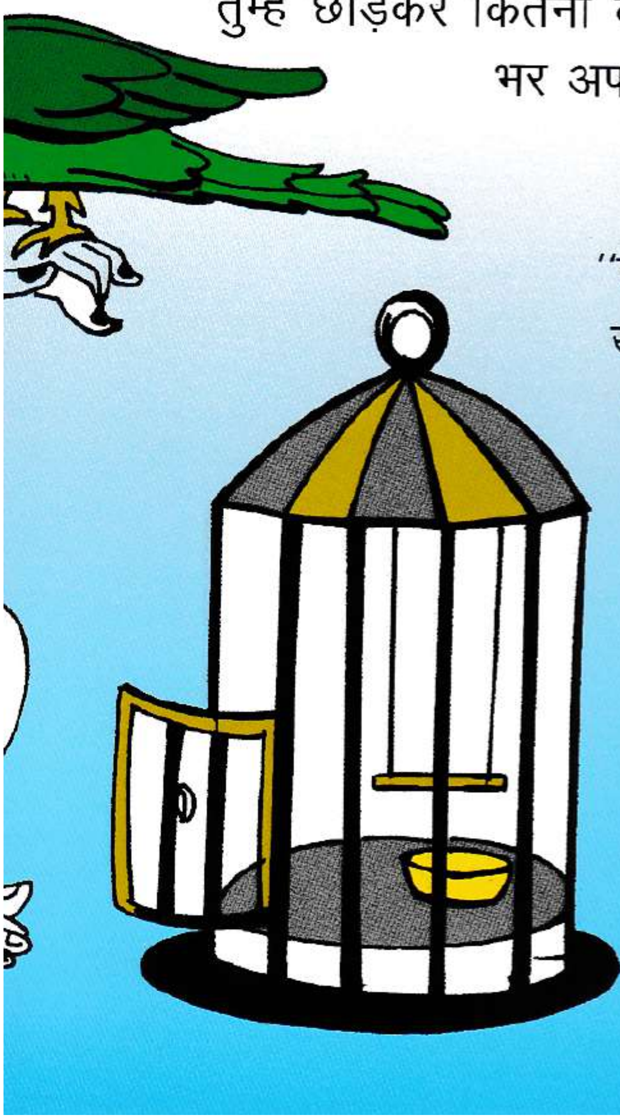
व्यापारी ने उसकी बात को महत्व न देते हुए कहा, "तुमने कोई नई बात तो नहीं बताई।"



तोता उड़ कर छत पर जा बैठा और बोला, ''यह रही मेरी दूसरी सलाह! तुम्हें कोई कुछ बात कहे तो उस पर पूर्ण विश्वास मत करना।''

व्यापारी चिड़कर बोला, ''ये सब बातें मुझे पहले ही मालूम हैं। कुछ ऐसा बताओ, जो मुझे मालूम न हो।'' तोता ज़ोर से हँसा, ''अच्छा! अब मैं तुम्हें वह बात बताऊँगा जो तुम्हें नहीं मालूम। मेरे पेट में अमूल्य रत्न हैं।''

व्यापारी दंग रह गया। ''क्या? अमूल्य रत्न! अरे! मैंने तुम्हें छोड़कर कितनी बड़ी गलती कर दी! मुझे इसका ज़िंदगी भर अफसोस रहेगा।''



तोता उसका मज़ाक उड़ाते हुए बोला, ''देखा! अभी–अभी मैंने कहा कि संपत्ति खो जाने पर दु:खी मत होना। पर इतने में तुम दु:खी हो गए। मैंने कहा कि दूसरों की बातों पर विश्वास मत करना। पर जब मैंने कहा कि मेरे पेट में अमूल्य रत्न हैं, तुमने तुरंत विश्वास कर लिया। ज़रा सोचो, अगर मेरे पेट में रत्न होते तो क्या मैं जीवित रह पाता?''

तोता फिर बोला, "अब सुनो मेरी तीसरी सलाह। कोई कुछ भी कहे तो उसे बुद्धि के स्तर पर अच्छी तरह जाँच कर देखो। केवल कान से सुनना काफी नहीं है।"

व्यापारी हक्का—बक्का रह गया। चुपचाप खड़ा तोते को उड़ते हुए देखता रहा।

भारत की लोक कथा

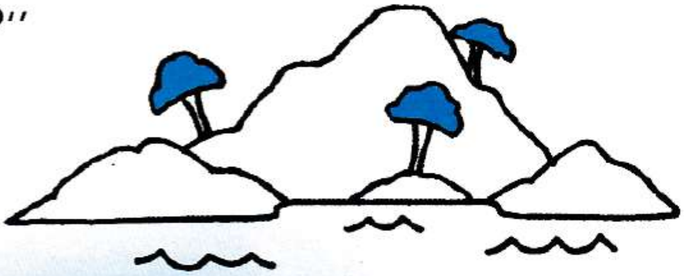


Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

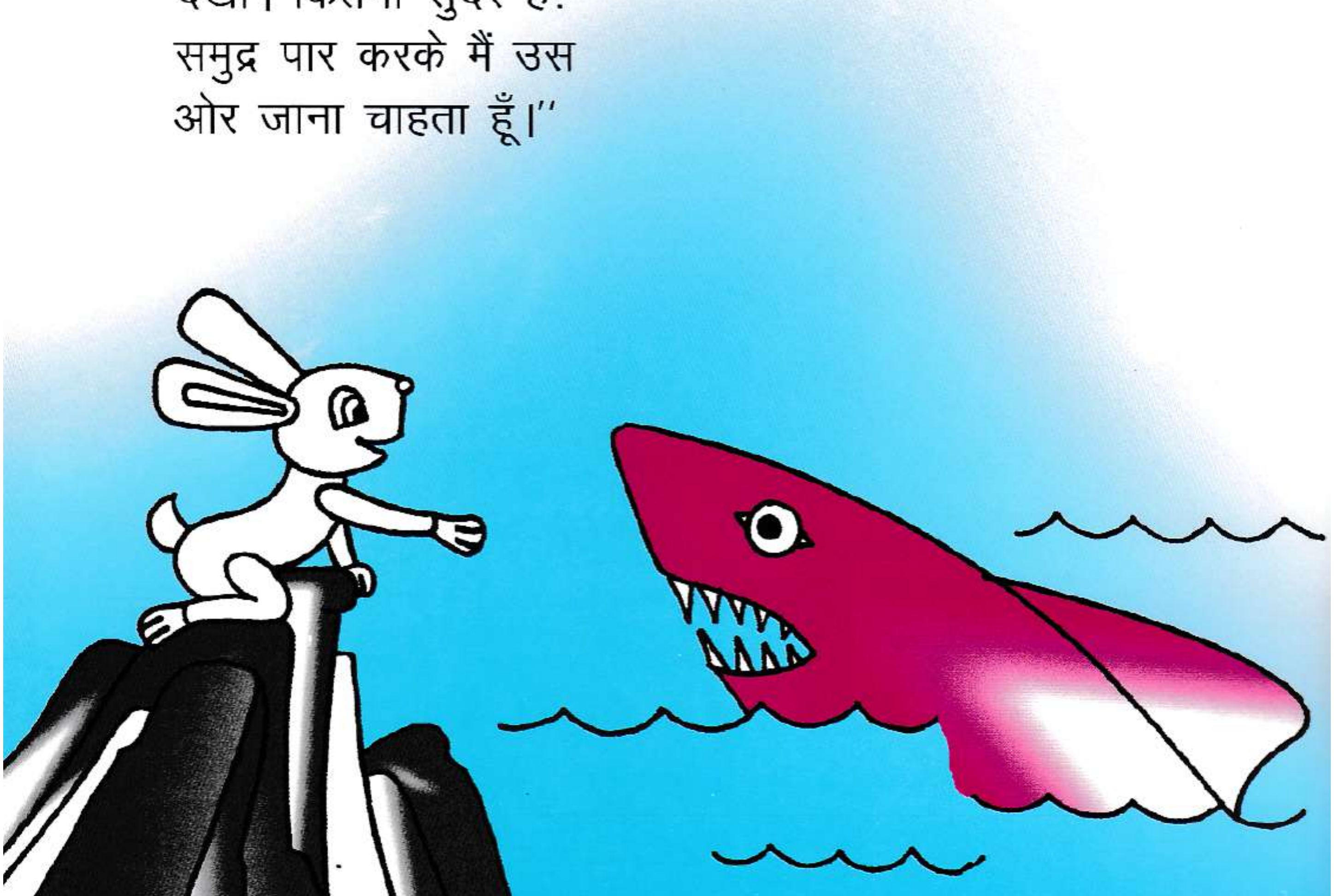
चित्रांकनः
एस.पी.राजू

खरगोश ने समुद्र पार किया

एक खरगोश रोज़ शाम को समुद्र के किनारे आता और घंटों एक चट्टान पर बैठकर कुछ सोचता रहता। एक दिन एक शार्क समुद्र से उछलते हुए बाहर आई और खरगोश को आवाज़ दी, "अरे दोस्त! तुम अकेले बैठकर क्या देखते रहते हो?"



खरगोश बोला, "समुद्र के उस पार टीले को देखो। कितना सुंदर है! समुद्र पार करके मैं उस ओर जाना चाहता हूँ।"



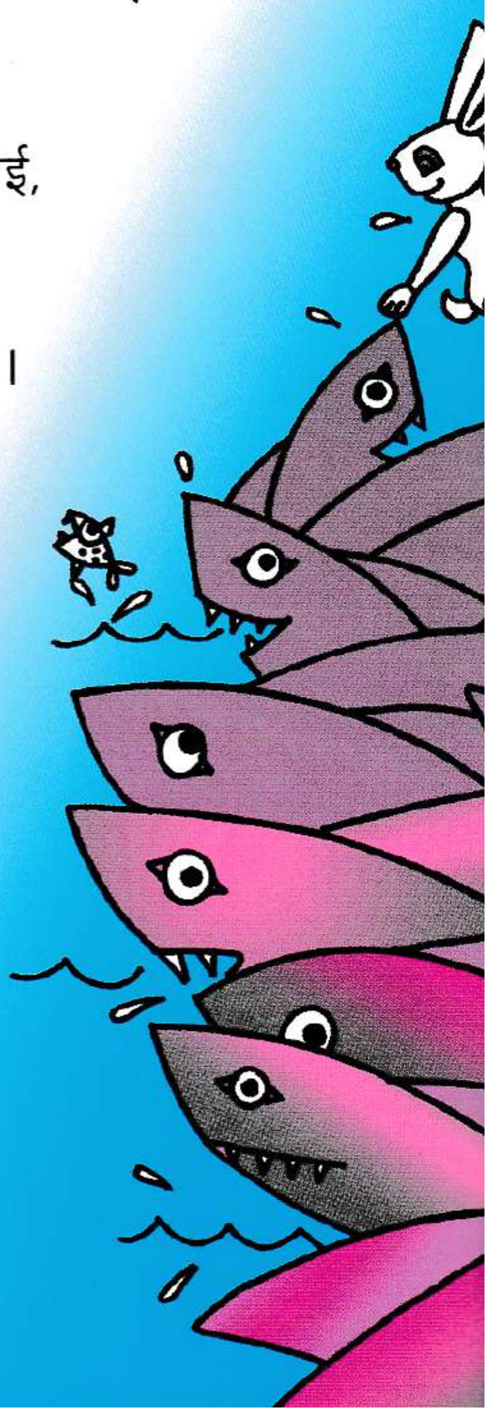
शार्क ज़ोर–ज़ोर से हँसने लगी और बोली, ''अरे बेवकूफ! तैरना तो तुम्हें आता ही नहीं! समुद्र कैसे पार करोगे?''

खरगोश ने कहा, ''मैं समुद्र पार करने का कोई तरीका ढूँढ लूँगा।''

शार्क के चेहरे पर हल्की मुस्कान आ गई, ''अच्छा! देखते हैं तुम कैसे पार करते हो!''

एक दिन खरगोश को एक उपाय सूझा। उसने शार्क से पूछा, ''हम दोनों में से किसके पास ज़्यादा दोस्त हैं? तुम्हारे पास या मेरे पास?'' शार्क ने उत्तर दिया, ''मुझे पक्का यकीन है कि मेरे पास ही अधिक दोस्त हैं।''

खरगोश ने कहा, ''अच्छा! फिर अपने दोस्तों को एक पंक्ति में इस किनारे से उस टीले तक खड़ा करो। मैं गिनकर देखना चाहता हूँ।''





सब शार्क एक पंक्ति में खड़ी हो गईं। खरगोश एक शार्क से दूसरी की पीठ पर कूदता गया और गिनता गया, "एक, दो, तीन......"

आखिर में वह टीले पर पहुँच गया। वहाँ एक चट्टान पर कूद गया और बोला, "धन्यवाद, शार्क दोस्तों! तुम सबने एक पुल बना दिया और समुद्र को पार करने में मेरी सहायता की।

तभी उसकी शार्क दोस्त को एहसास हुआ कि खरगोश ने उसे बेवकूफ बना दिया। शार्क को क्रोध तो आया, पर मन ही मन खरगोश की चतुराई की सराहना भी की।

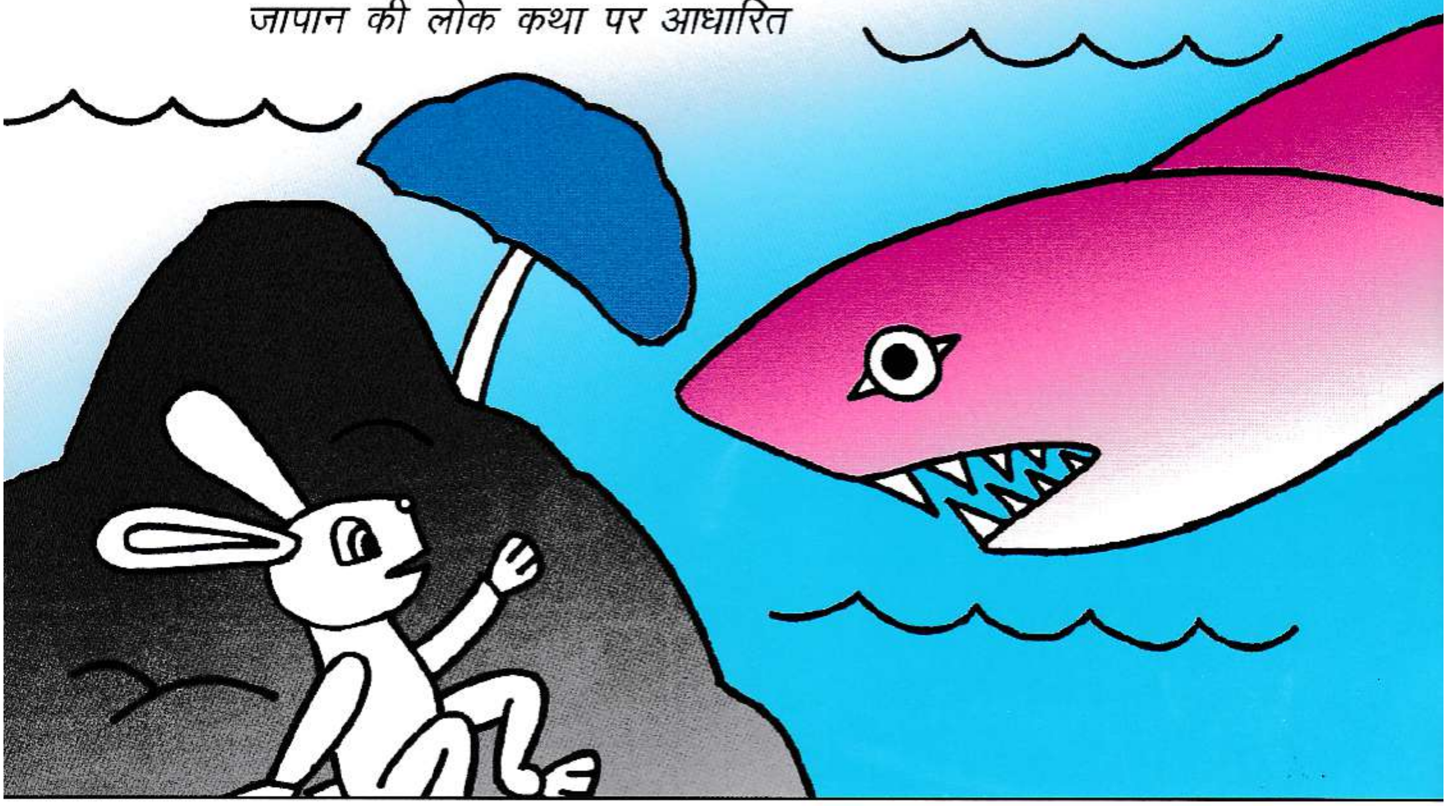
शार्क जब भी टीले के किनारे आती, खरगोश को ढूँढने लगती। पर खरगोश दिखाई नहीं देता। कई महीने बीत गए।

एक दिन अचानक उसे वही खरगोश किनारे पर मिला। वह एकदम गोल–मटोल हो गया था।

शार्क खुशी से पानी में उछली। उसने खरगोश को आवाज़ दी, ''दोस्त! क्या तुम अब वापिस आना चाहते हो? इस बार तुम मुझे मूर्ख नहीं बना सकते। अच्छा होगा कि तुम समुद्र के किनारे किनारे घूम कर जाओ।''

खरगोश ने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा, ''नहीं, मैं फिर से समुद्र को पार करके दूसरे किनारे तक जाऊँगा।'' खरगोश कई दिनों तक समुद्र के किनारे बैठा रहा और सोचता रहा। एक दिन उसे एक नया उपाय सूझा...

जापान की लोक कथा पर आधारित



© **कथा झरना टीम** 2008
पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

आओ पता लगाएँ



खूब नाचेगा, हिलेगा और खूब–खूब झूमेगा
सुनहरे मणि इस पर आएँगे तब झुकेगा
भीतर से सफेद दाना निकलेगा

दिखता है डंडे के जैसा
रस है इसका मीठा ऐसा
पीते ही करता है ठंडा
इससे बनता गुड़ का कंडा



पौधा ज़मीन के बाहर, फल ज़मीन के अंदर
कच्चा भी खाया जाए, सिक कर मस्त कलंदर

एक अन्न का दाना जिसके पेट में लकीर
सभी उसको खाते चाहे राजा हो या फकीर

घोड़ा मेरा काला होगा, छीलने पर होता गोरा
चबाकर उसे खूब दौड़े, चाहे छोरी हो या छोरा

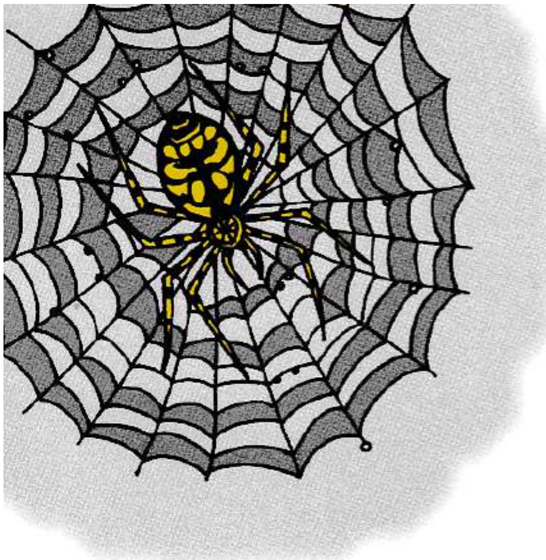
बहुत सारे कपड़े पहनें, बालों का गुच्छा लाल है
भीतर इसके बहुत से मोती, खाने में कमाल है



एक अन्न का दाना ऐसा, जिसका स्लेटी रंग
सर्दियों में उसकी रोटी खाएँ, गुड़ और घी के संग

गन्ना, मूँगफली, गेहूँ, बाजरा, चावल,
काला चना, मक्का





छह पैर होते हैं मेरे
उड़ते रहना काम
गंदा, मीठा सब पर बैठूँ
जल्द बताओ नाम



कचरे को मैं खाद बनाऊँ
गीली मिट्टी में रह जाऊँ
साँप समझते बच्चे मुझको
इनसे कैसे मैं बच पाऊँ

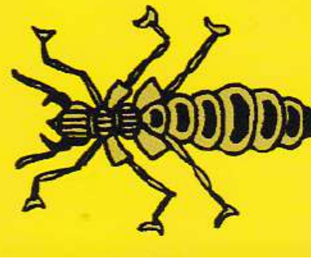


कभी पंख न समेटे, चाहे उड़े–सोए,
चाहे बैठा हो खाली
कहते हैं बारिश आने वाली
जब जब नीचे उड़े

मुँह से निकला धागा
बन जाए एक जाला
जादूगर नहीं, शिकारी नहीं
फिर कौन है ये मतवाला



छोटी रेशम लाल रेशम
दुनिया भर में घूमे रेशम
सभी उसको चाहेंगे
सभी जगह पाएँगे





सिरपुर से गाड़ी चली,
कानपुर में पकड़ी गई
हस्तपुर में झगड़ा हुआ
नखपुर में मारी गई

फूलों से वह करती बातें, पीती मीठा रस
रंग–बिरंगे पंख हैं उसके, उड़ती रहती बस



अंधेरे में टिमटिमाता है
गोदी में आग ले जाता है
रात में जब वह उड़ता है
सबके मन को भाता है

मिट्टी में ही पैदा होता, मिट्टी ही वह खाता
लकड़ी में जब लग जाए, चट उसको कर जाता

एक डॉक्टर ऐसा
जो सबके सुई लगाए
बात किसी की नहीं सुने
बिन पैसे लिए उड़ जाए



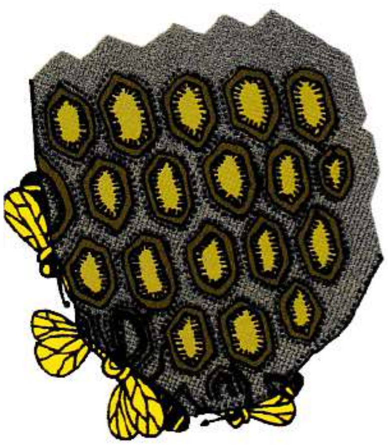






पैर उसके बहुत सारे
छोटे साँप सा दिखता है
घर में चाहे जहाँ से आए
खतरनाक भी होता है

एक के पीछे एक वह चलती
होती उनकी फौज
भोजन के लिए करती रहती
सारे दिन वह खोज



अंधेरे कोनों का रहने वाला
गीलेपन से मेरा नाता
शोर सुनूँ तो भाग जाऊँ
उजाला मुझे नहीं सुहाता

एक महल के हज़ारों वासी
उन सबमें एक होती है खासी

चींटी, मक्खी, मच्छर, तितली, कनखजूरा, पतंगा (ड्रेगन फ्लाई), जूँ, तिलचट्टा, रेशम का कीड़ा, दीमक, रानी मधुमक्खी, केंचुआ, जुगनू, मकड़ी।

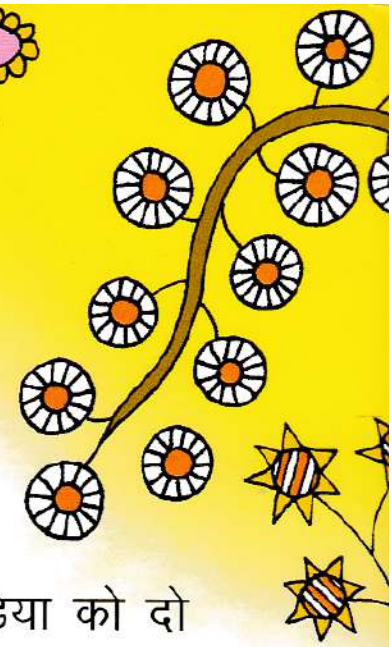
पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

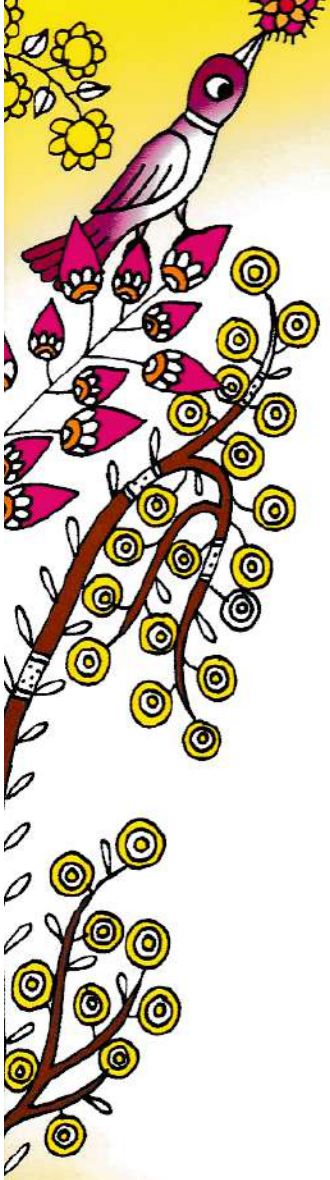
Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी



चिड़िया और लाली





एक दिन खुश होकर पेड़ ने चिड़िया को दो फूल दिए। वे सुंदर, बहुत सुंदर थे। चिड़िया ने सोचा, 'मैं एक फूल किसी और को दूँगी। पर किसे?' चोंच में सुंदर फूल को लिए वह ढूँढने निकली।

उड़ते–उड़ते उसे एक बगीचा दिखाई दिया। उसमें तरह–तरह के फूल थे। ढेर सारे फूल। हवा में उनकी खुशबू भरी थी।

ऐसा बाग तो चिड़िया ने कभी नहीं देखा था। कहीं दूर बाग का माली दिखा। चिड़िया ने सोचा, 'लगता है इसे फूल बहुत पसंद हैं। क्यों न मैं इसको फूल दूँ?'





जैसे ही वह नीचे आई,
माली की नज़र उस पर पड़ी।
माली ने चौंक कर कहा, "अरे, तुम्हारे पास तो बहुत सुंदर फूल है, मुझे दे दो। ऐसा मेरे बगीचे में नहीं है। इससे मेरा बगीचा दुनिया में सबसे अच्छा होगा। मुझे इनाम मिलेगा।"



चिड़िया रूठ कर उड़ गई।
उड़ते–उड़ते उसे रंग ही रंग दिखे। एक आदमी कपड़े पर कशीदा काढ़ रहा था। चिड़िया ने सोचा, 'लगता है इसे सुंदरता बहुत पसंद है। मैं इसे ही फूल दूँगी।'



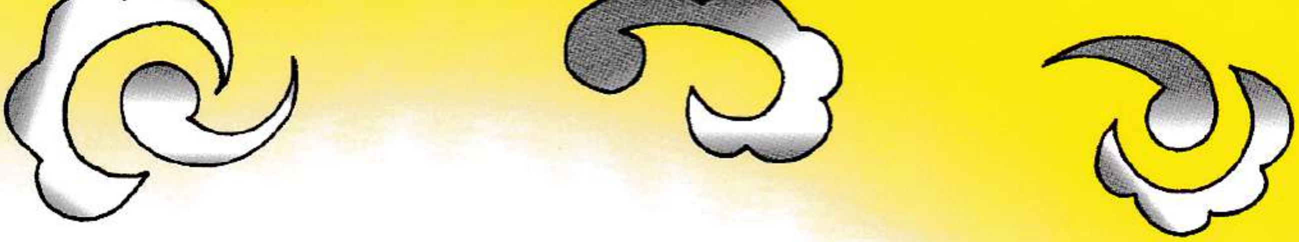
जैसे ही वह नीचे आई, उस आदमी ने चिड़िया की ओर देखा और कहा, "अरे, तुम्हारे पास तो बहुत सुंदर फूल है, मुझे दे दो। ऐसा मेरे कशीदे में नहीं है। इसे काढ़कर मेरा कशीदा दुनिया का सबसे अच्छा कशीदा बन जाएगा। मैं राजा को भेंट में दूँगा।"

चिड़िया रूठ कर उड़ गई। उड़ते–उड़ते एक जगह उसे खूब सारे कबूतर नज़र आए। एक औरत उन्हें दाने दे रही थी। यह देखकर चिड़िया बहुत खुश हुई। उसने सोचा, 'लगता है इस औरत को पक्षियों, जानवरों से बहुत प्यार है। मैं इसे फूल दूँगी।'



जैसे ही चिड़िया नीचे आई, उस औरत की नज़र चिड़िया पर पड़ी। उसने चिड़िया से कहा, "अरे, तुम्हारे पास तो बहुत सुंदर फूल है, मुझे दे दो। मैं ऐसा फूल भगवान को चढ़ाऊँगी तो मेरी सारी कामनाएँ पूरी हो जाएँगी।"

चिड़िया फिर रूठ कर उड़ गई।



उड़ती गई, उड़ती गई। तभी उसने दूर एक छोटी लड़की लाली को देखा। लाली के सिर पर पानी का घड़ा था। चिड़िया सोचने के लिए नहीं ठहरी। चुपचाप नीचे आई और लाली के बालों में वह सुंदर फूल लगा दिया।



लाली ने चौंक कर कहा, "फूल, मेरे लिए?" चिड़िया ने कहा, "हाँ, तुम्हारे लिए। तुम्हारी मेहनत के लिए, जो इस फूल जैसी सुंदर है।"

सुष्मिता बैनर्जी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

बताओ मेरा नाम क्या है



एक नन्ही मक्खी अकेली बगीचे में उड़ती रहती थी। उसे सब 'ई' कहकर पुकारते थे। एक दिन अचानक 'ई' अपना नाम भूल गई। उसने पास खड़े बछड़े से पूछा–

गोल मटोल बछड़े
बताओ मेरा नाम क्या ?

बछड़े ने कहा, ''तुम्हारा नाम मुझे कैसे मालूम? मेरी माँ घास चर रही है। उससे जाकर पूछ।'' मक्खी ने गाय से पूछा–

गोल मटोल बछड़े
बछड़े की माँ, बताओ मेरा नाम क्या?

गाय ने कहा, ''मुझे क्या पता? मुझे चरानेवाले गड़रिए से पूछ।'' मक्खी गड़रिए के पास गई और पूछा–

गोल मटोल बछड़े
बछड़े की माँ
माँ को चरानेवाले गड़रिए
बताओ मेरा नाम क्या?



गड़रिए ने कहा, ''मैं क्या जानूँ? मेरे हाथ में जो लाठी है उससे पूछ।'' मक्खी ने लाठी को देखकर पूछा–

गोल मटोल बछड़े
बछड़े की माँ
माँ को चरानेवाले गड़रिए
गड़रिए के हाथ की लाठी
बताओ मेरा नाम क्या?







लाठी ने कहा, "मैं कैसे जानूँ? मुझे जिस पेड़ से काटा गया है उस पेड़ से पूछ कर देखो।" मक्खी ने पेड़ से पूछा–



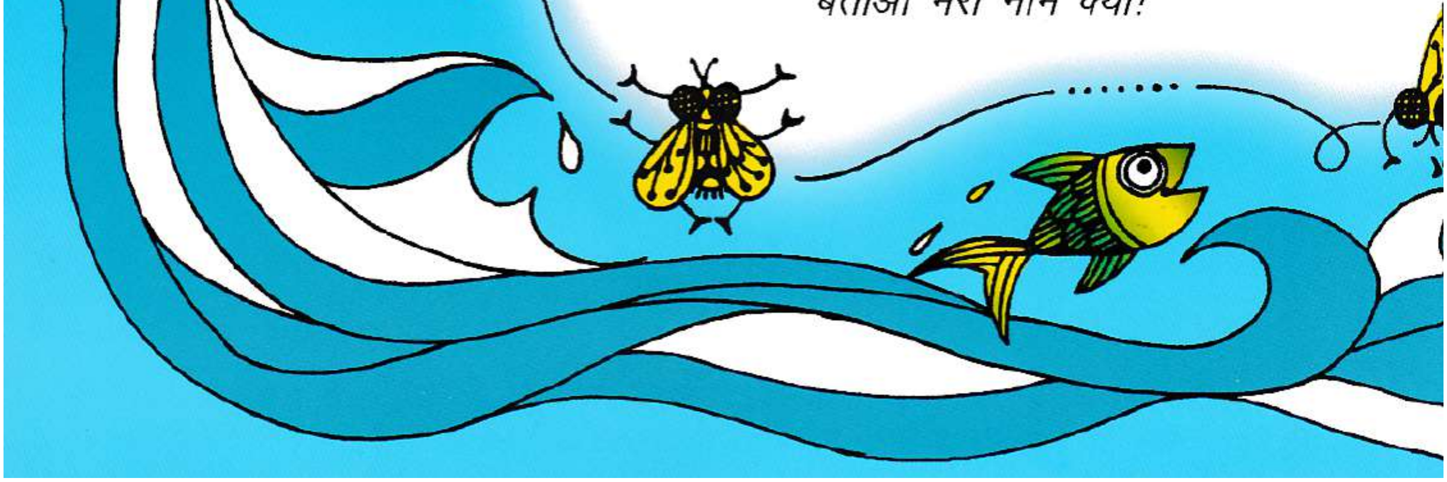
गोल मटोल बछड़े
बछड़े की माँ
माँ को चरानेवाले गड़रिए
गड़रिए के हाथ की लाठी
लाठी देनेवाले पेड़
बताओ मेरा नाम क्या?

पेड़ ने कहा, "मुझे पता नहीं। मेरी डाल पर बैठा सारस, उससे पूछ!" मक्खी ने सारस से पूछा–

गोल मटोल बछड़े
बछड़े की माँ
माँ को चरानेवाले गड़रिए
गड़रिए के हाथ की लाठी
लाठी देने वाले पेड़
पेड़ पर बैठे सारस
बताओ मेरा नाम क्या?

सारस ने कहा, "मैं क्या जानूँ? मैं जिस तलैया में जीता हूँ, उससे जाकर पूछ!" मक्खी तालाब के पास उड़ चली और पूछा–

गोल मटोल बछड़े
बछड़े की माँ...
पेड़ पर बैठे सारस
सारस की जान तलैया
बताओ मेरा नाम क्या?



तलैया ने कहा, "मुझे नहीं मालूम। इन मछलियों से पूछ!" तभी एक मछली छलाँग लगाकर पानी के ऊपर आई। मक्खी ने उससे पूछा–

गोल मटोल बछड़े
बछड़े की माँ....
पेड़ पर बैठे सारस
सारस की जान तलैया
तलैया में तैर रही मछली
बताओ मेरा नाम क्या?

मछली ने कहा, "हम क्या जानें? हमें पकड़ने मछुआरा आता है, उससे पूछ!" मक्खी ने मछुआरे से पूछा– *गोल मटोल बछड़े*

बछड़े की माँ....
... तलैया में तैर रही मछली
मछली पकड़नेवाले मछुआरे
बताओ मेरा नाम क्या?

मछुआरे ने कहा, "मुझे कैसे पता? मेरे हाथ के मटके से पूछ!

मक्खी ने मटके से पूछा– *गोल मटोल बछड़े.....*

...मछली पकड़ने वाले मछुआरे
मछुआरे के हाथ के मटके
बताओ मेरा नाम क्या?

मटके ने कहा, "मैं ना जानूँ। मुझे बनाने वाले कुम्हार से पूछ।" मक्खी ने कुम्हार से पूछा–

गोलमटोल बछड़े........
...मछुआरे के हाथ के मटके
मटका बनाने वाले कुम्हार
बताओ मेरा नाम क्या?





कुम्हार ने कहा, "मुझे नहीं पता। मैं मिट्टी से काम करता हूँ। तू मिट्टी से पूछ!" मक्खी ने मिट्टी से पूछा–

गोल मटोल बछड़े......
...मटका बनानेवाला कुम्हार
कुम्हार माँढ रहा माटी
बताओ मेरा नाम क्या?

माटी ने कहा, "मुझे नहीं मालूम। मेरे ऊपर उगी घास से पूछकर देखो।" मक्खी ने घास से पूछा–

गोल मटोल बछड़े.....
कुम्हार माँढ रहा माटी
माटी पर उगी घास
बताओ मेरा नाम क्या ?

घास ने कहा, "तुम्हारा नाम भला मैं कैसे जानूँ? मुझे चर रहे घोड़े से पूछ!" मक्खी ने घोड़े के पास जाकर पूछा–

गोल मटोल बछड़े....
.... माटी पर उगी घास
घास चर रहे घोड़े
बताओ मेरा नाम क्या?

घोड़ा ई..ई...ई...ई... करके ज़ोर से हिनहिनाया। उसे सुनकर मक्खी को अपना नाम 'ई' याद आ गया।

मेरा नाम 'ई' है, मेरा नाम 'ई' है.....
गाते हुए मक्खी उड़ चली।

तमिलनाडु की लोक कथा

पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी



51 बंदरों की सूझबूझ

बंदरों के एक झुंड ने जंगल बदलने का निर्णय किया। बहुत दूर सफर करके वे एक नए जंगल में पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही बंदरों के मुखिया ने उन्हें चेतावनी दी, "इस जंगल की किसी झील में एक भूत छिपा हुआ है। इसलिए मेरी इजाज़त के बिना झील का पानी मत पीना।"

एक दिन बंदर जंगल में काफी दूर निकल गए। चलते-चलते एक छोटे बंदर ने कहा, "माँ, मुझे बहुत प्यास लगी है।"

बंदर की माँ ने कहा, "वो रही झील! चलो, वहाँ पानी पीते हैं।"

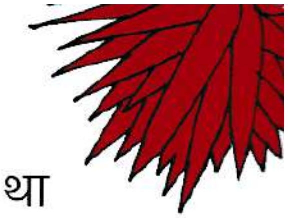




तभी एक और बंदर ने आवाज़ लगाई, "ठहरो! झील पर मत जाओ! क्या तुम्हें मुखिया की चेतावनी याद नहीं है?"

छोटे बंदर की तड़प माँ से देखी नहीं जा रही थी। वह दुविधा में पड़ गई। इतने में बंदरों का मुखिया वहाँ आया और उसने पूछा, "पानी चाहिए? ज़रा धीरज रखो। मैं जाकर देखता हूँ।"

बंदरों का मुखिया झील के पास गया। सब तरफ ध्यान से देखा। 'अरे! बड़े-बड़े पाँव के निशान! सभी निशान तालाब की तरफ ही जा रहे हैं। झील से वापिस आने वाले निशान नहीं दिखाई पड़ रहे हैं। भूत यहीं पर छिपा हुआ है,' मुखिया ने अंदाज़ा लगाया।



मुखिया ने अन्य बंदरों से कहा, "यह झील बहुत खतरनाक है। इसके अंदर मत जाना।" वह कह ही रहा था कि झील से "हा...हा....हा....हा..." की डरावनी आवाज़ आई।

पानी उछालते हुए झील में से एक बड़ा भूत बाहर निकला, "हा. .हा...हा...हा... जो भी इस झील में उतरेगा मैं उसे निगल जाऊँगा।"

"हममें से कोई भी झील के अंदर नहीं आने वाला है," मुखिया ने कहा। भूत उसका मज़ाक उड़ाते हुए बोला, "तो क्या इस धूप में पानी के बिना ही मर जाओगे?"

"बिल्कुल नहीं। हम पानी ज़रूर पीएँगे," मुखिया ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

"कैसे?" भूत ने आश्चर्य से पूछा।

"देखते जाओ!" यह कहकर मुखिया ने बंदरों से आस-पास से बाँस के टुकड़े इकट्ठे करवाए। हर बाँस में झाँक कर देखा कि सुराख है कि नहीं।

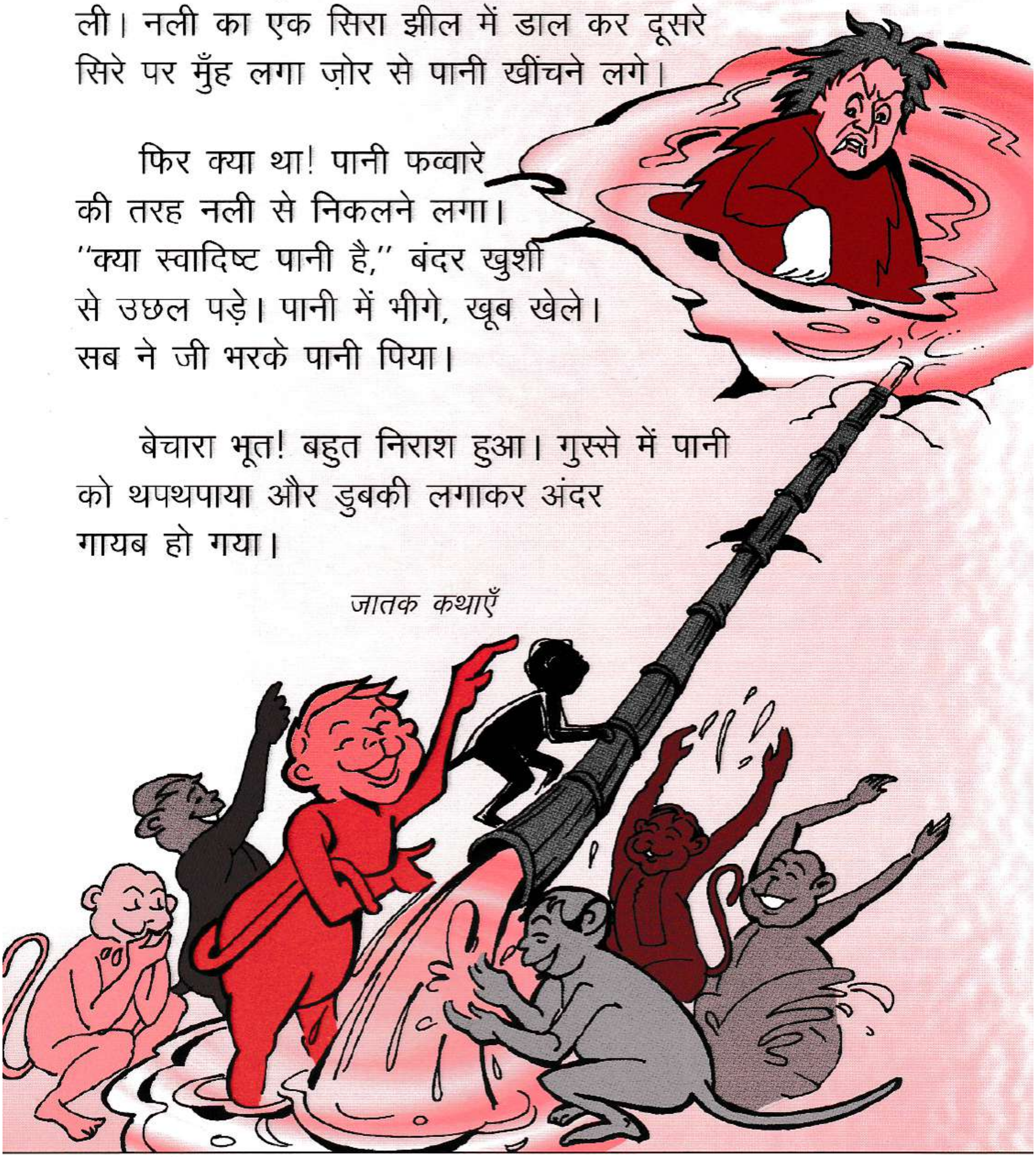


फिर एक टुकड़े को दूसरे के अंदर घुसाकर लंबी नली बना ली। नली का एक सिरा झील में डाल कर दूसरे सिरे पर मुँह लगा ज़ोर से पानी खींचने लगे।

फिर क्या था! पानी फव्वारे की तरह नली से निकलने लगा। "क्या स्वादिष्ट पानी है," बंदर खुशी से उछल पड़े। पानी में भीगे, खूब खेले। सब ने जी भरके पानी पिया।

बेचारा भूत! बहुत निराश हुआ। गुस्से में पानी को थपथपाया और डुबकी लगाकर अंदर गायब हो गया।

जातक कथाएँ



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

मैरी की खुशी

मैरी के हाथ में एक कागज़ था। "अरे? कोई चित्र है क्या? मुझे ज़रा दिखाओ तो सही," दीपा ने मैरी के हाथ से चित्र ले लिया।

मैरी की आँखों में आँसू थे। दीपा चौंक गई। उसने पूछा, "क्या हुआ मैरी? बताओ न! तुम रो क्यों रही हो?"



मैरी ने सिसकते हुए कहा, "मैंने तुम्हारे बगीचे का चित्र बनाया था। मगर बंटी उसे देखकर मेरा मज़ाक उड़ा रहा था। वह कह रहा था कि मेरा चित्र बेकार है। अब मैं कभी भी चित्र नहीं बनाऊँगी।"

"चित्र अच्छा नहीं है! यह तो बहुत बढ़िया है। हम सब अलग–अलग तरीके से सोचते हैं, देखते हैं और अपनी–अपनी रुचि के अनुसार चित्र बनाते हैं। यह ज़रूरी नहीं कि हम सब एक जैसे चित्र बनाएँ। तुम रोओ मत।"

दीपा की बात सुनकर मैरी का मन ज़रा हल्का हुआ।



अगले दिन दीपा के घर उसके रिश्तेदार आए। दीपा और मैरी उनके साथ समुद्र के किनारे घूमने गए। दीपा अपने साथ रंगीन पेंसिल और कागज़ भी लेकर गई।

समुद्र के तट पर कुछ मछुआरे अपनी नाव की मरम्मत कर रहे थे। कुछ और लोग मछली पकड़ रहे थे। ऐसे सुंदर दृश्य देखकर मेहमान बहुत खुश हुए। रंगीन पेंसिल उठाकर वे चित्र बनाने लगे।

मैरी ने संकोच के साथ कहा, "मुझे चित्र बनाना नहीं आता।" वह कुछ देर तक उन्हें देखती रही, पर उससे रहा न गया। सब कुछ भूलकर चित्र बनाने में खो गई।



कुछ देर बाद सबने अपने अपने चित्र एक–दूसरे को दिखाए। हर एक ने समुद्र तट को ही देखकर चित्र बनाए थे। मगर वास्तव में हर एक ने उसे अलग–अलग तरीके से चित्रित किया हुआ था।

अब मैरी को एहसास हुआ, 'उस दिन दीपा ने ठीक ही कहा था। सबकी नज़र एक सी नहीं, सोच एक सी नहीं और चित्र भी एक से नहीं हो सकते।'

उत्साहित होकर मैरी ने अपना चित्र निकाला। उसके आधार पर एक कहानी बनाई। सब हैरान हो गए। "तुम कहानी अच्छी सुनाती हो," सबने उसकी तारीफ करते हुए कहा।

आज कल मैरी अपने मनपसंद चित्र बनाती है। चित्रों के ज़रिए बहुत–सी कहानियाँ सुनाती है। लोग उसकी प्रशंसा करें या ना करें, ध्यान नहीं देती।



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन: एस.पी.राजू

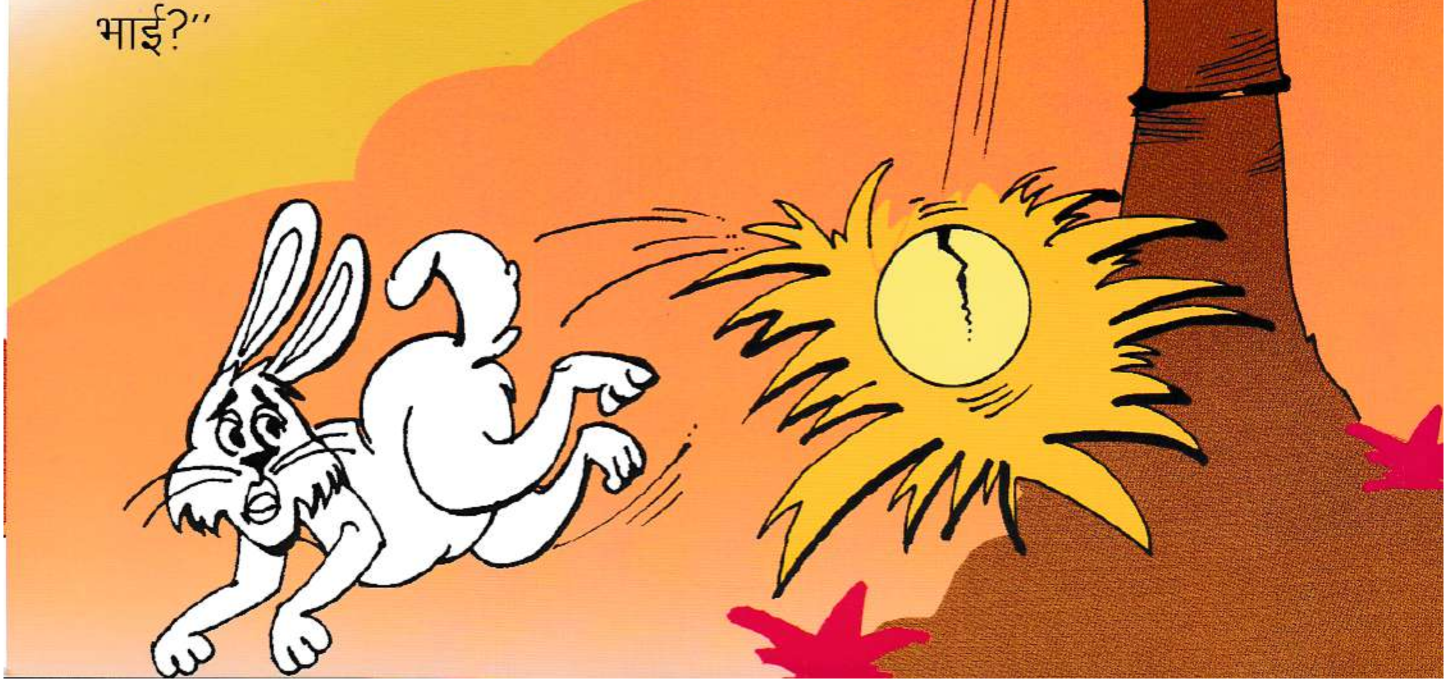
53

धरती फटी

एक दिन एक खरगोश लंबे से ताड़ के पेड़ के नीचे सो रहा था। पास ही एक बेल का पेड़ भी था। अचानक एक बेल फल धम्म से ताड़ के पत्तों पर आ गिरा। खरगोश गहरी नींद में था। आवाज़ सुन कर घबरा गया।

''अरे! धरती फट रही है,'' चिल्लाते हुए हड़बड़ाहट में भागने लगा। उसके साथियों को कुछ समझ में नहीं आया। वे भी उसके पीछे भागने लगे।

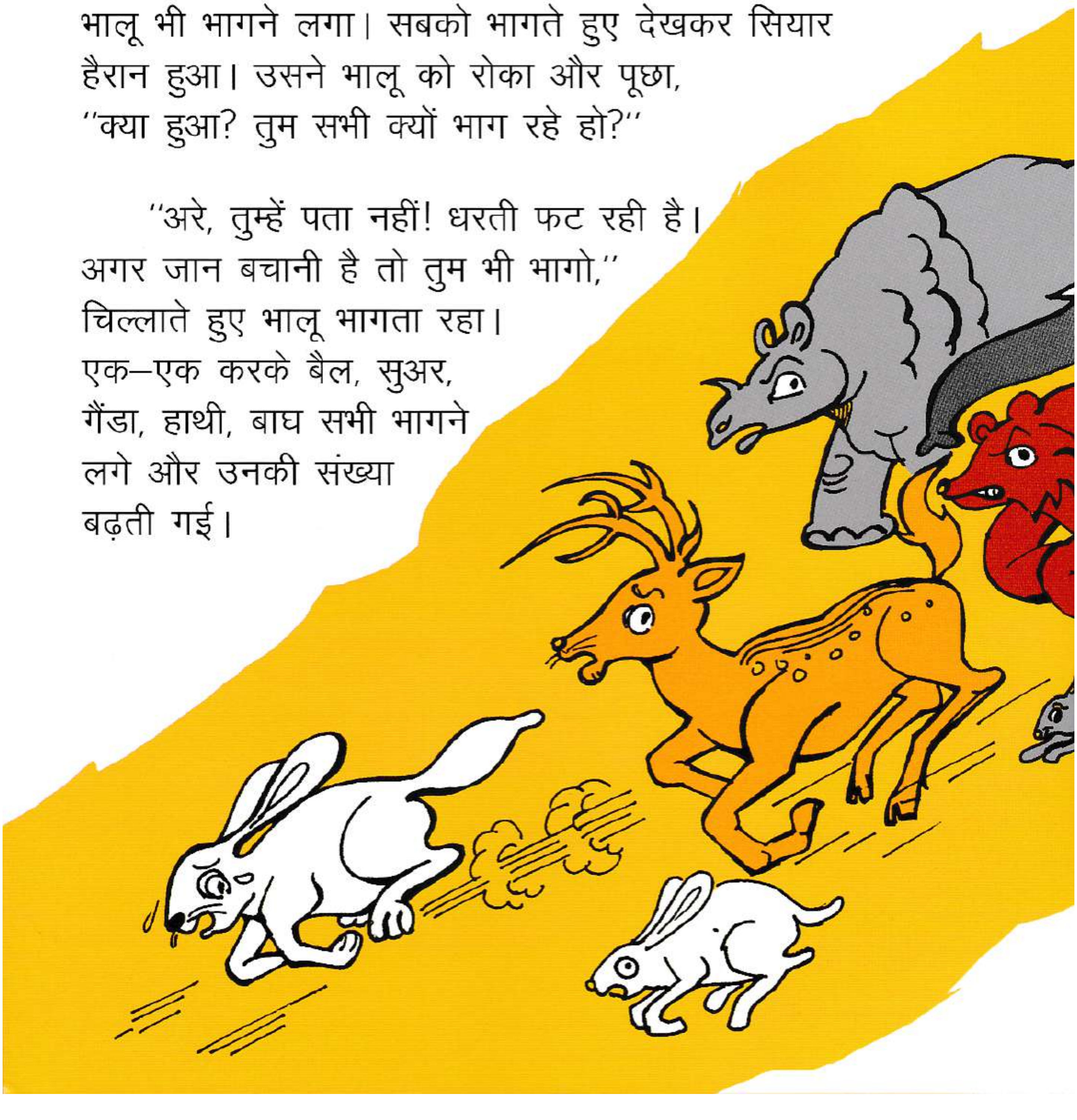
रास्ते में एक हिरन ने उन्हें भागते हुए देखा और पूछा, ''इतनी तेज़ क्यों भाग रहे हो भाई?''



खरगोश बोला, "धरती फट रही है। भागो! भागो!" हिरन भी उनके साथ भागने लगा। तभी भालू ने भी उन्हें भागते हुए देखा। उसने हिरन को आवाज़ दी, "अरे भाई! ऐसे क्यों भाग रहे हो?"

हिरन भागते हुए बोला, "धरती फट गई! तुम भी भागो!" भालू भी भागने लगा। सबको भागते हुए देखकर सियार हैरान हुआ। उसने भालू को रोका और पूछा, "क्या हुआ? तुम सभी क्यों भाग रहे हो?"

"अरे, तुम्हें पता नहीं! धरती फट रही है। अगर जान बचानी है तो तुम भी भागो," चिल्लाते हुए भालू भागता रहा। एक–एक करके बैल, सुअर, गैंडा, हाथी, बाघ सभी भागने लगे और उनकी संख्या बढ़ती गई।





तभी दूर से सिंह ने दौड़ते आ रहे जानवरों की सेना देखी। उसने सोचा ज़रूर कुछ गड़बड़ है। जब वे सब पास आए तो सिंह ने कहा, ''रुक जाओ। तुम लोग इस तरह क्यों भाग रहे हो?''

बाघ तो ठीक तरह से बोल भी नहीं पाया। हाँफते–हाँफते बोला, ''धरती फट गई है। भागो! भागो!''



सिंह ने सोचा, 'इन सभी को ज़रूर कोई गलतफहमी हुई है। जिसके कारण ये बौखला गए हैं। इन्हें तुरंत रोकना होगा।'

सिंह ज़ोर से तीन बार दहाड़ा। सारा जंगल काँपने लगा। स्तंभित होकर सभी जानवर चुपचाप खड़े हो गए। सिंह ने पूछा, "आप लोगों को किसने बताया कि धरती फट गई है?"

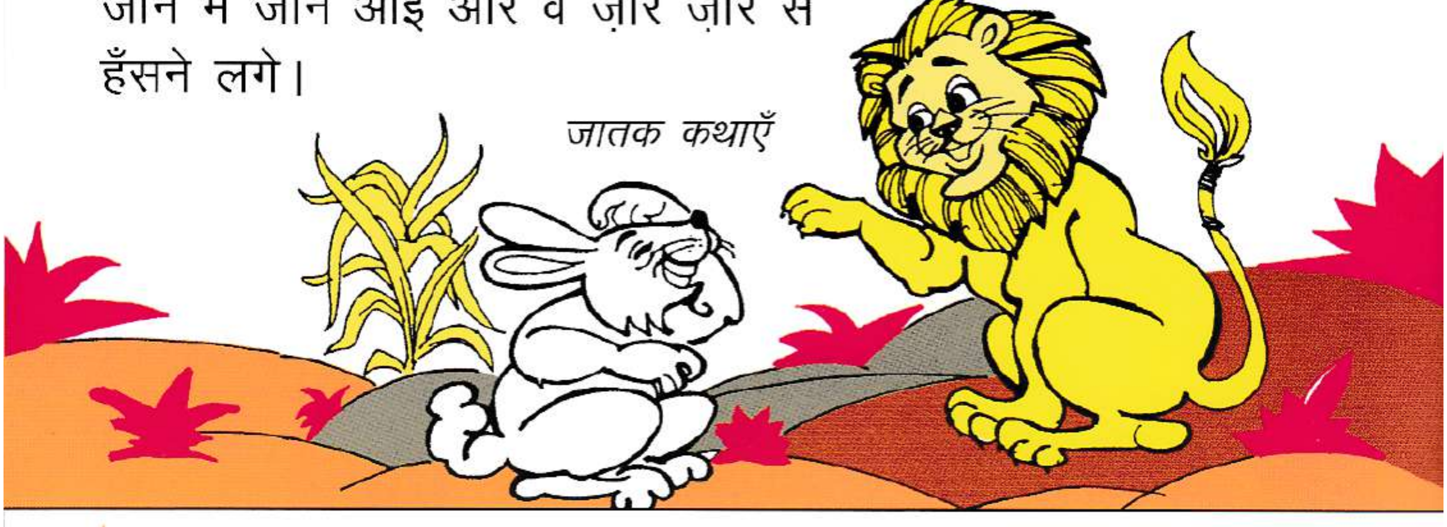
बाघ ने कहा, "मुझे हाथी ने बताया।" जब हाथी से पूछा तो उसने कहा, "मुझे बैल ने कहा था।" इस प्रकार गेंडा, सुअर, सियार, हिरन सभी एक–दूसरे की तरफ इशारा करते गए।

आखिर में जब खरगोश से पूछा गया तो उसने कहा, "हाँ! मैंने धरती के फटने की आवाज़ सुनी थी।" सिंह ने कहा, "कहाँ है वह जगह? मुझे दिखाओ।"

खरगोश उन्हें उस जगह ले गया जहाँ वह सो रहा था। पास में ही वह टूटा हुआ बेल पड़ा था। सब उसे देख ही रहे थे कि एक और बेल ताड़ के पत्तों पर आ गिरा।

सिंह ज़ोर ज़ोर से हँसने लगा, "देखा! खरगोश ने यही आवाज़ सुनी होगी। नींद में उसने सोचा कि धरती फट गई है।" उन सभी की जान में जान आई और वे ज़ोर ज़ोर से हँसने लगे।

जातक कथाएँ



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू

भभो भैंस की पूँछ

भभो भैंस बहुत आलसी थी। तालाब में आकर बैठ जाती और फिर टस से मस न होती। इससे वहाँ पर रहने वाले मेंढक दुखी हो गए।

तालाब छोटा था और भभो के घुस जाने के बाद, उनके खेलने कूदने की जगह कम हो जाती। वे मुँह फुलाकर, गुमसुम कोनों में घूमकर बैठे रहते।

"क्यों न भभो को साथ खिलाएँ?" मेंढू मेंढक ने ढेंकू मेंढक से कहा। "वह कैसे मानेगी?" ढेंकू ने जवाब दिया, "वह तो हिलती ही नहीं।"



"न हिले," मेंढू बोला, "हम उससे दूर क्यों जाएँ? हम उसके ऊपर से कूद सकते हैं।" ढेंकू को यह बात कुछ जँची।

अगली बार जब भभो तालाब में आई तो मेंढू उसके बाईं ओर जा बैठा और ढेंकू दाईं तरफ। उसके ऊपर से उछलते हुए एक आया बाएँ से दाएँ और दूसरा गया दाएँ से बाएँ।



भभो पर पानी के छींटे पड़े, पर उसने कुछ किया नहीं। दूसरी बार जब मेंढू और ढेंकू उस पर से उछले, तब उसने गर्दन घुमाकर देखा।

वह समझ गई कि क्या खेल चल रहा है। अगली बार जब वे छलाँग लगा रहे थे, उसने अपनी पूँछ उठाई और तपाक से ढेंकू को उसमें लपेट लिया।

ढेंकू हैरान रह गया। मेंढू ने उछलकर भभो की पूँछ को छुआ। पूँछ ने ढेंकू को छोड़ा और मेंढू की तरफ घूम गई। इससे

पहले कि वह मेंढू को लगती, ढेंकू ने उसे छू लिया। भभो ने पूँछ को उसकी तरफ घुमा दिया। ढेंकू उछला पर तब तक पूँछ ने उसे छू लिया। तभी मेंढू पूँछ की ओर लपका।



भभो ने फिर पूँछ उसकी तरफ घुमाई। अब उसे भी मज़ा आने लगा था। वह अपनी पूँछ को कभी मेंढू की तरफ घुमाती, कभी ढेंकू की तरफ, कभी बाएँ, कभी दाएँ।

खेल यह बना कि मेंढक पहले पूँछ को छुएँगे या पूँछ पहले मेंढक को। दूर खड़े अन्य मेंढक इस खेल को देख रहे थे।

एक एक कर वे भी इसमें जुड़ते गए। भभो भैंस कहीं भी पूँछ घुमाती और मेंढक उछलते छपाक! छपाक! बीच–बीच में मेंढक टर्र–टर्र करते और भभो भी रंभाती।



दिन भर यही खेल चला। शाम को जब भभो भैंस जाने लगी तो मेंढू और ढेंकू ने उससे कहा, "कल फिर आना भभो, हम और खेलेंगे।" भभो ने सिर और पूँछ हिलाई और ज़ोर से रंभाकर हामी भरी। अगली सुबह वह दौड़ते हुए आई। जैसे ही धम से तालाब में बैठी मेंढकों का टर्राना और उछलना शुरू हो गया। नया दिन! नया खेल!

त्रिपुरारी शर्मा

पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णास्वामी

ना-देऊँ और ना-छोड़ूँ

एक गाँव में दो दोस्त थे। गाँव वाले एक को ना–देऊँ के नाम से पुकारते थे क्योंकि वह किसी को कुछ देता नहीं था। दूसरे को ना–छोड़ूँ के नाम से बुलाते क्योंकि वह किसी का पीछा नहीं छोड़ता था।

एक दिन ज़ोर से बारिश हो रही थी। ना–छोड़ूँ के पास छाता नहीं था। उसने ना–देऊँ से छाता उधार माँगा। वह तो आसानी से कुछ भी देने वाला नहीं था। कहने लगा, ''दोस्त! मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा अपने पैरों पर खड़े रहो। अगर मैं छाता देकर अभी तुम्हारी मदद कर दूँगा तो तुम कभी भी छाता नहीं खरीदोगे। जब भी पानी बरसेगा तुम छाता माँगते ही रहोगे।''





बेचारा ना–छोड़ूँ! बारिश में
भीगते–भीगते घर लौटा।

कुछ दिन बाद दोनों दोस्त डाकघर में मिले। ना–छोड़ूँ ने एक चिट्ठी लिखने के लिए ना–देऊँ से कलम माँगी। वह थोड़े ही कलम देता! उसे सलाह देने लगा, "मेरे प्यारे दोस्त! उधार लेने की आदत छोड़ दो। मैं तुम्हारे भले के लिए ही कह रहा हूँ। तुम अपनी कलम ले आओ और उससे चिट्ठी लिखो।"

ना–छोड़ूँ चिढ़ गया। उसने दोस्त को सबक सिखाने की सोची। सही मौके का इंतज़ार करने लगा।



आख़िर वह दिन भी आ गया। एक दिन दोनों दोस्त पास वाले गाँव में मेला देखने गए। रास्ते में एक नदी थी। उसके ऊपर एक लकड़ी का पुल था। दोनों उस पुल पर चलने लगे।

अचानक ना–देऊँ का पैर फिसला और वह नदी में गिर पड़ा। वह तैरना नहीं जानता था। "बचाओ! बचाओ!" वह चिल्लाया।



ना–छोड़ूँ ने सोचा कि यही सही मौका है। "दोस्त! मैं तुम्हें बचा सकता हूँ, मगर तुम फिर कभी भी तैरना नहीं सीखोगे। हमेशा इस इंतज़ार में रहोगे कि कोई आकर तुम्हें बचाएगा। किसी भी तरह खुद किनारे पहुँच जाओ," कहते हुए वह आगे निकल गया।

ना–देऊँ को अपनी भूल समझ में आ गई। उसने कहा, "दोस्त! मुझे माफ कर दो। अगर तुम मुझे नहीं बचाओगे तो मैं डूब जाऊँगा। आगे से मैं तुम्हें कभी भी उपदेश नहीं दूँगा।"

ना–छोड़ूँ को दया आ गई। उसने ना–देऊँ को बचा लिया। उस दिन से दोनों गहरे मित्र बन गए। गाँव वाले दोनों को उनके असली नाम, सूर्य और चंद्र, से पुकारने लगे। अब तो दोनों में बदलाव आ गया है न!

तमिलनाडु की लोककथा



चाँद कहाँ गायब

कन्नम्मा ने अपना मुँह फेर लिया। उसकी आँखों से आँसू टपकने ही वाले थे। तब उसके पापा बोले, "उदास मत हो। मैं तुम्हारे जन्म दिन के पहले ही लौट आऊँगा।"

कन्नम्मा ने फिर भी मुड़कर नहीं देखा। "वहाँ देख! मंदिर के शिखर पर पूर्ण चंद्रमा चमक रहा है। धीरे–धीरे उसकी गोलाई कम हो जाएगी। फिर अर्ध चंद्रमा होकर वह गायब हो जाएगा। आहिस्ता–आहिस्ता वह फिर से अपना गोल आकार पाएगा। जब वह दोबारा गेंद की तरह गोल हो जाएगा, उसी दिन तुम्हारा जन्म दिन होगा और तब तक मैं भी आ जाऊँगा," पापा ने समझाया।



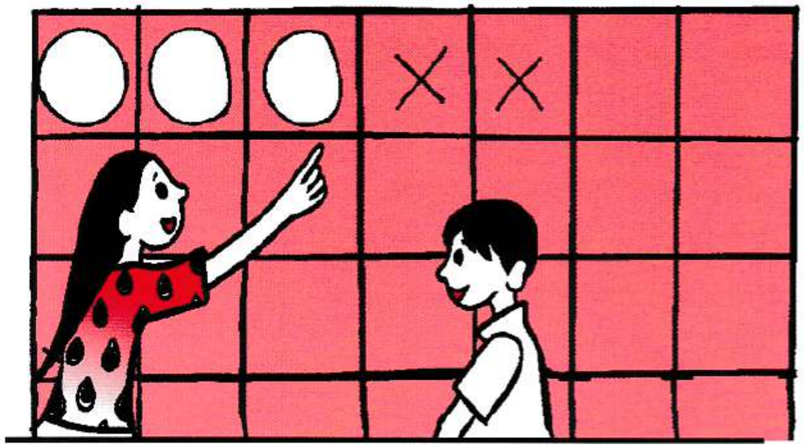
बात तो दिलचस्प है, वह पलट कर चाँद की तरफ देखने लगी। उसकी रोशनी में कन्नम्मा के आँसू चमकने लगे।

पापा ने उसके मन को बदला हुआ देखकर कहा, ''क्या तुम्हें पता है? लोग चाँद के आकार को देख व समझकर कैलेण्डर बनाते हैं?''

उत्साह के साथ बात को और आगे बढ़ते हुए वे बोले, ''तुम क्यों नहीं दीवार पर चौकोर बनाकर चाँद के बदलते आकार का पता लगातीं? देखते ही देखते मैं लौट भी आऊँगा!''

कन्नम्मा की आँखों में एक नए अनुभव का इंतज़ार था। वह मुस्कराने लगी। तभी स्टेशन पर रेलगाड़ी आ पहुँची। उसने पापा को खुशी–खुशी विदा किया।

अगले दिन सुबह कन्नम्मा व्यस्त थी। दीवार पर चौकोर जो बनाने थे। साथ वाले घर का तंबी खुशी–खुशी उसकी मदद करने आया।



'कब अंधेरा होगा,' वह बेचैनी से इंतज़ार करने लगी। बार–बार मंदिर के शिखर की ओर देखती। बड़ी देर के बाद आखिर चाँद निकला।

'यह क्या! चाँद अब भी गोल था। क्या पापा ने मुझे उल्लू बनाया?' उसने दोबारा ध्यान से देखा। पापा ठीक कह रहे थे। चाँद गोल था, मगर पूरा गोल नहीं।

वह दीवार पर आकार बनाने गई। 'किस ओर चाँद गोल नहीं था?' वह भूल गई। फिर से देखकर आई। इस बार याद रखकर आकार बनाया।

अगली शाम वह चाँद देखना भूल ही गई। तंबी दौड़ते हुए बताने आया कि चाँद और सिकुड़ गया है। ओह, उसे याद आया।

तीसरे दिन उसे शिखर के पास चाँद दिखाई नहीं दिया। वह सोच में पड़ गई। सोने के पहले एक और बार देखा। अब उसे चाँद दिखा। वह पिछली रात से भी छोटा था। दीवार पर चाँद से बना कैलेण्डर धीरे–धीरे भरने लगा।

चौथे और पाँचवे दिन बारिश हुई। अफसोस! दो चौकोर खाली छोड़ने पड़े। छठे दिन आसमान साफ दिखने लगा। सैंकड़ों तारे झिलमिला रहे थे। चाँद का कहीं अता पता नहीं था।

कन्नम्मा और नहीं जाग पाई। उसने सपना देखा, एक राक्षस ने चाँद को चुरा लिया है। चाँद कहाँ चला गया? शायद वह अगली रात आएगा। नहीं! अगली रात भी नहीं आया। क्या सचमुच चाँद की चोरी हो गई?

तंबी को विश्वास था कि जिसने भी चाँद को चुराया है, अवश्य वापिस कर देगा। क्या इतने बड़े चाँद को लेकर कोई घूम सकता है? अब और जागकर कोई फायदा नहीं है। माँ ने आवाज़ दी, "कल सुबह पापा वापिस आ रहे हैं।" उस रात कन्नम्मा ने सपना देखा। पापा ने जादुई छड़ी घुमाकर चाँद को राक्षसों से छुड़ा लिया है।

अगले दिन सुबह वह आधी नींद में बाहर आई। उसने आकाश की ओर देखा। अर्ध चंद्रमा! वह चिल्लाई, "माँ! चाँद लौट आया। वह इतना आलसी है कि सुबह ही निकला।"

चाँद मंदिर के पास नहीं था बल्कि कन्नम्मा के सिर के ऊपर था। दूर से उसने अपने पापा को आते हुए देखा। कन्नम्मा का मन खुशी से झूम उठा। चाँद भी मिल गया। पापा भी आ गए। उसकी दीवार पर अब और चौकोर भरेंगे। क्योंकि वह आलसी चाँद को अब सुबह ढूँढेगी।

निरुपमा राघवन



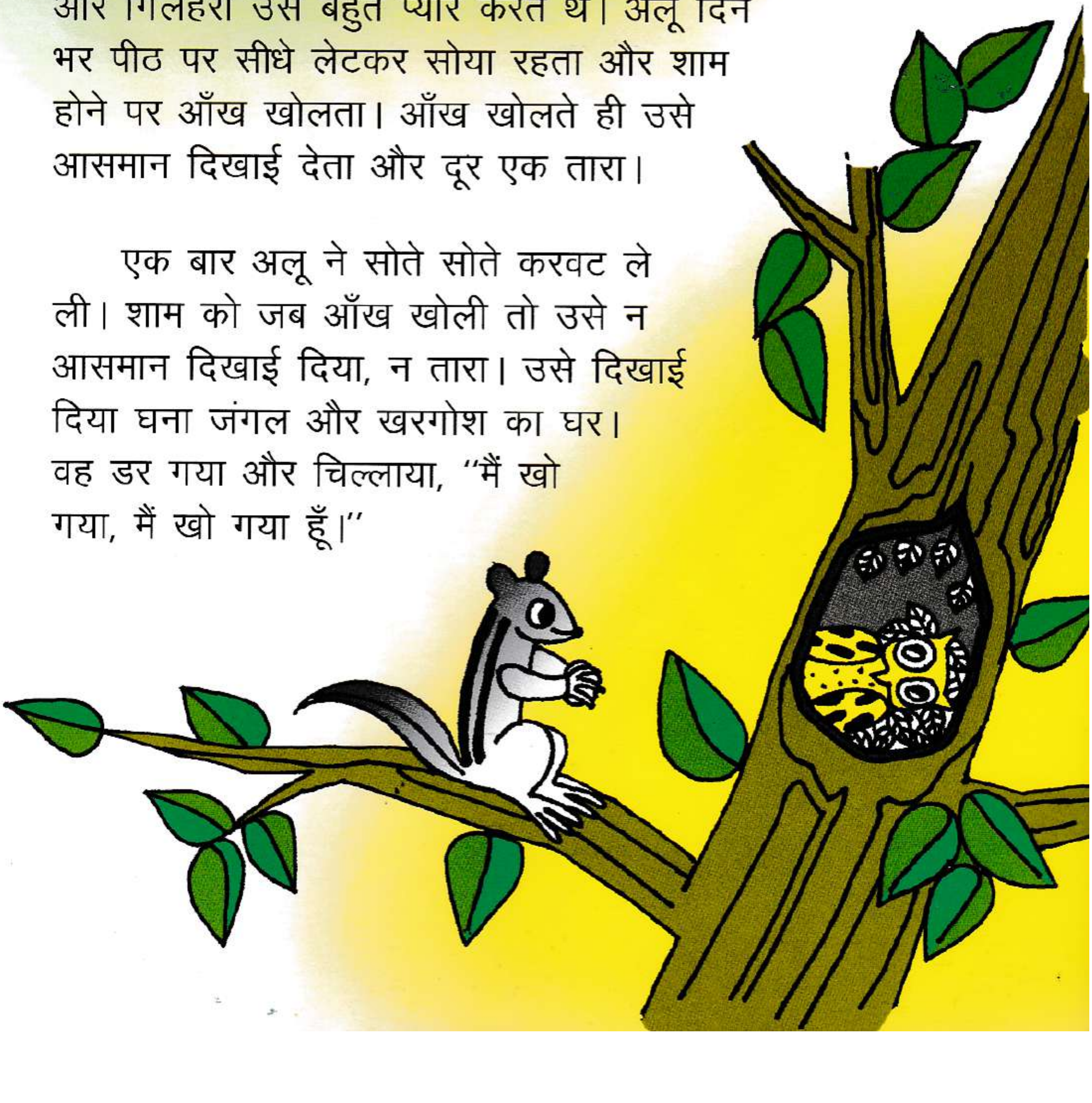
Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

मैं कहाँ हूँ

उल्लू अलू सबका प्यारा था। पेड़ के पत्ते और गिलहरी उसे बहुत प्यार करते थे। अलू दिन भर पीठ पर सीधे लेटकर सोया रहता और शाम होने पर आँख खोलता। आँख खोलते ही उसे आसमान दिखाई देता और दूर एक तारा।

एक बार अलू ने सोते सोते करवट ले ली। शाम को जब आँख खोली तो उसे न आसमान दिखाई दिया, न तारा। उसे दिखाई दिया घना जंगल और खरगोश का घर। वह डर गया और चिल्लाया, "मैं खो गया, मैं खो गया हूँ।"





गिलहरी अपने सोने की तैयारी कर रही थी। उसकी आवाज़ सुन दौड़ी दौड़ी आई। देखा कि अलू आँख बंद किए हुए लेटा है और कह रहा है, "मैं खो गया, मैं खो गया हूँ।"

"यह कैसा मज़ाक है अलू?" गिलहरी ने उसे डाँटा, "तुम अपनी जगह पर ही तो हो।" गिलहरी की आवाज़ सुनकर अलू को भी लगा कि वह सही जगह पर है।

"फिर आसमान खो गया है," उसने कहा।





"आसमान भी अपनी जगह पर है," गिलहरी ने समझाया।

"मुझे दिखाई नहीं दे रहा," अलू बोला।

गिलहरी ने अलू का सिर आसमान की तरफ घुमाया, "आँखें खोलो तो दिखे," उसने कहा। अलू ने आँखे खोलीं तो आसमान भी था और तारा भी।



"तुम उसे ले आईं?" अलू खुश हुआ।

"वह तो था ही।"



"फिर मुझे क्यों नहीं दिखाई दिया?"



"क्योंकि तुम्हारी नज़र कहीं और थी।"



तब अलू को समझ में आया कि क्या हुआ था।

गिलहरी ने उससे कहा, "आसपास और बहुत कुछ है— अच्छी तरह देख लो।"

अलू ने देखा— ऊपर आसमान, नीचे पेड़, पौधे, मिट्टी, पत्थर, एक तरफ खरगोश का घर, दूसरी तरफ बतख और तालाब। उसने चैन की साँस ली और गिलहरी से कहा, "अच्छा हुआ तुमने बता दिया कि मैं कहाँ हूँ, नहीं तो मैं रात भर खोया रहता।"

गिलहरी सोने चली गई। अलू रात भर अपनी नज़र को हर तरफ घुमा—घुमा कर देखता रहा कि कहाँ पर क्या है।

त्रिपुरारी शर्मा

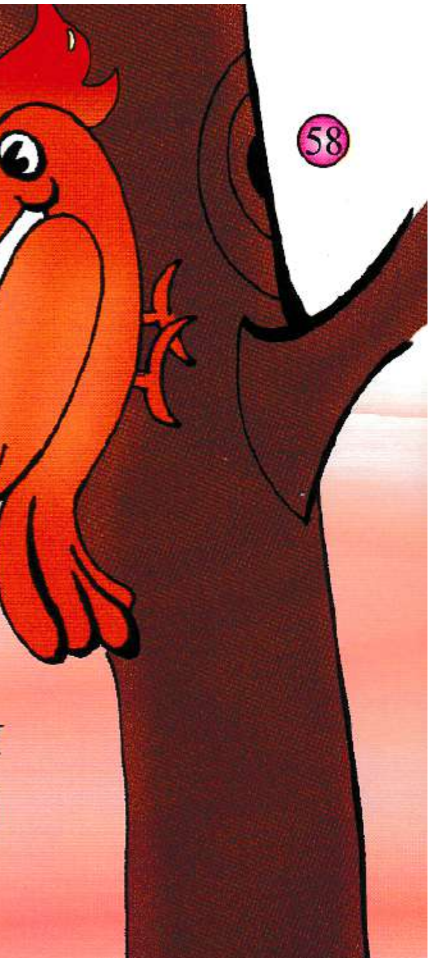


पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णास्वामी

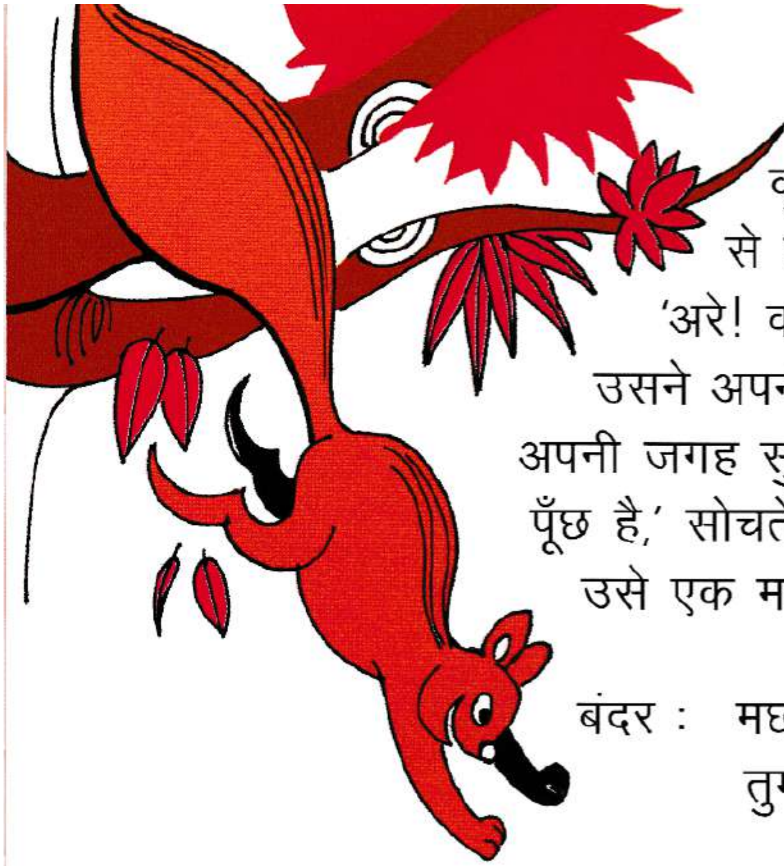
पूँछ किसकी है



नदी किनारे एक बरगद का पेड़ था। एक दिन एक छोटा सा बंदर उस पेड़ की शाखाओं को पकड़ कर झूल रहा था। तभी उसने तितलियों को मंडराते हुए देखा। उन्हें पकड़ने के लिए बंदर उन पर कूद पड़ा।

तितलियाँ उसकी हरकत देखकर इधर–उधर उड़ गईं। एक भी तितली उसके हाथ नहीं आई। बेचारा बंदर! पत्थरों के बीच जा गिरा।





अचानक उसने ज़मीन पर कुछ हिलते हुए देखा। बंदर ध्यान से देखने लगा। वह एक पूँछ थी। 'अरे! कहीं मेरी पूँछ तो नहीं कट गई?' उसने अपनी पूँछ को छूकर देखा। वह अपनी जगह सुरक्षित थी। 'फिर यह किसकी पूँछ है,' सोचते हुए बंदर चल पड़ा। तालाब में उसे एक मछली दिखाई दी।

बंदर : मछली रानी! इधर देखो। क्या यह तुम्हारी पूँछ है?

मछली : यह मेरी पूँछ कैसे हो सकती है? पूँछ के बिना क्या मैं पानी में तैर सकती हूँ?

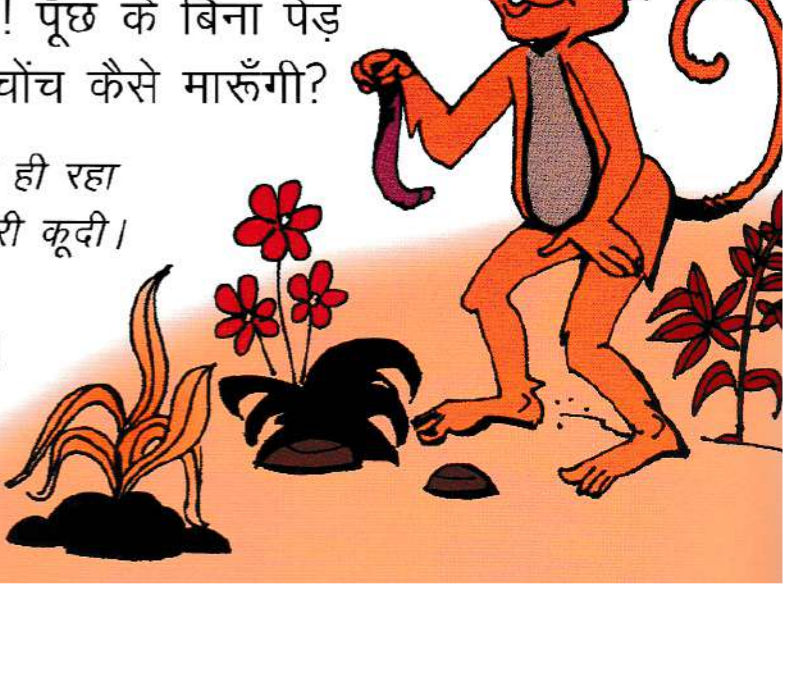
कहकर मछली ने पानी में छलाँग लगाकर दिखाई। छोटा बंदर उलझन में पड़ गया। टुक...टुक... पास के पेड़ से आवाज़ आई। देखा तो पेड़ पर हुदहुद!

बंदर : तुम्हारी पूँछ कहीं खो गई है क्या?

हुदहुद : ना, यह रही मेरी पूँछ! पूँछ के बिना पेड़ पर बैठ कर भला मैं चोंच कैसे मारूँगी?

फिर यह किसकी पूँछ है? बंदर सोच ही रहा था कि धम्म... पेड़ पर से एक गिलहरी कूदी।

बंदर : मेरे पास एक पूँछ है। देखो, यह तुम्हारी तो नहीं है?



गिलहरीः यह रही मेरी सुंदर पूँछ! इसी के सहारे मैं पैराशूट की तरह ऊँचाई से नीचे कूदती हूँ।

तड़... तड़... तड़... तभी किसी के भागने की आवाज़ आई। बंदर ने मुड़ कर देखा तो एक खरगोश अपने बच्चों के साथ अपने बिल की ओर भाग रहा था।

बंदर : तुम इस तरह क्यों भाग रहे हो?

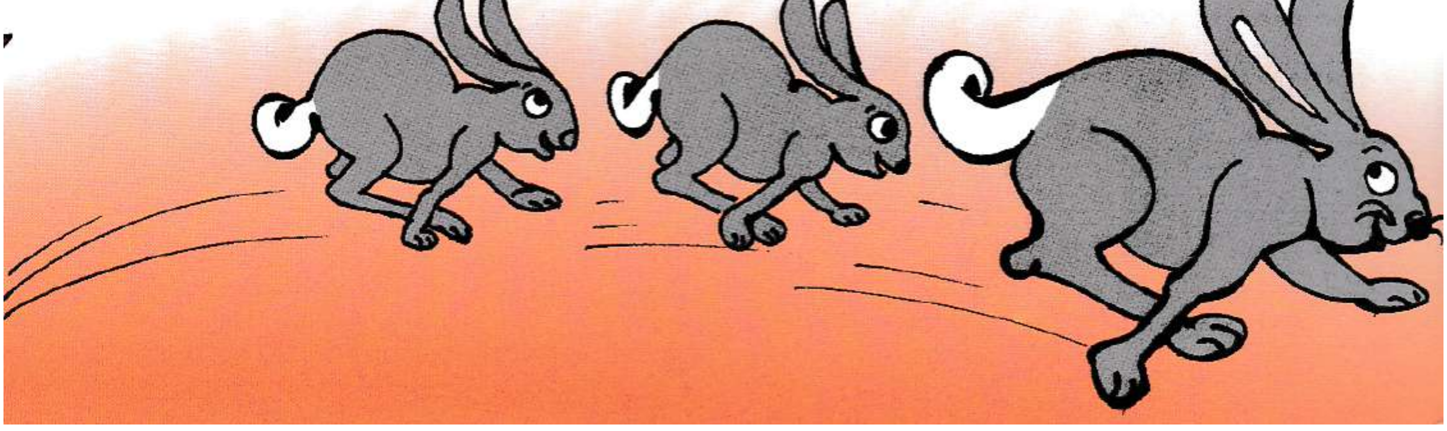
खरगोशः पत्तों की सरसराहट सुनकर हम डर गए थे। सोचा कि सियार आ रहा है।

बंदर : क्या यह तुम्हारी पूँछ है?

खरगोशः ना, ना! यह मेरी पूँछ नहीं है। यह रही मेरी पूँछ!

बंदर : यह क्या? तुम्हारी पूँछ में सफेद धब्बे हैं?

खरगोशः जंगल में सियार, भेड़िये सब हमें ढूँढते फिरते हैं। हमारा भूरा रंग शत्रु को आसानी से दिखाई नहीं देता। जब भी खतरा हो, मैं आगे–आगे पूँछ उठाकर भागता हूँ। तब मेरे बच्चे मेरे पीछे सफेद रंग की पूँछ को देखते हुए भागते हैं।



ऐसी भी होती है पूँछ! छोटा बंदर हैरान रह गया। तभी बंदर को एक छिपकली दिखाई दी। उसकी पूँछ नहीं थी।

बंदर : तुम्हारी पूँछ खो गई है न! चिंता मत करो। यह रही तुम्हारी पूँछ!

छिपकली : यह पूँछ अब मुझे नहीं चाहिए।

बंदर : क्या? पूँछ नहीं चाहिए! पूँछ के बिना मछली तैर नहीं सकती। हुदहुद पेड़ पर खड़ी नहीं हो सकती। गिलहरी कूद नहीं सकती। खरगोश अपने बच्चों को दुश्मन से बचा नहीं सकता। यही नहीं। पूँछ के बिना मैं भी पेड़ की शाखाओं पर झूल नहीं सकता!

छिपकली: यह किसने कहा कि पूँछ की आवश्यकता नहीं है? कल मुझे एक साँप ने पकड़ लिया। पूँछ को छोड़कर मैं तो भाग निकली। बेचारा साँप, धोखा खा गया। टूटी हुई पूँछ को तो मैं चिपका नहीं सकती न! लेकिन तुम फिक्र मत करो। मेरी नई पूँछ अपने आप उग जाएगी।

"अच्छा हुआ मेरी भाग दौड़ खत्म हुई। जिसकी पूँछ वो ही जाने!" कह कर बंदर ने चैन की साँस ली।



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू

मेले में...

उस दिन हमारी कक्षा में सबके चेहरों पर उत्साह और खुशी नज़र आ रही थी। स्कूल की घंटी बजते ही मैं दौड़ता हुआ घर पहुँचा। माँ से पूछा, "माँ! माँ! अगले सप्ताह स्कूल की तरफ से एक शिविर लगने वाला है। कमला, रहीम सभी जा रहे हैं। क्या मैं भी जा सकता हूँ?"

माँ ने पूछा, "पर यह शिविर लगेगा कहाँ?"

मैंने कहा, "पास वाले गाँव में ही माँ। उधर एक बड़ा मेला लगने वाला है। आस–पास के गाँव से बहुत लोग आएँगे। हम वहीं ठहरकर लोगों की सेवा करेंगे।"



रविवार का दिन आया। सब अपना सामान लेकर बस में बैठ गए। हमारे माता–पिता हमें छोड़ने आए थे। जब बस चली तो हम सबने हाथ हिलाकर उन्हें टा... टा... किया। रास्ते भर हम सब गाते हुए चले। बहुत जल्द ही हम गाँव पहुँच गए।

बाप रे बाप! जहाँ देखो वहाँ भीड़ ही भीड़! सड़क के किनारे खूब सारी दुकानें भी थीं। हम सब हैरानी से देखते हुए मैदान में गए। वहाँ टेंट लगाए। ठहरने का इंतज़ाम किया। उस दिन सबको अलग–अलग ज़िम्मेदारियाँ दी गईं।

रात के भोजन के समय कमला ने कहा, "तुम्हें पता है मुझे क्या काम करना है? अस्पताल में डाक्टरों की मदद करनी है।"

रहीम ने कहा, "मैं तो यातायात पुलिस की मदद करनेवाला हूँ।" मैंने कहा, "नए लोगों को रास्ता दिखाना मेरा काम है।"

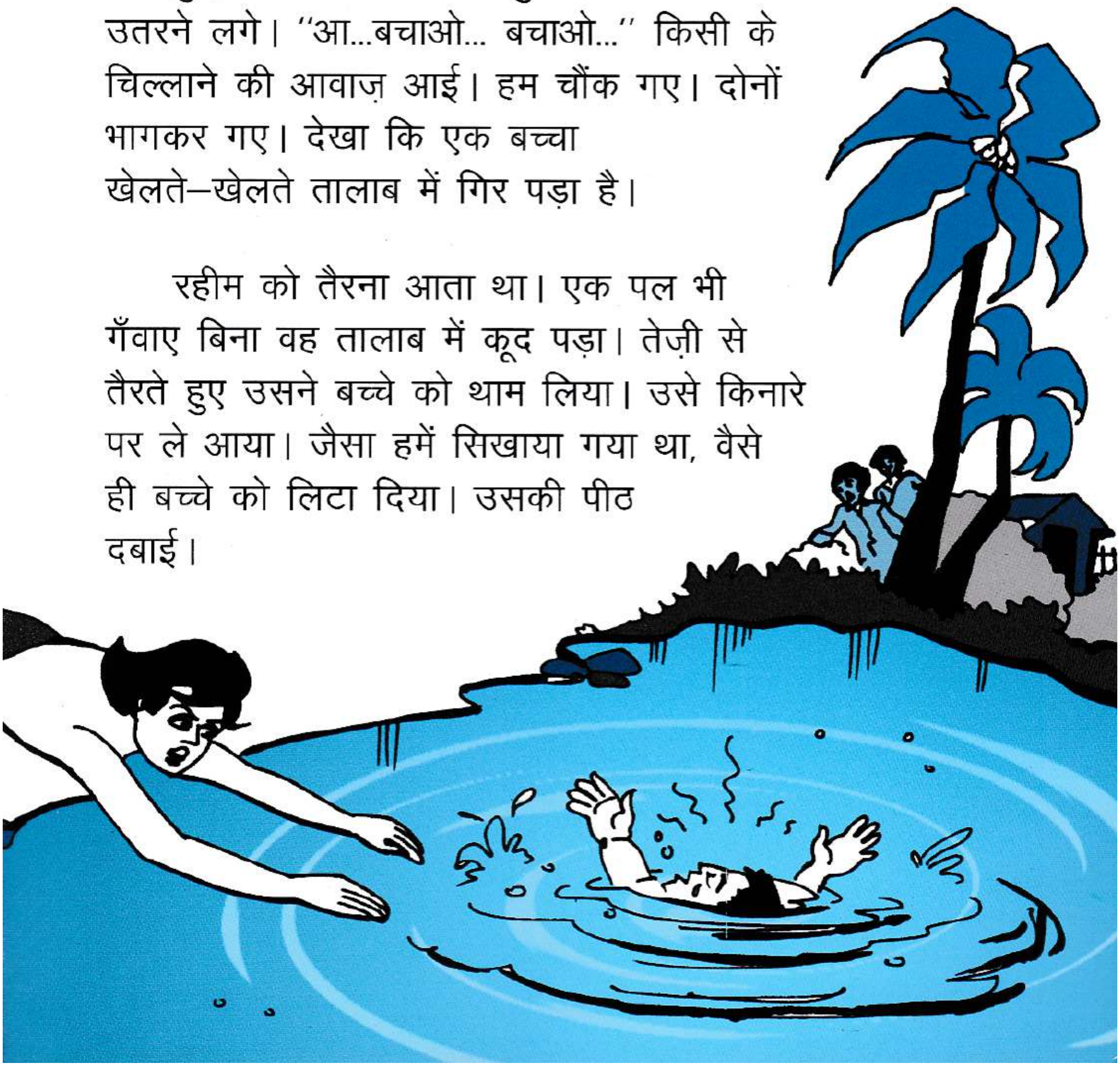


अगली सुबह हम सब जल्दी उठ गए। खाने के पैकेट लेकर अपने–अपने काम के स्थान पर चले गए। दिन भर खूब व्यस्त रहे।

शाम को मैं और रहीम बात करते हुए शिविर को लौट रहे थे। सामने एक बुढ़िया बड़ी मुश्किल से मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ रही थी। मैंने उनका हाथ पकड़कर धीरे–धीरे उन्हें सीढ़ी चढ़ने में मदद की। रहीम उनका सामान उठाकर ले आया।

बुढ़िया को मंदिर तक पहुँचाकर हम दोनों नीचे उतरने लगे। "आ...बचाओ... बचाओ..." किसी के चिल्लाने की आवाज़ आई। हम चौंक गए। दोनों भागकर गए। देखा कि एक बच्चा खेलते–खेलते तालाब में गिर पड़ा है।

रहीम को तैरना आता था। एक पल भी गँवाए बिना वह तालाब में कूद पड़ा। तेज़ी से तैरते हुए उसने बच्चे को थाम लिया। उसे किनारे पर ले आया। जैसा हमें सिखाया गया था, वैसे ही बच्चे को लिटा दिया। उसकी पीठ दबाई।



यह तो अच्छा हुआ कि बच्चे के पेट में अधिक पानी नहीं भरा था। उसके माँ–बाप ने उसे उठा लिया। हम सब उसे नज़दीक के अस्पताल ले गए।

डॉक्टर ने बच्चे की जाँच की और कहा, "सही वक्त पर आपने मदद की। डरने की कोई बात नहीं है।" बच्चे के माँ–बाप ने हमें धन्यवाद दिया और चले गए।

अस्पताल में हमने कमला को डॉक्टरों की मदद करते हुए देखा। फिर काम पूरा कर हम तीनों पैदल चलते–चलते शिविर लौट आए।

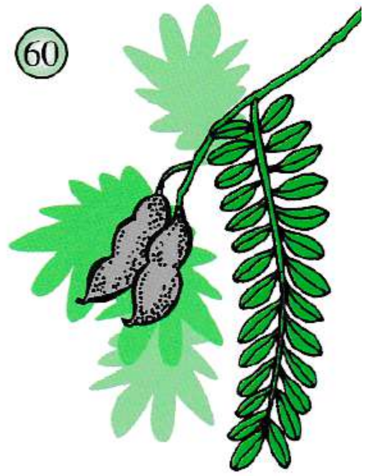
उस रात बहुत देर तक हम दिन भर में घटी घटनाओं और अपने अनुभवों के बारे में बातें करते रहे।

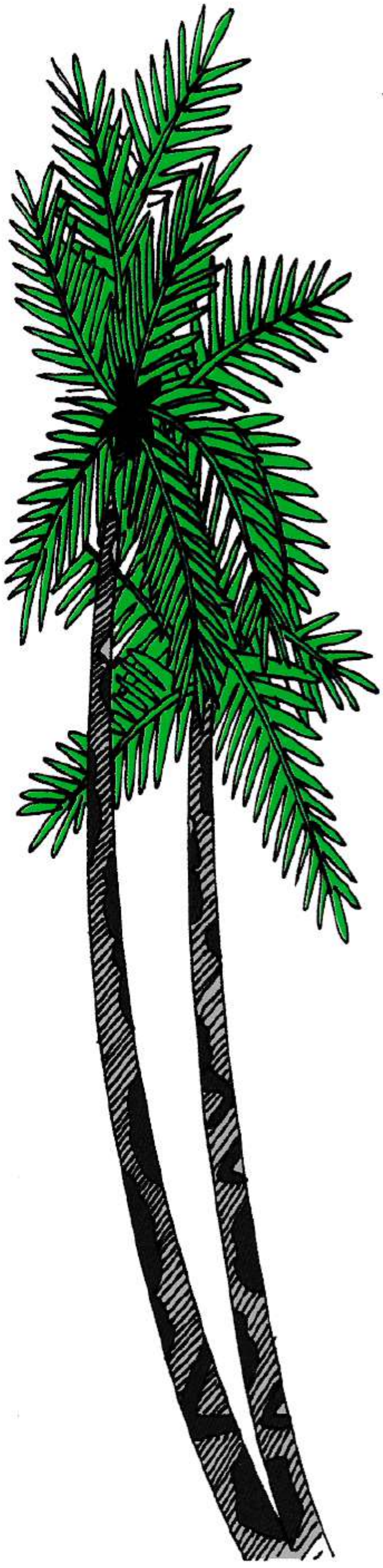


Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू

आओ पता लगाएँ





पत्ते हैं पर, डाल नहीं
फूल हैं पर, महक नहीं
फल हैं पर, बीज नहीं
छाल है पर, काठ नहीं

मोती जैसे फूल हैं इसके,
एक फुट लंबी हरी तरकारी
फल तो इस पर आते नहीं
खाने देता भाजी सारी

पेड़ बड़ा, पत्तियाँ छोटी, फली जैसे खट्टे फल आए
छाया उसकी इतनी लंबी, हाथी भी उसमें सो जाए

ऊँचा पेड़ है इमली जैसा पत्ता
गुठली फाँकदार फल गोल खट्टा
विटामिन सी का जो भंडार
भगा बीमारियाँ करे हट्टा कट्टा

छाल कड़वी, पत्ता कड़वा, कड़वी उसकी काया
दाँतों को देता मज़बूती, ऐसी उसकी माया

ऊँचा पेड़, तना कंटीला
लाल फूल सिर पर सजीला
फूटे कली मैदान बर्फीला
तकिया, गद्दा बने गुदीला



सीधा अडिग खड़ा रहेगा
ज़मीन का पानी पिएगा
हमें पिलाने को पानी
घड़े सिर पर ढोएगा

पेड़ है लंबा, पत्ते उसमें सबसे ऊपर आते
फल नहीं देता, फिर भी उससे पैसा बहुत कमाते



छोटा पेड़ हूँ काँटेदार
पीला फल खट्टा रसदार
पत्ता मोटा गाढ़ा हरा खुशबूदार
सब्ज़ियों में होता शुमार



एक पेड़ पर हरे–पीले फल गर्मी में आते
कच्चे का अचार बनाते, पके राजा कहलाते

क्या तुमने देखे ऐसे अचंभे
एक ही पेड़ के हज़ार खंभे



पत्तियाँ उसकी छोटी–छोटी, टहनियों पर होते हैं शूल
सुंदर लगता, प्यारा लगता, जब आते पीले छोटे फूल

बड़ा–ऊँचा पेड़, फल बैंगनी रंग के आएँ
नमक–मसाला लगाकर, गर्मी में मज़े से खाएँ

बसन्त ऋतु में पेड़ है फलता
हरा लाल काला फल लगता
उस पेड़ का नाम बताओ
जिस पर रेशम का कीड़ा पलता

हृदय जैसा पत्ता पाया
ठंडी रहती इसकी छाया



बच्चे तोड़े मेरे फल, पीले हों या हरे
चुपके से तोते कुतरें बीज रहें बहुतेरे

बसूँ शहर गाँव, देऊँ सबको छाँव
मेरा श्रृंगार है लाली, हूँ मैं मतवाली

काली मिर्च सा बीज है, पत्ते पंखे समान
कच्चा तोड़ो दूध गिरता, ऐसी इसकी शान



पेड़ हूँ मैं बहुत बड़ा
फल छोटा पत्ता बड़ा
आकार आँख सा बीज जब तोड़ा
सब को ताकत में पीछे छोड़ा

पपीता, केले, आम, सेमल, आँवला, पीपल,
सेजना, नींबू, बरगद, अमरूद, इमली, सफेदा, नीम,
जामुन, बदाम, गुलमोहर, शहतूत, नारियल, बबूल

पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

बीरबल की सूझबूझ

अकबर के मंत्री बीरबल एक दिन दरबार में देर से आए।
इस कारण अकबर गुस्से में थे।

अकबर : आज आप इतनी देर से क्यों आए हैं?

बीरबल : महाराज, मैं हर रोज़ की तरह समय पर निकल रहा था। पर ठीक उसी समय मेरा बेटा रोने लगा। उसे मनाने में देर हो गई।

अकबर : क्या मुझे बेवकूफ समझते हो? एक बच्चे को चुप कराने में भला इतनी देर लगती है?



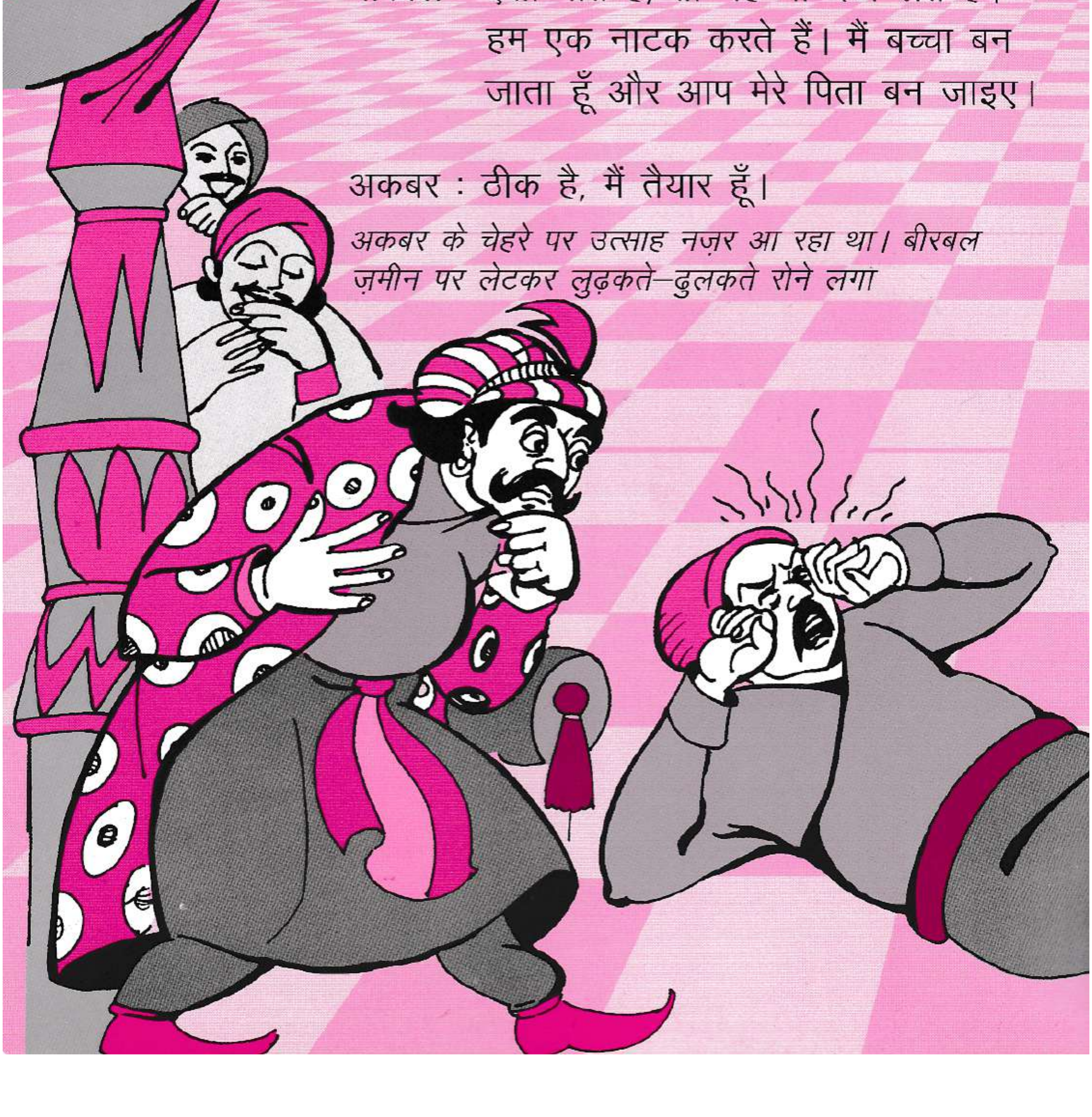
बीरबल : जी, हुज़ूर! रोते हुए बच्चे को मनाना बहुत कठिन काम है।

अकबर : यह भी क्या मुश्किल है? मैं तो एक क्षण में रोते हुए बच्चे को मना लूँ!

बीरबल : ऐसी बात है, तो यह भी देख लेते हैं। हम एक नाटक करते हैं। मैं बच्चा बन जाता हूँ और आप मेरे पिता बन जाइए।

अकबर : ठीक है, मैं तैयार हूँ।

अकबर के चेहरे पर उत्साह नज़र आ रहा था। बीरबल ज़मीन पर लेटकर लुढ़कते–ढुलकते रोने लगा



अकबर : बेटा, तुम क्यों रो रहे हो?

बीरबल : हूँऽऽऽऽ हूँऽऽऽऽ मुझे गन्ना चाहिए।



अकबर : रो मत। तुम्हें गन्ना चाहिए न।
अभी आ जाएगा।

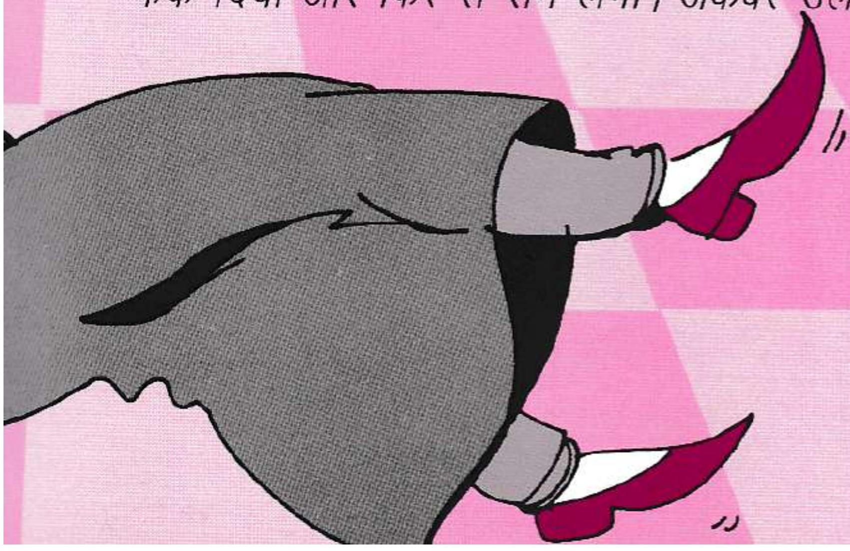
अकबर ने अपने सेवकों को गन्ना लाने के लिए भेजा। थोड़ी देर में गन्ना आ गया। उसे देखकर बच्चा फिर से ज़मीन पर हाथ–पैर मारकर रोने लगा

अकबर : अब क्यों रो रहे हो? गन्ना तो आ गया न।

बीरबल : हूँऽऽऽऽ हूँऽऽऽऽ गन्ना मुझे छोटे–छोटे टुकड़ों में चाहिए।
ऐसे नहीं।

अकबर : बस! इतनी सी बात! मैं अभी गन्ने को कटवा देता हूँ।

सेवकों ने गन्ने के छोटे–छोटे टुकड़े कर दिए। बच्चे ने टुकड़ों को उठाकर फेंक दिया और फिर से रोने लगा। अकबर उलझन में पड़ गए।



अकबर : अब क्यों रो रहे हो? जैसे तुमने माँगा, वैसे गन्ने के टुकड़े कर तो दिए।

बीरबल : हूँSSSS हूँSSSS टुकड़ों को फिर से जोड़कर पूरा गन्ना बनाकर दीजिए।

अकबर : *(चिड़चिड़ाते हुए)* अरे! कटे हुए टुकड़ों को फिर से कैसे जोड़ेंगे?

बीरबल की योजना अकबर की समझ में आ गई।

अकबर : तुम ठीक कहते हो। सचमुच, बच्चे को मनाना इतना आसान नहीं है।

बीरबल मुस्कराए। अपने कपड़ों से धूल झाड़ते हुए उठ खड़े हुए।



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

नंदरिया का त्याग



गंगा नदी के किनारे आम का एक विशाल पेड़ था। उसके फल बहुत मीठे और स्वादिष्ट थे। हर रात बंदरों की एक सेना वहाँ आती, मज़े से आम खाती।

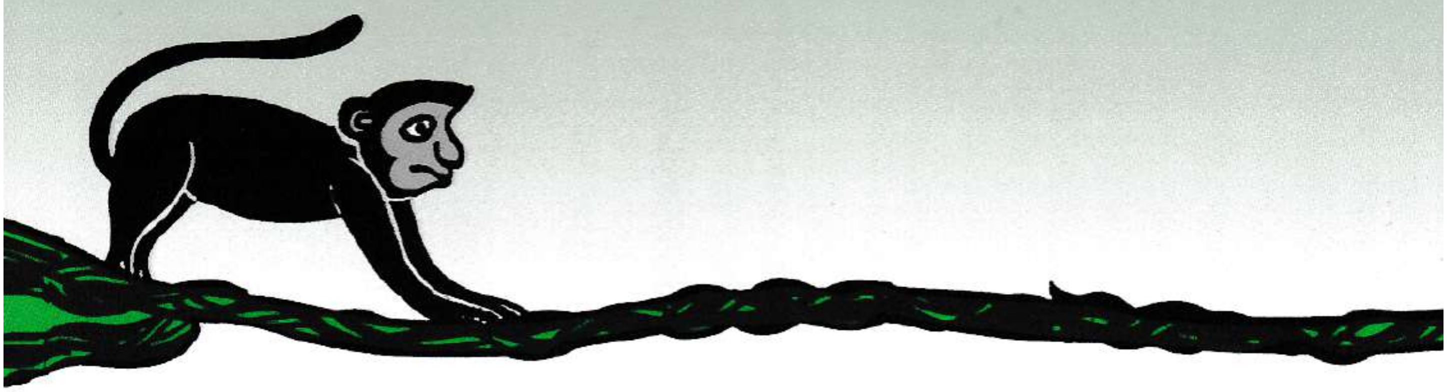
एक दिन बंदरों के राजा नंदरिया ने उन्हें चेतावनी दी, "देखो! पेड़ की एक शाखा नदी पर झुकी हुई है। ध्यान रखना, इस शाखा का एक भी आम नदी में न गिरे। नहीं तो वह हमारे लिए खतरनाक साबित हो सकता है।"





बंदर सतर्क हो गए। इसके बावज़ूद, एक दिन एक आम अचानक नदी में जा गिरा और कुछ मछुआरों के हाथ लग गया। उन्होंने उसे राजा को भेंट किया।

आम खाकर राजा ने कहा, "यह तो बहुत स्वादिष्ट है। ऐसे बढ़िया आम की पैदावार कहाँ होती है? चलो ढूँढा जाए।" राजा अपने सिपाहियों के साथ निकल पड़ा और पेड़ तक आ पहुँचा। सबने कुछ फल खाए और रात वहीं विश्राम करने का निर्णय लिया।



हमेशा की तरह बंदरों की सेना रात को वहाँ आई। उछलते–कूदते, बहुत शोर करते हुए सब आम खाने लगे। राजा की नींद खुल गई। उस ने आदेश दिया, "इस जगह को हर तरफ से घेर लो। सब बंदरों को मार डालो।"

सिपाही अपने बाण तैयार करने में लग गए। बंदर डर से काँपने लगे। भागकर नंदरिया के पास गए।

नंदरिया ने कहा, "घबराओ मत! मैं आप लोगों को बचाऊँगा।" वह पास की झाड़ियों से एक लंबी लता बेल को उखाड़ लाया।

उसके एक छोर को पेड़ से बाँधा और दूसरे छोर को कसकर अपनी कमर में बाँध लिया। फिर तेज़ी से छलाँग लगा कर नदी के उस पार के पेड़ तक पहुँचने की कोशिश की।



'अरे यह क्या? बेल की लंबाई पर्याप्त नहीं है!' नंदरिया पेड़ की एक शाखा को पकड़कर लटक गया। इस तरह एक पुल बन गया।

नंदरिया ने अपने साथियों से कहा, ''जल्दी आओ। इस बेल पर चढ़कर मेरी पीठ पर से होकर सब जल्दी–जल्दी भाग जाओ।''

एक–एक करके सब बंदर बच कर भाग गए। आखिरी बंदर नंदरिया के ऊपर ज़ोर से कूद पड़ा और उसे घायल कर दिया। उसकी नंदरिया से दुश्मनी थी।

राजा दूर से इस दृश्य को देख रहा था। बोला, "यह बंदर महान है। इसे मारना अन्याय होगा। इस बंदर को नीचे उतारिए।" सैनिक बंदर को नीचे लाए और ज़मीन पर लिटा दिया।

राजा ने नंदरिया से कहा, "हे महान नेता! तुमने अपनी जान पर खेल कर अपने साथियों को बचाया है। ऐसा त्याग मैंने कभी नहीं देखा।"

नंदरिया ने उत्तर दिया, "मेरे साथी मुझ पर निर्भर हैं। वे डरे हुए थे। एक अच्छे राजा को अपनी प्रजा ही सबसे प्रिय होनी चाहिए। अपने आप से भी।" यह कहकर नंदरिया ने प्राण त्याग दिए।

बनारस का राजा नंदरिया से बहुत प्रभावित हुआ और अपनी प्रजा के हित के लिए काम करने लगा।

जातक कथाएँ



तेनालीराम और जादूगर

63



एक दिन विजयनगर में एक जादूगर आया। उसने राजमहल में कई तरह के जादू दिखाए। एक खाली टोकरी लेकर उसे उल्टा रख दिया। अगले क्षण उसे उठाया। चमत्कार! वहाँ एक आम का पौधा था। सब लोगों ने तालियाँ बजाकर उसकी प्रशंसा की।

अगले कार्यक्रम में उसने मुट्ठी भर कंकड़ लिए। एक ही पल में उन्हें सोने के सिक्कों में बदल दिया। यही नहीं, पल भर में राजा की अंगूठी को अपनी उँगली में लाकर दिखाया।



उसमें से उड़ चला। उसकी चतुराई को देखकर राजा प्रसन्न हुए और उसे चाँदी के सिक्कों से भरी एक थैली पुरस्कार में दी।

परंतु जादूगर तो वहाँ किसी और ही काम से आया था। उसे हास्य कवि तेनालीराम को अपमानित करना था। उसने राजमहल में खुली चुनौती दी, "क्या आप लोगों में से कोई मुझसे जीत सकता है? जो जीतेगा, मैं उसे यह सारे पुरस्कार सौंप दूँगा। पर अगर मैं जीत गया तो आप को तेनालीराम को मुझे सौंपना होगा।"

जादूगर से टक्कर लेने कोई आगे नहीं आया। राजा परेशान नज़र आने लगे।

तेनालीराम ने मन ही मन सोचा, 'इसकी यह हिम्मत! इस जादूगर के घमंड को किसी तरह तोड़ना होगा।'

तेनालीराम आगे आया और कहने लगा, "हे जादूगर! आपने हमें बहुत से अद्भुत जादू दिखाए। फिर भी मैं आपका सामना करने के लिए तैयार हूँ। मगर मेरी एक शर्त है।



जो काम मैं आँख बंद करके करूँगा, उसे आपको आँखें खोलकर करना होगा।''

जादूगर तुरंत राज़ी हो गया। तेनालीराम ने पास वाले फूलदान में से मुट्ठी भर मिट्टी ली। अपनी आँखें बंद कर लीं और आँखों पर मिट्टी डालता रहा। फिर कपड़े से मिट्टी को पोंछ दिया।



उसके बाद तेनालीराम ने जादूगर से कहा, "मैंने जो काम अभी किया, उसे आपको दोनों आँखें खोलकर करना होगा।" जादूगर संकट में पड़ गया। शर्म के मारे उसने सिर झुका लिया और वहाँ से लौट गया।

राजा ने चैन की साँस ली और बोले, "अच्छा हुआ! तेनालीराम ने किसी तरह समस्या को हल कर दिया।" उन्होंने तेनालीराम को ढेर सारे पुरस्कार दे कर सम्मानित किया।





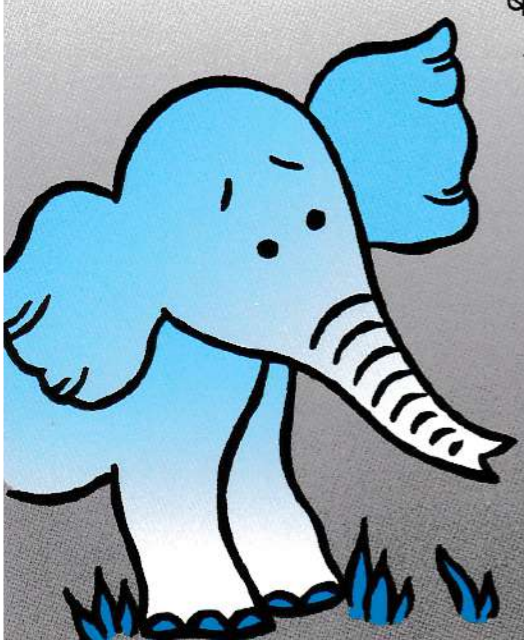


अप्पू की परेशानी

अप्पू एक नन्हा हाथी था। एक दिन वह बहुत उदास बैठा था। बाहर खेलने भी नहीं गया। सभी दोस्त परेशान! आखिर अप्पू को हुआ क्या? कौड़िल्ला ने पता लगाने की कोशिश की, "तुम्हें क्या चिंता है? मुझे बताओ न।" मगर अप्पू खामोश रहा।

कौड़िल्ला ने कहा, "आह! मुझे पता है। अपनी लंबी सूँड को लेकर तुम शर्मिंदा हो न?"

अप्पू ने तुरंत कहा, "नहीं! नहीं! मुझे अपनी सूँड बहुत पसंद है। इसकी सहायता से मैं कई काम करता हूँ।"



तब बंदर ने कहा, "फिर तुम्हें अपनी छोटी पूँछ पर अफसोस है क्या? मेरी तरह शाखाओं पर झूल नहीं सकते, यही तुम्हारी समस्या है न?"

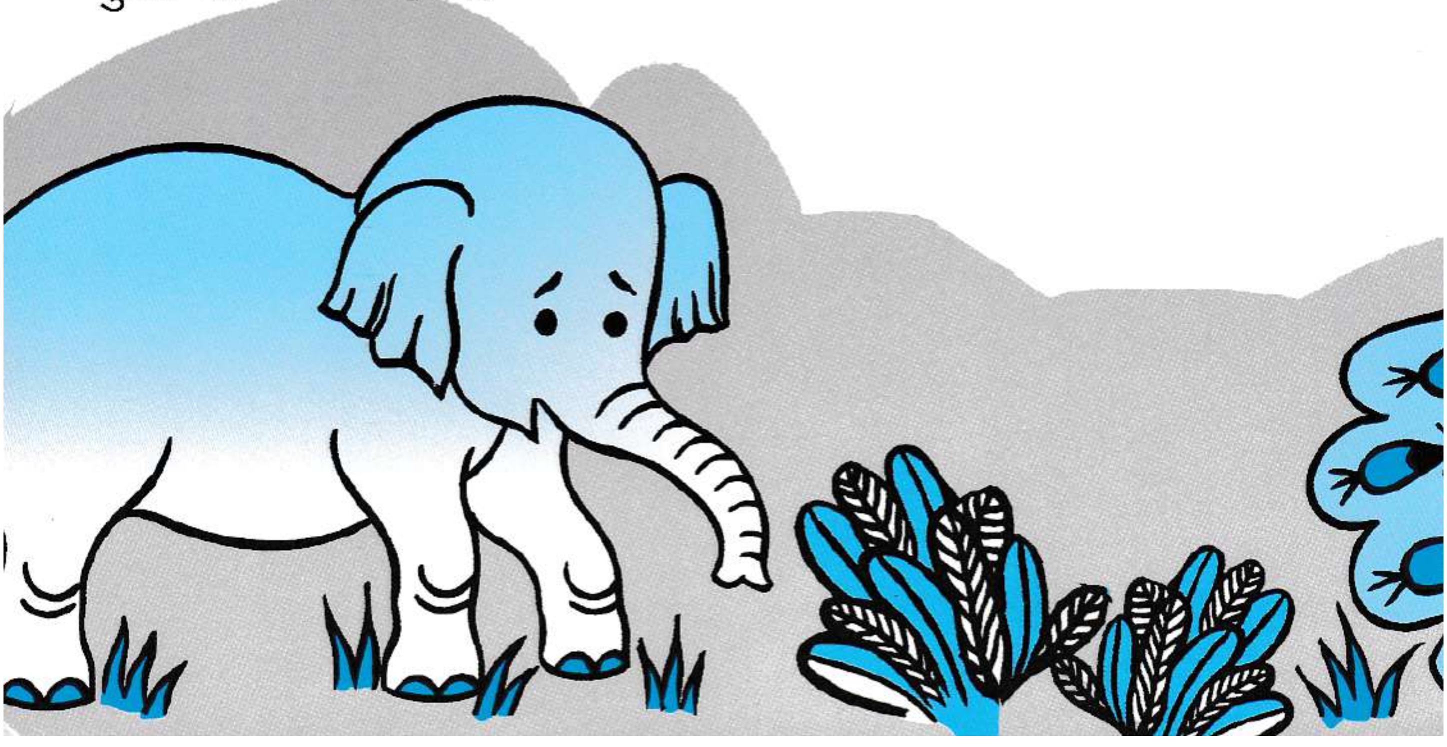


अप्पू ने कहा, "नहीं, नहीं! मेरी पूँछ छोटी है, लेकिन बहुत काम की है।"

हिरन ने कहा, "फिर तुम्हारी परेशानी का कारण तुम्हारे मोटे–मोटे पैर ही हैं न? तुम यही सोचते हो न कि वे मेरे पैरों जैसे पतले और सुंदर क्यों नहीं हैं?"

अप्पू ने कहा, "ऐसी कोई बात नहीं। मुझे अपने पैर सुंदर ही लगते हैं।"

मोर ने पूछा, "अच्छा तुम्हारा भूरा रंग तुम्हें पसंद नहीं आया क्या? मेरे शरीर जैसे रंगों से सजा नहीं है! यही तुम्हारे दुःख का कारण है न?"



अप्पू ने सिर हिलाया, "नहीं! अपने शरीर के रंग पर मुझे कोई अफसोस नहीं है। यह भूरा रंग ही मुझे शिकारियों से बचाता है।"



बंदर ने कहा, "बात ऐसी है तो बाहर आओ। इधर बहुत सारे गन्ने पड़े हैं। मिलकर खाएँगे।"

अप्पू रोने लगा, "मैं बहुत मोटा हूँ। मुझे खाना नहीं चाहिए।"

इस पर हिरन बोला, "अरे! यही तुम्हारी समस्या है क्या? हाथी तो बड़ा और बलवान होना ही चाहिए। तुम कोई मोटे नहीं हो।"

"मैं मोटा नहीं हूँ क्या? तीन दिन से मैंने कुछ खाया ही नहीं। फिर भी मेरा शरीर पतला नहीं हुआ," अप्पू उदास होकर बोला।

अचानक एक आवाज़ आई, "बचाओ! बचाओ!" सब आवाज़ की दिशा में दौड़ पड़े। वहाँ बाघ के ऊपर एक पेड़ गिरा हुआ था। बाघ दर्द से चीख रहा था।

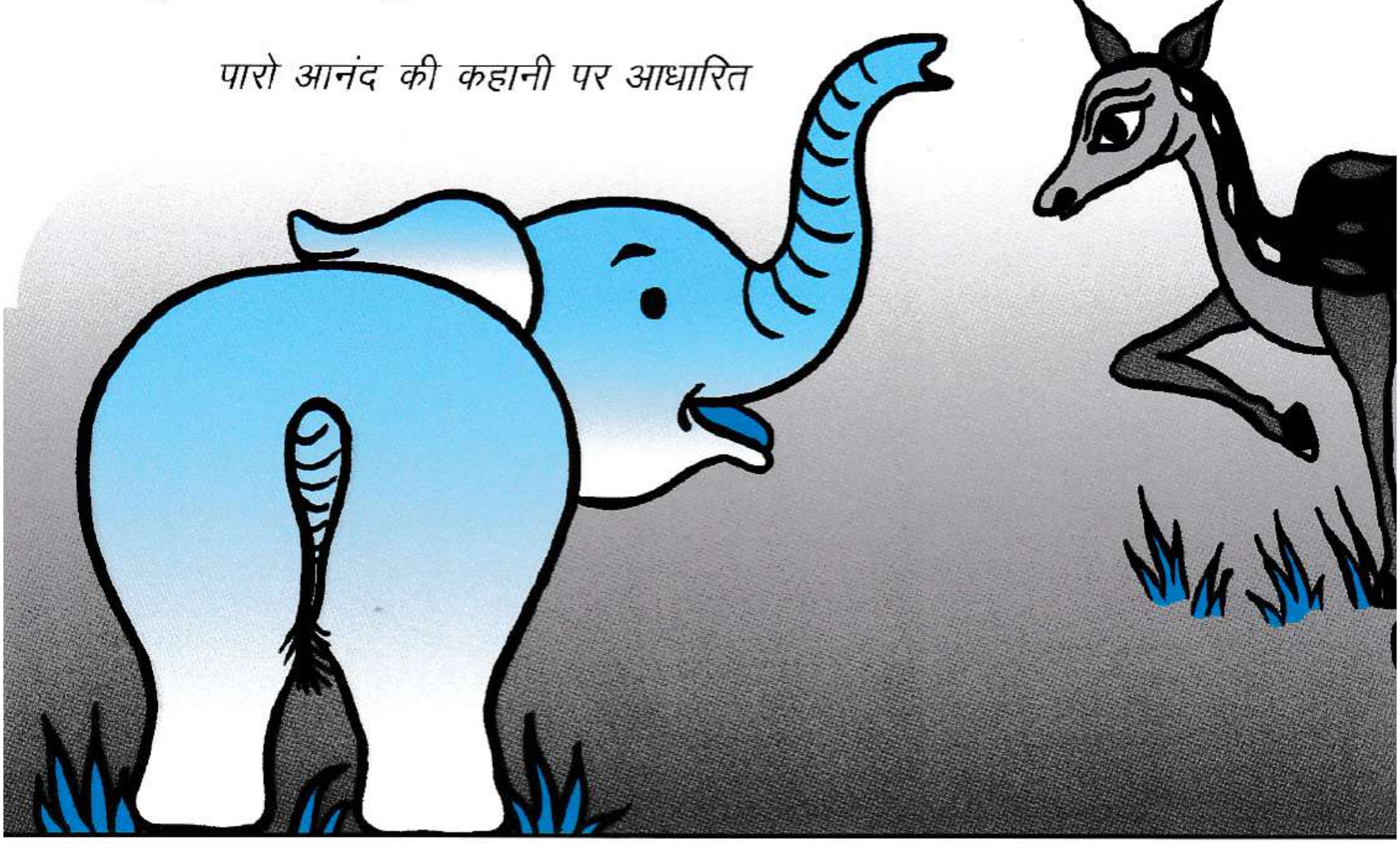


बंदर, मोर, हिरन, कौड़िल्ला सभी ने पेड़ को हटाने का प्रयास किया। लेकिन असफल रहे।

"अरे! बाघ को किसी भी तरह बचाना है," सब जानवर अप्पू को बुलाकर लाए। अप्पू ने पेड़ को हटाने की कोशिश की। मगर तीन दिन से खाना नहीं खाया था न! पेड़ हटा नहीं पाया।

मित्रों ने कहा, "लो! गन्ना खाकर हटाओ।" "हाँ! यही मेरी शक्ति है," कहते हुए अप्पू ने सारे गन्ने जल्दी–जल्दी खा डाले। बस! जोश के साथ एक ही पल में पेड़ हटा दिया। सब जानवर खुशी से बोले, "अब समझे, तुम सबसे बलवान हो!" अप्पू अपनी सूँड उठाकर खुशी से चिंघाड़ा।

पारो आनंद की कहानी पर आधारित



कथा झरना टीम 2008
पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

मुखिया कौन



एक घना जंगल था। उस में सभी जानवर मिलजुलकर रहते थे। शेर उनका मुखिया था। शेर बहुत बलवान और चतुर था। जंगल में जो भी समस्या आती, उसे लेकर जानवर शेर के पास ही जाते थे। शेर भी उन्हें सूझ–बूझ के साथ सुलझाता था। सभी जानवरों के मन में शेर के प्रति बड़ा आदर और विश्वास था।

एक दिन कुछ शिकारी जंगल में घुस आए। उन्होंने जानवरों का पीछा किया। जंगल में भगदड़ मच गई। डर के मारे जानवर भागे–भागे शेर के पास गए।

शेर समझ गया कि स्थिति गंभीर है। जानवरों से कहा, "शत्रु बहुत ताकतवर है। उनका सामना करना आपके बस की बात नहीं। आप लोग यहीं रुकिए। मैं उनसे निपटकर आता हूँ।"



शेर ने शिकारियों पर वार किया। कुछ भाग गए। कुछ ने शेर पर हमला किया। शेर ने बहादुरी के साथ उनका सामना किया। अंत में शेर की जीत हुई।

सभी जानवर शेर को धन्यवाद देने दौड़े। हाय! यह क्या हो गया? शेर दर्द के मारे तड़प रहा था। शिकारियों ने उसे घायल कर दिया था। शेर के पैर ज़ख्मी हो गए थे। सभी को बहुत दु:ख हुआ।

कई दिन बीत गए। शेर के पैर ठीक ही नहीं हो रहे थे। उसके लिए पहिएवाली कुर्सी लाई गई। शेर उस पर बैठकर घूमने लगा। मगर वह शिकार नहीं कर सकता था। सभी उसके लिए खाना बटोर कर लाते।



परंतु कुछ ही दिनों में वे ऊबने लगे। शेर की सेवा करना उन्हें बोझ सा लगने लगा। कुछ जानवर इस काम से खिसकने लगे। कुछ ने अपनी समस्याओं को शेर के पास ले जाना छोड़ दिया।

शेर जानवरों से हमेशा की तरह उत्साह से बात करता। खाना लाने वाले जानवरों की राह देखता। उनसे जंगल की खबरें लेता। वह सारी जिम्मेदारियाँ निभाता रहा।

एक दिन जंगल में खामोशी छाई थी। एक भी जानवर दिखाई नहीं दे रहा था। शेर को बड़ा आश्चर्य हुआ। पहिएवाली कुर्सी को धीरे–धीरे चलाकर वह सबको ढूँढने लगा।

एक जगह पर सब जानवरों की बैठक चल रही थी। शेर को बड़ा धक्का लगा। झाड़ियों के पीछे छिपकर उनकी बातें सुनने लगा।



एक जानवर ने कहा, "लगता है, अब हमें एक नया मुखिया चुनना पड़ेगा।"

दूसरे ने कहा, "नया क्यों? हमारा मुखिया शेर क्यों नहीं रह सकता?" किसी और ने कहा, "शेर के पास अब हमारी रक्षा करने की शक्ति नहीं रही।"

"क्या शरीर की ताकत ही सब कुछ है? शेर के पास मन की ताकत है। लंबा अनुभव भी," एक बूढ़े जानवर ने कहा।

"हाँ, शेर दादा हमेशा सही फैसला सुनाते हैं। वही हमारे मार्गदर्शक रहें तो अच्छा होगा," नन्हें जानवर ने कहा।

सभी जानवरों ने थोड़ी देर सोच–विचार किया। अंत में शेर को ही अपना मुखिया स्वीकार किया। फिर सब मिलकर शेर की गुफा की ओर चल दिए।

'विद्यासागर' (चेन्नई)
के बच्चों के नाटक पर आधारित



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

मधुमक्खी का सफर

एक बाग में मधुमक्खियों का परिवार रहता था। उनमें सबसे छोटी मधुमक्खी निडर व फुर्तीली थी। उसे सब ज़ी ज़ी कह कर पुकारते थे।

ज़ी ज़ी दुनिया को देखना, समझना चाहती थी। एक दिन पेड़ों पर से उड़ती हुई वह बहुत दूर चली गई। रास्ते में उसे मीठी सुगंध का एहसास हुआ।

सुगंध का पीछा करती हुई वह एक झील पर पहुँच गई। झील में उसे कमल के बहुत सारे सुंदर फूल दिखे। वह ज़ोर से कमल पर कूद पड़ी।

कोमल कमल काँप उठा। उसने ज़ी ज़ी को डाँटा, "अरे मूर्ख! तुम मेरी पंखुड़ियों पर इतने ज़ोर से क्यों कूदी? जाओ, मैं तुम्हें शहद नहीं दूँगा।"



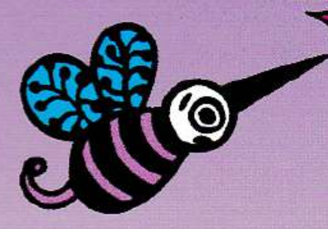


मधुमक्खी जल्दी से पेड़ों के बीच उड़ गई। वहाँ उसने एक मकड़ी का जाल देखा। उसने मकड़ी से पूछा, ''कमल मुझे शहद नहीं दे रहा। बताओ, वह मुझसे क्या चाहता है?''



मकड़ी ने जाल बुनते हुए कहा, ''शायद मेरी तरह उसे भी मक्खी पसंद है।''

ज़ी ज़ी कमल के पास गई और पूछा, ''क्या तुम मक्खी के बदले में शहद दे सकते हो?'' कमल को गुस्सा आ गया, ''क्या कमल भी कभी मक्खी खाते हैं?''



ज़ी ज़ी और ऊँची उड़ गई। बादल के पास पहुँची और उससे सलाह माँगी। बादल ने कहा, ''पेड़ और फूल को वर्षा पसंद है। शायद कमल वर्षा की बूँदों के लिए तरस रहा है।''

ज़ी ज़ी फिर कमल के पास आई और बोली, "तुम क्या चाहते हो, मुझे पता चल गया। तुम्हें वर्षा की बूँदें चाहिए न!" कमल ने कहा, "मुझे तालाब से पानी मिलता है। मुझे तुम्हारी वर्षा की बूँदें नहीं चाहिएँ।"







दुःखी होकर ज़ी ज़ी फिर उड़ गई। पेड़ों की शाखाओं के बीच उसने सूरज की झिलमिलाती किरणें देखीं। मधुमक्खी ने सूरज की किरणों से सलाह माँगी।

सूरज ने कहा, "कमल की पंखुड़ियाँ सूरज की ओर देखते हुए खिलती हैं। पता करो कि कमल को सूरज की गर्मी चाहिए क्या?"

ज़ी ज़ी खुशी से उड़ चली और कमल से पूछा, "क्या तुम्हारे लिए सूरज की किरणें लाऊँ?" कमल ने कहा, "सूरज की किरणें मेरी मित्र हैं। उन्हीं से तो मैं खिलता हूँ।"

ज़ी ज़ी अब थक गई। पेड़ पर बैठ गई। वहाँ उसने एक उल्लू को देखा। उससे भी कमल के बारे में पूछा, "तुम्हें दुनिया के सभी रहस्य मालूम हैं। कोई उपाय बताओ जिससे कमल मुझे शहद दे दे।"

उल्लू मधुमक्खी के कान में कुछ फुसफुसाया। पेड़ की शाखाएँ, चिड़िया, किरणें सभी सुनने की कोशिश करने लगे। मगर सुन न पाए।

ज़ी ज़ी खुशी से उड़ती हुई, कमल के पास आई। वह बहुत सावधानी से फूल पर बैठी। प्यार से शहद की माँग की। कमल ने मुस्कराकर अपनी पंखुड़ियाँ खोल दीं। ज़ी ज़ी को शहद दिया और कहा, "आज तुमने दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण रहस्य सीखा है। सभी से मृदुता और विनम्रता से पेश आना चाहिए।"

शोभिता पुंज की लिखित
लोक कथा पर आधारित



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णास्वामी

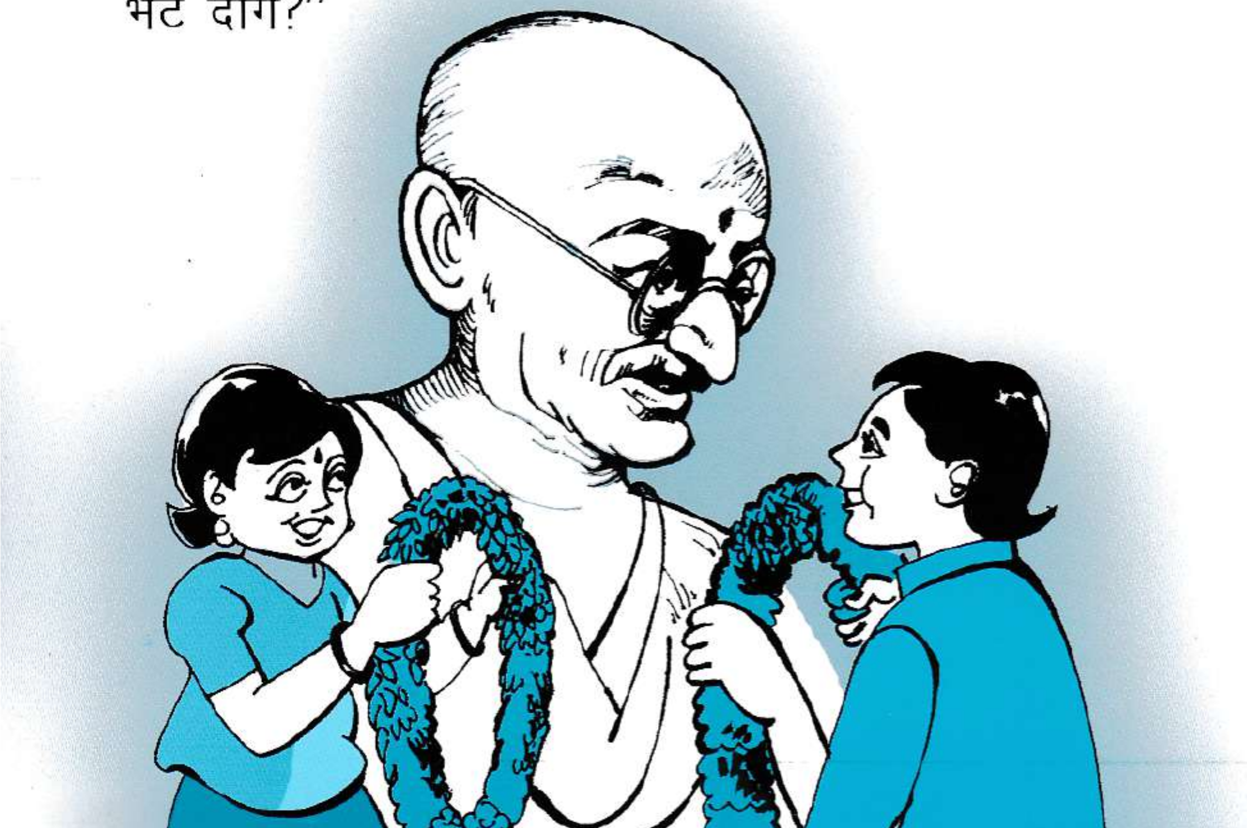
ऐसे थे गाँधीजी

उस दिन दो अक्तूबर था, गाँधीजी का जन्म दिन। गाँधीजी को मुबारकबाद देने के लिए मैं और मेरा छोटा भाई फूल माला लेकर निकल पड़े।

आश्रम में बहुत भीड़ थी। सभी लोग खादी पहने हुए थे। कुछ लोगों ने खादी की टोपी पहनी थी।

हम दोनों गाँधीजी के पास गए। मुबारकबाद देकर उन्हें माला पहनाई।

बापू ने हँसते हुए पूछा, "क्या अगली बार मुझे इससे बढ़िया भेंट दोगे?"



मैंने पूछा, "आप को क्या भेंट चाहिए बापू?"

"अपने हाथों से चरखा कातकर सूत से बनी माला ला सकते हो?" बापू ने मुस्कराते हुए सवाल किया।

"हमें तो चरखा कातना आता ही नहीं," मेरे छोटे भाई ने झट से उत्तर दिया। इस पर गाँधीजी ने कहा, "आप के माता–पिता आपको सिखाएँगे।"

घर लौटते समय मेरा भाई मुझसे सवाल करने लगा, "बापू हमसे चरखा प्रयोग करने के लिए क्यों कह रहे हैं?"

मैंने उसे समझाया, "विदेशी कपड़े प्रयोग करने से हमारे देश के गरीब लोगों में बेरोज़गारी बढ़ जाती है। खादी उद्योग ग्रामीण जनता को रोज़गार प्रदान करता है। इसलिए गाँधीजी हाथ से कता हुआ कपड़ा प्रयोग करने की सलाह देते हैं।"



घर पहुँचते ही हमने माँ को सारी बात सुनाई। माँ ने बात कुछ और विस्तार से समझाई, "गाँधीजी अंग्रेज़ी शासन हटाकर भारत को स्वतंत्र करना चाहते हैं। इसलिए वे खादी आन्दोलन का प्रचार कर रहे हैं।"

उसी दिन से हमने चरखा चलाना शुरू कर दिया।

✦ ✦ ✦ ✦

एक बार गाँधीजी मदुरई गए हुए थे। वे नदी पर नहाने गए। वहाँ एक महिला अपने नन्हे बच्चे के साथ आई हुई थी।

वह महिला अपनी साड़ी के एक भाग को ओढ़कर दूसरे भाग को धो रही थी। उसके पास एक ही साड़ी थी और वह भी फटी हुई।

उस महिला की गरीबी गाँधीजी के मन को छू गई। उन्होंने तुरंत अपनी शॉल उसे दे दी। गाँधीजी ने सोचा कि देश में इतने गरीब लोगों के रहते उनका तरह–तरह की कमीज़ें पहनना उचित नहीं है। उस दिन से उन्होंने कमीज़ पहनना छोड़ दिया।



✦ ✦ ✦ ✦

एक दिन साबरमती आश्रम में एक बालक गाँधीजी से मिलने आया। उसने पूछा "बापू! बापू! आप कमीज़ क्यों नहीं पहनते? मैं अपनी माँ से कहकर आपके लिए एक कमीज़ सिलवा दूँ क्या?"

गाँधीजी हँसने लगे। फिर पूछा, "तुम्हारी माँ मेरे लिए कितनी कमीज़ें सिल कर देंगी?"

बालक ने कहा, "आप बताइए, आपको कितनी चाहिएँ?

बापू ने प्यार से कहा, "बेटा, मेरे चालीस करोड़ भाई–बहन हैं। कुछ छोटे व कुछ बड़े। जब उनके पास कमीज़ें नहीं हैं तो मैं कैसे कमीज़ पहन सकता हूँ? क्या तुम्हारी माँ इन सब लोगों के लिए कमीज़ सिल कर देंगी?"

अब बालक को बापू की बात समझ में आई। देश के सभी लोगों को बापू अपना परिवार मानते हैं। सभी देशवासी उनके रिश्तेदार हैं। सब उनके मित्र हैं। फिर एक कमीज़ उनके किस काम की?



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू

चार मित्र



एक घने जंगल के बीच में एक तालाब था। तालाब के किनारे एक हिरन, चूहा, कौआ और कछुआ रहते थे। चारों में गहरी दोस्ती थी। वे खाना ढूँढते समय अलग हो जाते। बाकी समय साथ–साथ रहते।

एक दिन हमेशा की तरह सब आहार ढूँढने गए। परंतु हिरन बहुत देर तक वापिस नहीं आया। मित्रों को चिंता होने लगी।

'क्या हिरन किसी मुसीबत में फँस गया है?' वे सोचने लगे। तब कौए ने कहा, "मैं उड़कर जाता हूँ और देखता हूँ कि उसे क्या हुआ।" वह बहुत दूर उड़ता गया।

एक जगह उसे हिरन दिखाई दिया। वह जाल में फँसा हुआ था। घबराकर कौआ वापिस आया और अपने दोस्तों को यह खबर दी।



"किसी भी तरह हमें हिरन को बचाना है। तुरंत हमें वहाँ जाना होगा," यह कहकर चूहा कौए की पीठ पर चढ़ गया। कौआ उड़कर हिरन के पास पहुँच गया।

चूहे ने तेज़ी से जाल को काटा और हिरन को छुड़ा लिया। उसी समय कछुआ वहाँ आ पहुँचा। सभी मित्र चौंक गए।

चूहे ने कहा, "अरे! तुम अपना सुरक्षित स्थान छोड़कर यहाँ क्यों आ गए? अगर शिकारी आया तो कौआ उड़कर चला जाएगा। मैं किसी बिल में छिप जाऊँगा। हिरन तेज़ी से कहीं भाग जाएगा। तुम तो फँस जाओगे।"

कछुआ बोला, "हिरन खतरे में है– यह बात सुनकर भला मैं तालाब में कैसे रहता? इसलिए यहाँ आ गया।" वह कह ही रहा था कि शिकारी वहाँ आ पहुँचा। हिरन तेज़ी से दौड़ गया। चूहा बिल में छिप गया। कौआ उड़ गया।



बस! कछुआ अकेला रह गया। बेचारा! शिकारी के हाथ लग ही गया। शिकारी ने पास में पड़ी सूखी घास से कछुए के पैर बाँध दिए। फिर उसे लेकर अपने घर की ओर चल पड़ा। सभी मित्र छिपकर यह देख रहे थे।

'कछुए को किस तरह बचाएँ?' सब सोच में पड़ गए। चूहे को एक उपाय सूझा।

उसने हिरन से कहा, "तुम शिकारी के रास्ते में जाकर लेट जाओ और ऐसा नाटक करो कि तुम मरे हुए हो। कौआ तुम्हें चोंच मारता रहेगा। तब शिकारी



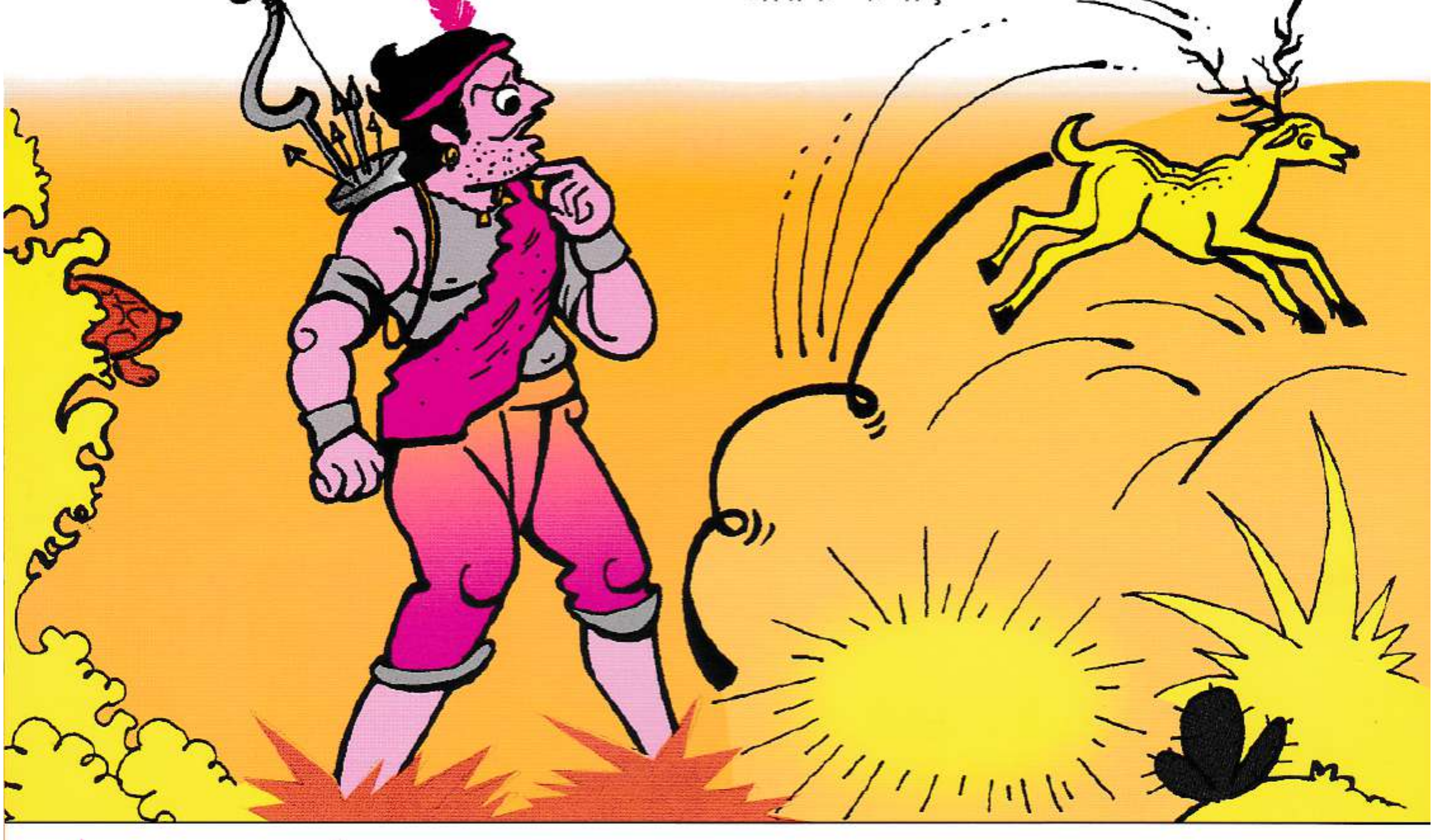
कछुए को छोड़कर तुम्हारे पास आएगा। अवसर पाते ही मैं रस्सी काट दूँगा और कछुए को आज़ाद करा दूँगा।''

सब ने इस योजना के अनुसार काम किया। शिकारी रास्ते में हिरन को देखकर चौंक गया। वह तुरंत कछुए को ज़मीन पर रखकर हिरन के पास गया।

लेकिन यह क्या! हिरन तो बिजली की तरह भागकर गायब हो गया! शिकारी आश्चर्य से देखता रह गया। फिर मुड़कर कछुए को उठाने गया, तो वह भी गायब!

बेचारा शिकारी! निराश होकर घर लौटा।

जातक कथाएँ

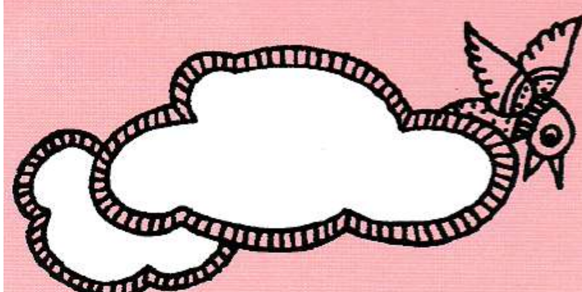


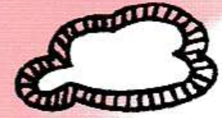
Rajalakshmi Srinivasan Memorial Foundation

चित्रांकन: एस.पी.राजू

69 हनुमान खेले सूरज से





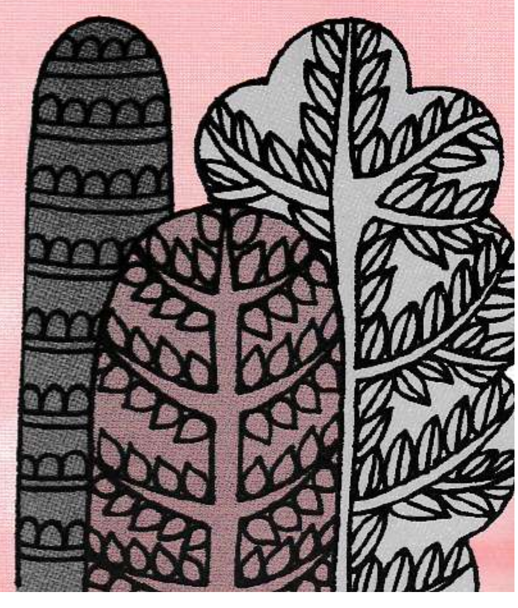


हनुमान अपने बचपन में बहुत ही शरारती और निडर था। हमेशा खेलता–कूदता रहता। उसकी माँ अंजना उसे संभाल नहीं पाती।



एक दिन हनुमान खेल रहा था। तभी सूरज की किरणें उस पर पड़ीं। उसने आसमान की ओर देखा। सूरज एक लाल गेंद सा लग रहा था।

"मैं उस गेंद को पकड़कर खेलूँगा," कहते हुए वह एक ही छलाँग में आसमान तक पहुँच गया। सूरज को पकड़ने की कोशिश करने लगा।



सूरज को यह बिल्कुल पसंद नहीं आया। वह तेज़ी से दौड़ने लगा। हनुमान उसका पीछा करता रहा। दुनिया में रात और दिन जल्दी–जल्दी बदलने लगे। हनुमान को यह खेल तमाशा जैसा लगा।

हड़बड़ाकर सूरज ने इंद्र की सहायता माँगी। सूरज को तड़पते हुए देखकर इंद्र को क्रोध आ गया। उन्होंने हनुमान पर बिजली गिरा दी। हनुमान की साँस रुक गई। वह आसमान से नीचे गिरने लगा।

ठीक समय पर हनुमान के पिता वायु ने उसे थाम लिया। वायु ने इंद्र पर क्रोधित होते हुए कहा, "तुमने यह भी नहीं देखा कि यह नन्हा बच्चा है। उसका क्या हाल बना डाला?"

वायु ने एक लंबी साँस ली और उसे ज़ोर से बाहर निकाला। फिर क्या? हर जगह तूफान ही तूफान! पेड़, पर्वत, चट्टान सब हिलने लगे। सब लोग भयभीत होकर इधर–उधर दौड़ने लगे।



"जब तक मेरा पुत्र साँस नहीं ले पाएगा, तब तक इस संसार में हवा नहीं," वायु ने आदेश दिया। तुरंत हवा थम गई। वह अपने पुत्र को लेकर पाताल में जा पहुँचा।

पेड़—पौधे, पशु—पक्षी, मनुष्य सभी को घुटन होने लगी। सब मूर्छित होने लगे। चारों तरफ खामोशी ही खामोशी!

'हवा के बिना दुनिया मिट जाएगी,' देवगण चिंतित होने लगे। वे वायु के पास गए और विनती की, "इंद्र को क्षमा कर दो।" फिर उन्होंने हनुमान को जीवित किया। उसे एक अनोखा आशीर्वाद भी दिया, "तुम आसमान में जहाँ चाहो उड़ सकते हो। अपने आकार को जब चाहो छोटा या बड़ा कर सकते हो।"

इंद्र ने आगे कहा, "बिजली और मेघ गर्जन तुम्हें कभी भी हानि नहीं पहुँचाएँगे।"

सूर्य ने कहा, "आग तुम्हें कभी छू नहीं सकेगी।"





वायु ने कहा, "केवल शक्तियाँ ही काफी नहीं हैं। बुद्धि हो, तभी इन शक्तियों का सही प्रयोग हो सकता है।"

देवों ने कहा, "चिंता न कीजिए। हनुमान बहुत बुद्धिमान साबित होगा।"

वायु ने धीरे–धीरे साँस ली। संसार में फिर से हवा चलने लगी। पेड़–पौधे, मनुष्य, जानवर सब जीवित हो उठे।



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

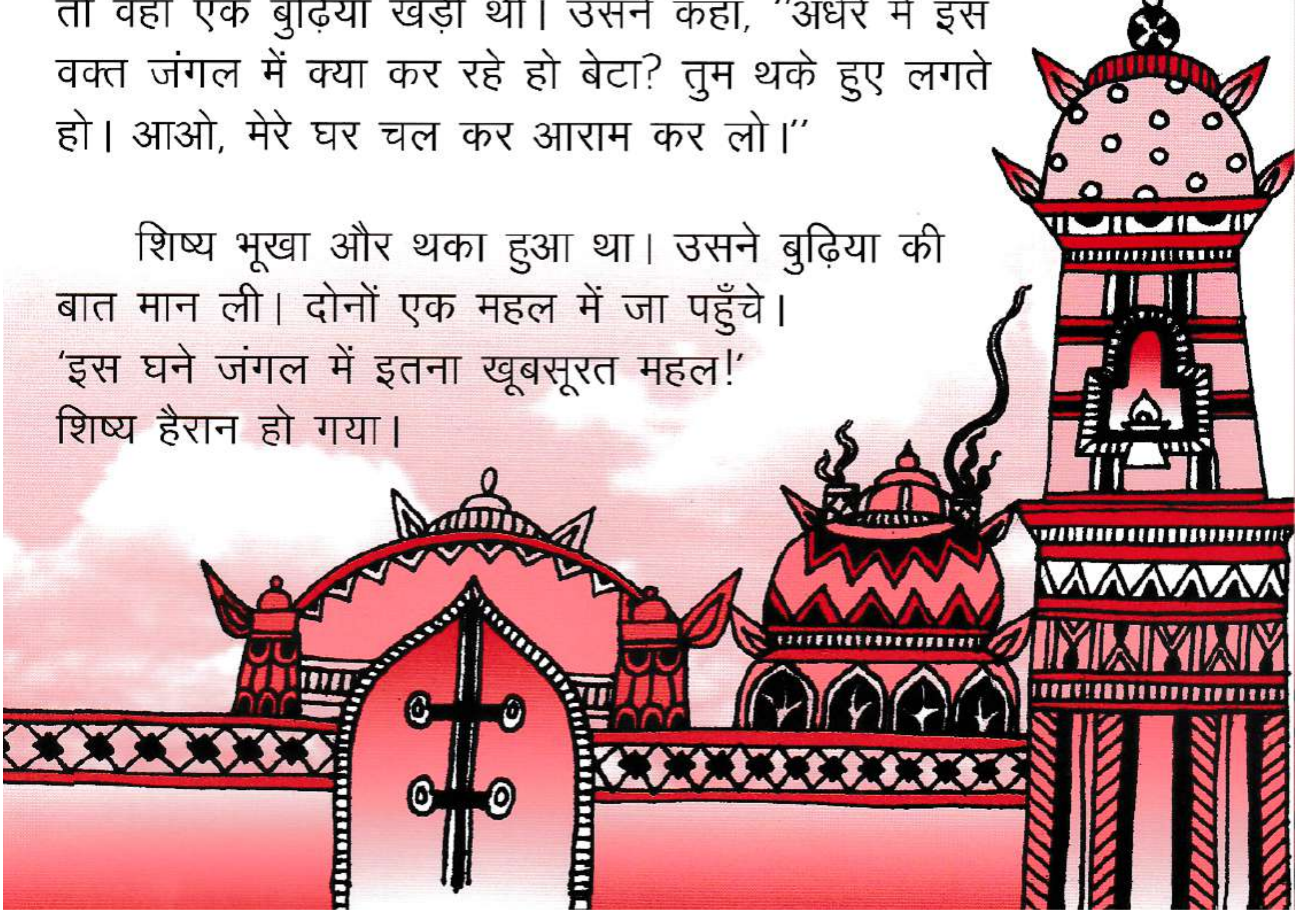
तीन पंख

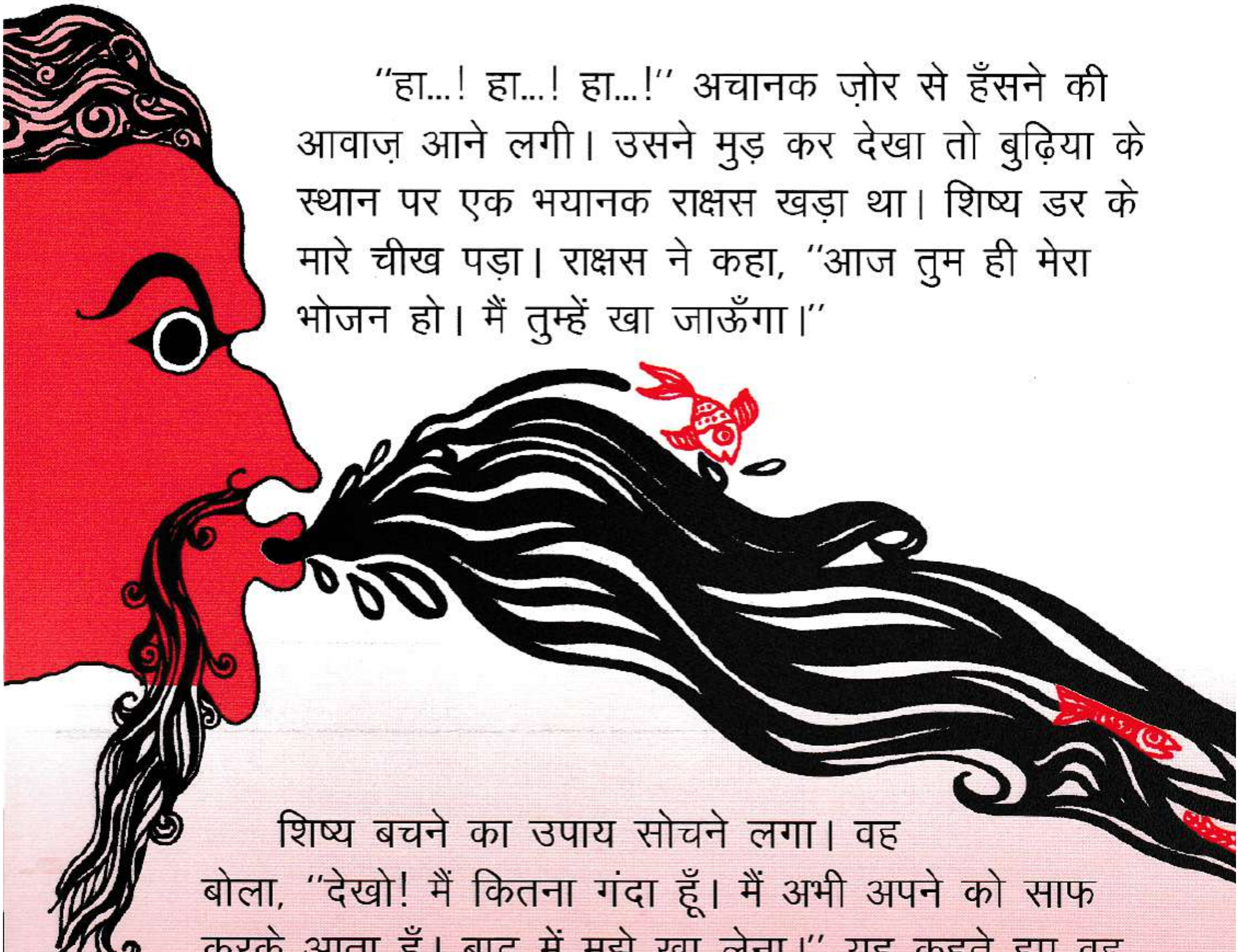
पर्वत के शिखर पर एक शिष्य अपने गुरू के साथ रहता था। एक दिन वह फल इकट्ठे करने के लिए जंगल की ओर जाने लगा। गुरू ने उसे चेतावनी दी, "लोग कहते हैं कि जंगल में एक भयानक मायावी राक्षस रहता है। सावधान रहना! इन तीन पंखों को अपने पास रख लो। रास्ते में मुसीबत आए तो इनके सहारे अपने आपको बचा लेना।"

शिष्य बड़े उत्साह के साथ चल पड़ा। फल इकट्ठे करते–करते उसे समय का पता ही नहीं चला। अंधेरा होने लगा।

तभी पीछे से एक आवाज़ सुनकर वह चौंक उठा। मुड़कर देखा तो वहाँ एक बुढ़िया खड़ी थी। उसने कहा, "अंधेरे में इस वक्त जंगल में क्या कर रहे हो बेटा? तुम थके हुए लगते हो। आओ, मेरे घर चल कर आराम कर लो।"

शिष्य भूखा और थका हुआ था। उसने बुढ़िया की बात मान ली। दोनों एक महल में जा पहुँचे। 'इस घने जंगल में इतना खूबसूरत महल!' शिष्य हैरान हो गया।





"हा...! हा...! हा...!" अचानक ज़ोर से हँसने की आवाज़ आने लगी। उसने मुड़ कर देखा तो बुढ़िया के स्थान पर एक भयानक राक्षस खड़ा था। शिष्य डर के मारे चीख पड़ा। राक्षस ने कहा, "आज तुम ही मेरा भोजन हो। मैं तुम्हें खा जाऊँगा।"

शिष्य बचने का उपाय सोचने लगा। वह बोला, "देखो! मैं कितना गंदा हूँ। मैं अभी अपने को साफ करके आता हूँ। बाद में मुझे खा लेना।" यह कहते हुए वह स्नानघर में चला गया। गुरू के दिए पंख में से एक को निकाला और आदेश दिया, "जब भी मायावी राक्षस मुझे बुलाए, तुम मेरी आवाज़ में जवाब दे देना।" फिर वह खिड़की से कूद कर भाग गया।

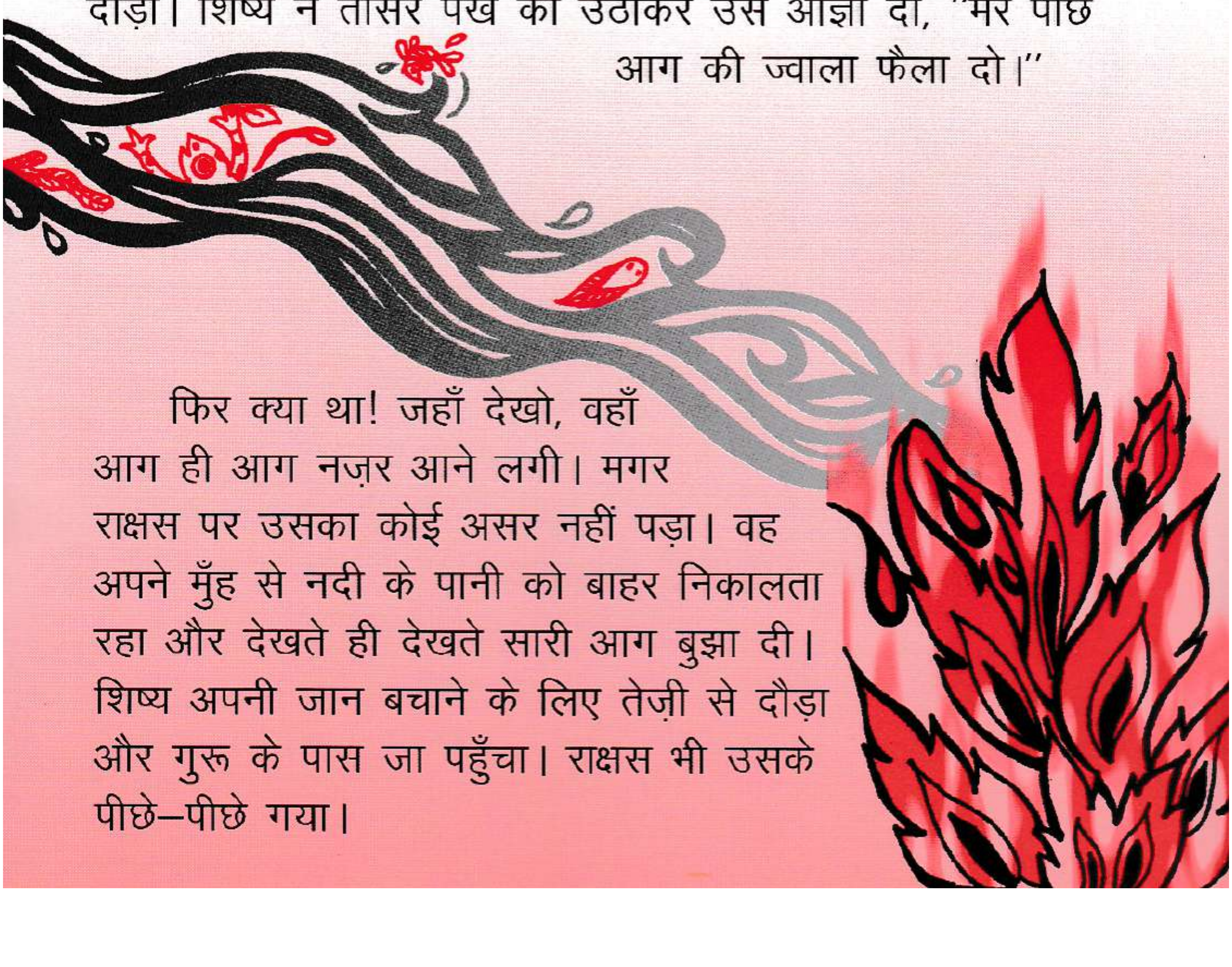
जब जब राक्षस शिष्य को पुकारता, तब तब स्नानघर से आवाज़ आती, "अभी आया, अभी आया।"

काफी देर होने पर राक्षस को शंका हुई। उसने स्नानघर के अंदर जाकर देखा। वहाँ शिष्य नहीं था। फिर क्या था! राक्षस गुस्से से झल्ला उठा, "इतनी हिम्मत! मुझे ही धोखा दे दिया। कैसे बचकर जाएगा?

मैं भी देखता हूँ।" वह शिष्य के पीछे भागा और उसके करीब पहुँच गया।

शिष्य काँप उठा। उसने तुरंत दूसरे पंख को हाथ में लिया और उसे आज्ञा दी, "मेरे पीछे एक विशाल नदी बना दो।" उसी समय वहाँ एक गहरी नदी बहने लगी और अपने तेज़ बहाव के साथ राक्षस को बहुत दूर ले गई। 'हे भगवान! मैं बच गया,' शिष्य ने चैन की साँस ली।

गड़...गड़...गड़... आवाज़ सुन शिष्य ने मुड़कर देखा। वह राक्षस गड़ गड़ करके नदी का पूरा पानी पी गया! फिर शिष्य की तरफ दौड़ा। शिष्य ने तीसरे पँख को उठाकर उसे आज्ञा दी, "मेरे पीछे आग की ज्वाला फैला दो।"



फिर क्या था! जहाँ देखो, वहाँ आग ही आग नज़र आने लगी। मगर राक्षस पर उसका कोई असर नहीं पड़ा। वह अपने मुँह से नदी के पानी को बाहर निकालता रहा और देखते ही देखते सारी आग बुझा दी। शिष्य अपनी जान बचाने के लिए तेज़ी से दौड़ा और गुरू के पास जा पहुँचा। राक्षस भी उसके पीछे—पीछे गया।

गुरू को धमकाते हुए राक्षस ने कहा, "तुम अपने शिष्य को मेरे हवाले कर दो। नहीं तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा।" गुरू हँसने लगे, "जो जादू तुम्हें मालूम है वह मुझे भी आता है। जैसा मैं कहूँ, वैसा तुम कर पाए तो तुम जीते। तब मैं अपने शिष्य को तुम्हें सौंप दूँगा।"

राक्षस मान गया। उसने कहा, "ठीक है! मैं तुम्हें क्या दिखाऊँ?" गुरू ने पूछा, "क्या तुम अपने आपको ऊँचे महल जितना बड़ा कर सकते हो?" राक्षस ने झट से अपने शरीर को बड़ा करके दिखा दिया।

गुरू ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, "बड़ा होना तो बहुत आसान है। क्या तुम अपने आप को मटर के दाने जितना छोटा बना सकते हो?"

"इसमें क्या मुश्किल है?" यह कहकर वह एक मटर का दाना बन गया। गुरू ने झट से मटर को अपने मुँह में डालकर निगल लिया।

उस दिन से वह भयानक राक्षस फिर कभी दुनिया में दिखाई नहीं दिया।

जापान की लोक कथा





घोंसले

आस–पास के वातावरण में हम अनेक पक्षियों को देखते हैं। उनके घोंसले भी भिन्न–भिन्न प्रकार के होते हैं।

पक्षी घोंसलों में सोते हैं। विश्राम करते हैं। अंडे देते हैं। अपने बच्चों का पालन–पोषण भी करते हैं। उन्हें उड़ना सिखाते हैं। फिर उन्हें स्वतंत्र रूप से जीने के लिए बाहर भेज देते हैं।



दर्जिन फुदकी एक अनोखी चिड़िया है। पौधों के रेशों का 'तार' बनाकर चोंच में ले लेती है। फिर दो पत्तों को एक साथ रखकर निपुणता से किनारे पर सी देती है।

इस 'हरी थैली' में वह अपने बच्चों का पालन–पोषण करती है। अन्य प्राणी इनका आसानी से पता नहीं लगा पाते।



बया पक्षी भी घास और रेशे का प्रयोग करके मज़बूत घोंसला बुनते हैं। बया का घोंसला पेड़ पर लटकता रहता है।



उसका ऊपरी भाग गोल तथा बड़ा होता है। उसमें अंडे रखने के लिए एक कमरा होता है। प्रवेश द्वार छोटा और नीचे की ओर मुड़ा होता है। इससे शत्रु अंदर नहीं घुस सकते। देखने में उसका रूप सुराही जैसा होता है।

कठफोड़वा, उल्लू, धनेश आदि पक्षी पेड़ के कोटर में रहते हैं। धनेश पक्षी की एक अनोखी आदत है। अंडे देने के बाद मादा पक्षी घोंसले में ही रहती है। नर पक्षी घास और लकड़ी के टुकड़ों से कोटर के दरवाज़े को बंद कर देता है। मादा की चोंच निकालने के लिए केवल एक छोटा–सा छेद खुला रखता है।



नर पक्षी चारा ढूँढकर इस छेद के द्वारा देता रहता है। जब नन्हे धनेश अंडों से बाहर निकल आते हैं, मादा और नर पक्षी दोनों मिलकर खाना ढूँढने निकल पड़ते हैं।



कुछ पक्षी अपने घोंसले नहीं बनाते। मधुर सुर वाली कोयल उनमें से एक है। कोयल दूसरे पक्षियों के घोंसले में या ज़मीन पर अंडे देती है। जब वह ज़मीन पर अंडे देती है तो चुपके से कौए के घोंसले में रख आती है। उसका अंडा कौए के अंडे से मिलता–जुलता है। कौआ कोयल के अंडे सेता है। बड़ी होने के बाद नन्ही कोयल घोंसला छोड़कर उड़ जाती है।

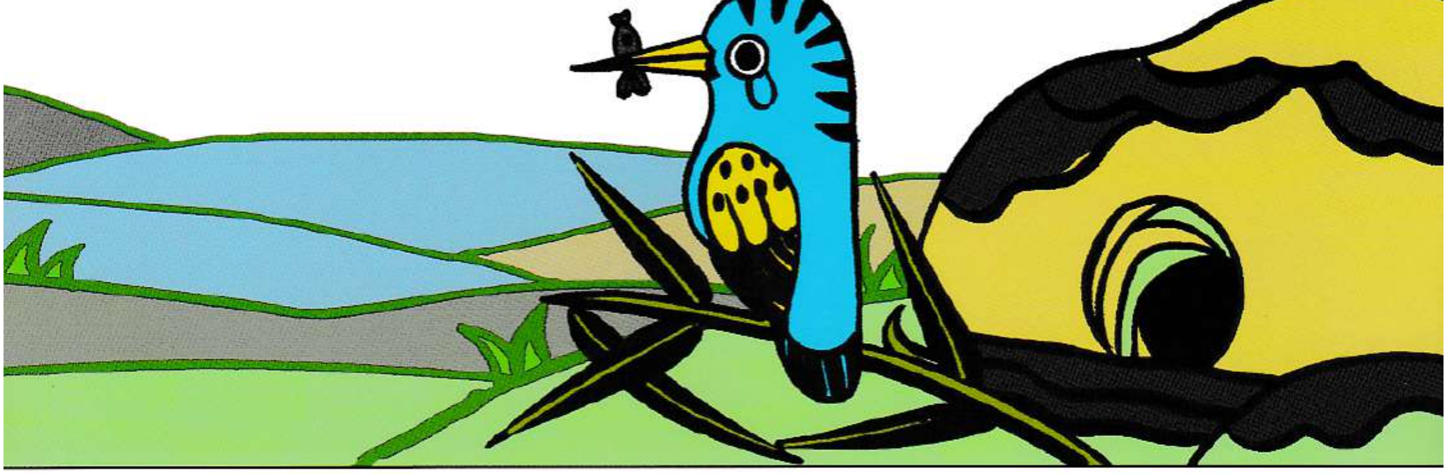




कौड़िल्ला भी एक होशियार व सुंदर पक्षी है। मछली पकड़ने में बहुत निपुण! नाले, तालाब, नदी किनारे बैठकर बिना पलक झपके पानी को देखता रहता है। मौका पाते ही झट से पानी में डुबकी लगा मछली पकड़कर उड़ जाता है।

कौड़िल्ला नदी के किनारे मिट्टी में सुरंग बनाकर अपना घोंसला तैयार करता है। उसका द्वार सूखी घास से ढक देता है।

पक्षियों के बारे में कई तरह की ऐसी रोचक बातें हैं। उन्हें ध्यान से देख कर उनके बारे में और बातें जान सकते हैं।



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

आओ पता लगाएँ



गर्मियों का फल है, रस है बड़ा रसीला
गोल है आकार उसका, छिलका हरा–पीला

हरी गोलियाँ काँच सी, गुच्छों में सुंदर लगतीं
बेल पर वह रहतीं कच्ची, नीचे आकर पकतीं



फूलते वक्त होता पीला, फिर रंग बदलता लाल
पकने के बाद होता काला, कैसी इसकी खाल

मुकुट पहन रखा है सिर पर
आँखें बहुत सारी हैं तन पर
रस भरा है जिसके अंदर





बाहर हज़ारों काँटे
बड़ा चिपचिपा अगर काटे
पोंछा, हटाया, निकला हलवे का टुकड़ा

लाल–लाल और पीला
उपजे कश्मीर और शिमला
बच्चे–बड़े जो खाए
सबके मन को भाए

हरी चमड़ी सी खाल है
भीतर रक्त लाल है

लाल डिबिया पीले खाने
अंदर रखे मोती के दाने



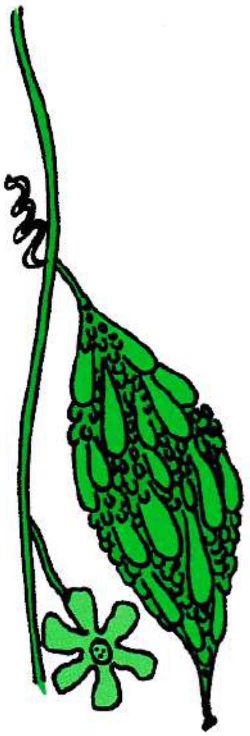
फलों में अलबेला
उगता नहीं अकेला
छिलका छीलकर मुझे खाएँ
राजू हो या बेला

अनानास, केला, अंगूर, मुसम्मी, सेब,
कटहल, अनार, तरबूज़, खजूर





छुपा रहता माटी में
रंग मेरा मटियाला
सबका साथ निभाने वाला
ऐसा हूँ मैं मतवाला

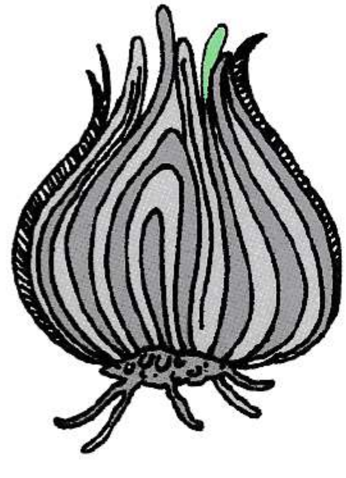


परत–परत खोलो आँसू बहे
सब मुझसे परेशान रहें
पर मेरे बिना रसोई न खिले
खाने में वैसा मज़ा न मिले

सर्दियों की सब्ज़ी, कच्ची खाकर करते मौज
हरी लंबी पेटी में, हरे मोतियों की फौज



गोल है आकार मेरा
रंग हरा भरा
खेतों में इठलाती हूँ
तन पत्तों से भरा
सब्ज़ी खाओ, सलाद खाओ
सभी तरह आनंद उठाओ



आकार में है बड़ा–बड़ा, सभी सब्ज़ी उसकी बनाएँ
छिलका हरा और गूदा पीला, बीज न कोई खाए

बड़े मुझे खाएँ सोच–सोच के, बच्चे भागें कोसों दूर
खाने में मैं कड़वा हूँ पर पोषण में भरपूर
बीमार रस भी पी लेते, चेहरे पे आ जाए नूर



लंबी सफेद, क्या है यह भेद
कच्ची भी खाओ, पक्की भी खाओ
कचर–कचर खाओ, खाना पचाओ

न खाए कोई मेरी पूँछ, न कोई टोपी खाए
अंदर मेरे छेद हैं, तन हरा भरा लुभाए
रोटी के संग खाने को हर बच्चा ललचाए

मटर, पीला कद्दू, भिंडी, मूली, आलू,
प्याज, करेला, बंदगोभी

पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

न बोलनेवाला वक्ता

मुल्ला नसरुद्दीन की चतुराई के किस्से तो मशहूर हैं ही! वह भाषण देने में भी निपुण थे। उनकी बातें न केवल लोगों को हँसाती थीं बल्कि उन्हें सोचने पर भी मज़बूर कर देती थीं।

एक बार गाँव के लोगों ने मुल्ला जी को एक सम्मेलन में भाषण देने के लिए बुलाया।



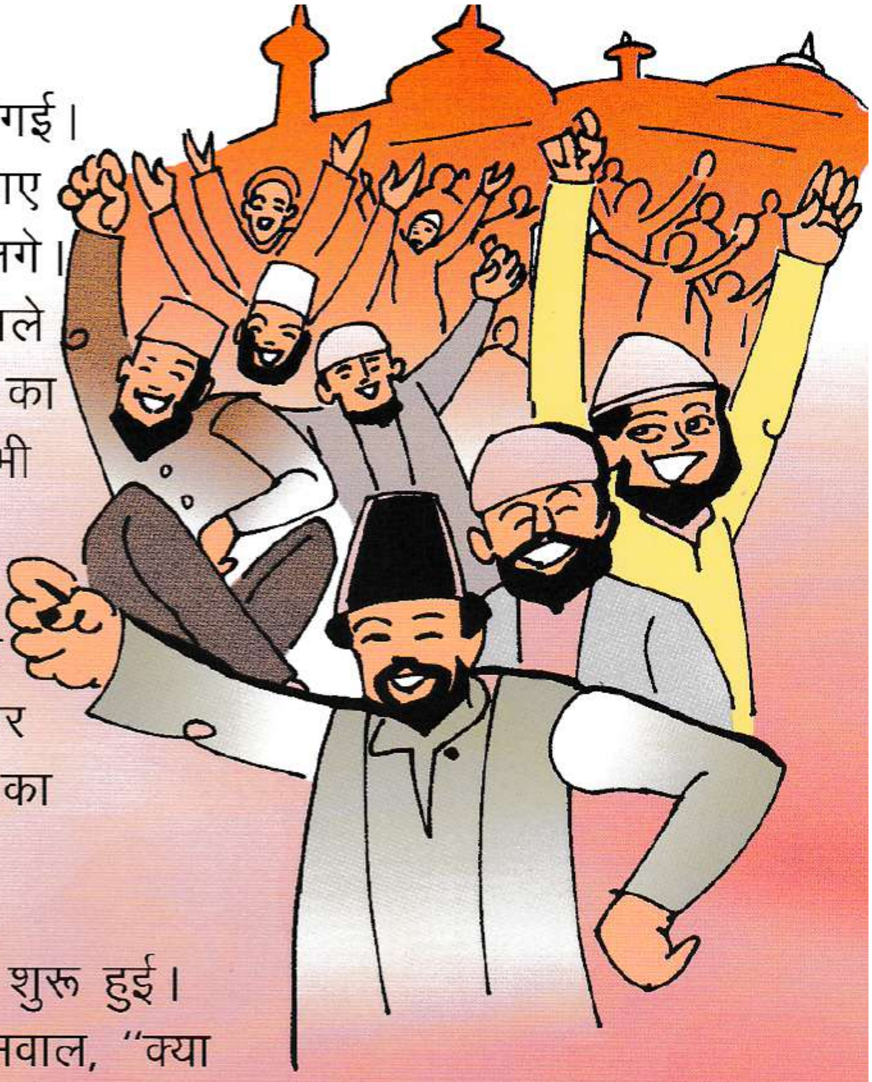
नसरूद्दीन को सम्मेलन में जाने की इच्छा नहीं थी। पर बचने का कोई उपाय भी नहीं था, इसलिए वे मान गए। उन्होंने सोचा कि आखिरी समय पर कोई बहाना बनाकर वे निकल जाएँगे।

आखिर वह दिन आ ही गया जब उनको भाषण देना था। मुल्ला जी मंच पर चढ़े। उन्होंने एकत्रित भीड़ से पूछा, ''क्या आपको मालूम है कि मैं क्या बोलने वाला हूँ?''

भीड़ से आवाज़ आई, ''मालूम नहीं.... मालूम नहीं.... ।'' मुल्ला को गुस्सा आ गया। ''जो कुछ भी नहीं जानते, उन लोगों से मुझे कुछ नहीं कहना है,'' यह कहकर वह वहाँ से चले गए।



भीड़ उलझन में पड़ गई। कुछ लोग मुल्ला के घर गए और उनसे माफी माँगने लगे। लोगों ने फिर से उन्हें अगले शुक्रवार को सभा में आने का निमंत्रण दिया। मुल्ला ने भी हाँ कर दी।



लोगों ने सोच–विचार कर तय किया कि इस बार वे मुल्ला को नाराज़ होने का मौका नहीं देंगे।

शुक्रवार आया। सभा शुरू हुई। मुल्ला बोलने लगे। वही सवाल, "क्या आपको मालूम है कि मैं क्या बोलने वाला हूँ?" जैसा कि पहले से तय था सभी चिल्लाने लगे, "हमें मालूम है.... हमें मालूम है...।"

"जब आपको सब मालूम है तो मैं क्यों बोलूँ?" यह कहकर मुल्ला मंच पर से खिसक गए। लोग हैरान रह गए। आपस में बात करके वे एक निर्णय पर पहुँचे।

उन्होंने मुल्ला को फिर से शुक्रवार को आने का निमंत्रण दिया। मुल्ला फिर आए। पहले की तरह प्रश्न किया, "क्या आपको मालूम है कि मैं क्या बोलने वाला हूँ?"

लोगों को मुल्ला के बारे में मालूम ही था! जैसा कि पहले से तय था, आधे लोगों ने कहा, "हमें मालूम है।" बाकी लोगों ने कहा, "हमें नहीं मालूम।"

मुल्ला ने कहा, "ऐसी बात है! तो जिन लोगों को मालूम है कि मैं क्या बोलने वाला हूँ, वे बाकी लोगों को बता दें!" बोलकर मुल्ला वहाँ से चले गए।

लोगों की हैरानी बनी रही और मुल्ला जी ने बिना कुछ बोले ही बाज़ी मार ली!



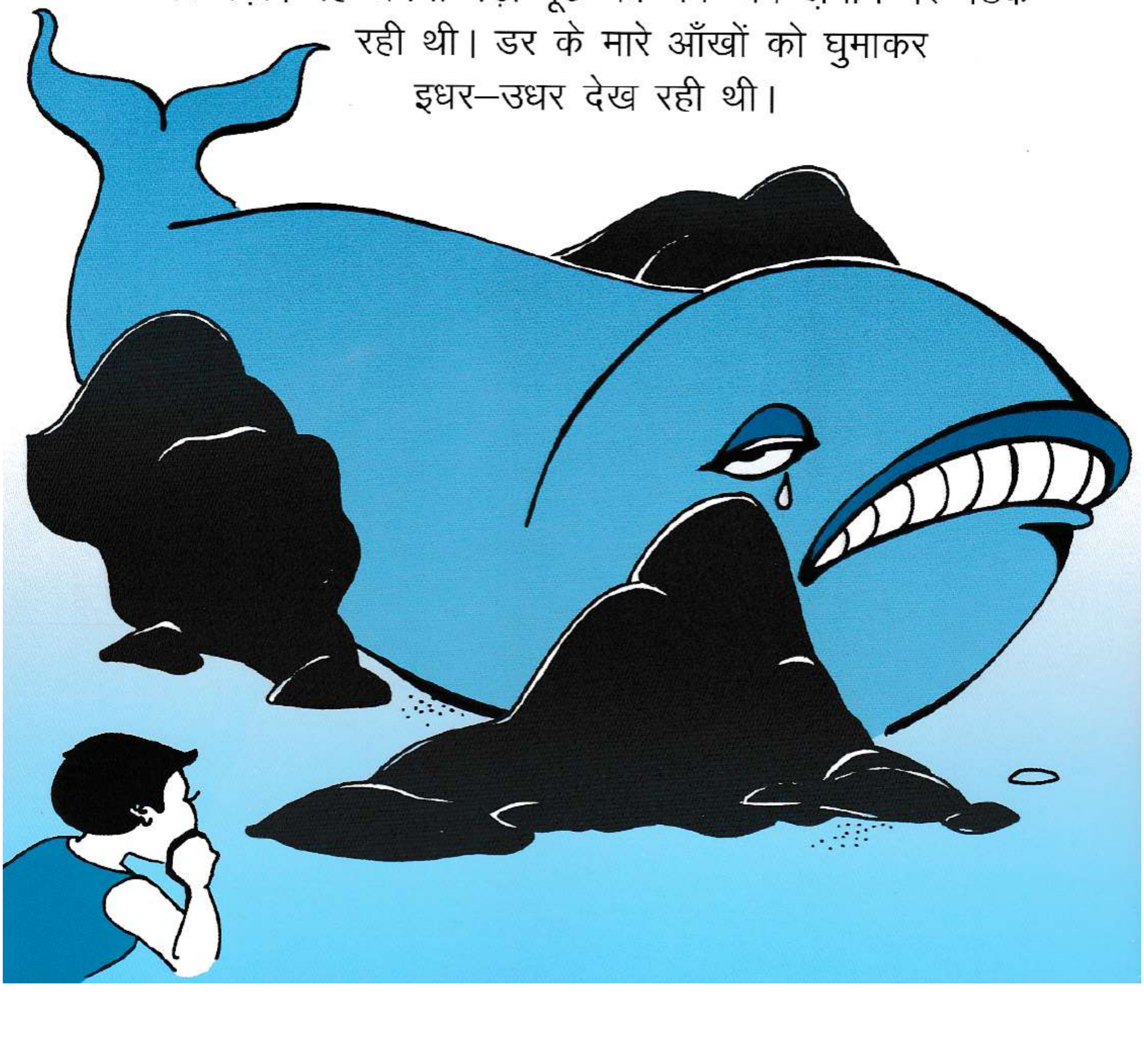
Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

हज़ार बाल्टी पानी

यूहियो समुद्र तट पर खड़ा लहरों को बहुत ध्यान से देख रहा था। लहरें उसके पैरों को छू–छू कर लौट रही थीं।

अचानक उसकी नज़र चट्टानों के बीच फँसी एक ह्वेल पर पड़ी। वह अपनी बड़ी पूँछ को थप–थप ज़मीन पर पटक रही थी। डर के मारे आँखों को घुमाकर इधर–उधर देख रही थी।



"अरे! पानी के बगैर तुम जीवित नहीं रह पाओगी। ठहरो! मैं तुम्हारी मदद करता हूँ," कहते हुए यूहियो समुद्र की ओर भागा। एक बाल्टी में समुद्र का पानी भरा और उसे ह्वेल के सिर पर डाल दिया।

धूप बहुत तेज़ थी। यूहियो ने कहा, "तुम इतनी बड़ी ठहरीं! तुम्हें तो ढेर से पानी की ज़रूरत पड़ेगी। फिक्र मत करो। एक हज़ार बाल्टी डालने के बाद ही मैं रुकूँगा।"

हर बार पानी डालते समय वह 'एक, दो, तीन, चार...' गिनता। चार बाल्टी सिर पर, चार पीठ पर, चार बाल्टी पूँछ पर, इस तरह वह ह्वेल के सारे शरीर पर पानी डालता रहा।

कुछ समय बाद यूहियो थक गया। साँस लेने के लिए एक मिनट रुका। तभी ह्वेल की आँखों पर उसकी नज़र पड़ी।



उसे तुरंत अपना वादा याद आया। फिर बाल्टी लेकर समुद्र की तरफ चल पड़ा। अब तक न जाने कितनी बाल्टी भर के पानी डाला होगा? यह तो उसे याद ही नहीं रहा।

बस... पानी डालता रहा, डालता रहा। थकान के मारे अब उससे चला भी नहीं जा रहा था। पैर लड़खड़ाने लगे।



इतने में यूहियो के दादा गाँववालों के साथ वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने यूहियो को गोद में उठाया और बोले, "बस! बस! बहुत हो गया। अब हम सब संभाल लेंगे।" एक चट्टान की छाँव में यूहियो को लिटाया गया।

सभी मिलकर बरतनों में पानी भर–भर के ह्वेल पर डालते रहे। कुछ लोगों ने अपनी कमीज़ भिगोकर ह्वेल के शरीर पर बिछा दी। उसके सारे शरीर को भिगो दिया।

शाम होते होते बड़ी बड़ी लहरें आने लगीं और ह्वेल की पूँछ को भिगो लिया। हर लहर ने टकरा–टकरा कर ह्वेल में नई जान डाल दी। फिर एक बड़ी लहर उसे पत्थरों के बीच से खींच लाई। एक पल के लिए वह स्थिर वैसे ही पड़ी रहा। फिर ज़ोर से अपनी पूँछ को पटका और तैरकर गहरे समुद्र में जा पहुँची।

सब खड़े होकर ह्वेल को समुद्र में गायब होते हुए देखते रहे। यूहियो चट्टान की छाँव में शांति से सो रहा था।

जापान की कहानी



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

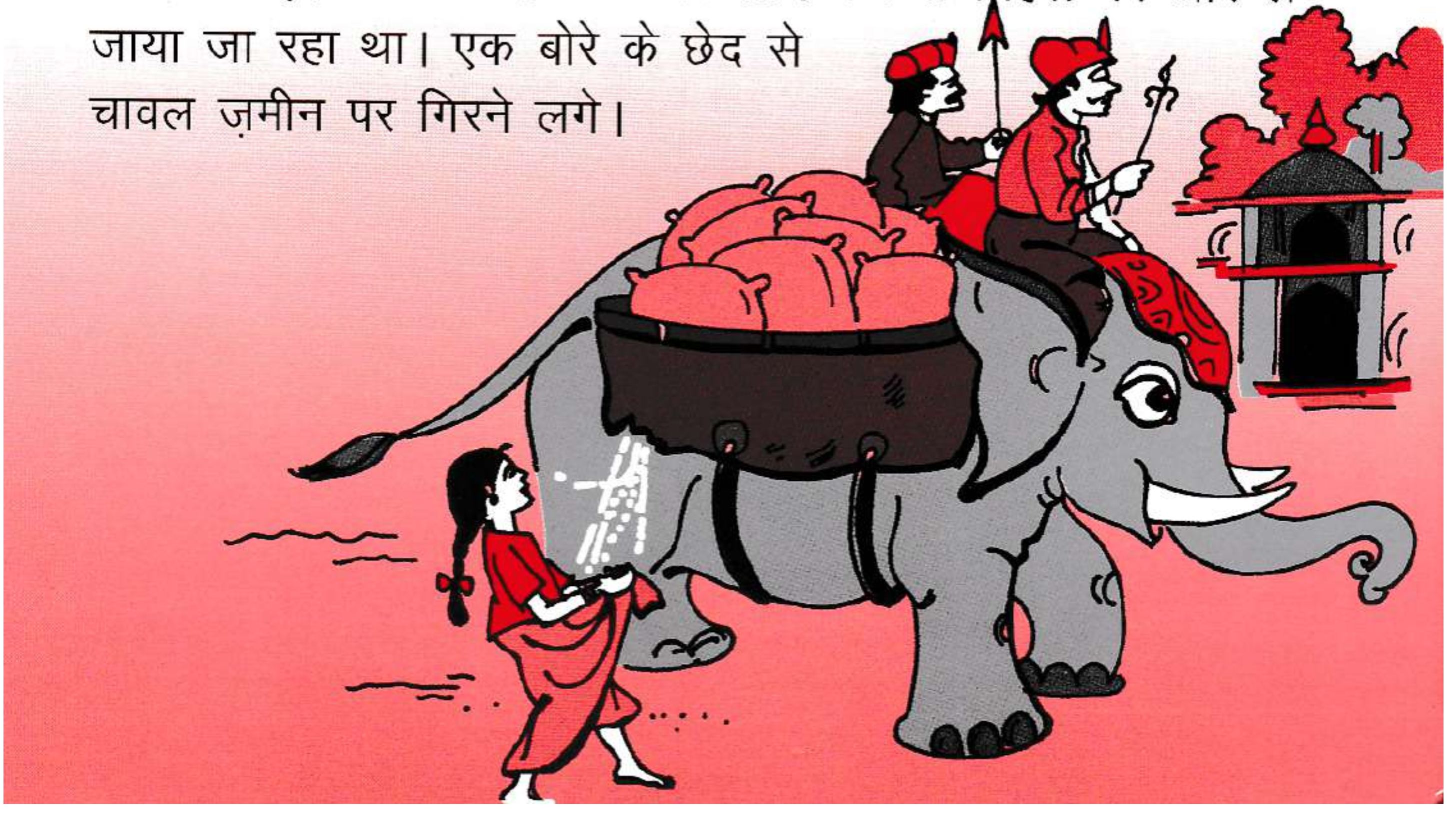
एक दाना चावल

बहुत समय पहले की बात है। एक देश में जनता अपने खेत में उगे धान का अधिकांश हिस्सा सरकार को दे देती थी। यह क्रम कई सालों तक चलता रहा।

एक बार देश में घोर अकाल पड़ा। लोगों के पास खाने के लिए भी चावल नहीं बचा। मंत्रियों ने राजा को सलाह दी– "सरकार! भंडार खोल दीजिए। लोगों के बीच चावल बाँट दीजिए।"

"अकाल कितने दिन तक बना रहेगा, हमें पता नहीं है। राजमहल में हमेशा चावल होना चाहिए। हमें अक्सर दावत भी देनी पड़ती है," कहकर राजा ने चावल देने से इनकार कर दिया।

एक दिन राजमहल में दावत के लिए गोदाम से चावल के बोरे निकाले गए। बोरों को हाथियों पर लाद कर राजमहल की ओर ले जाया जा रहा था। एक बोरे के छेद से चावल ज़मीन पर गिरने लगे।



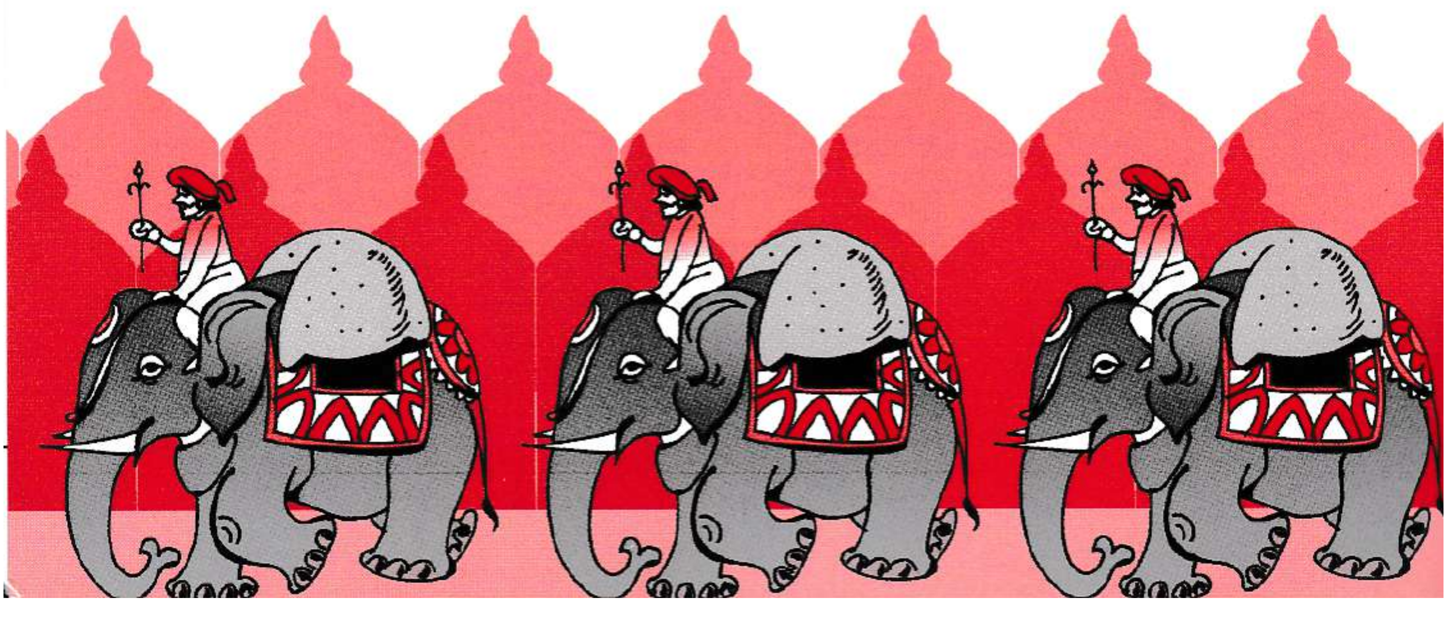
इसे सीमा नाम की बच्ची ने देख लिया। वह गिरते हुए चावलों को अपने लहंगे में इकट्ठा करते हुए हाथी के साथ–साथ चल पड़ी।

राजमहल के द्वार पर पहुँचते ही सिपाहियों ने उससे पूछ–ताछ की। सीमा ने कहा, ''बोरे से चावल ज़मीन पर गिर रहे थे। मैं इन्हें इकट्ठा करके राजा को देना चाहती हूँ।''

सीमा की ईमानदारी के बारे में सुनकर राजा ने उसे बुलाया और कहा, ''मैं तुम्हें कुछ इनाम देना चाहता हूँ। तुम्हें जो चाहिए माँग लो।''

सीमा ने कहा, ''मुझे कोई इनाम नहीं चाहिए। फिर भी आप चाहें तो मुझे सिर्फ एक दाना चावल दे दीजिए। इतना काफी है।''

राजा आश्चर्य चकित रह गया। बोला, ''मैं राजा हूँ! अपनी हैसियत के अनुसार इनाम देना चाहता हूँ। तुम कुछ और माँगो।''

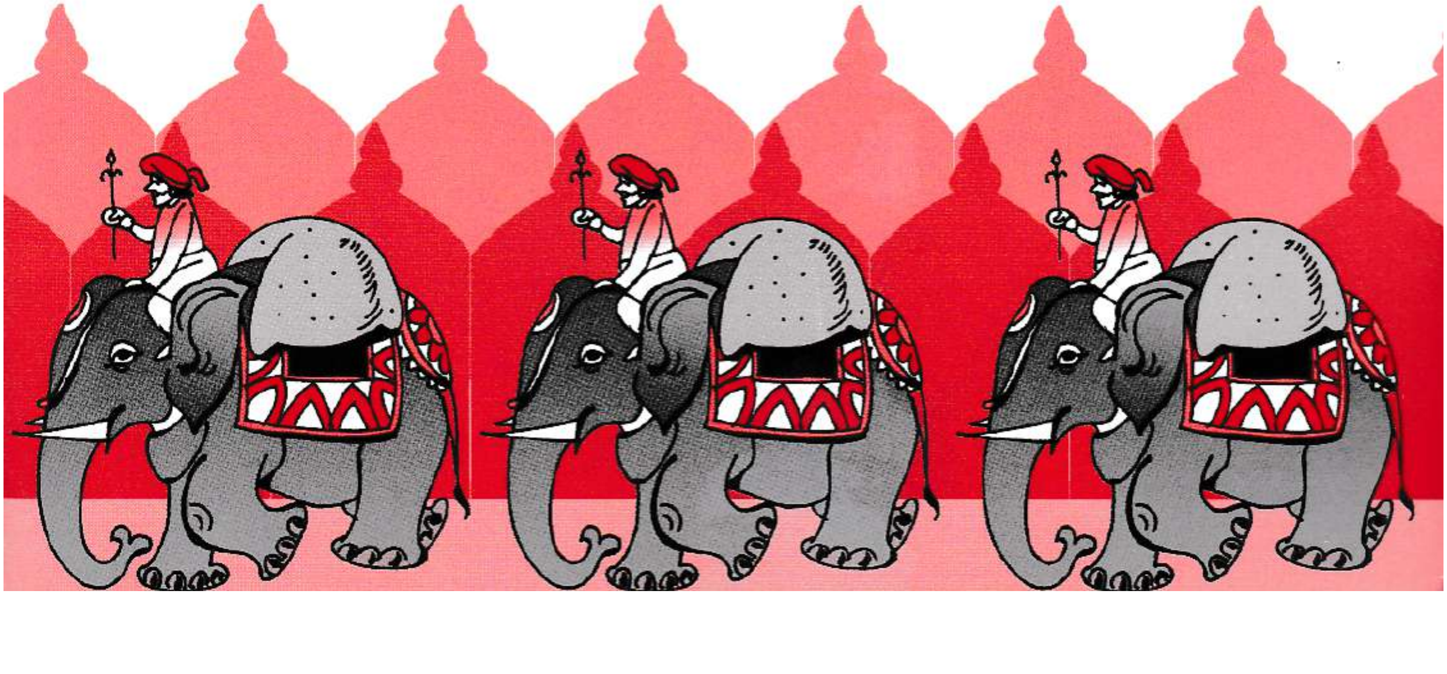


सीमा ने सोचकर कहा, "ठीक है! आज मुझे एक दाना चावल दे दीजिए। कल दो दाने, परसों चार दाने, इस तरह हर रोज़ पहले दिन दिए गए चावल से दुगुना चावल दीजिए। ऐसे तीस दिन तक दीजिए।"

राजा को सीमा की यह माँग बहुत ज़्यादा नहीं लगी। उसने सीमा की बात तुरंत मान ली। सीमा को उस दिन एक दाना चावल दिया गया। दूसरे दिन दो दाने चावल, तीसरे दिन चार दाने, दसवें दिन 512 दाने चावल दिए गए। यह एक मुट्ठी भर के बराबर थे।

सोलहवें दिन उसे दो टोकरी चावल दिए गए। उसमें 32,768 चावल के दाने थे। राजा ने सोचा, "इस दोगुना वाले तरीके से तो जो मैंने सोचा था उससे कहीं ज़्यादा चावल देने पड़ रहे हैं। फिर भी कोई बात नहीं।"

चौबीसवें दिन सीमा को आठ टोकरियों में 83,88,608 दाने चावल दिए गए। सत्ताईसवें दिन 64 टोकरियाँ 32 हाथियों पर



लादकर सीमा के घर भेजी गईं, जिनमें 6,71,08,864 दाने चावल थे। 'एक दाना चावल से शुरू होकर चावलों की मात्रा इतनी बढ़ गई,' अब राजा परेशान होने लगा।



तीसवें दिन राजा का गोदाम खाली हो गया। 256 हाथियों पर चावल के 53,68,70,912 दाने सीमा के घर भेजे गए। राजा ने बच्ची से पूछा, "तुम इतने चावल लेकर क्या करोगी?"

"मैं भूख से पीड़ित लोगों में इन्हें बाँट दूँगी। आप को भी एक टोकरी चावल दूँगी। क्या आप मुझसे वादा करेंगे कि भविष्य में आप केवल अपनी ज़रूरत भर के चावल ही रखेंगे?" सीमा ने पूछा। राजा ने हामी भर दी, "ठीक है। मैं वैसा ही करूँगा।"

तीस दिन में कुल मिलाकर सीमा को चावल के 1,07,37,41,823 दाने मिले।

एक कैलेण्डर लेकर हर एक दिन सीमा को मिले चावल की संख्या लिखो। फिर उसका कुल योग करने पर सीमा को मिले हुए चावल की संख्या मिलेगी।

भारत की लोक कथा

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू

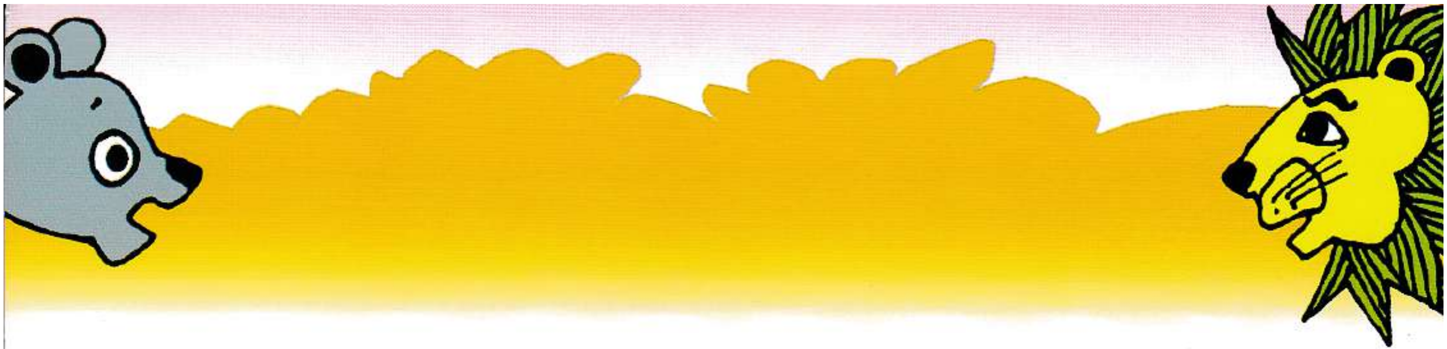


चमत्कारी कंकड़

नन्हा भालू रोज़ नदी के किनारे टहलने जाता। रास्ते में पड़े सुंदर-सुंदर कंकड़ों को इकट्ठा करता। उसके घर में जहाँ देखो वहीं कंकड़-पत्थर का ढेर नज़र आता।

एक दिन उसे लाल रंगवाला एक पत्थर मिला। नन्हा भालू उस खूबसूरत पत्थर को देखकर बहुत खुश हुआ और उसका मज़ा लेते हुए चल रहा था।

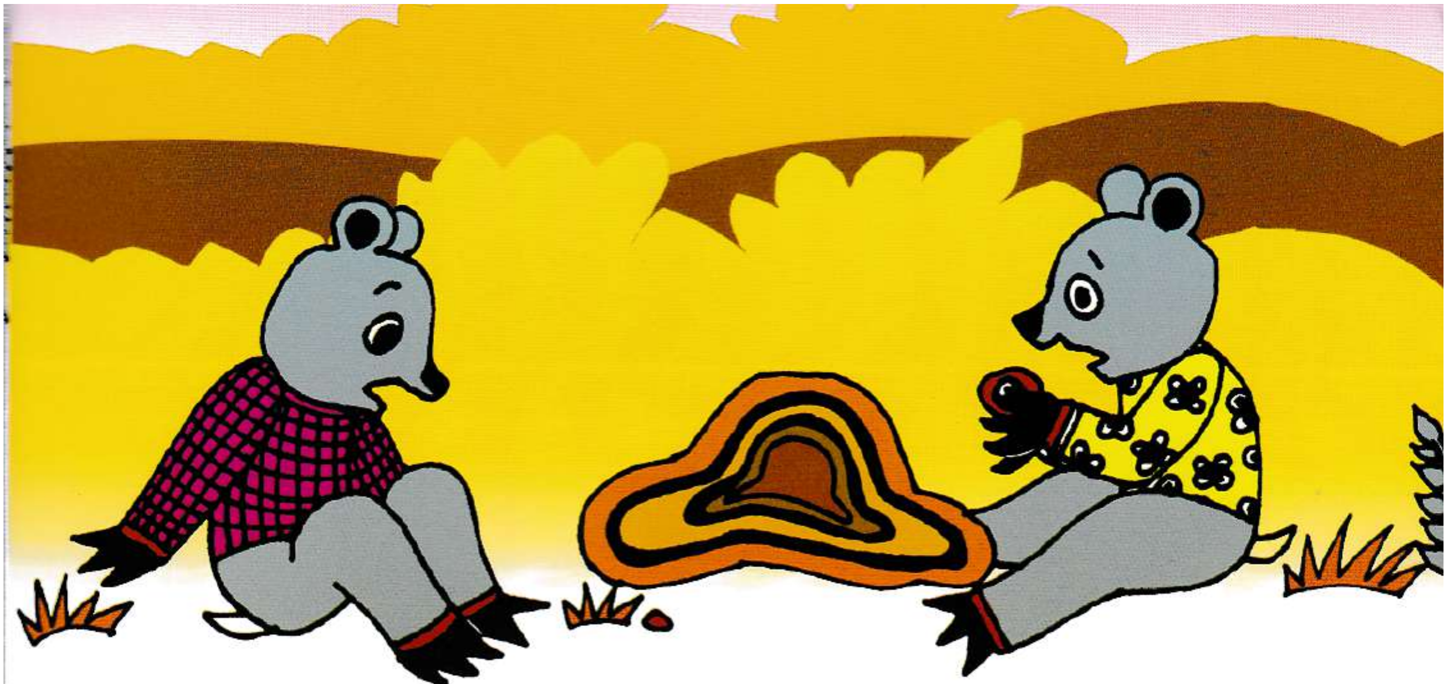
अचानक बारिश शुरू हो गई। 'अगर बारिश रुक जाती तो कितना अच्छा लगता,' नन्हे भालू ने सोचा। अचरज की बात तो यह हुई कि तुरंत बारिश रुक गई।



'अरे! यह तो कोई चमत्कारी पत्थर लगता है! इसे हाथ में रखकर जैसा सोचते हैं वैसा ही होता है। मैं इसे माँ और पिताजी को दिखाऊँगा,' नन्हा भालू खुशी-खुशी घर की ओर चल पड़ा।

चलते-चलते अचानक नन्हे भालू के पैर रुक गए। बाप रे! सामने एक शेर खड़ा था। नन्हा काँप उठा। तभी उसे पत्थर की याद आई। उसने सोचा, 'अगर मैं एक चट्टान बन जाता तो...' तुरंत ही नन्हा एक चट्टान बन गया। उसके हाथ में जो लाल पत्थर था, नीचे गिर पड़ा।





अच्छा हुआ कि शेर के पंजों से नन्हा बच गया। लेकिन नन्हा फिर से भालू कैसे बने? पत्थर तो नीचे पड़ा हुआ था!

उधर नन्हे के माता-पिता चिंता में पड़ गए, 'अंधेरा हो चुका है। नन्हा अभी तक घर क्यों नहीं लौटा?' उन्होंने पास-पड़ोस में पूछताछ की। मगर नन्हे को किसी ने भी नहीं देखा था।

इस तरह कई दिन बीत गए। नन्हे के माता-पिता उसकी तलाश में भटकने लगे। एक दिन घूमते-घूमते थक कर वे दोनों एक चट्टान पर जा बैठे।

वह चट्टान बना हुआ नन्हा भालू ही था। अपने माता-पिता को देखते ही नन्हा बड़ा खुश हुआ। मगर उसके माँ-बाप उसे कहाँ पहचानते!

नन्हे की माँ ने पास में पड़ा हुआ लाल पत्थर उठाया। 'आह! हमारे नन्हे को कंकड़-पत्थर बहुत पसंद हैं,' सोचते हुए उसने पत्थर को चट्टान पर रख दिया।

चट्टान बने हुए नन्हे ने सोचा, 'काश, मैं फिर से भालू बन जाऊँ तो कितना अच्छा हो!' पत्थर को तो माँ ने चट्टान पर रख ही दिया था। तुरंत चट्टान नन्हा भालू बन गया। उसे देख माता-पिता बहुत खुश हुए और गोद में उठा लिया। खुशी के मारे उसे हवा में उछालने लगे।



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी
Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

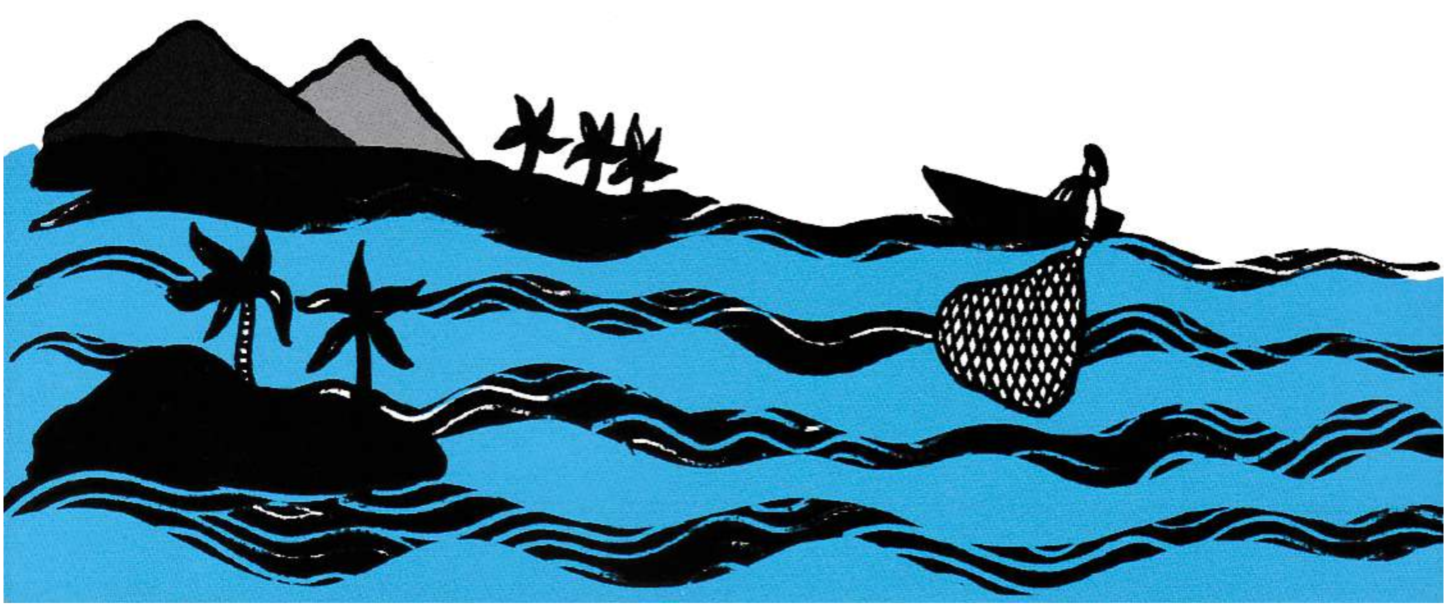
मछुआरा और जिन्न

समुद्र तट पर एक गाँव था। वहाँ एक मछुआरा रहता था। वह दिन में तीन बार समुद्र में जाल फेंकता। जाल में फँसी हुई मछलियों को बेच अपना गुज़ारा करता था।

एक दिन उसने हमेशा की तरह मछली पकड़ने के लिए जाल फेंका। जब उसने जाल को बाहर खींचने की कोशिश की तो उसे भारी पाया। उसमें एक जानवर का मृत शरीर था।

मछुआरे ने उसे बाहर निकाल कर दुबारा जाल फेंका। 'कम से कम इस बार तो अच्छी मछलियाँ जाल में फँस जाएँ' वह मन ही मन प्रार्थना करने लगा।

इस बार भी उसने बड़ी मुश्किल से जाल बाहर खींचा। जाल में एक बड़ा घड़ा फँसा हुआ था। उसमें पत्थर, मिट्टी और काँच के टुकड़े भरे हुए थे।



"हाय! यह कैसी परीक्षा है? एक भी मछली हाथ नहीं आई," मछुआरा निराश हो गया। अब उसने आखिरी बार जाल फेंका।

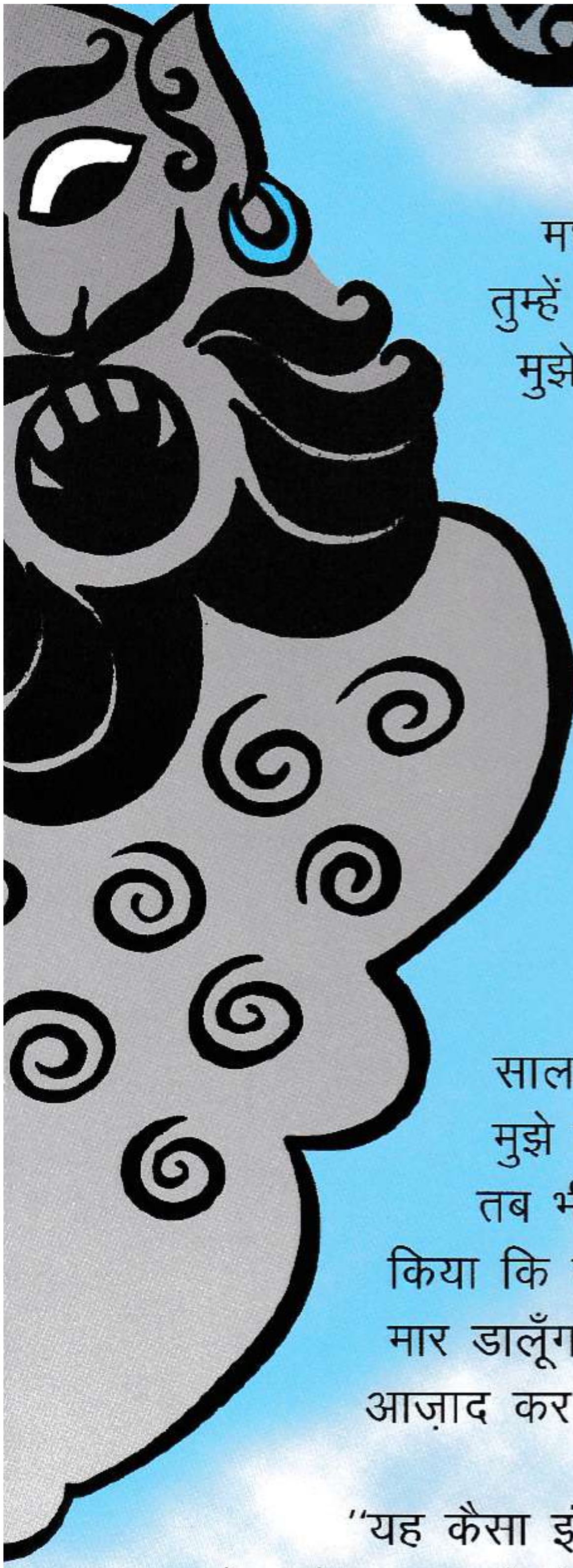
तीसरी बार भी जाल भारी था। अरे यह क्या! जाल में एक पीतल की सुराही थी। 'कम से कम इसे बेचकर आज के खाने का इंतज़ाम तो कर ही लूँगा,' यह सोचते हुए मछुआरे ने सुराही को खोला। उसके अंदर कुछ भी नहीं था। अचानक उसमें से काला धुंआ निकलने लगा।

धुंआ धीरे–धीरे फैलकर आसमान तक पहुँच गया। अब उसमें से एक आकार उभरा। वह एक जिन्न था। देखते ही देखते जिन्न का सिर आसमान को छूने लगा। उसकी आँखें हीरे जैसी चमक रही थीं। मुँह गुफा की तरह था।

उसे देखते ही मछुआरे के होश उड़ गए। डर के मारे उसके हाथ–पैर काँपने लगे। मुँह सूख गया। वह मूर्ति समान जड़ हो गया।

जिन्न बोला, "अब मैं तुम्हें मार डालूँगा।"





मछुआरे ने साहस करके कहा, "मैंने ही तो तुम्हें समुद्र से बाहर निकाला है। फिर तुम मुझे क्यों मारना चाहते हो?"

जिन्न ने कहा, "मैं कई सदियों से इस सुराही में बंद पड़ा था। शुरू में मैंने सोचा था कि जो भी मुझे आज़ाद करेगा उसे बहुत सारी संपत्ति दूँगा। लेकिन कोई भी नहीं आया।"

मछुआरे ने पूछा, "फिर क्या हुआ?"

जिन्न ने कहा, "इस तरह चार सौ साल बीत गए। तब मैंने सोचा कि जो भी मुझे मुक्त करेगा, उसे मैं तीन वर दूँगा। तब भी कोई नहीं आया। फिर मैंने निश्चय किया कि जो भी मुझे आज़ाद करेगा उसे मैं मार डालूँगा। दुर्भाग्यवश अब तुमने मुझे आज़ाद कर दिया।"

"यह कैसा इंसाफ है? मदद करने पर भला कोई दंड देता है!" मछुआरे ने हिम्मत जुटाकर कहा।



"हाँ! अब मेरा समय और बरबाद मत करो," कहते हुए जिन्न मछुआरे के करीब आने लगा।

'इस जिन्न से कैसे बचूँ?' मछुआरा सोचने लगा। फिर उसने जिन्न को बातों में लगाया, "ठीक है, मगर मेरी एक शंका है। तुम तो इतने बड़े हो कि आकाश को छू सकते हो। तुम्हारे पैर के नाखून भी इस सुराही के अंदर घुस नहीं सकते। फिर तुम इसके अंदर इतने साल कैसे रहे होगे? कहीं तुम झूठ तो नहीं बोल रहे हो?" मछुआरा जिन्न का मज़ाक उड़ाने लगा।

जिन्न ने तुरंत कहा, "अरे! तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं। यह लो! मैं अभी इसके अंदर घुसकर दिखाता हूँ।" वह अपने शरीर को सिकोड़ते हुए सुराही के अंदर घुस गया।

बस! मौका पाकर मछुआरे ने झट सुराही का ढक्कन बंद कर दिया। "हज़ार साल और इसी तरह बंद पड़े रहो," कहते हुए मछुआरे ने सुराही को समुद्र में वापिस फेंक दिया।

अरेबियन् नाइट्स



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

सबसे बड़ा धन

एक गाँव में तीन भाई रहते थे। वे बहुत बुद्धिमान थे। एक दिन उनके बूढ़े पिताजी ने उन्हें बुलाया और कहा, "बच्चों, तुम्हें देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। न ज़ेवर, न ज़मीन, न ही भेड़–बकरी। मगर मैंने तुम्हें सबसे कीमती दौलत दी है। तुम्हारा चातुर्य! अब मैं निश्चिंत होकर मर सकता हूँ।"

पिताजी की मौत के बाद तीनों भाइयों ने अपना ज्ञान बढ़ाने की सोची। वे एक लंबी यात्रा पर निकल पड़े। कई देश घूमे। एक दिन उन्हें एक सिपाही नज़र आया। वह कुछ ढूँढ रहा था। तीनों भाई उस सिपाही से बात करने के लिए रुक गए।



भाई 1: भाई साहब! क्या आप किसी ऊँट को ढूँढ रहे हो?

सिपाही: हाँ।

भाई 2: उसे क्या बाईं आँख से दिखाई नहीं देता?

भाई 3: क्या उस पर एक महिला सवारी कर रही थी?

सिपाही: बिल्कुल! तो आपको मेरा ऊँट मिल गया है। कहाँ है वो?

भाई 1: पर हमने तो आपके ऊँट को देखा ही नहीं।

सिपाही: क्या? फिर आपको मेरे ऊँट के बारे में इतना सब कुछ कैसे पता चला? आप ज़रूर कुछ छिपा रहे हैं।

यह कहकर सिपाही उन्हें अपने राजा के पास ले गया और सारी बात बताई। तब तीनों भाइयों ने राजा से कहा कि उन्होंने ऊँट को कभी नहीं देखा। राजा चकित रह गए।

राजा : मेरे सिपाही ने आपको कुछ नहीं बताया। स्वयं आपने ऊँट के बारे में सब कुछ बता दिया। यह कैसे संभव है?

तीनों भाई: हमने अपनी चतुराई से समझ लिया।

राजा : जिसे आपने देखा ही नहीं, उसके बारे में आप कैसे अंदाज़ा लगा सकते हैं? चलो हम आपकी बुद्धि की परीक्षा लेते हैं।

राजा ने अपने सेवकों के कान में कुछ फुसफुसाया। सेवक बाहर जाकर एक पेटी लेकर आए। तीनों भाई सेवकों के हर कदम को बहुत ध्यान से देख रहे थे।

राजा : क्या तुम बता सकते हो कि इस पेटी में क्या है?

भाई 1: इसमें कोई हल्की सी चीज़ है।

भाई 2: वह गोलाकार है।

भाई 3: वह एक अनार है।

राजा ने पेटी खुलवाई। आश्चर्य! पेटी के अंदर सचमुच एक अनार था।

राजा : शाबाश! आपको कैसे पता चला कि पेटी के अंदर अनार ही है?

भाई 1: आपके सेवक पेटी को जिस तरीके से ला रहे थे हमने उसे गौर से देखा। मुझे ऐसे लगा कि पेटी में कोई भारी चीज़ नहीं है। हमारी परीक्षा लेने के लिए सिर्फ एक चीज़ रखी गई है।



भाई 2: पेटी में एक वस्तु लुढ़क रही थी। उससे मैंने अनुमान लगाया कि वह चीज़ गोलाकार है।

भाई 3: मैंने आपके बगीचे में अनार लगे हुए देखे। पेटी में एक ही चीज़ रखी गई थी और वह गोल थी, मैंने अंदाज़ा लगाया कि वह अनार ही होगा।

राजा : आप लोग सचमुच बहुत चतुर हैं। अब आप यह भी बता दीजिए कि ऊँट के बारे में आप ने कैसे पता लगाया?

भाई 1: ऊँट के पैरों के निशान से मैंने समझ लिया कि वह उसी रास्ते से गया होगा।

भाई 2: सड़क पर दाईं ओर लगे हुए पौधे और घास रौंदे हुए थे। बाईं ओर के पौधे वैसे के वैसे थे। इससे मैंने अंदाज़ा लगाया कि ऊँट को बाईं आँख से नहीं दिखता।

भाई 3: सड़क पर एक स्थान पर ऊँट के पैर मोड़कर बैठने के निशान थे। पास में एक महिला की चप्पल के निशान भी थे।

राजा : वाह भाई। आपकी होशियारी तो सचमुच तारीफ के काबिल है। आप लोगों ने ऊँट की चोरी नहीं की है। वह ऊँट कहीं और गया होगा। मुझे बहुत खुशी होगी अगर आज से आप इसी प्रदेश में रहें और बेहतर शासन करने में मेरी मदद करें।

उसबेक देश की कहानी

तेरा मेरा हिस्सा

राम और श्याम दो भाई थे। एक दिन श्याम ने कहा, ''हमारे पास पिताजी की छोड़ी हुए तीन चीज़ें हैं– एक गाय, एक कंबल और एक आम का पेड़। क्यों न हम इन्हें बराबर बाँट लें?'' राम ने श्याम की बात मान ली।

श्याम चालाक था। बोला, ''गाय का आगे का हिस्सा तेरा और पीछे का मेरा। आम के पेड़ का नीचे वाला भाग तेरा और ऊपर का भाग मेरा। कंबल दिन में तेरे पास रहेगा और रात में मेरे पास।'' भोले–भाले राम ने कहा, ''ठीक है। ऐसा ही करेंगे।''





राम रोज़ गाय को भूसा खिलाता। श्याम सुबह–शाम दूध दुहता और उसे बेचकर पैसे कमाता।

राम रोज़ आम के पेड़ को पानी देता। श्याम आम के फल ले लेता।

राम दिन में कंबल को काम में नहीं ले पाता। रात में श्याम कंबल ओढ़कर आराम से सो जाता। बेचारा राम! ठंड में काँपता रहता।

राम और श्याम की इस दिनचर्या को एक वृद्ध बहुत ध्यान से देख रहा था। एक दिन उसने राम को बुलाकर उसके कान में कुछ कहा। राम मुस्कराते हुए घर लौट आया।

अगले दिन सुबह उठते ही राम ने कंबल को पानी में भिगो दिया। कंबल गीला होने के कारण श्याम उसे रात में ओढ़ नहीं पाया। ठंड में काँपता रहा। वह राम के ऊपर गुस्से से चिल्लाया, "तुमने ऐसा क्यों किया?"

राम बोला, "सुबह के समय कंबल मेरा है। उसका मैं कुछ भी कर सकता हूँ।"

श्याम कुछ न कह पाया। उसके मुँह पर जैसे ताला लग गया। सुबह हुई। श्याम दूध दुहने लगा। राम ने गाय के गले में बंधी रस्सी को खींचा। गाय भड़क गई। गाय ने लात मारी। वह दूध दुह रहे श्याम को लग गई। श्याम एक ओर गिर पड़ा और दूध का बरतन दूसरी ओर।

श्याम चिल्ला उठा, "तुम पागल हो गए हो क्या?"

राम ने जवाब दिया, "गाय का आगे का हिस्सा मेरा है न! मैं उसे खींच रहा हूँ तो तुम्हें क्यों गुस्सा आ रहा है?"



बस! श्याम की बोलती बंद हो गई। वह चुपचाप पेड़ के नीचे सो गया। कुछ ही समय बीता होगा। 'टक...टक...' पेड़ काटने की आवाज़ आई।

श्याम ने घबराकर आँखें खोली। सामने राम पेड़ को काट रहा था। "अरे! अरे! यह क्या कर रहे हो?" श्याम चीखने लगा।

राम ने कहा, "पेड़ का निचला हिस्सा मेरा ही है न! उसी को काट रहा हूँ।" श्याम समझ गया कि अब राम को बेवकूफ बनाना आसान नहीं! उस दिन से दूध और आम बेचकर जो पैसे मिलते उन्हें दोनों भाई बराबर बाँट लेते। कंबल को भी बारी–बारी से ओढ़ने लगे। एक दिन राम ओढ़ता और दूसरे दिन श्याम।



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

तीन रेखाएँ

बात उस समय की है जब लंका में रावण राज करता था। एक दिन उस दस सिरों वाले रावण ने राम की पत्नी सीता का अपहरण कर लिया।

राम ने सीता को छुड़ाने के लिए युद्ध करने का निर्णय किया। वह अपनी वानर सेना के साथ लंका की ओर बढ़े। बहुत दूर सफर करने के बाद वे समुद्र तट पर पहुँचे। लंका पहुँचने के लिए उन्हें समुद्र पार करना था।

समुद्र की लहरें तेज़ी से उमड़ रही थीं। लहरों को काबू में लाने के लिए राम ने बाण चलाया।

तभी समुद्र का राजा प्रकट हुआ और बोला, "समुद्र के अंदर अनगिनत जीव जंतु रहते हैं। सभी प्राणियों की रक्षा करना एक राजा का कर्त्तव्य है। प्रकृति का विरोध करके सफलता नहीं प्राप्त होगी। इसलिए मेरा आप से अनुरोध है कि आप एक मज़बूत पुल बनाकर ही समुद्र पार कीजिए।"



राम ने सबसे सलाह कर अपनी वानर सेना को पुल बाँधने की आज्ञा दी। देखते ही देखते हज़ारों बंदर काम पर जुट गए। बड़े–बड़े पत्थर लादकर वहाँ लाए। एक पल भी विश्राम किए बिना अपने–अपने काम में लगे रहे।



एक गिलहरी अपने मुँह में छोटे–छोटे कंकड़ दबाकर लाने लगी। बड़े–बड़े पत्थरों के साथ जमा करती रही। वह बड़ी फुर्ती से ऊपर–नीचे भाग रही थी। उसे देखकर राम को भी हैरानी हुई, 'इतनी छोटी गिलहरी यहाँ क्या कर रही है?'

गिलहरी को इस तरह आड़े–तिरछे भागते हुए देखकर बंदरों को गुस्सा आ गया। वे चिल्लाने लगे, "अरे तुम! छुटकू सी! इस काम के लायक नहीं हो।" गिलहरी ने सिर उठाकर कहा, "मैं पुल बनाने में मदद करना चाहती हूँ।"



बंदर ठहाका लगाकर हँस पड़े और उसका मज़ाक उड़ाने लगे, "ऐसी बेवकूफों जैसी बात हमने कभी नहीं सुनी।"

गिलहरी ने कहा, "मुझसे बड़े–बड़े पत्थर उठाए नहीं जाते। छोटे–छोटे कंकड़ ही ला सकती हूँ।"

बंदरों ने गिलहरी को बाहर धकेल दिया। फिर भी गिलहरी छोटे–छोटे कंकड़ एक कोने में जमा करती रही। एक बंदर यह बर्दाश्त नहीं कर पाया। चिढ़कर गिलहरी को आसमान की ओर उछाल दिया।



गिलहरी ने ''हे राम'' कहकर पुकारा। राम ने गिलहरी को अपने हाथ में थाम लिया। फिर बंदरों को समझाया, ''तुम बहुत बलवान हो। मगर जो तुम्हारे जैसे शक्तिशाली नहीं हैं उनका मज़ाक उड़ाना ठीक नहीं है। हर प्राणी अपनी क्षमता के अनुसार मदद करता है। प्राणी के शरीर की ताकत से ज़्यादा उसका प्यार और लगन महत्वपूर्ण है। हमें सभी की सहायता की ज़रूरत है।''

राम की इस बात पर जब गौर किया, तो बंदरों को एहसास हुआ कि बड़े–बड़े पत्थरों के बीच छोटे–छोटे कंकड़ों के जुड़े रहने से पुल मज़बूत रहेगा।

राम ने प्यार से गिलहरी की पीठ सहलाई। उसकी पीठ पर तीन रेखाएँ बन गईं। आज भी यह कहा जाता है कि वही रेखाएँ गिलहरी की पीठ पर दिखाई देती हैं।



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

ढोल

ढम...ढम...ढम...ढम... आँगन में बैठा राजू ढोल की आवाज़ सुनकर उठ खड़ा हुआ। उसने सोचा, 'पास वाली गली में क्या हो रहा है? चलकर देखता हूँ।'

थोड़ी देर में ही राजू उछलते–कूदते घर लौटा। तब उसकी माँ हाट पर जा रही थी। राजू ने कहा, "माँ, हाट से मेरे लिए एक ढोल लाना।" उसकी माँ चुप रही और हाट की ओर निकल पड़ी।

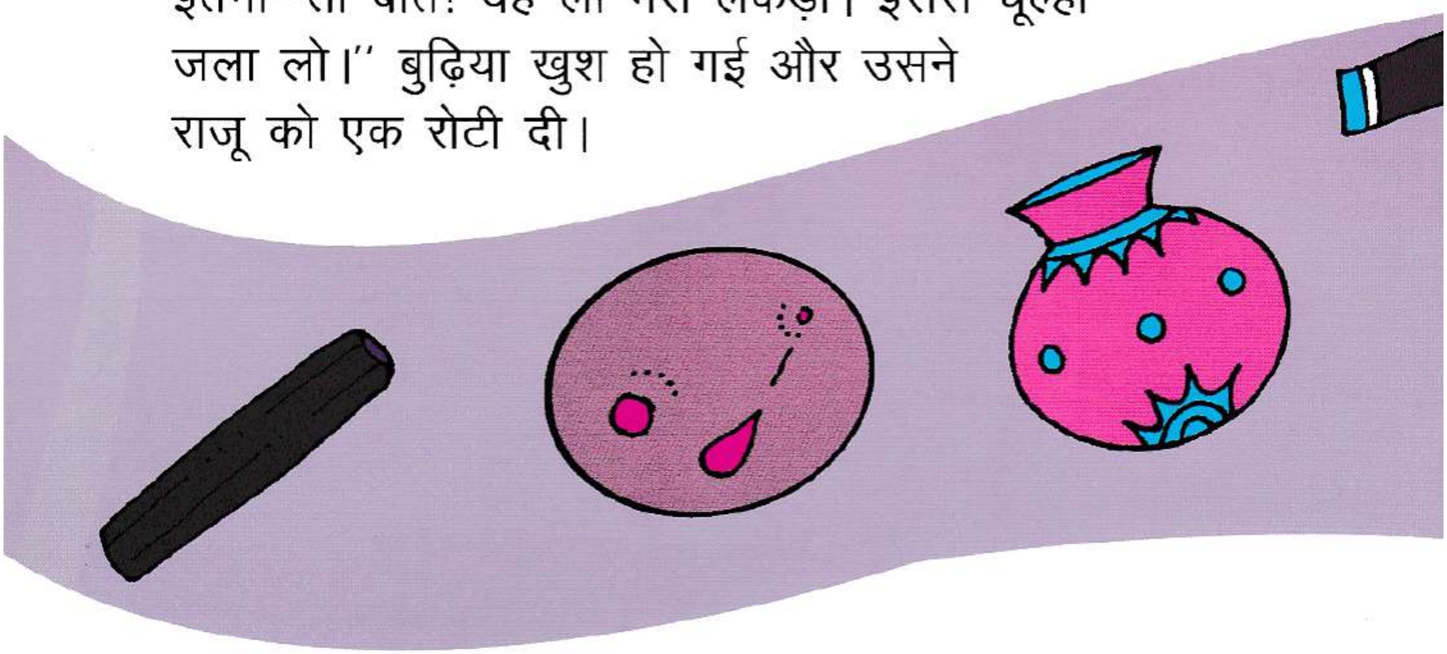
माँ ने हाट पर खेत की फसल बेच दी। उन पैसों से आटा और नमक खरीदा। ढोल खरीदने के लिए उसके पास पैसे बचे ही नहीं। खाली हाथ लौटना उसे बुरा लग रहा था। पर वह बेचारी क्या करती? रास्ते में उसे एक लकड़ी का टुकड़ा मिला। उसने उसे उठा लिया। घर लौटते ही उसे राजू को दे दिया।

राजू कुछ पल लकड़ी को घुमाता रहा। फिर बाहर खेलने चला गया। रास्ते में उसने एक बुढ़िया को देखा।



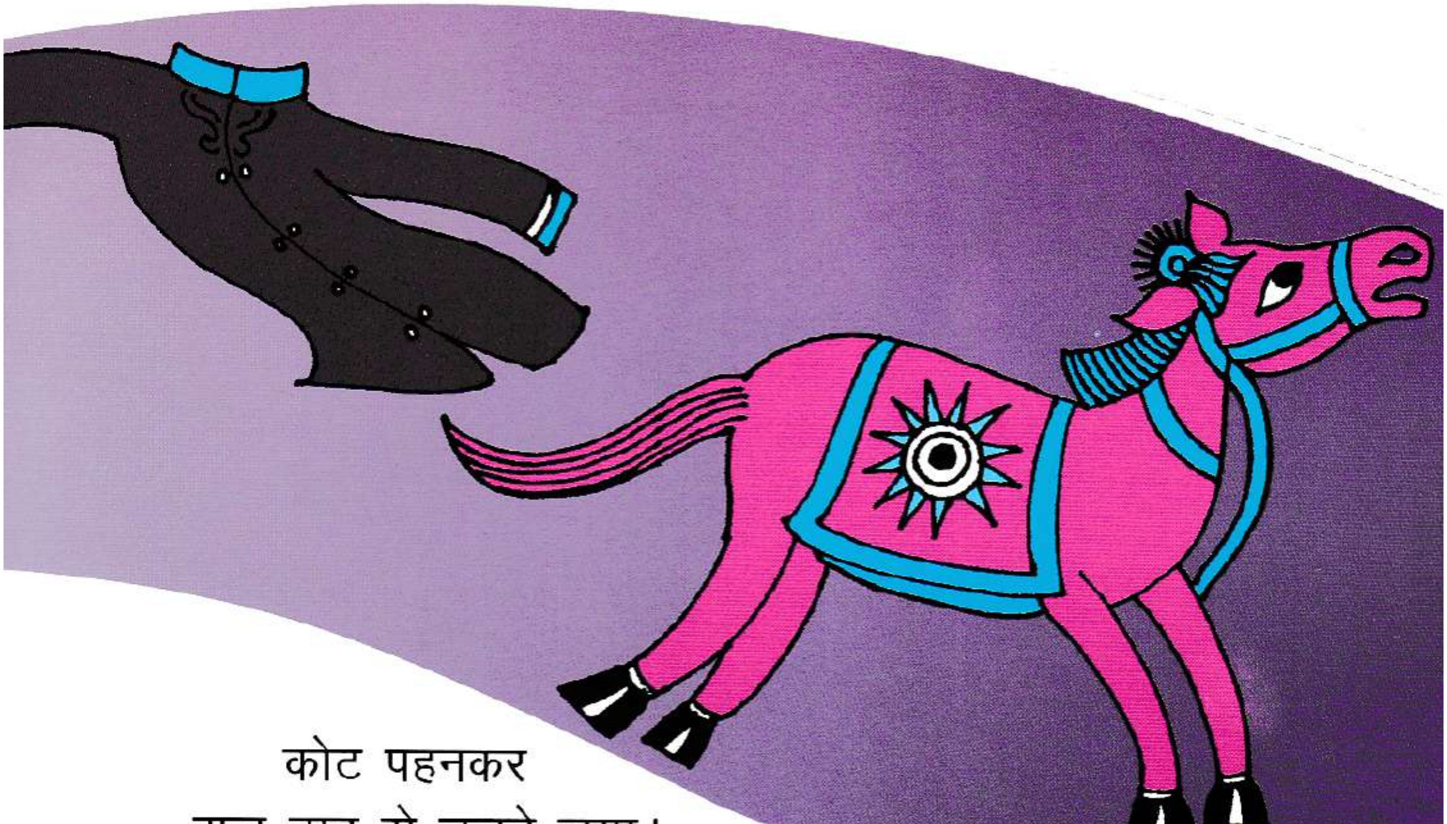
बुढ़िया उपलों से चूल्हा जलाने की कोशिश कर रही थी। उसकी आँखों से आँसू निकल रहे थे। राजू ने बुढ़िया से पूछा, ''आप क्यों रो रही हैं?''

बुढ़िया ने जवाब दिया, ''मैं रो नहीं रही हूँ। उपला गीला है। चूल्हा नहीं जल रहा।'' राजू ने कहा, ''बस इतनी–सी बात! यह लो मेरी लकड़ी। इससे चूल्हा जला लो।'' बुढ़िया खुश हो गई और उसने राजू को एक रोटी दी।



रोटी लेकर राजू आगे बढ़ा। अगली गली में कुम्हार की बच्ची को रोते हुए देखा। राजू ने उसकी माँ से कारण पूछा। माँ ने कहा, ''वह भूख से रो रही है।'' राजू ने तुरंत उसे रोटी दे दी। बच्ची का रोना बंद हो गया। बच्ची की माँ ने राजू को प्यार से एक घड़ा दे दिया।

राजू घड़े को हाथ में लिए नदी किनारे पहुँचा। वहाँ धोबी–धोबिन आपस में लड़ रहे थे, "बचा हुआ एक घड़ा भी टूट गया। अब पानी कैसे उबालें?" राजू ने उन्हें तुरंत अपना घड़ा दे दिया। धोबी खुश हुआ और उसे एक गरम कोट दे दिया।



कोट पहनकर राजू ठाठ से चलने लगा। रास्ते में पुल के किनारे उसे एक आदमी बैठा मिला। वह ठंड से काँप रहा था। राजू ने उसे अपना गरम कोट दे दिया। उस आदमी ने कहा, "बेटा, तुम बहुत दयालु हो। मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ। तुम मेरा घोड़ा ले जाओ।"

घोड़े के साथ चलते–चलते राजू की भेंट कुछ बरातियों से हुई। वे पेड़ के नीचे बैठे थे। राजू के पूछने पर बराती बोले, "दूल्हे के लिए घोड़ा अभी तक नहीं पहुँचा। मुहूर्त का समय निकलता जा रहा है।"

यह सुनते ही राजू ने उन्हें अपना घोड़ा दे दिया। बराती बहुत खुश हुए। दूल्हे ने राजू से कहा, "तुम्हें जो चाहिए माँग लो।"



राजू ने पूछा, "क्या आप अपने बाजेवालों से मुझे एक ढोल दिला सकते हैं?"

दूल्हे ने कहा, "क्यों नहीं?" और उसने बाजेवालों से कहा कि वे राजू को एक ढोल दे दें।

फिर क्या था? पूरे रास्ते एक ही आवाज़ गूँजती रही–ढम...ढमा... ढम, ढम...ढमा...ढम...

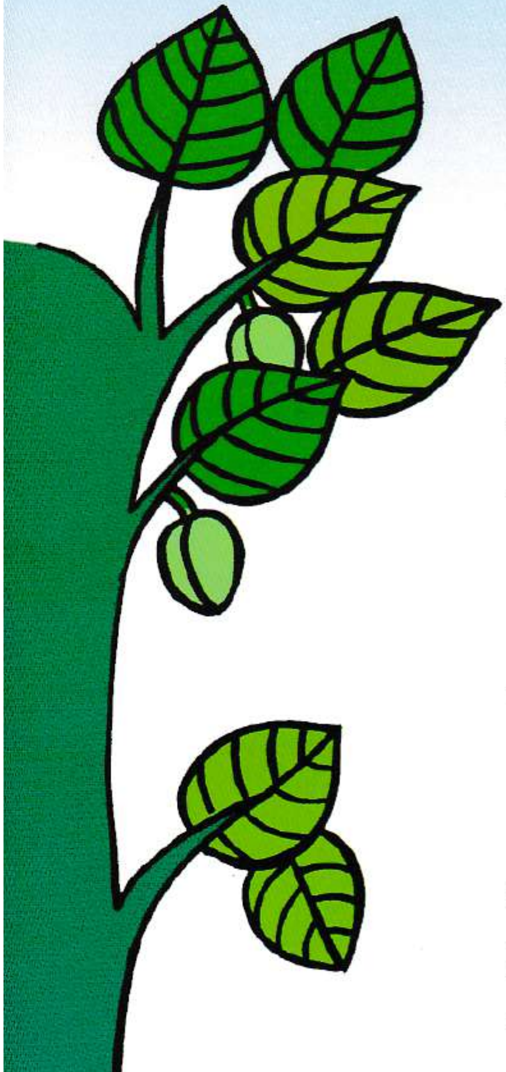
भारत की लोक कथा

पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

प्रकृति का खेल



दोपहर का समय था। धूप बहुत तेज़ थी। एक किसान बादाम के पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। सामने खेत में तरबूज़ की लताएँ ज़मीन पर फैली हुई थीं। लताओं के बीच में बड़े–बड़े तरबूज़ के फल थे।

किसान ने सिर ऊपर उठा कर देखा। पेड़ पर छोटे–छोटे बादाम के फल थे।

"पतली लताओं पर इतने बड़े तरबूज़ और बड़े मज़बूत पेड़ पर छोटे–छोटे बादाम! प्रकृति की लीला भी बहुत ऊटपटाँग है," यह सोचते हुए किसान मन ही मन हँस पड़ा।



किसान यह सोच ही रहा था कि अचानक 'टप' से एक बादाम का फल उसके सिर पर आ गिरा। किसान चौंक गया।

'ओह! अब समझ में आया! बादाम का फल तरबूज़ की तरह बड़ा होता तो मेरी क्या हालत होती?'

प्रकृति की रचना देखकर किसान दंग रह गया और वह घंटों इसके बारे में सोचता रहा।

ईरान की कहानी



मुसाफिर और नारियल

मारकोस नाम का एक यात्री अपने घोड़े पर ढेर सारे नारियल लेकर सफर कर रहा था। चलते–चलते वह रास्ता भूल गया। कुछ दूरी पर उसे एक बालक मिला। उसे रोक कर मारकोस ने रास्ता पूछा। यह भी पूछा कि उसे गाँव तक पहुँचने में कितना समय लगेगा।

बालक ने घोड़े को घूरते हुए देखा और कहा, "आप धीरे जाएँगे तो जल्दी गाँव पहुँच जाएँगे। मगर तेज़ी से चलेंगे तो बहुत देर हो जाएगी।"



मारकोस ने बालक को आश्चर्य से देखा। 'यह कुछ अंट–शंट बोल रहा है,' सोचकर उसने घोड़े को तेज़ी से दौड़ाया। थोड़ी दूर चलते ही घोड़े पर लदे नारियल एक–एक करके गिरने लगे। घोड़े को रोककर उसने सभी नारियल इकट्ठे किए।

"बाप रे! देर हो रही है। जल्दी गाँव पहुँचना है," इस बार घोड़े को और तेज़ी से दौड़ाया। दोबारा से नारियल चारों तरफ गिर कर बिखर गए। घोड़े को रोककर उसने फिर से नारियल इकट्ठे किए। इस तरह रास्ते भर घोड़े को रोक–रोक कर नारियल इकट्ठे करते हुए जब तक वह गाँव पहुँचा तब तक अंधेरा हो चुका था।

बालक की बात अब मारकोस समझा। सोचने लगा, 'ओह! शायद इसीलिए बालक ने कहा था कि धीरे चलने पर गाँव जल्दी पहुँच जाऊँगा।'

फिलिपीन्स की कहानी



© **कथा झरना टीम** 2008
पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

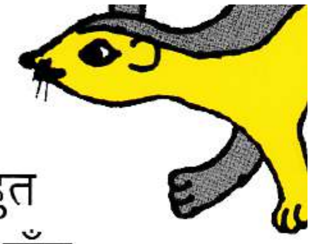
चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

सोने का नेवला

बात तब की है जब पाण्डव विजय उत्सव धूम–धाम से मना रहे थे। धर्मराज ने सभी राजाओं को बुलाया हुआ था। इस अवसर पर वे अपनी प्रजा को अन्नदान दे रहे थे।

अचानक एक नेवला वहाँ आया और ज़मीन पर लोटने लगा। वह इन्सान की आवाज़ में ज़ोर–ज़ोर से हँसने लगा। सभी उसे आश्चर्य से देखने लगे। उसके शरीर का आधा हिस्सा सोने जैसा चमक रहा था।





नेवला धर्मराज से बोला, "हे राजा! यह उत्सव बहुत अद्‌भुत है। तुम अपनी धन संपत्ति बड़ी ही उदारता से बाँट रहे हो। फिर भी यह दान उस दान के बराबर नहीं है जो मुझे एक गरीब ने दिया था।"

धर्मराज ने पूछा, "क्यों? यहाँ तुम्हें क्या कमी दिखाई पड़ी?"

"पहले मेरा आधा शरीर सुनहरे होने की कहानी सुनिए," कहकर नेवले ने अपनी कहानी सुनाना आरंभ किया।

"एक गाँव में एक गरीब आदमी था। वह हर रोज़ खेत में काम करके थोड़ा बहुत अनाज घर लाता। उसे अपने परिवार वालों के साथ बाँट कर अपना पेट पालता।

एक बार गाँव में अकाल पड़ा। खाने के लिए कुछ नहीं मिला। तीन दिन तक भूखे रहने के बाद उस गरीब आदमी को कुछ अनाज के दाने मिले। उन्हें पीसकर उसने अपनी पत्नी, बेटे और बहू के साथ बाँट लिया।

अचानक एक वृद्ध यात्री वहाँ आ पहुँचा। उसने कहा, "मैं बहुत भूखा हूँ। कृपया मुझे खाने के लिए कुछ दीजिए।" उस गरीब आदमी ने अपने हिस्से का खाना उसे दे दिया। मगर वृद्ध फिर भी भूखा था। उसने और भोजन माँगा।

गरीब आदमी की पत्नी ने तुरंत उसे अपना हिस्सा दे दिया। लेकिन वृद्ध की भूख नहीं मिटी। यह देखकर गरीब आदमी के बेटे ने भी अपने हिस्से का भोजन उसे दे दिया। वृद्ध ने उसे भी खा लिया, फिर और भोजन माँगा। अंत में, गरीब आदमी की बहू ने भी अपना हिस्सा उसे दे दिया।

तब जाकर वृद्ध की भूख मिटी। उसने कहा, "आप सब ने भूखे होते हुए भी अपने हिस्से का खाना मुझे दिया। राजाओं द्वारा कराए गए यज्ञ और दान भी इसकी बराबरी नहीं कर सकते।" उसने सभी को आशीर्वाद दिया और गायब हो गया।

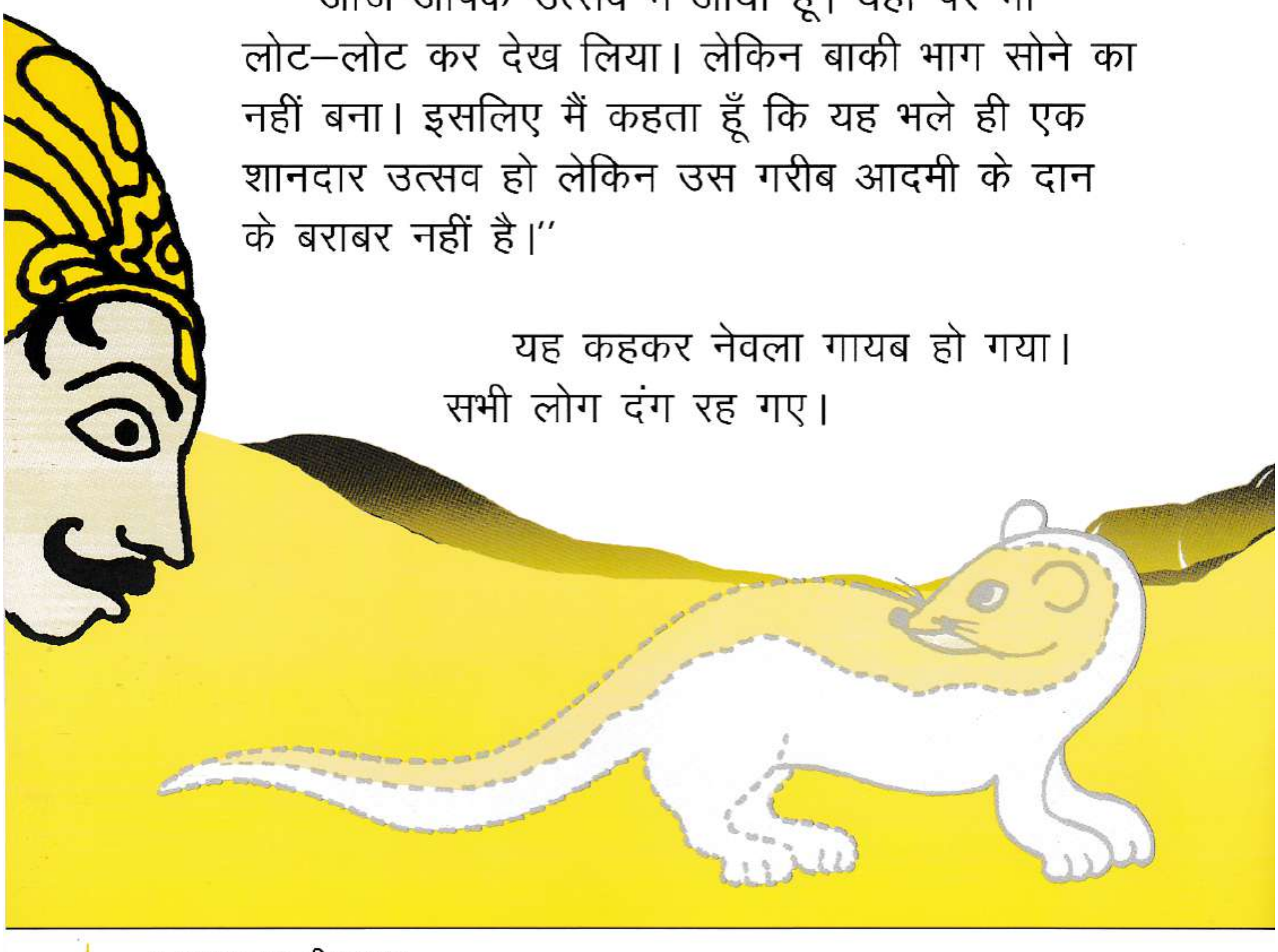


मैं यह सब छिप कर देख रहा था। जैसे ही मैं धीरे से बाहर आया, वहाँ ज़मीन पर बिखरा थोड़ा सा आटा मेरे शरीर के आधे हिस्से में चिपक गया। वह हिस्सा सुनहरे रंग में बदल गया। मेरे शरीर का शेष हिस्सा वैसे का वैसा ही रह गया।

उस दिन से मैं जगह–जगह की यात्रा कर रहा हूँ। लोट–लोट कर देखता हूँ कि मेरे शरीर का बाकी हिस्सा सोने का बनता है कि नहीं। अभी तक तो ऐसा नहीं हुआ।

आज आपके उत्सव में आया हूँ। यहाँ पर भी लोट–लोट कर देख लिया। लेकिन बाकी भाग सोने का नहीं बना। इसलिए मैं कहता हूँ कि यह भले ही एक शानदार उत्सव हो लेकिन उस गरीब आदमी के दान के बराबर नहीं है।''

यह कहकर नेवला गायब हो गया। सभी लोग दंग रह गए।



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

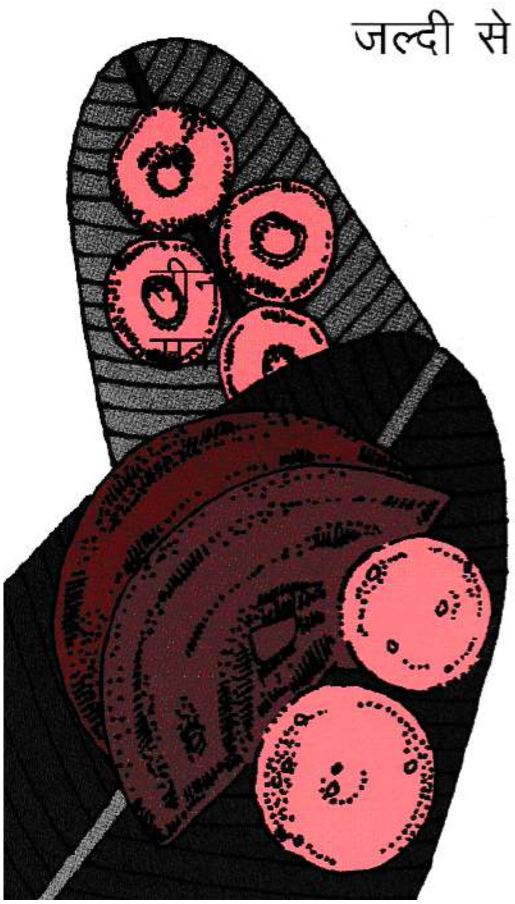
चित्रांकन:
उमा कृष्णस्वामी

आओ पता लगाएँ



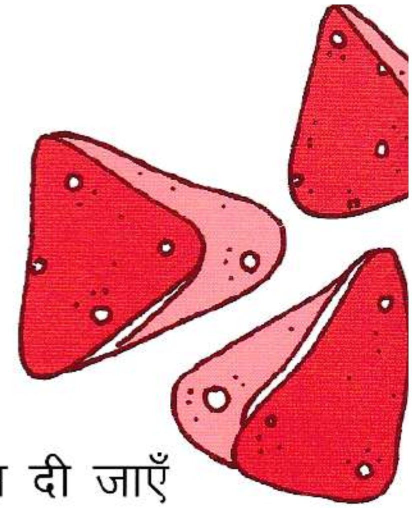
गोल गोल गेंद सा, पर खेल नहीं सकते
मीठा मीठा मुँह में डाला, रोक नहीं सकते

दाल–मसाला उसके अंदर, ऊपर मैदा लिपटा,
गेंद सा आकार बनाया, कर दिया थोड़ा चपटा,
गर्म तेल में उसको डाला, कर दिया लालम लाल,
जल्दी से तुम नाम बताओ, स्वाद बड़ा कमाल



तीन कोने की झोंपड़ी, उसमें बैठे आलू
उसको चटकर जाते, शबनम हो या लालू

चीनी, चावल, मेवा, दूध सभी संग में आए
खूब पके आँच में, सभी मज़े से खाएँ



उबले तेल में फूलकर नाचे झमा–झम
गेहूँ के आटे से बनती, खाते तुम और हम

गोल–गोल उलझी रस्सी जैसी, फिर तल दी जाएँ
फिर वह डूबे चाशनी में, गरमा–गरम सब खाएँ

दाल चावल भीगे सारी रात, काले तवे ने किया कमाल
सांभर चटनी हों जब साथ, उत्तर दक्षिण करें धमाल

मावे की गेंद बनाई, अंदर मेवा डाला
तलकर उसको लाल किया, फिर चाशनी में पाला

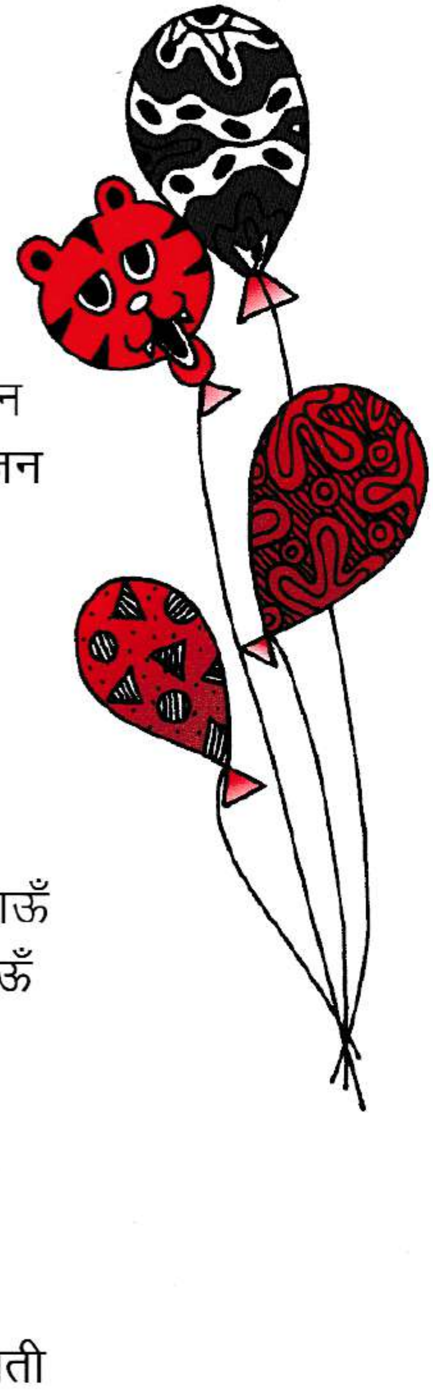


गेहुआँ पीला रंग, बीच में गोल छेद
उड़द दाल से बनता, खोलो मेरा भेद

समोसा, बड़ा, लड्डू, कचौरी, गुलाब जामुन,
पूड़ी, डोसा, खीर, जलेबी।



एक पैर पर जमकर नाचूँ
थक जाने पर लेट जाऊँ

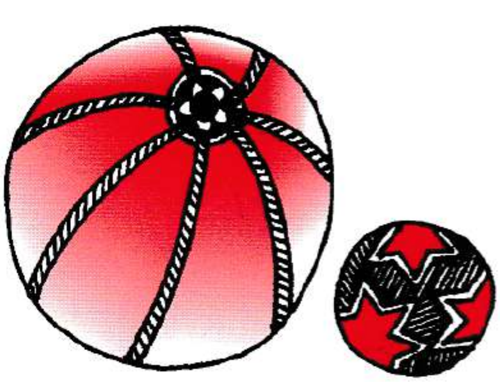


रंग–बिरंगे कागजों से बना मेरा तन
आसमान में उड़ाता मुझको जन–जन

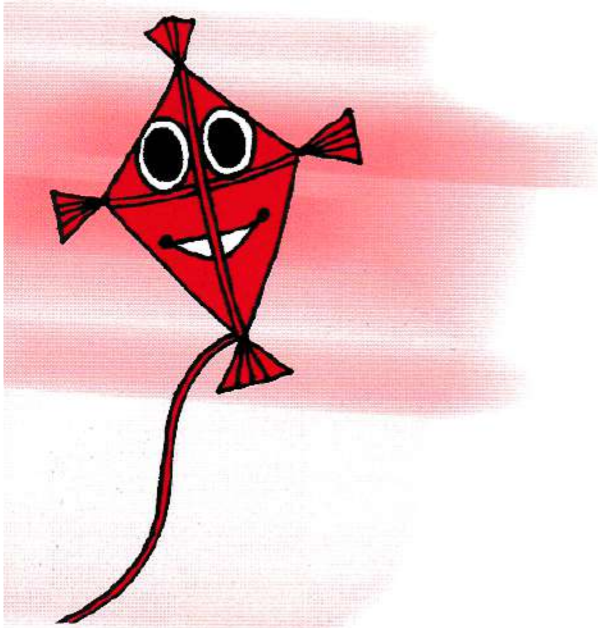
ऊपर फेंकों तो, धरती पर आऊँ
धरती पर मारो तो ऊपर जाऊँ

हवा भरो तो बढ़ता जाऊँ
बहती हवा में उड़ जाऊँ

हाथ–पैर हैं पर चल नहीं पाती
मुँह है पर बोल नहीं पाती
बदन है पर साँस नहीं ले पाती
बच्चों की दोस्त, बच्चों को बहुत भाती







सबके परिचित हाथी, घोड़े
गोल–गोल वो खूब दौड़े
खूब दौड़ कर आखिर में
रहते वो तो वहीं खड़े

छोटे को मैं बड़ा बना दूँ
मुझको पहचानो तो जानूँ



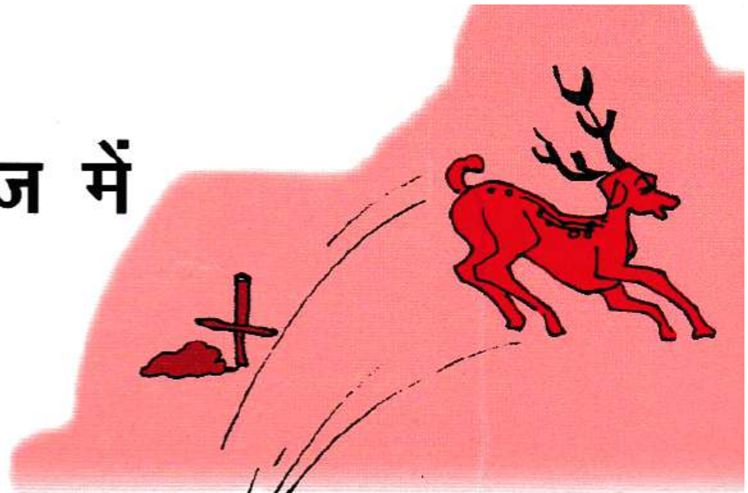
दौड़ दौड़कर आगे आता, पीछे जाता
जो भी बैठे खुश हो जाता



एक खेल ऐसा जो लकड़ी से खेला जाए
बड़ी लकड़ी छोटी को पीट–पीट, दूर भगाए

झूला, गेंद, गिल्ली डंडा, पतंग, गुब्बारा, लट्टू ,
मेरी गो राउंड, आवर्धक लैंस, गुड़िया।

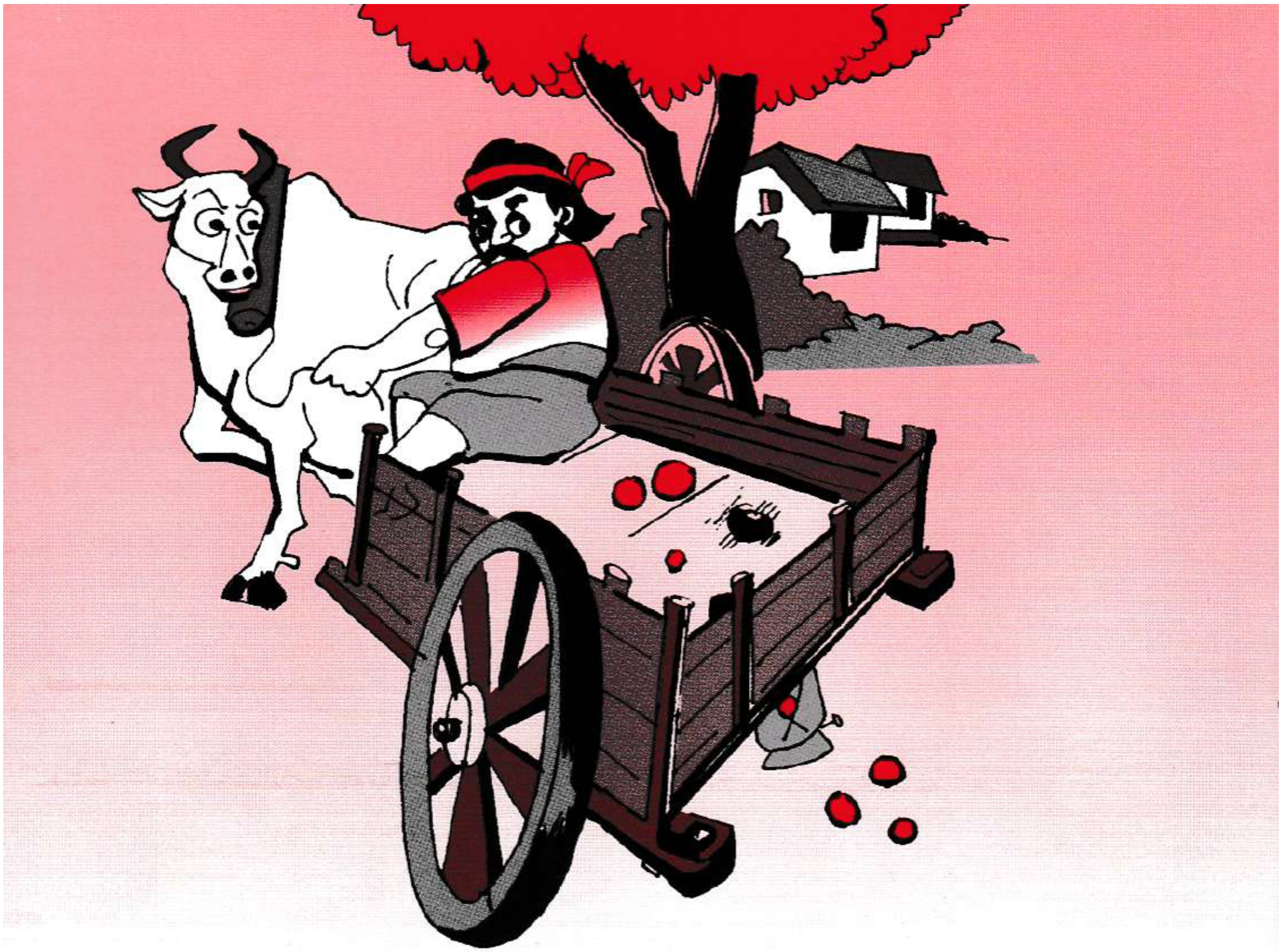
(85) टमाटरों की खोज में



मोहन ने अपने बगीचे में टमाटर उगाए थे। पक कर लाल-लाल टमाटर बहुत लुभावने दिखते थे। वह उन्हें बहुत गर्व के साथ देखता और सराहता।

एक दिन एक हिरन बगीचे में घुस आया। मोहन ने उसे भगाने के लिए एक पत्थर उठाया। तभी उसकी पत्नी बोली, "हिरन को मत मारो। उसे भी कुछ टमाटर खाने दो।"





लेकिन मोहन नहीं माना। अगले दिन उसने अपने बगीचे के चारों तरफ काँटों की बाड़ लगा दी। फिर चैन से घर लौट आया। पर उसके नसीब में चैन कहाँ?

कुछ ही दिनों बाद कुछ पक्षी उड़ते-उड़ते आए और टमाटर खाने लगे। मोहन तंग आ गया। उसने सोचा, 'अब ज़्यादा दिन टमाटरों को ऐसे छोड़ना ठीक नहीं।'

अगली सुबह उठते ही सबसे पहले उसने टमाटरों को तोड़ा। उन्हें गाड़ी में भरा और मंडी की ओर चल दिया।

मंडी पहुँचकर उसने गाड़ी रोकी और पीछे मुड़कर देखा। वह चौंक गया, "अरे! यह क्या! गाड़ी खाली पड़ी है। मेरे टमाटर कहाँ गए?" वह चिल्लाने लगा।

तभी उसने देखा कि गाड़ी के पीछे वाले भाग में एक छेद था। शायद उसी छेद में से टमाटर गिर गए होंगे।

गिरे हुए टमाटरों को बटोरने के विचार से मोहन उसी रास्ते पैदल वापिस गया। मगर आश्चर्य! रास्ते में एक भी टमाटर नहीं था।

थोड़ी दूर पर उसे हिरन के दो बच्चे दिखाई दिए। वे बड़े मज़े से टमाटर खा रहे थे। कुछ गिलहरियाँ भी टमाटरों को कुतर रही थीं।



निराश होकर मोहन एक पेड़ के नीचे बैठ गया। 'चीं...चीं..' नन्हे पक्षी चहचहा रहे थे। उनकी माँ अपने बच्चों को टमाटर खिला रही थी। मोहन अपने आप को भूलकर उस दृश्य को देखता रहा। "वाह क्या आनंद है!" कहता हुआ आगे बढ़ा।

रास्ते में एक मकान से बच्चों का शोर सुनाई दिया। पास जाकर खिड़की से देखा तो बच्चों के हाथ में टमाटर! चेहरे पर मुस्कान!

'अरे! मेरे टमाटरों से इतने लोगों को खुशी मिली!' मोहन का मन हल्का हो गया। टमाटर खोने का दुःख अब उसे नहीं था। 'शायद मुझे पहले ही अपने कुछ टमाटर बाँट देने चाहिए थे,' सोचते हुए वह वापिस घर की ओर चल पड़ा।



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू

तीन मूर्तियाँ



विजयनगर राज्य में काफी चहल पहल थी। दूसरे देश से एक विद्वान सोने की तीन मूर्तियाँ जो लेकर आया था। सभी मूर्तियाँ एक जैसी थीं। उनमें ज़रा भी फर्क दिखाई नहीं देता था।

विद्वान ने राजमहल में चुनौती दी, "इन तीनों मूर्तियों में कुछ फर्क है। जो व्यक्ति इस फर्क को पहचानेगा, मैं उसे दस हज़ार सोने के सिक्के, इन मूर्तियों के साथ पुरस्कार में दूँगा। यदि दस दिनों के अंदर कोई फर्क नहीं पकड़ पाया तो मुझे दस हज़ार सोने के सिक्के देने पड़ेंगे।"

मूर्तियों की प्रदर्शनी की गई। नौ दिन बीत गए। मगर किसी को भी मूर्तियों में कोई अंतर नहीं दिखाई दिया।

राजा को चिंता होने लगी, 'विद्वान को सोने के दस हज़ार सिक्के देने के साथ हार भी माननी पड़ेगी।'

तेनालीराम ने कहा, ''महाराज! चिंता न कीजिए। अभी पूरा एक दिन बाकी है। किसी तरह तीनों में अंतर पता लगा लेंगे।''

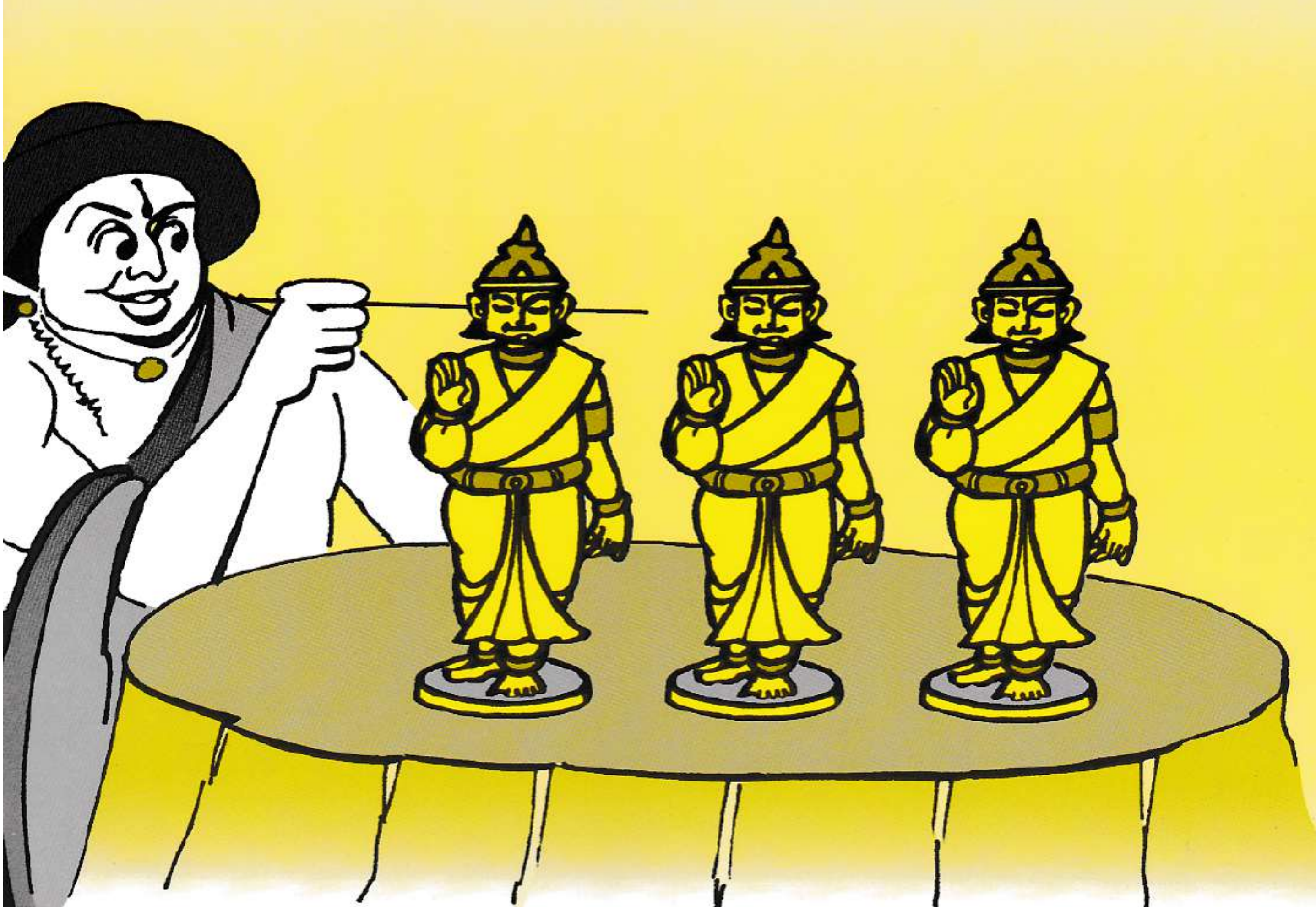
दसवाँ दिन आया। राजमहल में सभी चिंतित थे। तेनालीराम ने मूर्तियों को कई बार घूर कर देखा।



उसने एक पतली डंडी को एक मूर्ति के कान में डाला। डंडी दूसरे कान से बाहर निकल आई।

उसने डंडी दूसरी मूर्ति के कान में डाली, अब डंडी मूर्ति के मुँह से बाहर निकली। जब उसने डंडी तीसरी मूर्ति के कान में डाली, तो वह अंदर ही रह गई। सभी दंग रह गए।

तेनालीराम ने विस्तार से बताया, "तीनों मूर्तियों में यह फर्क है। पहली मूर्ति मूर्ख जैसी है। वह जो भी सुनती है उसे दूसरे कान से बाहर निकाल देती है।



दूसरी मूर्ति सामान्य व्यक्ति के जैसी है। जो भी सुनती है, बिना सोचे–समझे दूसरों को बता देती है।

तीसरी मूर्ति महान व्यक्ति जैसी है। जो कुछ भी सुनती है, उस पर पहले गहराई से सोच–विचार करती है।

सभी मौजूद व्यक्तियों ने तेनालीराम की प्रशंसा की। विद्वान ने तेनालीराम को तीन मूर्तियाँ और दस हज़ार सिक्के इनाम के रूप में दिए।

तेनालीराम ने मूर्तियाँ राजा को दे दीं और सिक्के अपने पास रख लिए।



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

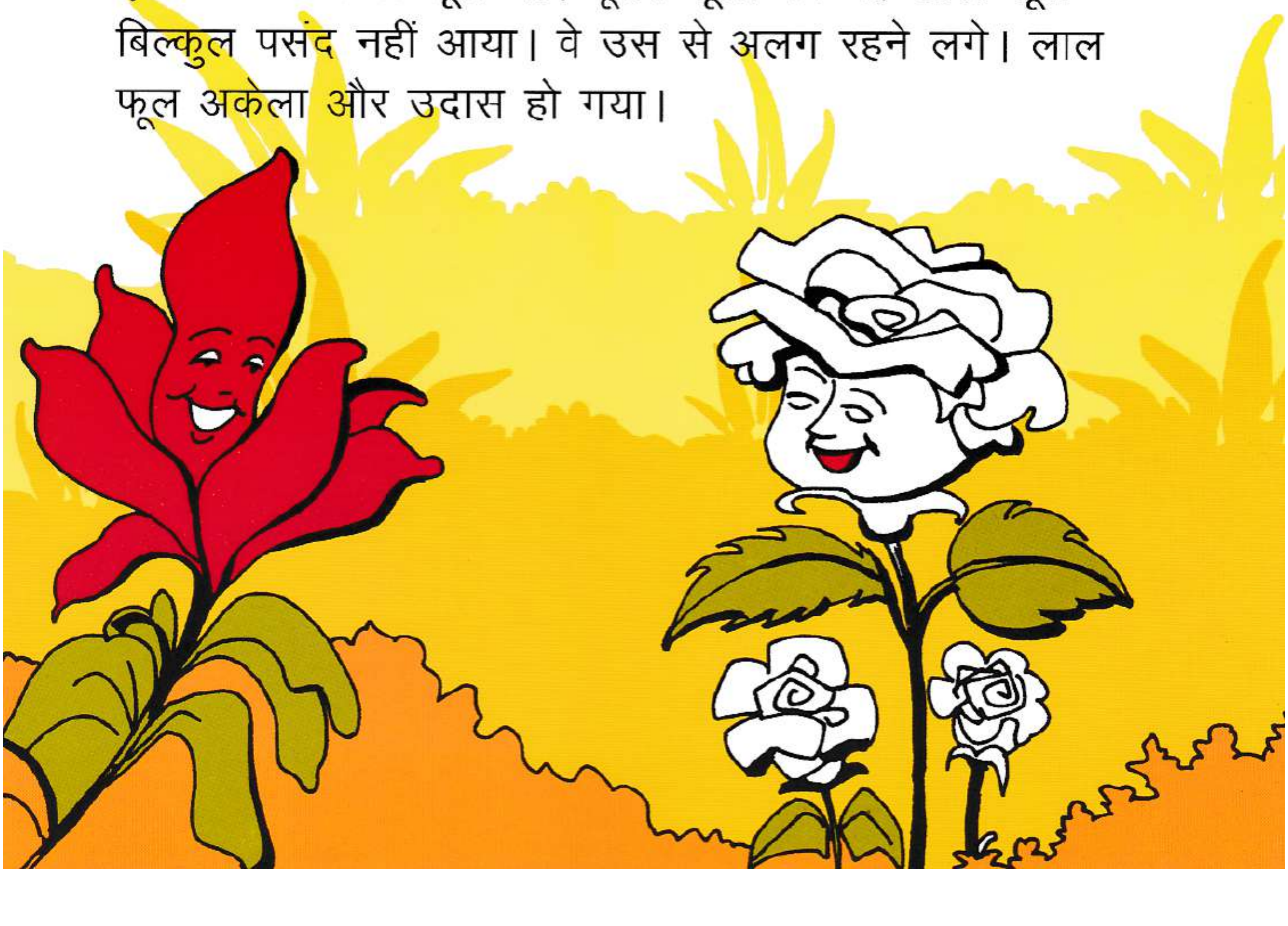
चित्रांकनः
एस.पी.राजू

हमारा बगीचा

यह नीला आकाश! सुहानी हवा! हल्की धूप! इन सब में डूबकर खुशी से झूम रहे थे रंग–बिरंगे फूल! गुलाब, चमेली, कमल, गुलदाउदी, कुमुदिनी–बगीचे में ऐसे कई तरह के फूल थे।

इन फूलों के बीच में हरी–भरी घास, छोटे पौधे और लताएँ सजी हुई थीं। वे फूलों की सुंदरता को और बढ़ा रही थीं। अपने बगीचे पर फूलों को बड़ा नाज़ था।

एक दिन माली ने बगीचे में एक नया पौधा लगाया। उस पर एक अनोखा लाल फूल था। दूसरे फूलों को वह लाल फूल बिल्कुल पसंद नहीं आया। वे उस से अलग रहने लगे। लाल फूल अकेला और उदास हो गया।



एक दिन एक छोटा–सा सफेद गुलाब, लाल फूल को देखकर मुस्कराया और उससे पूछा, "दोस्त, तुम कहाँ से आए हो?"

लाल फूल बहुत खुश हुआ और बोला, "मैं बहुत दूर से आया हूँ।" इस तरह दोनों में बातचीत शुरू हो गई।

लाल फूल ने अपने पुराने बगीचे के बारे में सब कुछ बताया। सफेद गुलाब आतुरता से उसकी बातें सुनता रहा।

जल्द ही दोनों गहरे दोस्त बन गए। वे दिन भर बातों में लगे रहते। सफेद गुलाब वहाँ के बदलते मौसम और दूसरे पेड़–पौधों के बारे में बताता और दिन कैसे बीत जाता, कुछ पता ही नहीं चलता।

कुछ दिनों के बाद माली कुछ और पौधे ले आया। दूसरे फूलों को चिंता होने लगी। वे डरने लगे कि पूरा बगीचा नए फूलों से न भर जाए।

सफेद गुलाब ने उन्हें शांत करवाया, "तुम लोग बेकार की चिंता कर रहे हो! ये नए फूल भी हमारे मित्र हैं।" कुछ फूल यह सुनकर आश्वस्त हो गए।

लेकिन कुछ फूलों से चुप नहीं रहा गया। जब मधुमक्खी और तितलियाँ उनके पास आतीं तो वे उनसे कहते, "तुम नए फूलों के पास मत जाओ। वे हम से अलग हैं। वे हमारे मित्र नहीं हैं।"

मगर मधुमक्खियों ने कहा, "यहाँ सभी के लिए उपजाऊ मिट्टी है। हवा, पानी, धूप सभी मौजूद है। हमारे पास बहुत सारे कीड़े भी हैं। क्यों बेकार में चिंता करते हो?"

जल्द ही बगीचा तरह तरह के रंग–बिरंगे फूलों से भर गया। बगीचे को देखने के लिए दूर–दूर से लोग आने लगे।

सूर्य की किरणें हर फूल को छू जातीं। वर्षा की बूँदें भी हर फूल को नहलातीं। हवा के धीमे झोंके सभी फूलों को सहलाते।

फूलों ने चैन की साँस ली और बोले, "सफेद गुलाब और मधुमक्खियाँ ठीक ही कहते हैं। नए फूलों से हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचा। ना ही उन्होंने हमारी जगह ली।" पूरे बगीचे में खुशी और मित्रता छा गई।

फिर क्या था! विविध फूलों और रंगों से बगीचा खिल उठा। उस अनोखे बगीचे को देखने दूर–दूर से लोग आने लगे।



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

मूर्खों की खोज में

एक दिन अकबर और बीरबल में विवाद हो रहा था। अकबर ने कहा, "अक्लमंदों को पहचानना आसान है, मगर मूर्खों को पहचानना कठिन है।" लेकिन बीरबल का कहना था कि मूर्खों को पहचानना आसान है।

तब अकबर ने कहा, "अगर ये बात है तो कल दोपहर के पहले आप आठ मूर्खों को लाइए। अगर आप ला सके तो मैं उन सबको इनाम दूँगा। लगे हाथ आपको भी इनाम मिल जाएगा।"



बीरबल अगले दिन सुबह मूर्खों की खोज में निकल पड़े। रास्ते में एक आदमी गधे पर सवार होकर जा रहा था। उसके सिर पर कपड़ों की एक बड़ी गठरी थी।

बीरबल ने उससे पूछा, ''तुमने इस गठरी का बोझ क्यों उठा रखा है? गधे पर ही रख दो।''

आदमी ने जवाब दिया, ''साहब! मेरा गधा बूढ़ा हो चला है। उसमें अब पहले जैसी ताकत भी नहीं है। उसका बोझ कम करने के लिए ही गठरी को अपने सिर पर लाद कर ले जा रहा हूँ।''

हँसते–हँसते बीरबल ने उससे कहा, ''दोपहर को दरबार में आओ। राजा तुम्हें इनाम देंगे।'' बीरबल ने यात्रा जारी रखी। थोड़ी ही दूर पर एक किसान और उसका बेटा खेत में कुछ ढूँढ रहे थे। बीरबल ने उनसे पूछा, ''आप यहाँ क्या ढूँढ रहे हैं?''

किसान ने कहा, ''अपनी बचत के पैसे हमने इसी खेत में कहीं गाड़कर रखे थे। वही ढूँढ रहे हैं।'' बीरबल ने उनसे पूछा, ''क्या उस जगह पर कोई निशानी नहीं रखी थी?''

बेटे ने कहा, ''हाँ! हाँ! रखी थी। उस दिन वहाँ एक मोर नाच रहा था। उसी के पास छिपाए थे।'' बीरबल ने हँसते हुए उन्हें भी दरबार में आने को कहा।

फिर बीरबल और थोड़ी दूर गए। रास्ते में दो लोग लड़ रहे थे। बीरबल ने उन्हें अलग किया और पूछा, ''मामला क्या है?'' उनमें से एक ने कहा, ''यह अपने बाघ से मेरे बैल को मरवाना

चाहता है।'' दूसरे ने कहा, ''ज़रूर मरवाऊँगा।'' बीरबल ने इधर–उधर देखते हुए पूछा, ''कहाँ है तुम्हारे बाघ और बैल?''

पहले आदमी ने कहा, ''हम खुदा से एक वरदान माँगने वाले हैं। जब मैंने कहा कि मैं एक बैल माँगूगा तो यह कहने लगा कि मैं एक बाघ माँगूगा। अगर उसे बाघ मिल गया तो क्या वह मेरे बैल को मार नहीं डालेगा?'' बीरबल ने उन दोनों को भी दरबार में बुलाया।

आगे चलकर बीरबल ने एक आदमी को कीचड़ में गिरा हुआ देखा। वह अपने हाथों को ऊपर की ओर फैला कर उठने की कोशिश कर रहा था। उसे उठाने के लिए बीरबल ने हाथ दिया।

उस आदमी ने बीरबल से कहा, ''मेरे हाथ को मत छूना। मैं जो अलमारी बनाने जा रहा हूँ यह उसका नाप है। अगर आप मेरे हाथ पकड़ लेंगे तो मैं सही नाप भूल जाऊँगा।''



बीरबल ने उसे भी दरबार में आने को कहा। बीरबल ने जिन छह लोगों से मुलाकात की वे सब दोपहर तक दरबार में पहुँच गए। सारी बातें विस्तार से राजा को बताई गईं। दरबारियों ने मूर्खों की बातों का मज़ा लेकर खूब कहकहे लगाए।

आए हुए छह लोगों को कुछ भी समझ में नहीं आया। अकबर से इनाम पाकर वे खुशी–खुशी वापिस चले गए। अकबर ने बीरबल को देखकर कहा, "आपको इनाम नहीं मिलेगा। क्योंकि आप आठ नहीं, सिर्फ छह मूर्खों को ही लाए हैं।"

इस पर बीरबल ने कहा, "दिन भर मूर्खों की खोज में भटका, इसलिए मैं सातवँ मूर्ख हूँ और आठवाँ मूर्ख..." यह कह कर बीरबल रुक गए।

अकबर को समझ में आ गया। हँसते हुए बोले, "इस काम पर आपको भेजने वाला आठवाँ मूर्ख मैं ही हूँ न!" पूरा दरबार हँसी से गूँज उठा।



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

चतुर मेमना

मेमने ने बाहर झाँककर देखा। सब कुछ कितना सुंदर है! वह धीरे–धीरे गुफा से बाहर आ गया। उसके माँ–बाप तो चारा ढूँढकर शाम को ही आएँगे।

मेमने के माँ–बाप उससे कहकर गए थे, "जंगल में बाघ, शेर, भेड़िये सभी घूमते–फिरते हैं। तुम अकेले कहीं मत जाना।" परंतु मेमने से रहा न गया। घूमते–घूमते वह बहुत दूर चला गया। जैसे ही अंधेरा होने लगा, उसे घर की याद आई। पर उसे वापिस जाने का रास्ता तो पता ही नहीं था!

पास में ही एक गुफा थी। वह उसके अंदर घुस गया। उस गुफा में एक सियार रहता था। मगर सियार उस समय बाहर गया हुआ था। अपने माँ–बाप के लौटने तक मेमने ने वहीं पर इंतज़ार करने की सोची।

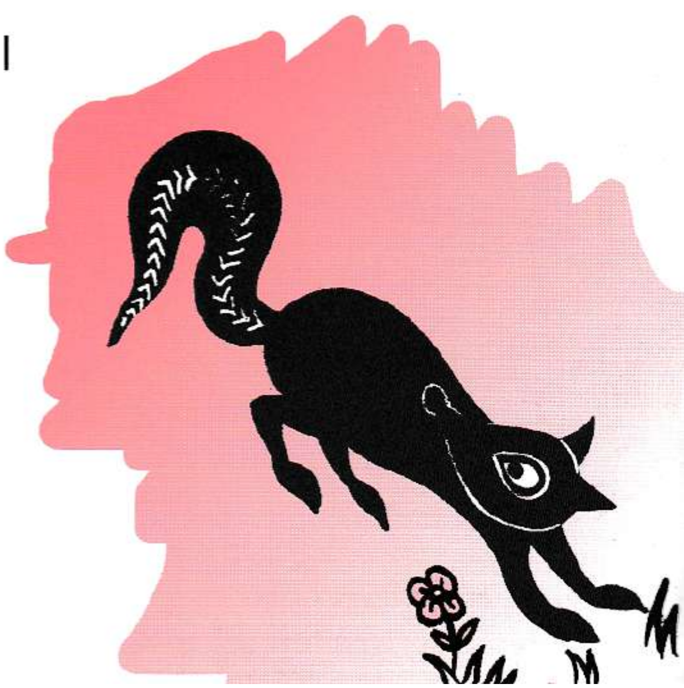




सुबह हुई। सियार अपनी गुफा में वापिस आया। 'अंदर कोई नया जानवर है,' गुफा तक पहुँचते ही सियार को एहसास हुआ। वह द्वार पर ही रुक गया।

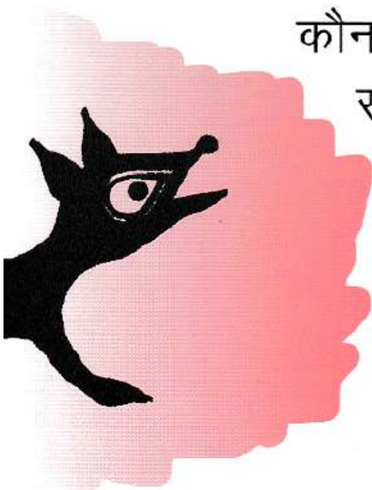
''कौन है अंदर? जल्दी बाहर निकलो,'' सियार ने धमकाते हुए कहा। मेमना थोड़े ही फँसने वाला था! अपनी आवाज़ बदलकर बोला, ''हा! हा! हा! मैं शेर का बड़ा बाप हूँ। मैं एक दिन में पचास बाघ खाता हूँ। जल्दी जाओ और मेरे लिए बाघ पकड़ कर ले आओ।''

बस! सियार तो घबरा गया। सरपट वहाँ से भाग निकला। बाघ के मुखिया के पास गया और कहा, ''बाघ चाचा! बाघ चाचा! एक भयानक जानवर मेरे घर के अंदर घुस आया है। वह खाने के लिए पचास बाघ माँग रहा है।''





'हा! हा! हा!' बाघ हँस पड़ा, "ओफ! ऐसा कौन सा जानवर है जो पचास बाघ खा सकता है? ज़रा मुझे भी तो दिखाओ। मैं उसे भगा दूँगा।"



इस बीच मेमने के माँ–बाप भी उसे ढूँढते हुए वहाँ पहुँच गए। मेमने के पाँव के निशान के सहारे उन्होंने उसका पता लगा लिया।

मेमने ने अपने माँ–बाप को सब कुछ बता दिया। तभी उन्होंने दूर से सियार और बाघ को आते हुए देखा। तीनों गुफा के अंदर छिप गए और एक योजना बनाई।

जैसे ही सियार और बाघ गुफा के पास आए, बकरी माँ ने मेमने का कान खींचा। 'आ SSSSS' बच्चा ज़ोर से चीखा।



बकरे ने अपनी आवाज़ बदलकर पूछा, ''बच्चा क्यों चिल्ला रहा है?''

बकरी कहने लगी, ''बच्चा ज़िद्द कर रहा है कि जब से इधर आए हैं, हाथी, भालू, भैंस को खा रहे हैं। आज उसे खाने के लिए बाघ चाहिए।''

बकरे ने कहा, ''ठीक है, मैंने बाघ को लाने के लिए सियार को भेजा है। वह बाघ के साथ अभी आता ही होगा।''

यह बात सुनकर बाघ डर के मारे काँपने लगा। 'बाप रे! भीतर रहने वाला बच्चा हाथी, भैंस, भालू आदि को निगल चुका है। मैं उसके हाथ लगा तो वह मेरा क्या हाल करेगा?' एक क्षण और रुके बिना वह वहाँ से भाग निकला। अब सियार थोड़े ही वहाँ रुकता!

भारत की लोक कथा



Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

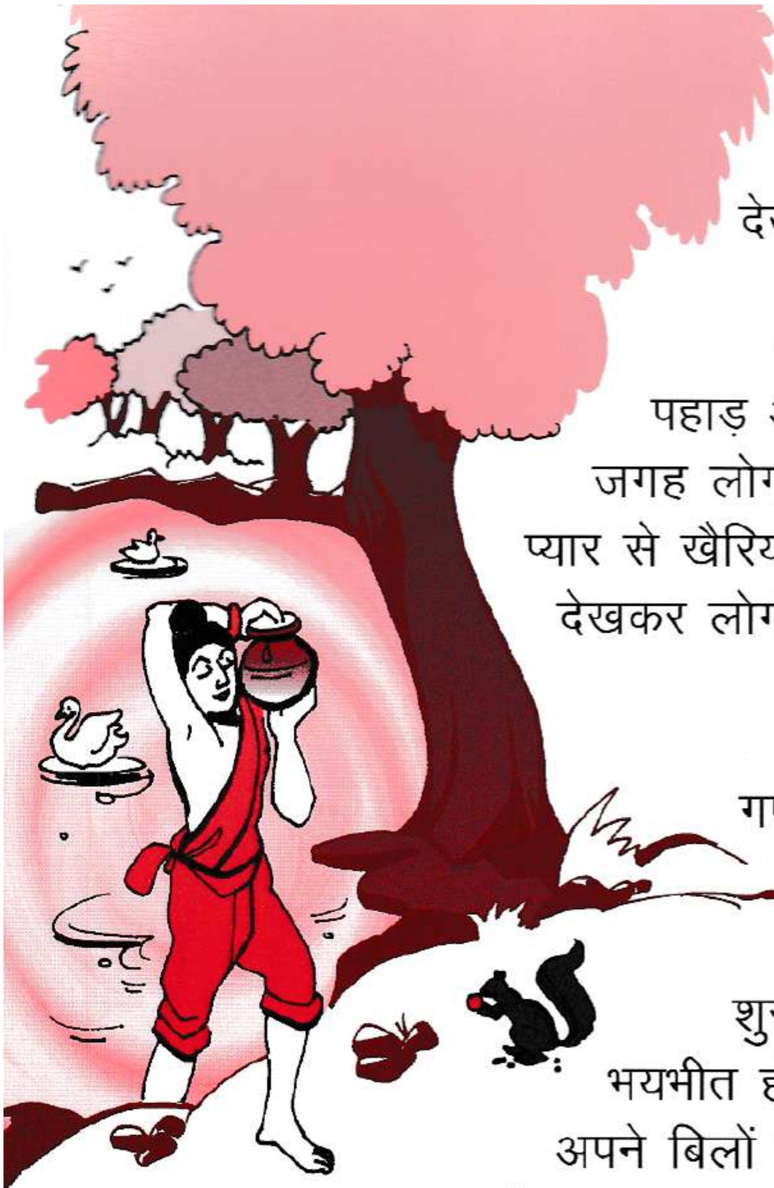
चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

श्रवण कुमार

श्रवण कुमार अपने माँ–बाप की देखभाल बड़े प्यार से करता था। उसके माँ–बाप अंधे थे और बूढ़े भी। कई दिनों से उनकी तीर्थ यात्रा करने की इच्छा थी। वे अकेले तो जा नहीं सकते थे। इसलिए श्रवण ने उनकी इच्छा पूरी करनी चाही।

श्रवण ने एक मज़बूत लकड़ी और दो टोकरियों से एक काँवर बनाया। माँ–बाप को उन टोकरियों में बैठाकर कंधे पर लाद तीर्थ यात्रा के लिए निकल पड़ा।





गाँव वालों ने उसे देखकर मन ही मन दुआएँ दीं।

श्रवण कई शहर, नदियाँ, पहाड़ आदि पार करता गया। सभी जगह लोग उसे आश्चर्य से देखते। प्यार से खैरियत पूछते। ऐसा अनोखा दृश्य देखकर लोगों की आँखें भर आतीं।

इस तरह कई महीने बीत गए। एक दिन वे घने जंगल के बीच से गुज़र रहे थे। अचानक पक्षियों ने चीखना शुरू कर दिया। हिरन के झुंड भयभीत होकर भागने लगे। खरगोश अपने बिलों में छिप गए। निर्भीक श्रवण के मन में भी डर जागा।

अंधेरा होने लगा था। एक पेड़ के नीचे तीनों आराम करने के लिए रुक गए। श्रवण के पिताजी ने पानी माँगा। तब श्रवण ने देखा कि काँवर में टंगा हुआ पानी का कलश खाली था।

"मैं जाकर पानी लाता हूँ," कहते हुए श्रवण निकल पड़ा। थोड़ी दूर गया तो कल–कल बहती हुई एक नदी दिखाई दी। उसने कलश को पानी में डाला। कलश में पानी भरते समय गड़... गड़... की आवाज़ हुई।



तभी वहाँ शिकार खेलने आए राजा दशरथ ने भी वह आवाज़ सुनी। राजा दशरथ को भ्रम हुआ कि हाथी पानी पी रहा है। उन्होंने बाण छोड़ा। मगर इन्सान की चीख सुनकर राजा घबरा गए।

राजा दशरथ आवाज़ की दिशा की ओर दौड़े। वहाँ श्रवण को दर्द से तड़पते हुए देखकर वे बहुत दुःखी हुए। दशरथ ने कहा, "महात्मन! मुझे माफ कर दो। मैंने समझा कि कोई हाथी पानी पी रहा है और गलती से मैंने तीर छोड़ दिया।"

श्रवण दर्द से कराहता हुआ बोला, "मेरी चिंता छोड़िए। मेरे माँ–बाप प्यास से तड़प रहे हैं। उन तक यह पानी पहुँचा दीजिए।"

श्रवण की कहानी सुनकर राजा दशरथ को बहुत अफसोस हुआ, "हाय! यह अपने माँ–बाप की कितनी प्यार से सेवा कर रहा है। ऐसे महान व्यक्ति पर मैंने तीर चला दिया।"

''जल्दी से पानी ले जाइए,'' यह कहते हुए श्रवण के प्राण निकल गए। दशरथ ने उसके शरीर को अपने कंधे पर लादा और दूसरे हाथ में पानी का कलश लेकर चल पड़े।

पैरों की आवाज़ सुनकर श्रवण के माँ–बाप बोले, ''बेटा! आ गया क्या? इतनी देर क्यों हुई? हम डर गए थे कि तुम्हें कुछ हो तो नहीं गया। जल्दी से पानी दो।'' दशरथ शर्म के मारे सिकुड़ गए। काँपते हाथों से पानी दिया। फिर उन्हें श्रवण की मृत्यु का समाचार सुनाया।

श्रवण के माँ–बाप के दुःख की सीमा नहीं रही। वे ज़ोर ज़ोर से विलाप करने लगे। उनके रोने की आवाज़ से पूरा जंगल गूँज उठा और दुःख का वातावरण छा गया। 'कैसे इन बुजुर्गों को सांत्वना दूँ?' दशरथ को समझ में नहीं आया। उन्होंने कहा, ''आज से आप मुझे अपने बेटे के रूप में स्वीकार कीजिए। मेरे साथ चलिए।''

दोनों ने कहा, ''श्रवण के बिना हम जी नहीं सकते। यह दुःख हमसे सहा नहीं जाएगा। जिस दिन तुम्हारा बेटा तुमसे बिछड़ेगा उस दिन ही तुम्हें हमारे दुःख का एहसास होगा,'' यह कह कर दोनों ने प्राण त्याग दिए।

कई साल बाद दशरथ को अपने बेटे राम से बिछड़ना पड़ा। वह उस दुःख को न सह पाए और खूब रोए। तब, श्रवण के पिताजी के शब्द उनके कानों में गूँजने लगे।

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
एस.पी.राजू

बजा बाँसुरी

चीन देश में पिंग नाम का एक अमीर आदमी रहता था। वह हमेशा पैसे गिनता रहता था। जब उसके बच्चे उसे खेलने के लिए बुलाते तो वह कहता, "मुझे फुरसत नहीं है। पैसे गिनने हैं।"

उसके घर के पास ली नाम का एक गरीब आदमी रहता था। वह दिन भर अपने खेत में मेहनत करता। जब भी उसे समय मिलता वह बाँसुरी बजाता। उसकी पत्नी और बच्चे उसके संगीत से मंत्र–मुग्ध होकर झूमने लगते। पशु, पक्षी, पेड़, पौधे भी सब कुछ भूलकर गीत सुनते।

उसका संगीत हवा में लहराता हुआ पिंग के कान में भी पड़ता। पैसे गिनते–गिनते उसका ध्यान भटक जाता। "हाय रे! कहाँ तक गिनती की थी मैंने? मैं तो भूल गया!" बड़बड़ाते हुए वह पैसों को दोबारा गिनना शुरू करता।

'इस मुसीबत को किसी तरह से रोकना चाहिए,' पिंग ने इसके लिए एक उपाय सोचा। वह पैसों से भरी थैली लेकर ली के घर गया। भेंट के रूप में ली को थैली दी।





'हाथ में जब पैसे हों तो वह चैन से कैसे गाएगा, भला मैं भी तो देखूँ!' वह मन ही मन हँसते हुए घर लौटा।

ली को कुछ समझ में नहीं आया। इतना सारा पैसा उसने कभी देखा नहीं था। वह पैसे गिनने लगा। आधे सिक्के गिनने के बाद उसे संदेह हुआ। 'शायद मैंने ठीक से नहीं गिना।' वह दोबारा गिनने लगा। इस तरह गिनते–गिनते पूरा दिन बीत गया। ली ने उस दिन एक बार भी बाँसुरी नहीं बजाई।

अगले दिन सुबह ली चिंता में पड़ गया। 'धन की थैली को कहाँ संभाल कर रखूँ?' पहले उसे घड़े में रखा, फिर पेटी में, फिर मचान पर– इस तरह जगह बदलता रहा। अंत में उसे कुएँ में छिपाकर रख दिया। उस दिन फिर उसने एक बार भी बाँसुरी नहीं बजाई।



तीसरे दिन वह इस सोच में पड़ गया कि 'पैसों को कैसे खर्च करूँ? बैल खरीदूँ, हल खरीदूँ या मुर्गी?' उस दिन भी ली ने बाँसुरी नहीं बजाई।



अगले दिन उसके मन में एक शंका जागी। 'सब चीजें खरीदने के लिए क्या थैली में पर्याप्त धन है?' उसने कुएँ में छिपाकर रखी हुई थैली को बाहर निकाला। वह पैसों को फिर से गिनने लगा।

उस समय उसके बच्चों ने पूछा, "पापा, आप अपनी बाँसुरी क्यों नहीं बजाते?" ली झल्ला पड़ा, "अभी मुझे फुरसत नहीं है। पैसे गिनने हैं।" ली के इस व्यवहार से उसकी पत्नी बहुत उदास हुई।

वह ली से कहने लगी, "प्यार ही सबसे बड़ी दौलत है।



जिनके पास प्यार है, वे कभी भी गरीब नहीं होते।''

ली ने कुछ पल पैसे गिनना बंद किया। सिर उठाकर आसमान की ओर देखा। सितारों से भरा आसमान एक बगीचे जैसा लगा। वह बड़ी देर तक आसमान को ही देखता रहा। धन का क्या करना चाहिए, उसे समझ में आ गया।

रात भर जागकर उसने कई बाँसुरियाँ बनाईं। सुबह उठते ही वह पिंग के घर गया। उसने पैसों की थैली उसे वापिस दे दी। बोला, ''इससे मेरी शांति भंग होने लगी थी। यह मुझे नहीं चाहिए। यह रही मेरी संपत्ति, जिसे मैं आपके साथ बाँटना चाहता हूँ।'' ली ने बाँसुरी की एक गठरी पिंग को भेंट के रूप में दी।

तुरंत पिंग के बच्चों ने एक–एक बाँसुरी लेकर बजाना शुरू कर दिया और खुशी से झूमने लगे। ली ने कहा, ''देखा! सोने और चाँदी का हम मूल्य लगा सकते हैं। मगर सुख व शांति अमूल्य हैं।'' पिंग सोच में पड़ गया। फिर वह भी एक बाँसुरी लेकर बजाने लगा।

चीन की लोक कथा



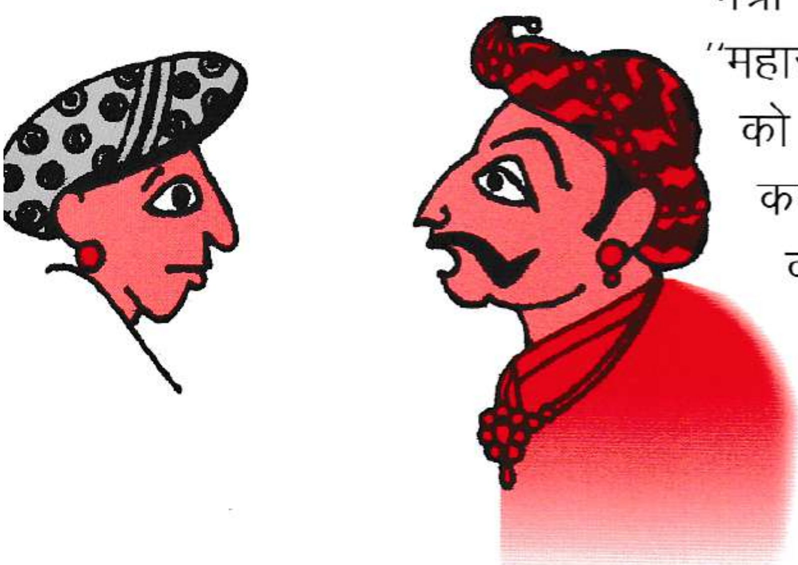
पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू

राजा और गिलहरी

एक समय की बात है। एक राजा था। वह विद्वान, शक्तिशाली और चतुर था और धनवान भी। एक दिन बगीचे में टहलते–टहलते उसने अपने मंत्री से कहा, ''मेरे सामने कोई भी अपनी प्रशंसा करने की हिम्मत नहीं कर सकता, क्योंकि मैं ही सबसे श्रेष्ठ हूँ।''



मंत्री मुस्कराया और बोला, ''महाराज, क्षमा कीजिए! हर व्यक्ति को अपने ऊपर गर्व होता है। कमज़ोर व्यक्ति भी अपने आप को बलवान समझता है। जो लोग डींग मारें उन्हें नज़र–अंदाज़ करने में ही समझदारी है। दूसरों का घमंड देखकर अपने मन की शांति नहीं खोनी चाहिए।''

तभी वहाँ एक गिलहरी आई। उसके पंजों में एक सिक्का था। सिक्के को दिखाते हुए वह गाने लगी–



सुनो–सुनो सब लोगों, कैसे पैसा छलता
मेरे धन को देख–देख राजा जलता–भुनता

राजा क्रोधित हो उठा। उसे पकड़ने के लिए भागा। गिलहरी बच निकली। पर सिक्का गिर गया। राजा ने उसे उठा लिया।

उसी शाम को राजा अपने महल में बैठा मेहमानों से बातचीत कर रहा था। अचानक ऊपर से गिलहरी आई और गाने लगी–

धन की रानी हूँ मैं, सब को बतला दूँ यह बात
मेरे धन को पा कर, राजा इठला रहा है आज

राजा भड़क उठा। मगर अतिथियों के सामने कुछ न कर सका। उसे अपने गुस्से को काबू में करना पड़ा। अगले दिन सुबह राजा गरीबों को दान दे रहा था। गिलहरी वहाँ आई और गाने लगी–

क्या कहूँ? कैसे कहूँ? यह भी समझ का फेरा है
दान–धर्म तो राजा करता, लेकिन धन सब मेरा है

राजा ने अपने सेवकों से कहा, ''इस दुष्ट गिलहरी को पकड़कर मेरे सामने लाओ।'' लेकिन गिलहरी कहाँ फँसने वाली थी! वहाँ से खिसक गई। कुछ घंटों बाद राजा खाना खाने बैठा। गिलहरी ने खिड़की से झाँका और गाने लगी–







मेरे धन से देखो राजा, छत्तीस भोग लगाता है
आओ आओ तुम भी देखो, कितना मज़ा आता है

राजा गुस्से से झल्ला उठा और खाना छोड़कर उठ गया। रात को खाना खाते समय गिलहरी फिर से आ गई और वही गाना गाने लगी। अब तो राजा के गुस्से का ठिकाना नहीं रहा। उसने सिक्का निकाला और गिलहरी की तरफ फेंक दिया। गिलहरी ने सिक्के को उठाया और गाने लगी–

मैं जीती हूँ देखो लोगों, राजा ने मुँह की खाई
डर के मारे उसने, मेरी सारी दौलत लौटाई



राजा ने पागलों की तरह गिलहरी का पीछा किया। लेकिन गिलहरी गायब हो गई। राजा पूरी रात बेचैन रहा। सुबह उठते ही राजा ने मंत्री से कहा, "सेना भेजकर सारी गिलहरियों को मार डालो।"

मंत्री ने कहा, "मैं आपके गुस्से को समझ सकता हूँ। मगर खेतों, घने जंगलों, पहाड़ों आदि में लाखों गिलहरियाँ फैली होंगी। उन्हें पकड़ना इतना आसान नहीं है। पकड़ भी लें तब भी पड़ोसी देश से गिलहरियाँ हमारे देश में आ सकती हैं। आप जब अपने बहादुर सैनिकों को गिलहरियों से लड़ने को कहेंगे तो क्या वे

निराश नहीं हो जाएँगे? यही नहीं, इतिहास की किताबों में आप गिलहरियों से युद्ध करने वाले राजा के नाम से प्रसिद्ध हो जाएँगे और उपहास का पात्र बन जाएँगे।''

राजा ने परेशान होकर पूछा, ''तो मैं क्या करूँ?'' मंत्री ने कहा, ''आप गिलहरी की परवाह मत कीजिए। शुरू–शुरू में जब गिलहरी डींग मार रही थी, तब ही यदि आप बिना क्रोध के उसकी बातें सुन लेते तो बात न बढ़ती।''







दूसरे दिन गिलहरी फिर से आई। पहले दिन का गीत गाने लगी। राजा मुस्कराया और गाने लगा–

यह तो सच है प्रिय गिलहरी दौलत की रानी हो तुम
कौन नहीं जानता यह कि सर्वज्ञानी भी हो तुम

गिलहरी हैरान रह गई। बिना कुछ कहे गायब हो गई और फिर कभी दिखाई नहीं दी।

भारत की लोक कथा

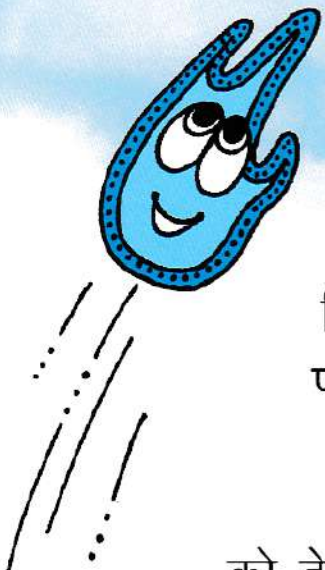
Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

एक बूँद



पानी की एक बूँद ने सूरज के प्रकाश की ओर देखा और सोचा, "काश! मैं उस प्रकाश के निकट जा सकती!" उसने दूसरी बूँदों से वहाँ जाने का तरीका पूछा।



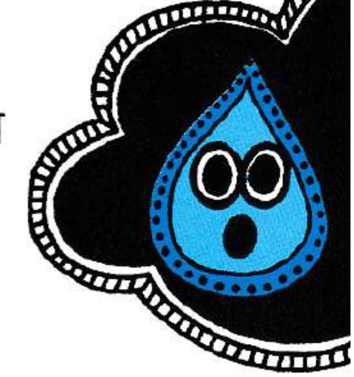
दूसरी बूँदों ने कहा, "वाष्पित होकर जाया जा सकता है। मगर हम घड़े में ही सुरक्षित रहेंगे।"

परंतु छोटी बूँद किसी तरह प्रयत्न करके बाहर निकलना चाहती थी। वह घड़े के मुँह तक जा पहुँची और कूद कर घड़े के बाहर निकल गई।

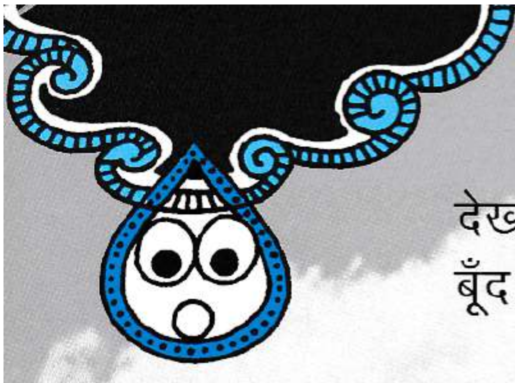


पल भर के लिए बूँद डर गई। मगर जैसे ही सूर्य को देखा उसका डर दूर हो गया। भाप बनकर ऊपर जाना उसे अच्छा लगा।

उसे रूई जैसे सफेद बादल नज़र आए। वे अन्य वाष्पित बूँदों से बने हुए थे। छोटी बूँद ने उनसे प्रकाश की ओर जाने का रास्ता पूछा।



उसे कई तरह के जवाब मिले, "मुझे मालूम नहीं, घूमकर जाओ, और ऊपर जाओ।" बूँद कई दिन तक भटकती रही।

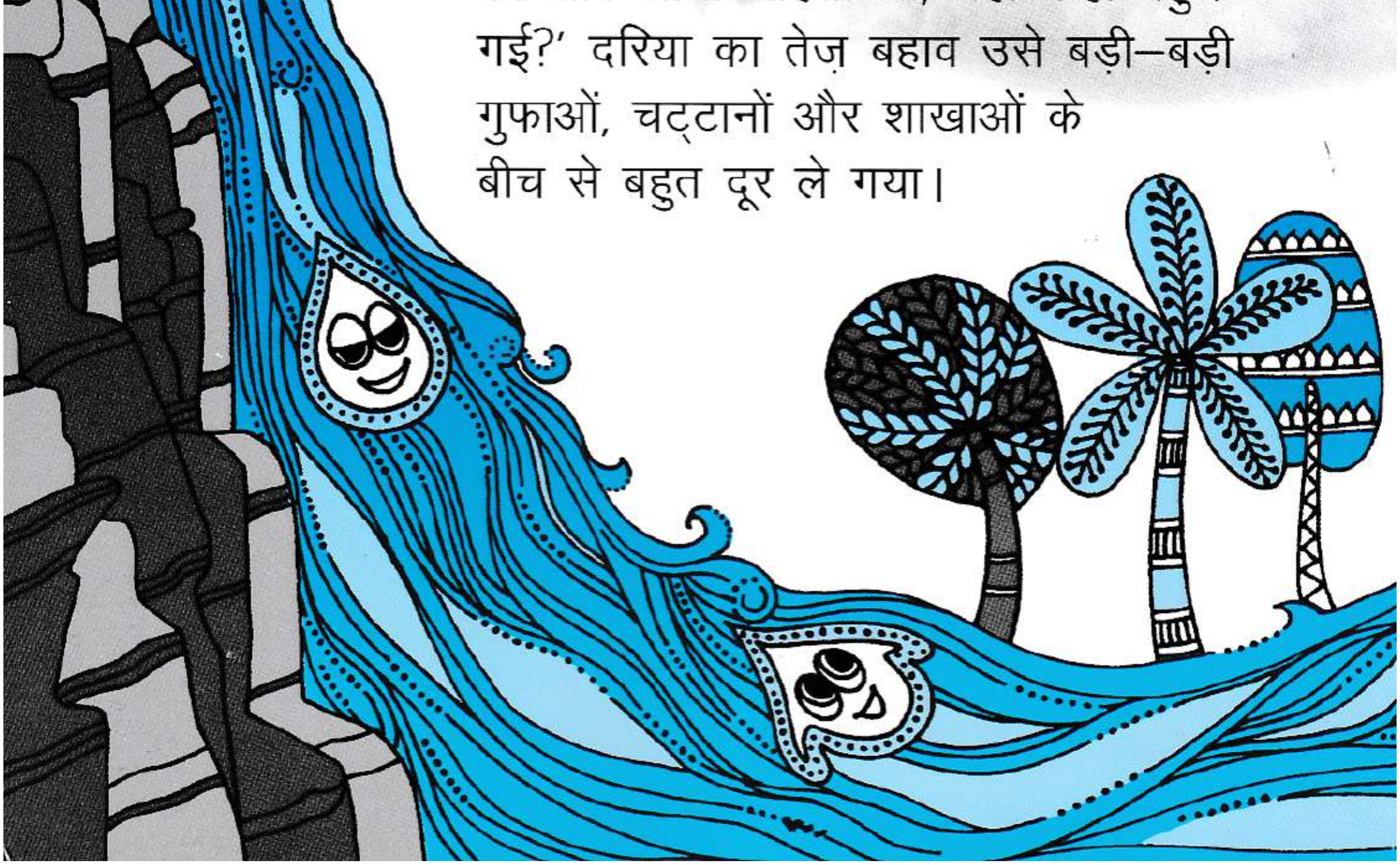


एक दिन उसने एक विचित्र प्रकार का बादल देखा। वह बड़ा, काला और भारी भी था। छोटी बूँद कूद कर उस बादल के अंदर घुस गई।

उस रात बादल बेचैन था। वह उमड़ता–घुमड़ता रहा। बिजली गरजने पर चमक रहा था। बूँद समझ गई कि वह गलत बादल में फँस गई है।

जैसे–जैसे हवा साँय–साँय करती गई और बिजली कड़कती गई, छोटी बूँद तेज़ी से नीचे गिरने लगी। छटपटाते हुए वह दरिया में जा गिरी।

बूँद ने सोचा, 'अरे! मैं तो सूर्य के प्रकाश की ओर जाना चाहती थी, यहाँ कहाँ पहुँच गई?' दरिया का तेज़ बहाव उसे बड़ी–बड़ी गुफाओं, चट्टानों और शाखाओं के बीच से बहुत दूर ले गया।



धीरे–धीरे दरिया की गति थम गई। छोटी बूँद ने पूछा, ''यह दरिया किधर जा रही है?'' उसे जवाब मिला, ''यह नदी में जाकर मिल जाएगी।''

छोटी बूँद को सफर में मज़ा आने लगा। दरिया के दोनों किनारों पर बड़े–बड़े पेड़ लगे थे। कहीं–कहीं सूर्य की रोशनी पानी में चमचमा रही थी।

बूँद तेज़ी से बहते हुए नदी में जा मिली। नदी का तेज़ बहाव बूँद को पसंद आया। मगर उसने विशाल समुद्र का खिंचाव महसूस किया और उसकी तरफ जाने लगी।

कुछ देर बाद वह समुद्र के बीचों–बीच पहुँच गई।

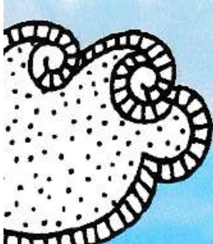
बूँद ने आसमान की तरफ देखा। उसे रूई जैसे सफेद बादल दिखाई दिए। बूँद को उस बादल की याद आई जिसके अंदर उसने सबसे पहले प्रवेश किया था।

बूँद बादलों से नज़र हटाकर सूर्य को देखने लगी। अब उसे पता चल गया कि उसे क्या करना है। किनारे पर गई और छिड़काव करते हुए उछली। वाष्पित होकर फिर ऊपर जाने लगी।





आसमान में उसे सब साफ नज़र आया, दिन में सूरज और रात में तारे। छोटी बूँद ने नीचे की ओर देखा। जिस समुद्र से वह ऊपर आई, जो नदी उसे बहाकर लाई, जिस दरिया में वह जा गिरी, सभी कुछ साफ–साफ दिखाई दे रहा था।



छोटी बूँद के आस–पास हल्के से बादल इकट्ठे होने लगे। बूँद को मालूम था कि अब उसे क्या करना है। वह बादलों के बीच से निकलकर बहुत ऊँची गई और बिखर गई।

बूँद समझ गई कि वह स्वतंत्र है।

क्रिस्टोफर ई. जोन्स की कहानी
'वन ड्रॉप ऑफ वाटर' पर आधारित

कथा झरना टीम 2008
पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

बाघ की सवारी

उस दिन जंगल में भारी वर्षा हो रही थी। चारों तरफ घनघोर अंधेरा छाया हुआ था। कभी बिजली भी कड़क जाती। तूफान बहुत ज़ोर का था। तूफ़ान से बहुत सारे पेड़ उखड़ गए थे। एक बाघ भयभीत होकर जंगल से भाग निकला। वह पास के एक गाँव में जा पहुँचा और एक झोंपड़ी की दीवार के सहारे जा खड़ा हुआ।



झोंपड़ी के अंदर एक औरत बड़बड़ा रही थी, "सिर्फ दो दिनों के लिए आराम मिला। यह 'टपटपी' फिर से आ गई।" बारिश के कारण उसकी झोंपड़ी चू रही थी। उसे मेज़, बक्से और बरतन इधर–उधर खिसकाने पड़ रहे थे। ढुम ढाम... ढुम... ढाम... उनके टकराने की आवाज़ आ रही थी, जिससे दीवारें हिल रही थीं।

बाघ डर गया। 'टपटपी! भला यह क्या है? जब उसकी आवाज़ ही इतनी डरावनी है तो वह ज़रूर भयानक होगी,' बाघ को कुछ समझ में नहीं आया।

तभी गाँव का भोलेनाथ अपने गधे को ढूँढता हुआ वहाँ आया। उसने बुढ़िया के घर की दीवार से लगकर खड़े हुए एक जानवर को देखा। घने अंधेरे में उसे लगा कि वह उसका गधा है। वह गुस्से में उसका कान खींचता हुआ चिल्लाया, "क्या तुम्हारा दिमाग खराब है? इस बारिश में तुम्हें कहाँ–कहाँ ढूँढता फिरूँ? चल, अब चुपचाप घर चल।" वह बाघ पर चढ़ बैठा और उसकी सवारी करते हुए चल पड़ा।

आज तक बाघ के कान किसी ने भी इस तरह नहीं मरोड़े थे। बाघ डर से काँपने लगा। 'टपटपी' के डर से वह कुछ नहीं बोला। चुपचाप चलता रहा। घर पहुँचते ही भोलेनाथ ने उसे घर के सामने रस्सी से बाँध दिया और घर के अंदर सोने चला गया।

अगले दिन सुबह होते ही भोलेनाथ की पत्नी बाहर आई। घर के सामने बंधे हुए बाघ को देख वह ज़ोर से चीख उठी। चीख सुनकर भोलेनाथ दौड़ा आया।

बाघ को देखकर वह भी चिल्लाते हुए घर के अंदर घुस गया। दरवाज़े को अंदर से बंद कर लिया।

गाँव वाले भोले के घर के सामने बंधे बाघ को देखकर चारों तरफ दौड़ने लगे। इस झमेले में भौंचक्के बाघ ने रस्सी को काट लिया और बच कर जंगल में भाग निकला।



'भोलेनाथ ने बाघ की सवारी की,' यह खबर गाँव में चारों तरफ फैल गई। सभी उससे मिलने आए। आश्चर्य के साथ उससे पूछने लगे, "सुना है तुमने बाघ की सवारी की!"

भोलेनाथ ने गर्व से कहा, "सिर्फ उसकी सवारी ही नहीं की बल्कि मैंने तो उसके कान भी मरोड़े।" यह खबर राजा के कानों तक पहुँची। राजा ने भोलेनाथ को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

कुछ महीने बीत गए। दुश्मन देश के सैनिकों ने राज्य पर हमला कर दिया। राजा ने फौरन मंत्री को हुक्म दिया, "जिस बहादुर व्यक्ति ने बाघ की सवारी की थी, उसे तुरंत दुश्मनों से मुकाबला करने भेजो। वह शत्रुओं को चूर–चूर कर देगा। जाओ और उसे यह शक्तिशाली घोड़ा दे दो।"

भोलेनाथ राजा का हुक्म सुनकर परेशान हो गया। उसने सोचा, 'अब कोई रास्ता नहीं है। मुझे युद्ध में जाना ही पड़ेगा।' उसने पहले कभी घोड़े की सवारी नहीं की थी। मुश्किल से घोड़े पर बैठते हुए उसने अपनी पत्नी से कहा, "इससे पहले कि मैं गिर जाऊँ, मुझे घोड़े पर कस कर बाँध दो।" उसकी पत्नी ने उसके हाथ, पाँव व पूरे शरीर को घोड़े से कस कर बाँध दिया। घोड़ा तेज़ी से भागने लगा। खेतों, नदियों को पार करते हुए वह शत्रु सेना की ओर दौड़ा।



"हाय रे! उधर मत जाओ!" भोलेनाथ ज़ोर से चिल्लाया। उसे समझ में नहीं आया कि घोड़े को कैसे रोके? घबराहट में उसने अपने दोनों हाथ उठाए और एक पेड़ की शाखा को पकड़ लिया। मगर घोड़ा भागता ही रहा। मिट्टी गीली होने के कारण पेड़ उखड़ कर भोलेनाथ के हाथों में आ गया।

शत्रुओं ने एक बड़े वृक्ष को हाथों में घुमाते हुए तेज़ी से उनकी तरफ आ रहे भोलेनाथ को देखा।



उनमें से एक बोला, "अरे! उस शक्तिशाली व्यक्ति को देखो। उसने पेड़ को भी उखाड़ लिया। हमसे युद्ध करने चला आ रहा है। निश्चय ही, यह वही व्यक्ति है जिसने बाघ पर सवारी की थी।" वे सब के सब अपनी जान बचा कर भाग खड़े हुए।

थोड़ी देर के बाद घोड़ा एक झटका मार कर रुक गया। रस्सी टूट गई और भोलेनाथ नीचे गिर पड़ा। सौभाग्यवश तब वहाँ कोई भी नहीं था। भोलेनाथ बड़बड़ाया, "भगवान का शुक्र है। मेरी जान बच गई।" वह घोड़े को लेकर चलते हुए घर की तरफ बढ़ा। वह भला अब कहाँ घोड़े की सवारी करता!

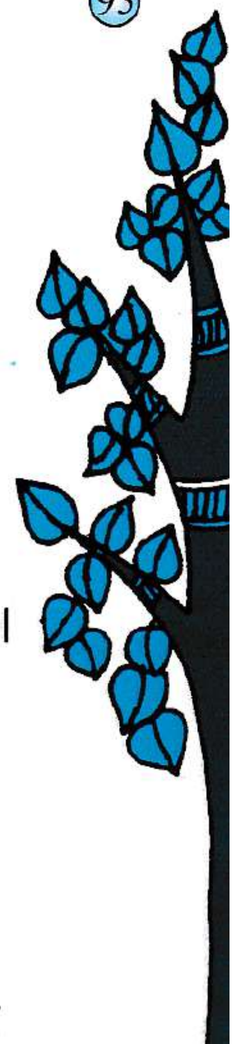
लोगों ने उसे वापिस पैदल आते हुए देखा। आश्चर्य से बोले, "देखो! उसने अकेले ही सभी शत्रुओं को हरा दिया। इतना बड़ा काम करने के बाद भी वह एक साधारण आदमी की तरह चल कर आ रहा है।" कितना महान है भोलेनाथ!

भारत की लोक कथा

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू

मायावी सरोवर

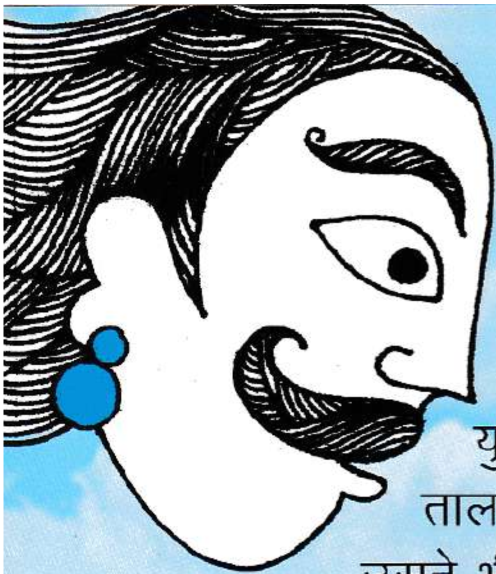


पाण्डवों का 12 वर्ष का वनवास पूरा होने को था। एक दिन पाण्डवों ने वन में एक हिरन का पीछा किया। वह एक मायावी हिरन था। तेज़ दौड़कर पाण्डवों को जंगल में बहुत दूर ले गया, फिर गायब हो गया। तंग आकर पाण्डव एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठ गए। युधिष्ठिर ने कहा, "भैया! बहुत प्यास लग रही है।"

नकुल ने एक पेड़ पर चढ़कर आस–पास नज़र दौड़ाई। बोला, "पास में खूब हरियाली है। सारस भी उड़ रहे हैं। वहाँ पानी ज़रूर होगा। मैं अभी पानी लेकर आता हूँ।"

थोड़ी दूर जाने पर उसे तालाब दिखाई दिया। उसने तालाब में हाथ डाला। अचानक आसमान से आवाज़ आई, "ठहरो! यह मेरा तालाब है। मेरे सवालों का जवाब दो, फिर पानी पीना।"



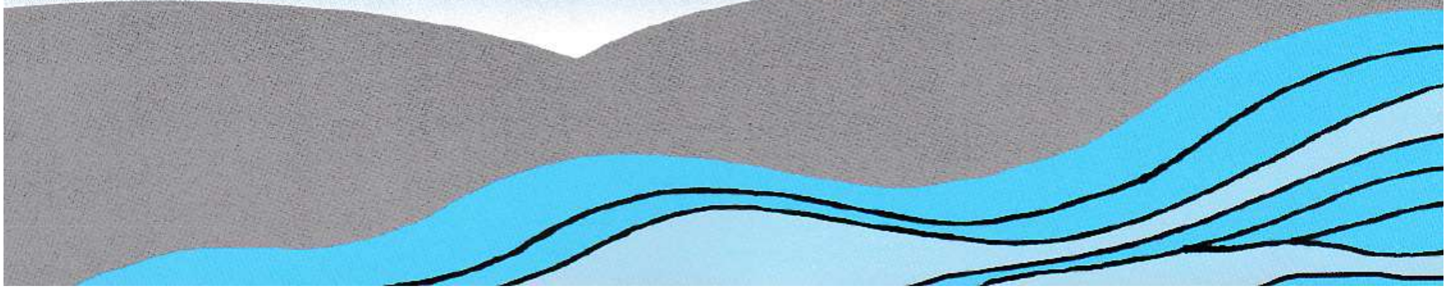


नकुल चौंक गया। पर उसे बहुत तेज़ प्यास लगी थी। चेतावनी को अनसुनी कर पानी पी लिया। पानी पीते ही वह ज़मीन पर गिर पड़ा।

बहुत देर तक नकुल वापिस नहीं आया तो युधिष्ठिर ने सहदेव को उसे ढूँढने भेजा। वह भी तालाब पर पहुँचा। आवाज़ की परवाह न करते हुए उसने भी पानी पी लिया और बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। फिर अर्जुन उन्हें ढूँढते हुए वहाँ पहुँचा। अपने भाइयों की हालत देखकर दंग रह गया। तभी उसे एक अजीब तरह की प्यास ने बेचैन कर दिया। वह पानी की ओर खिंचता चला गया और पानी में हाथ डाला।

फिर से वही आवाज़ आई, "पहले मेरे सवालों का जवाब दो, बाद में पानी पीना, वरना तुम्हारी भी यही हालत होगी।" अर्जुन क्रोध से झल्ला उठा। "हिम्मत हो तो सामने आकर लड़ो," यह कहते हुए उसने बाण उठाया। लेकिन उसने पानी पीकर ताकत के साथ लड़ने का निर्णय किया और पानी पी लिया। पानी पीते ही वह भी गिर पड़ा।

फिर भीम ने भी वही आवाज़ सुनी। "तुम होते कौन हो मुझे आज्ञा देने वाले?" कहते हुए उसने भी पानी पी लिया और गिर पड़ा। अंत में युधिष्ठिर आया। अपने भाइयों का हाल देखकर वह रो पड़ा। प्यास से पीड़ित युधिष्ठिर पानी की ओर बढ़ा। उसी समय उसी अज्ञात आवाज़



ने उसे भी रोका। "तुम्हारे भाइयों ने मेरी बात नहीं सुनी। कम से कम तुम तो मेरे प्रश्नों का उत्तर देकर पानी पिओ।"

युधिष्ठिर ने पहचान लिया कि यह यक्ष की आवाज़ है और कहा, "तुम अपने प्रश्न पूछो। मैं उत्तर दूँगा।" यक्ष ने लगातार प्रश्न पूछे और युधिष्ठिर उनके उत्तर देता गया।

"वह क्या है जो मनुष्य का जीवन भर साथ देता है?"
"उत्साह।"

"खतरे में मनुष्य को कौन बचाता है?"
"साहस।"

"सफलता की पहली सीढ़ी क्या है?"
"निरंतर प्रयास।"

"मनुष्य होशियार कैसे बनता है?"
"बुद्धिमान लोगों के साथ रहकर।"

"यात्री का साथ कौन देता है?"
"प्राप्त शिक्षा।"

"लाभों में सबसे बेहतर लाभ क्या होता है?"
"निरोग जीवन।"





"मनुष्य सबका प्यारा कब बन सकता है?"
"घमंड को छोड़ने पर।"

"ऐसी क्या चीज़ है, जिसे खोने से मनुष्य को खुशी मिलती है, दुःख नहीं?"
"क्रोध, इसके खो जाने से दुःख नहीं सताता।"

"दुःख का कारण क्या है?"
"इच्छा और क्रोध।"

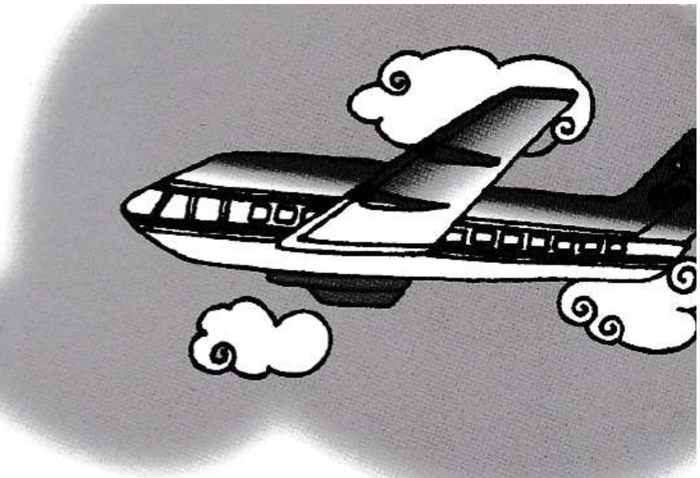
"कौन धरती से अधिक सहनशील है?"
"माँ, जो अपनी संतान की देख रेख करती है।"

युधिष्ठिर ने बिना हिचकिचाए ऐसे कई प्रश्नों के उत्तर दिए। अंत में यक्ष ने कहा, "तुम्हारे जवाब से मैं प्रसन्न हुआ। मृत भाइयों में से तुम जिसे भी चाहो उसे मैं जीवित कर दूँगा।"

युधिष्ठिर ने कहा, "नकुल जीवित हो जाए।" यक्ष ने तुरंत सामने प्रकट होकर पूछा, "भीम तो सोलह हज़ार हाथियों के समान बलवान है। अर्जुन धनुर्विद्या में निपुण है। इन दोनों को छोड़कर नकुल का नाम क्यों लिया?"

युधिष्ठिर ने कहा, "मेरे पिता की दो पत्नियाँ हैं– कुंती और माद्री। कुंती का पुत्र मैं हूँ। इसलिए माद्री के पुत्र को जीवित पाना चाहता हूँ।" यक्ष युधिष्ठिर की निष्पक्षता से बहुत प्रसन्न हुए और सभी भाइयों को जीवित कर दिया।

आओ पता लगाएँ



आठ पैर जब खींचें तो
घूमें मेरे दोनों ढाल
ठडक–ठडक कर चलूँ बजरिया
मैं मतवाली चाल

उड़ता हूँ आकाश में, पर पंछी नहीं
बादलों में छिप जाता, पर चाँद नहीं



दो रेखाओं पर सरपट दौड़े
सबको लाती ले जाती है
नदी कूदती, जंगल दिखाती
पहाड़ों में घुस जाती है
सीटी बजाती, शोर मचाती
बच्चों के मन भाती है

जितना रौंदो उतना भागे
ऐसी यह है बात
सेहत को भी अच्छी रखता
हरदम उसका साथ





अलग न होंगे–दोस्त नहीं
ना जुड़ेंगे पर दुश्मन नहीं

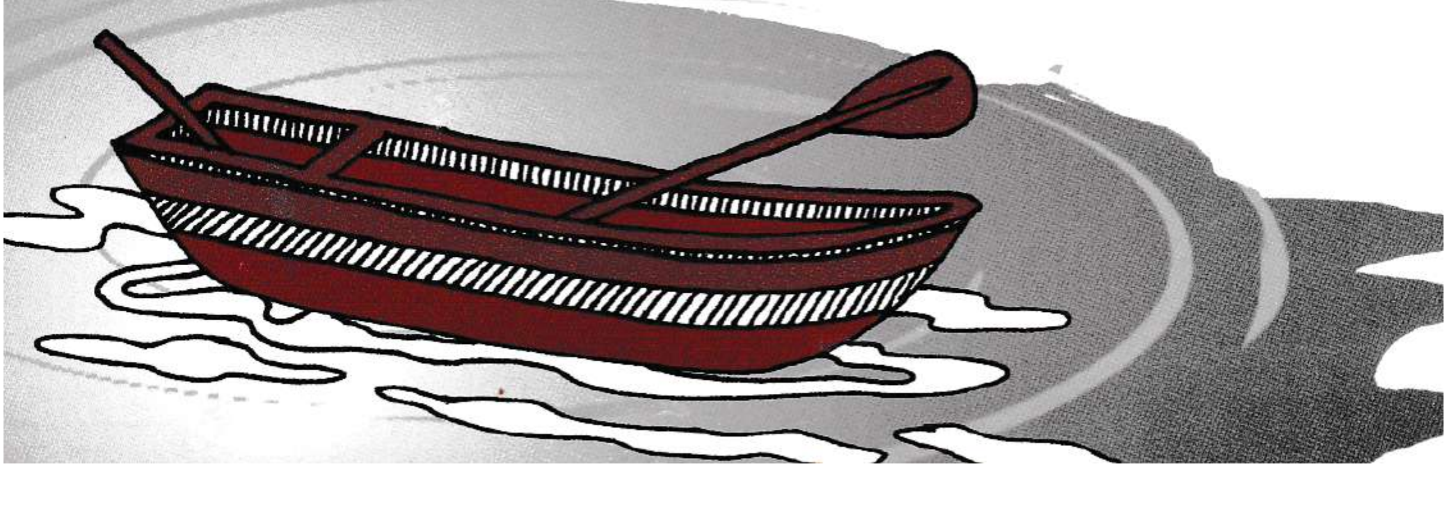
बिना पैर दौड़ूँ और तैरूँ बिना हाथ
पानी ऊपर तुम्हें चलाऊँ, बैठो मेरे साथ



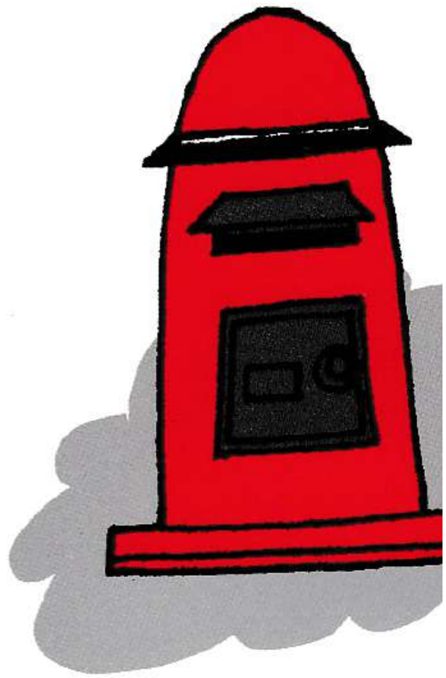
छोटे–बड़े पचासों बैठो
सबको ढोकर दौड़ लगाती
एक आदमी की मदद से
मंज़िल–मंज़िल मैं पहुँचाती



पैर मारने पर घुर्राऊँ
फिर मज़े से सैर कराऊँ



यहाँ वहाँ आपस में जोड़ूँ
मैं ज़मीन की लकीर
सभी मेरे ऊपर से गुज़रें
ऐसी मेरी तकदीर



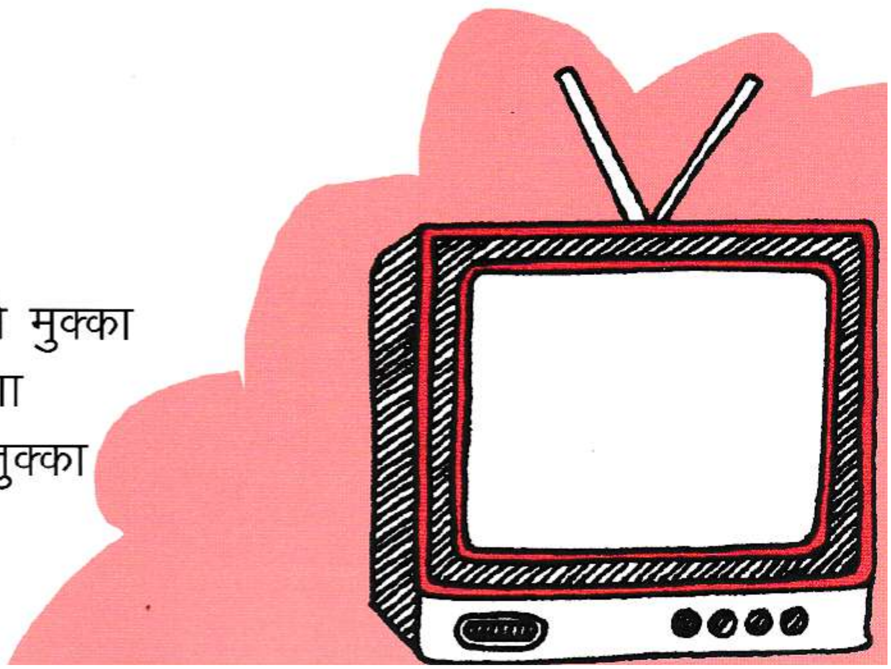
बिना मुँह के शब्द बोलूँ
बिना प्राण के पहुँचूँ गाँव
सुख–दुख की कुछ बात बताने
घर आ जाऊँ बिना पाँव

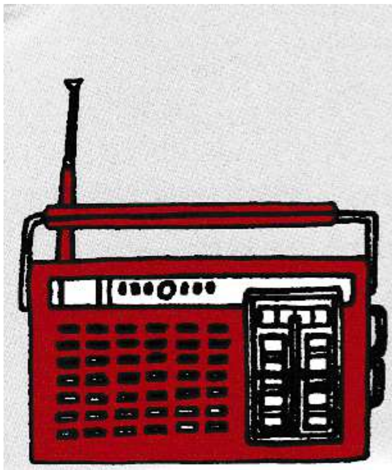
मेरी घंटी सुनकर तुम, आओ मेरे पास
मुझे उठाओ और कर लो, बातें अपनी खास

एक जगह पर रहती बैठी
खबर चलाती अद्‌भुत पेटी

ढूँढ लेंगे तुम्हारा घर
देंगे तुमको नई खबर

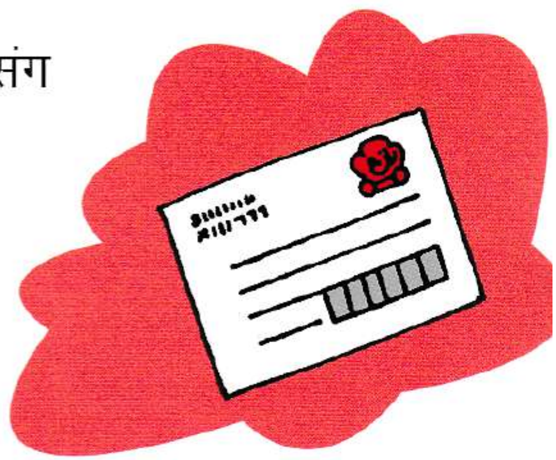
पैसे देकर मुझे खरीदो
फिर लकड़ी से लगवाओ मुक्का
देश–विदेश चला जाऊँगा
सही पहचानो, न मारो तुक्का





ऐसा डिब्बा लाया चंदर
सभी कुछ है इसके अंदर
फिल्म, सीरियल, खेल, खबर
चैन से देखो घर के भीतर

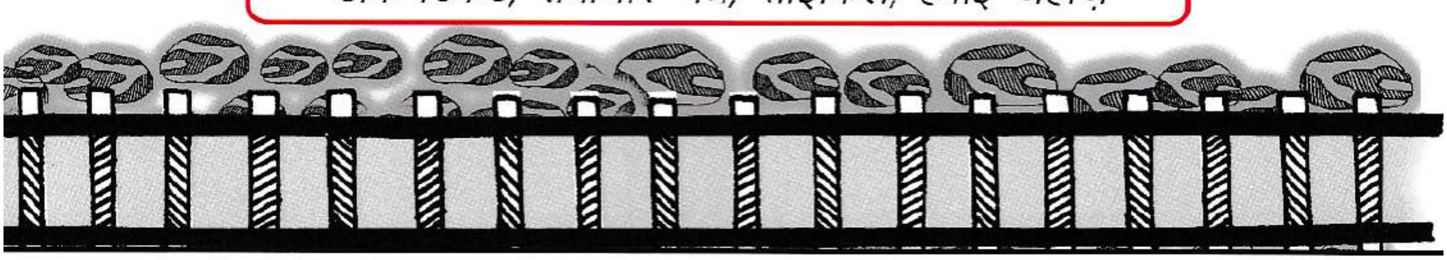
सुबह–सुबह तुम पाते हो
मुझको अपने द्वार
दुनिया भर की बातों के संग
देता अनेक विचार



हवा में तैरते संगीत को
पकड़ लेता है तुरंत
कान घुमाते ही सुनाए
बोलो कौन अजूबा यंत्र

जो बोलोगे वही रखूँगा
मैं तो अपने पास
जब चाहोगे लौटाऊँगा
करो मुझ पर विश्वास

खत, रेल, नाव, रेडियो, डाक बाबू, स्कूटर, सड़क, पटरी, डाक पेटी, टी.वी., बैलगाड़ी, टेपरिकार्डर, दूरभाष, बस, डाक टिकट, समाचार–पत्र, साईकिल, हवाई जहाज़



पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकनः
उमा कृष्णस्वामी

97

बहादुरी की परीक्षा



जापान देश में एक अनोखा स्कूल था। उसकी कक्षाएँ रेल के डिब्बों में थी। स्कूल चारों तरफ से एक विशाल बगीचे से घिरा हुआ था। तोतो–चान नामक एक लड़की इस स्कूल में पढ़ती थी।

एक बार तोतो–चान के स्कूल में शिविर लगा। असैम्बली हॉल में तंबू लगाए गए और सभी बच्चे रात वहीं रुके। हेडमास्टर ने एक घोषणा की, "हम एक रात को बहादुरी की परीक्षा लेंगे। यह कुहोन्बुत्सु मंदिर में होगी। जो बच्चे भूत बनना चाहते हैं, वे अपने हाथ उठा दें।"

सात लड़के भूत बनने के लिए आगे आए। निश्चित शाम को बच्चे स्कूल में इकट्ठे हो गए। भूत बनने वाले बच्चे अपने साथ पोशाक लाए थे। तैयार होकर वे मंदिर के बाग में जा छिपे।

"हम तुम लोगों को इतना डराएँगे कि तुम्हारी सिट्टी–पिट्टी गुम हो जाएगी।" उन्होंने चलते–चलते कहा। बाकी तीस बच्चे पाँच–पाँच के छोटे समूहों में बंट गए। थोड़ी–थोड़ी देर के अंतराल पर मंदिर की ओर चले। उन्हें पहले मंदिर और फिर कब्रिस्तान के चारों तरफ चक्कर लगाकर स्कूल पहुँचना था।

हेडमास्टर ने समझाया, "बहादुरी की परीक्षा है तो ज़रूर, पर अगर कोई बच्चा इसे पूरा किए बिना स्कूल वापिस लौटना चाहे तो आ सकता है। तोतो–चान माँ से टॉर्च माँग कर लाई थी। कुछ लड़कों ने कहा कि वे भूतों को पकड़ेंगे। इसके लिए वे तितलियाँ पकड़ने वाली जालियाँ लाए थे। दूसरों ने कहा कि वे भूतों को बाँध देंगे, इसलिए वे रस्सी साथ लाए थे।



जब तक हेडमास्टर ने पूरी बात समझाई और बच्चों के समूह बने, तब तक अंधेरा हो चुका था। बच्चे उत्साह से हल्ला–गुल्ला करते हुए स्कूल के दरवाज़े से निकले। आखिर तोतो–चान की टोली के बाहर निकलने का समय आया।

हेडमास्टर ने कहा कि जब तक वे मंदिर नहीं पहुँच जाते, तब तक भूत प्रकट नहीं होंगे। परंतु बच्चों को इस बात पर भरोसा नहीं हुआ। वे डरते हुए मंदिर के दरवाज़े तक पहुँचे। देव–राजाओं की बड़ी मूर्तियाँ द्वारपाल की तरह दिखने लगीं।





चाँदनी रात थी। पर मंदिर के मैदान में बड़ा अंधेरा था। दिन में यही जगह बच्चों को भली लगती थी। पर रात को, खासकर उस रात को, उन्हें वह जगह

डरावनी लगने लगी। हवा से पेड़ों में सरसराहट हुई। कोई बच्चा 'उईईई' कहकर चीखा। किसी दूसरे का पैर एक मुलायम चीज़ पर पड़ा और वह, "भूत आया" कहकर चिल्ला पड़ा। डर इतना छा गया कि दोस्त का हाथ भी भूत का हाथ लगने लगा।

तोतो–चान ने निश्चय किया कि वह किसी भी हालत में कब्रिस्तान तक नहीं जाएगी क्योंकि उसी जगह तो भूत होने की आशंका थी। बहादुरी की परीक्षा होती कैसे है, यह तो उसे पता चल ही गया था। इसलिए वह वापिस लौट सकती थी। उसकी टोली में दूसरे बच्चे भी इसी निर्णय पर पहुँचे। उसे तसल्ली हुई कि यह निर्णय उसका अकेले का न था। वे सब, जितनी तेज़ी से उनके पाँव उन्हें ले जा सकते थे, उतनी तेज़ी से भागे।

स्कूल लौटने पर उन्होंने देखा कि जो टोलियाँ उनसे पहले निकली थीं वे भी वापिस आ चुकी थीं। पता चला कि कब्रिस्तान तक पहुँचने की हिम्मत किसी की भी नहीं हुई।

ठीक उसी समय सिर पर सफेद कपड़ा ओढ़े एक बच्चा रोता हुआ आया। उसके साथ एक शिक्षक भी थे। वह भूत बने बच्चों में से एक था। बहुत देर कब्रिस्तान में इंतज़ार करता रहा। किंतु जब कोई नहीं आया तो वह डर गया।



रोते–रोते वह बाहर आया। रास्ते में इंतज़ार कर रहे शिक्षक उसे वापिस लेकर आए।

सब बच्चे उसे चुप कराने की कोशिश कर ही रहे थे कि एक और भूत रोता हुआ एक लड़के के साथ लौटा। यह भूत कब्रिस्तान में छिपा हुआ था। अचानक किसी के भागने की आहट आई। वह उछलकर उसे डराने के लिए बाहर निकला। दोनों की टक्कर हो गई। दर्द और डर के मारे दोनों दौड़कर एक साथ वापिस आए। बच्चों को उनकी बात इतनी मज़ेदार लगी कि उनका तनाव जाता रहा और वे ज़ोर ज़ोर से हँसने लगे। भूत भी कभी हँस रहे थे, कभी रो रहे थे!

कुछ देर बाद तोतो–चान का एक सहपाठी लौटा। उसने अखबार की बनी हुई टोपी पहनी हुई थी। वह बहुत नाराज़ था कि उसके पास कोई पहुँचा ही नहीं। वह शिकायत करता हुआ बोला, "मैं इतनी देर इंतज़ार करता रहा।" उसके हाथ पाँव पर मच्छर काटे हुए थे और वह खुजला रहा था।



किसी ने कहा, "अरे देखो! मच्छरों से काटा हुआ भूत!" सभी फिर हँसने लगे। "अब मैं जाकर बाकी भूतों को लाता हूँ," पाँचवीं कक्षा के शिक्षक ने कहा। उन्हें कुछ भूत सड़क की बत्ती के नीचे मिले। पता चला कि कुछ और डर के मारे घर चले गए थे। वे उन सबको इकट्ठा कर स्कूल में ले आए। उस रात के बाद वे बच्चे भूतों से कभी नहीं डरे। आखिर भूत स्वयं भी तो डर जाते हैं!

तेत्सुको कुरोयांगी

कथा झरना टीम 2008
पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

यादें

मैं जब हाईस्कूल में पढ़ता था, तब मैंने अपने पिता की मेज़ पर एक किताब देखी थी। वह किताब श्रवण के माता–पिता के प्रति उसकी श्रद्धा के बारे में थी। मैंने उसे बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा।

उन्हीं दिनों बाइस्कोप में चित्र दिखाने वाले भी घर–घर आते थे। उसमें मैंने एक दृश्य देखा। उसमें श्रवण अपने अंधे माता–पिता को काँवर में बैठाकर यात्रा पर ले जाता है। उस किताब और चित्र दोनों ने मुझे बहुत प्रभावित किया।



मन में इच्छा हुई कि मैं भी श्रवण की तरह अपने माता–पिता की सेवा करूँ। श्रवण की मृत्यु पर उसके माता–पिता का विलाप मुझे आज भी याद है।

उन्हीं दिनों हमारे यहाँ एक नाटक कंपनी आई। मैंने अपने पिता की आज्ञा से हरिश्चन्द्र की कहानी पर एक नाटक देखा। उस नाटक ने मेरे दिल को छू लिया । उसे बार–बार देखने की इच्छा होती थी। मैंने अपने मन में उस नाटक को सैकड़ों बार खेला होगा।

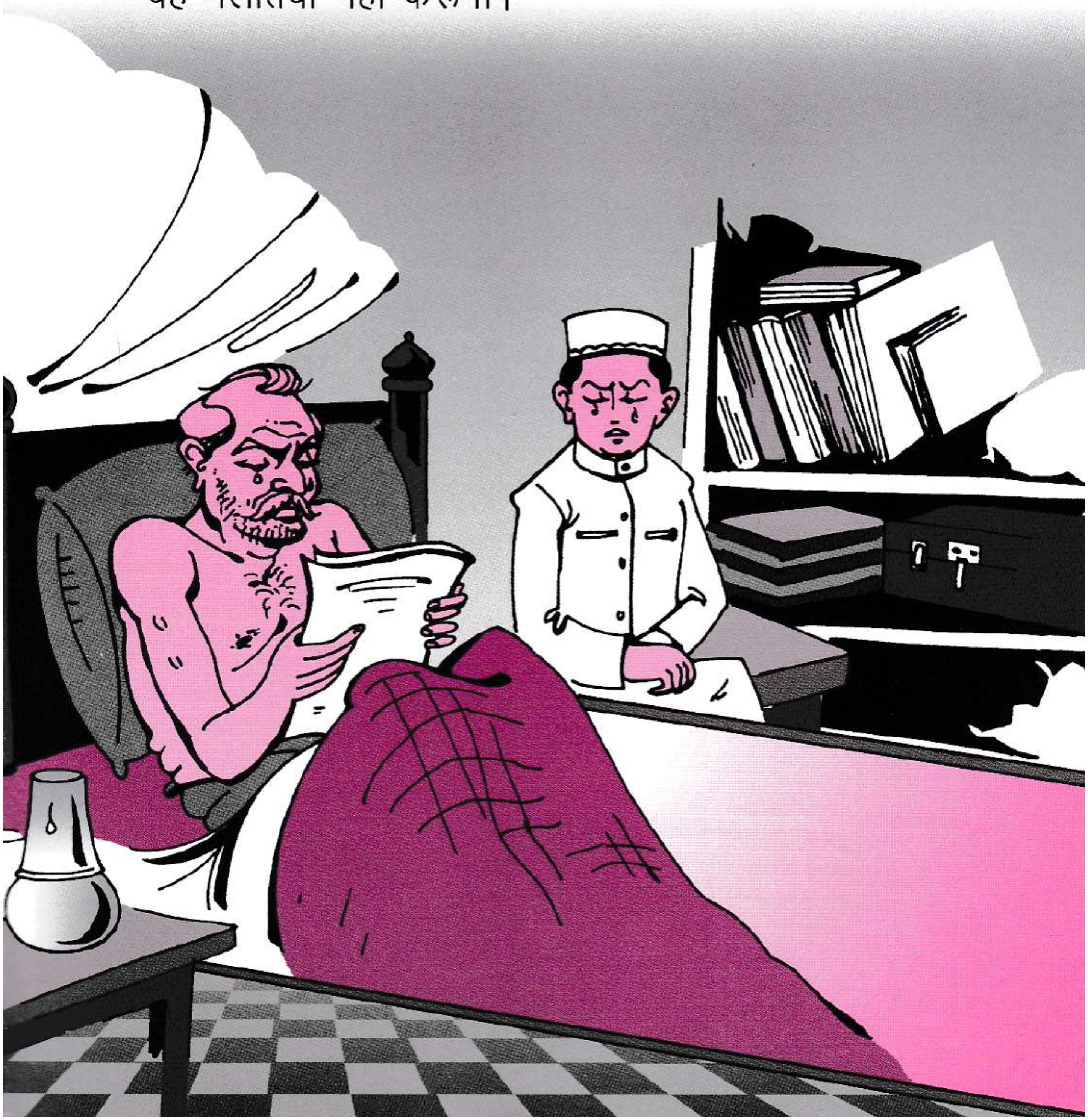
हरिश्चन्द्र को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा! फिर भी उसने सच ही बोला। 'हरिश्चन्द्र की तरह सत्यवादी सब क्यों नहीं होते?' यह प्रश्न मेरे मन में दिन–रात उठता।

अपने जीवन में घटी एक और घटना को मैं कभी नहीं भूल पाया। उस घटना को याद कर मैं आज भी पछताता हूँ।

हाईस्कूल में मेरा एक मित्र था। कई लोग मुझे कहते, "उसकी आदतें अच्छी नहीं हैं। उसके साथ मत घूमना।"

मैंने उनकी बात नहीं मानी। जैसे–जैसे दिन बीतते गए उसने मेरे मन को बदल दिया। छिपकर धूम्रपान करना जैसी बुरी आदतों में मैं फँस गया। किंतु शीघ्र ही मेरी अंतरात्मा जाग उठी। अपनी गलतियों के बारे में सोचकर अफसोस करने लगा।

मुझे लगा कि पिताजी के सामने अपनी गलतियाँ स्वीकार कर लेनी चाहिए। पर मुँह न खुला। मैंने एक चिट्ठी में सब कुछ लिख दिया। उसमें सारा दोष स्वीकार किया और सज़ा माँगी। मैंने यह वादा किया कि दोबारा यह गलतियाँ नहीं करूँगा।



मैंने काँपते हाथों से चिट्ठी पिताजी के हाथ में दी और उनके सामने बैठ गया।

उन्होंने चिट्ठी पढ़ी। उनकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। चिट्ठी भीग गयी। उन्होंने पल भर के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। फिर चिट्ठी को फाड़ दिया।

मैं भी रोया। मैं उनका दु:ख समझ सका। उन आँसुओं ने मेरे पाप धो दिए। उनके प्यार ने मुझे बदल दिया।

पहली बार मैंने अहिंसा के बारे में अपने पिता से ही सीखा। मैंने एहसास किया कि सज़ा के बदले हम प्रेम से हृदय जीत सकते हैं।

सत्य के प्रयोग व आत्मकथा
मोहनदास करमचन्द गाँधी

कथा झरना टीम 2008
पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
एस.पी.राजू

विक्रमादित्य का सिंहासन

प्राचीन काल में भारत में उज्जैन नाम का शहर बहुत मशहूर था। इस शहर में कालिदास जैसे अनेक कवि व विद्वान रहते थे। यहाँ के सम्राट विक्रमादित्य अपनी न्याय–प्रियता के लिए दूर–दूर तक प्रसिद्ध थे। सम्राट विक्रमादित्य की उदारता व ईमानदारी के कारण उनकी प्रजा उन्हें बहुत प्यार करती थी। लोग उन्हें भगवान का रूप मानते थे।

इतिहास के पन्ने पलटते रहे। कई शताब्दियाँ बीत गईं। इस बीच कई राज्य बने और उजड़े। कई बदलाव आए। समय के साथ–साथ पुराने महल और इमारतें ज़मीन के नीचे दब गईं। विक्रमादित्य को भी लोग भूल गए।

एक बार कुछ ग्वाल बालक एक स्थान पर खेल रहे थे। वहीं आस–पास चट्टानों के कई टुकड़े, खंबे आदि बिखरे पड़े थे, जिनमें शिल्पकारी की हुई थी। कुछ मिट्टी के टीले इधर–उधर दिखाई दे रहे थे। उनमें से एक टीला हरा–भरा एवं ऊँचा था।





एक बालक भागकर उस पर जा बैठा। खेल–खेल में उसने अपने दोस्तों से कहा, "मैं हूँ न्यायाधीश! अपने मुकदमे मेरे पास लाइए।" अन्य बच्चों को यह खेल बहुत पसंद आया। तुरंत उन बच्चों ने आपस में मिलकर एक काल्पनिक मुकदमा तैयार कर लिया। दो बालक न्यायाधीश के सामने गए और बोले, "माननीय न्यायाधीश! मेरे पड़ोसी और मेरे बीच के ज़मीन के झगड़े को हल कीजिए।"

तब बच्चों ने एक चमत्कार देखा। खेल–खेल में न्यायाधीश बने बच्चे का चेहरा समस्या सुनते ही बदल गया। वह असली न्यायाधीश जैसे बोलने लगा। उसने मुकदमे का सही फैसला सुनाया।

उसकी बातों को सुनकर बच्चे चौंक गए। फिर भी खेल जारी रखा। एक और नई समस्या गढ़ कर मामले को न्यायाधीश के पास ले गए। इस बार बालक ने ऐसा फैसला सुनाया जैसे उसे वर्षों का अनुभव हो। इस तरह बच्चे घंटों तक खेलते रहे। जब घर जाने का समय आया, बालक मिट्टी के टीले से कूद गया। फिर पहले की तरह अपने दोस्तों से हँसने बोलने लगा। उस दिन को बच्चे कभी भूल ही न पाए।

उसके बाद जब भी कोई समस्या आती, बच्चे मिट्टी के टीले पर उस बालक को बैठाते। वह बालक भी समस्याओं को सही तरह से सुलझाता।

यह खबर पूरे गाँव में फैल गई। गाँव के लोग भी अपनी समस्याओं को बालक के पास लाने लगे। मिट्टी के टीले पर सुनाए गए उसके सभी फैसले हमेशा सही होते। बात राजा तक पहुँच गई।

बालक के बारे में सुनकर राजा ने अनुमान लगाया, 'वह बालक विक्रमादित्य के सिंहासन पर ही बैठा होगा।' राजा ने अपने आदमियों को भेजकर मिट्टी के टीले को खुदवाया।

राजा का अनुमान सही था। वहाँ से एक सिंहासन निकला। उस पर पच्चीस परियों की प्रतिमाएँ थीं, जो उड़ने की मुद्रा में थीं।

गाँव में बड़ी हलचल मच गई। चारों ओर कोलाहल और उत्सव का माहौल था। एक जुलूस में सिंहासन को दरबार में लाया गया। राजा ने कहा, "मैं इस सिंहासन पर बैठकर मुकदमों को सुनूँगा। तब विक्रमादित्य की कृपा मेरे ऊपर रहेगी और मैं सही निर्णय सुना पाऊँगा।

सिंहासन पर बैठने के लिए राजा ने एक शुभ दिन चुना। मंगल वाद्य बजने लगे। राजा सिंहासन की ओर बढ़ा। तभी परियों की प्रतिमाओं में से एक ने कहा, "ठहरो! ज़रा सोचो, क्या तुम सचमुच इस सिंहासन पर बैठने के योग्य हो? क्या तुमने अन्य राज्यों पर राज करने की कामना नहीं की है?"





राजा ने कहा, ''हाँ! अवश्य ऐसी कामना की है। मैं इस सिंहासन पर बैठने के काबिल नहीं हूँ।''

''तुम तीन दिन उपवास रखकर ध्यान करो और फिर आओ,'' यह कहकर परी अपने पंख फैलाकर उड़ गई। सिंहासन पर उसका स्थान खाली हो गया।

राजा तीन दिन उपवास रखकर फिर से सिंहासन पर बैठने के लिए गया। तभी एक और परी प्रकट हुई और बोली, ''क्या तुमने कभी दूसरे की संपत्ति पाने की इच्छा की है?'' राजा ने कहा, ''हाँ! अवश्य!'' उसे फिर से ध्यान करने के लिए कहकर वह परी भी उड़ गई।

इस तरह सौ दिन बीत गए। अंत में, सिंहासन पर सिर्फ एक ही परी रह गई। उसने राजा से पूछा, ''क्या तुम्हारा मन एक बच्चे की तरह साफ है?''

राजा ने कहा, ''नहीं।'' यह सुनकर परी ने सिंहासन को उठाया और आसमान में उड़कर अदृश्य हो गई। उसके बाद उस सिंहासन को किसी ने नहीं देखा।

एक दिन राजा अकेले में बैठकर सोचने लगा। उसे सिंहासन का रहस्य समझ में आ गया। जिसके पास एक बच्चे की तरह निर्मल मन हो, वही ईमानदार हो सकता है। इसलिए जिस विक्रमादित्य के सिंहासन पर कोई राजा बैठ नहीं पाया, उस पर एक ग्वाल बालक बैठ सका। वह सही फैसले सुनाने में भी सफल रहा।

सिस्टर निवेदिता की बाल कहानी पर आधारित

पी.सरस्वती वी.विजयकांती
एल.एस.सरस्वती एस.राजलक्ष्मी

Rajalakshmi Srinivasan
Memorial Foundation

चित्रांकन:
उमा कृष्णास्वामी



दृष्टि के तीन दिन

हेलन केलर एक अनोखी महिला थी जो बचपन से देख, सुन व बोल नहीं सकती थी। उसने छू कर ही दुनिया को महसूस करना सीखा। बड़ी मेहनत से उसे जाना व समझा। अपनी पूरी ज़िंदगी दूसरों की सेवा में लगा दी। यहाँ हैं उनके लेख से कुछ अंश।

मैं कई बार सोचती हूँ कि अगर हर मनुष्य अपने जीवन में कुछ दिनों के लिए देखने व सुनने की क्षमता खो बैठे तो यह एक वरदान होगा। अंधकार में उसे दृष्टि का महत्व समझ आ जाएगा। खामोशी उसे ध्वनि के आनंद का एहसास दिलाएगी।

कभी–कभी मैंने अपने मित्रों से जानना चाहा कि वे वास्तव में क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक सहेली वन में एक लंबी सैर करके लौटी। मैंने उससे पूछा कि उन्होंने क्या देखा। उसने जबाब दिया, "कुछ विशेष नहीं।"

मैंने सोचा, "यह कैसे मुमकिन है? एक घंटा सैर करने के बाद भी ऐसा कुछ नहीं देखा जो याद रखने योग्य हो!"

मैं देख नहीं सकती पर केवल छूकर ही सैकड़ों दिलचस्प चीज़ें ढूँढ लेती हूँ। जिनमें मुझे दिलचस्पी है। मैं पत्ते की नाज़ुक बनावट का एहसास करती हूँ। कुछ पेड़ों की मुलायम छाल को सहलाती हूँ। कुछ पेड़ों की खुरदरी छाल को भी महसूस करती हूँ।

बसंत ऋतु में मैं बड़ी आशा के साथ पेड़ों की शाखाओं को छू कर देखती हूँ कि उनमें कलियाँ आ गईं या नहीं। अगर मैं खुशकिस्मत हूँ तो कभी कभी जब मैं अपना हाथ एक छोटे से पेड़ पर रखती हूँ, तब मुझे एक चिड़िया के गीत की धड़कन का एहसास होता है।

किसी किसी समय इन सब चीज़ों को देखने की इच्छा से मेरा मन रो पड़ता है। अगर मुझे सिर्फ छूकर एहसास करने से इतनी खुशी मिलती है तो देखने से मुझे और कितनी सुंदरता का एहसास होगा!





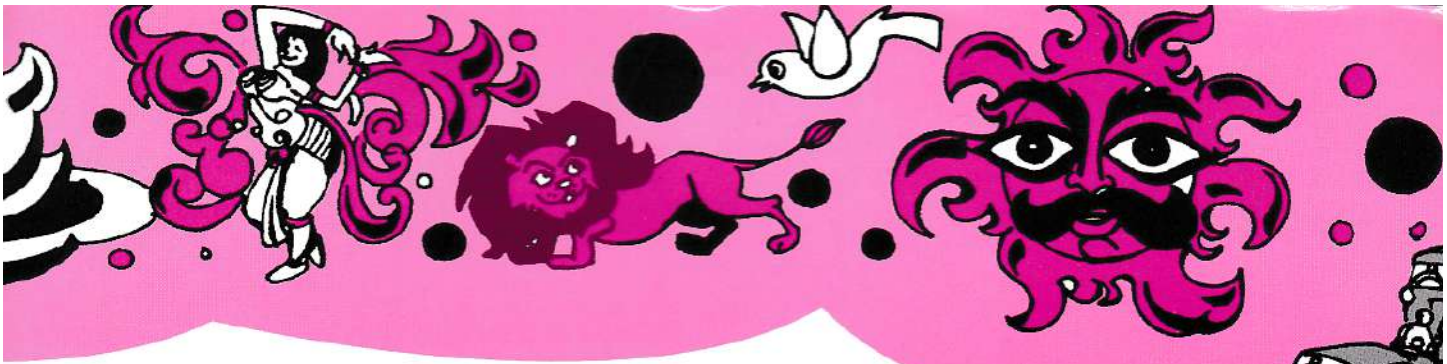
मुझे सिर्फ तीन दिनों के लिए दृष्टि मिल जाए तो मैं क्या देखना चाहूँगी, इसकी मैंने कल्पना की हुई है।

पहले दिन मैं उन लोगों को मिलना चाहूँगी जिनकी उदारता व मित्रता ने मेरा जीवन जीने योग्य बना दिया है। मैं नहीं जानती कि अपनी आँखों से मित्र के हृदय के अंदर झाँकना क्या होता है। मैं सिर्फ अपनी अंगुलियाँ फेरकर उनके चेहरे की बनावट देख सकती हूँ। मैं उनकी खुशी, दुःख और अन्य भावनाओं को भी छू कर महसूस कर सकती हूँ।

उसके बाद मैं उन किताबों को देखना चाहूँगी जो मुझे पढ़ कर सुनाई गई हैं। उन्हीं किताबों ने मुझे मनुष्य के जीवन की गहराइयों के बारे में बताया है। फिर मैं अपने वफ़ादार कुत्तों की आँखों में झाँक कर देखना चाहूँगी।

दोपहर को मैं एक लंबी सैर पर जाऊँगी और प्रकृति की सुंदरता में मुग्ध हो जाऊँगी। रंगों से सजे सूर्योदय की प्रतीक्षा करूँगी। मुझे लगता है कि मैं उस रात सो नहीं पाऊँगी।





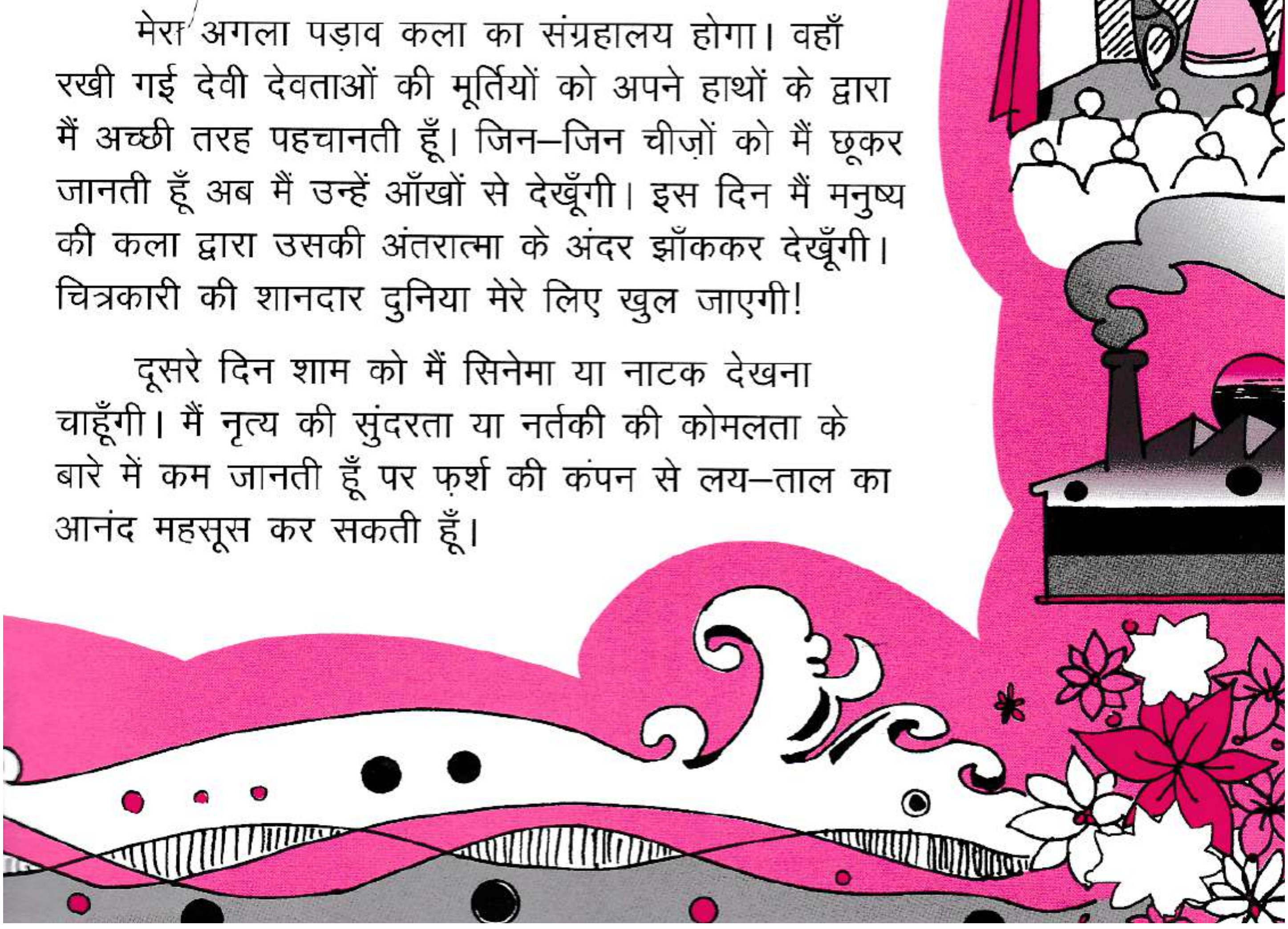
दूसरे दिन मैं सुबह सुबह उठूँगी और रात को दिन में बदलने का करिश्मा देखूँगी। गहरी नींद में डूबी हुई धरती को सूर्य की किरणों से जगते हुए देखकर चकित हो जाऊँगी।

इस दिन को मैं विश्व के भूत व वर्तमान के बारे में जानने में बिताना चाहूँगी। मैं मनुष्य की प्रगति की यात्रा भी देखना चाहूँगी। इसलिए मुझे संग्रहालय जाना चाहिए।

मेरा अगला पड़ाव कला का संग्रहालय होगा। वहाँ रखी गई देवी देवताओं की मूर्तियों को अपने हाथों के द्वारा मैं अच्छी तरह पहचानती हूँ। जिन–जिन चीज़ों को मैं छूकर जानती हूँ अब मैं उन्हें आँखों से देखूँगी। इस दिन मैं मनुष्य की कला द्वारा उसकी अंतरात्मा के अंदर झाँककर देखूँगी। चित्रकारी की शानदार दुनिया मेरे लिए खुल जाएगी!

दूसरे दिन शाम को मैं सिनेमा या नाटक देखना चाहूँगी। मैं नृत्य की सुंदरता या नर्तकी की कोमलता के बारे में कम जानती हूँ पर फ़र्श की कंपन से लय–ताल का आनंद महसूस कर सकती हूँ।









मुझे सिर्फ तीन दिनों के लिए दृष्टि मिल जाए तो मैं क्या देखना चाहूँगी, इसकी मैंने कल्पना की हुई है।

पहले दिन मैं उन लोगों को मिलना चाहूँगी जिनकी उदारता व मित्रता ने मेरा जीवन जीने योग्य बना दिया है। मैं नहीं जानती कि अपनी आँखों से मित्र के हृदय के अंदर झाँकना क्या होता है। मैं सिर्फ अपनी अंगुलियाँ फेरकर उनके चेहरे की बनावट देख सकती हूँ। मैं उनकी खुशी, दुःख और अन्य भावनाओं को भी छू कर महसूस कर सकती हूँ।

उसके बाद मैं उन किताबों को देखना चाहूँगी जो मुझे पढ़ कर सुनाई गई हैं। उन्हीं किताबों ने मुझे मनुष्य के जीवन की गहराइयों के बारे में बताया है। फिर मैं अपने वफ़ादार कुत्तों की आँखों में झाँक कर देखना चाहूँगी।

दोपहर को मैं एक लंबी सैर पर जाऊँगी और प्रकृति की सुंदरता में मुग्ध हो जाऊँगी। रंगों से सजे सूर्योदय की प्रतीक्षा करूँगी। मुझे लगता है कि मैं उस रात सो नहीं पाऊँगी।



तीसरा दिन मैं दुनिया के आम लोगों के बीच बिताना चाहती हूँ, जो अपने–अपने काम में व्यस्त हैं। मैं शहर के एक व्यस्त, भीड़–भाड़ वाले कोने में खड़े होकर लोगों को देखती रहूँगी और उनके रोजमर्रा के जीवन के बारे में समझने की कोशिश करूँगी। चेहरों पर मुस्कराहट देखूँगी तो मुझे खुशी होगी। दृढ़ निश्चय देखूँगी तो मुझे गर्व होगा। दर्द देखूँगी तो करूणा महसूस होगी।

मैं शहर में गरीबों की बस्ती, कारखाने, खुला मैदान जहाँ बच्चे खेलते हैं, इन सब की सैर करूँगी। मैं सुख व दुःख दोनों ही अनुभवों को देखने के लिए अपनी आँखों को खुली रखूँगी ताकि मैं समझ सकूँ कि लोग किस तरह काम करते हैं और जीवन जीते हैं। मैं जानती हूँ कि केवल तीन दिनों में जो–जो मैं देखना चाहती हूँ वह सब नहीं देख पाऊँगी। फिर से जब अंधेरा छा जायेगा तभी मुझे एहसास होगा कि कितना कुछ देखना बाकी रह गया है।

मैं यकीन के साथ कह सकती हूँ कि जब आपको एहसास होगा कि आप आगे नहीं देख पाएँगे, तो अपनी आँखों का प्रयोग ऐसे करेंगे जैसे पहले कभी नहीं किया। सब कुछ जो आप देखेंगे, वह आपको प्यारा लगेगा। अपनी नज़र के सामने आई हर चीज़ पर गौर करेंगे। उन्हें अपनी आँखों में बसा लेंगे। तब आप सचमुच देखेंगे। सुंदरता से भरी एक नई दुनिया आपके सामने खुल जाएगी।

मैं तो देख नहीं सकती, लेकिन जो देख सकते हैं, उन्हें एक सुझाव देना चाहती हूँ। अपनी आँखों का प्रयोग ऐसे करें जैसे कि आप कल ही अंधे हो जाएँगे। यही तरीका दूसरी इंद्रियों के लिए भी लागू हो सकता है। सुरीली आवाज़ें, चिड़ियों के गीत, संगीतकारों की धुनें इन सब को ऐसे सुनें जैसे कि आप कल बहरे हो जाएँगे। हर वस्तु को ऐसे छुएँ जैसे कि कल आपकी छूने की शक्ति खत्म हो जाएगी।

फूलों की सुगंध को सूँघें, जैसे कि आप कल किसी चीज़ को सूँघ नहीं सकेंगे। भोजन का हर एक कौर खुशी से खाएँ जैसे कि कल उसका स्वाद न ले सकेंगे। सभी इंद्रियों का पूरा प्रयोग करें। पर मुझे यकीन है कि सभी इंद्रियों में से दृष्टि ही सबसे सुखद होगी।